PREFACE

" England has taken the lead in solving the problems of Constitutional History. This she has done for the world and herein lies the world's chief interest in her history." I have written this book so as to focus the attention of students on this point At the end of each part of the book, I have given people's mode of life, their religious beliefs, social customs, and means of communications I have explained the meanings of nation, nationalism, state, liberty and cabinet system so as to bring home to the minds of readers the significance of these terms. Various events in the History of England have been compared to events at corresponding periods in the History of India so as to indicate how much behind we are in certain respects The subject-matter has been so dealt with as to inculcate the spirit of nationalism among students in this country Events of European History are described in such necessary detail as is desirable for the proper understanding of the corresponding events in the History of England Being in direct touch with High School Class students, I know their difficulties, and have so written the book as not to ignore those difficulties At the end of each part of the book, summary, chronology of important dates, and Model Questions with hints are given. The summary will help the students at the time of revision and also teachers in preparing the subject for class-room and in preparing their diaries.

In the end, I thank Mr. Karm Ghani Khan, M.A, Professor, Government College, Ajmer, for his valuable suggestions, and for reading a portion of the manuscript I have also to thank Mr Surya Deo Sharma, M A, L.T., Head Master, D A V. High School, Ajmer, for translating the book in Hindi. Thanks are also due to Mr. Jadeo Prasad, M A, Assistant Head Master, Oswal High School, Ajmer, for his suggestions I have also to thank my publishers for the pain they have taken to make the book so attractive. I shall be very glad to receive suggestions for the improvement of the book from teachers and students

K. M. Kaul

भूमिका

इस पुस्तक को देखकर अनेक पाठकों के हृदयों में यह प्रश्न उत्पन्न होगा कि इंग्लैण्ड के इतिहास पर जब कई पुस्तकें अबतक प्रकाशित हो चुकी है, तो फिर इस पुस्तक के प्रकाशन की क्या आवश्यकता थी? लेकिन पाठकों को यह स्मरण रखना चाहिए कि जिस ब्रिटेन का साम्राज्य भूमण्डल के समस्त महाद्वीपों के किसी-न-किसी भाग में विस्तृत हो और जिसका नाम और काम का वर्णन संसार के अनेक देशों के इतिहास में करना पड़ता हो तथा यूनान और रोमन साम्राज्य के बाद यूरोप के इतिहास पर जिसने सबसे अधिक प्रभाव डाला हो, उस ग्रेट ब्रिटेन के इतिहास पर जितनी भी पुस्तकें लिखी जायें, उतनी कम हैं। और फिर प्रत्येक लेखक का अपना-अपना दृष्टिकोण होता है, अतः विशेषकर भारतीय विद्यार्थियों के पढ़ने के लिए जो पुस्तक इंग्लैण्ड या किसी भी विदेश के इतिहास पर लिखी जाय, वह भारतीय दृष्टिकोण से ही लिखी जानी चाहिए, ऐसा हमारा निश्चित मत है।

इसी भावना को ध्यान में रखकर इस पुस्तक की रचना की गई है। साथ में इस पुस्तक की कुछ अपनी ऐसी विशेषतायें है, जो इस विषय की अन्य पुस्तकों में प्रायः एकत्र उपलब्ध नहीं होतीं, जैसे—

(१) भारतीय दृष्टिकोण को सम्मुख रखते हुए स्थान-स्थान पर ब्रिटेन के इतिहास की घटनाओं की भारतीय इतिहास की घटनाओं के साथ तुलना करते हुए, भारतीय छात्रों में राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने का प्रयत्न किया गया है।

(२) पुस्तक में घटनाओं और अध्यायों का क्रम ऐसा रक्खा गया है, जो एक दूसरे से कारण-कार्य रूपेण सम्बन्धित हैं।

(३) पुस्तक की भाषा आदि से अन्त तक सरल रक्खी गई है। जानबूझकर प्रायः उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो प्रति-दिन की साधारण बोलचाल में प्रयुक्त होते हैं।

(४) जितनी घटनाओं और बातों का जानना मैट्रिक के विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है, उतनी ही क्रमवार दी गई हैं, न कम, न अधिक।

(५) जो प्रश्न जिस रूप में मैट्रिक परीक्षा में अधिकतर पूछे जाते है, प्रत्येक खंड के अन्त में उसी प्रकार के प्रश्न रक्खे गये हैं, ताकि विद्यार्थी उनका अभ्यास कर सकें।

(६) इतिहास की क्रमबद्ध घटनाओं के अतिरिक्त अन्य आवश्यक विषयों पर प्रत्येक खंड के अन्त में विशेष सामग्री दीगई है— जैसे पार्लियामेण्ट का विकास, मन्त्रिमण्डल (Cabinet System) का उद्भव, तत्कालीन लोगों का रहन-सहन, धार्मिक और सामाजिक अवस्था, इत्यादि।

(७) पुस्तक को सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने के लिए बढ़िया काग़ज और टाइप का ध्यान रक्खा गया है और स्थान-स्थान पर २० सादा नकशे, १ रंगीन नकशा और ७२ चित्र दिये गये है, जिससे विद्यार्थियों को अपना पाठ अत्यंत रोचक प्रतीत हो।

आशा है ब्रिटिश इतिहास के भारतीय विद्यार्थियों और अध्यापकों को भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

निवेदक —

. ए. वी. हाई स्कूल
अजमेर
२५ जनवरी, १९४० ई०

सूर्यदेव शर्मा साहित्यालंकार
सिद्धान्त शास्त्री,
एम ए एल टी

विषय-सूची

प्रथम खण्ड

प्राचीन-काल

द्वितीय खण्ड

आधुनिक-काल

ट्यूडर वंश

अध्याय	विषय	पृष्ठ

तृतीय खण्ड

स्टुआर्ट-काल

चतुर्थ खण्ड

हेनोवर-वंश

—————

पहला अध्याय

इङ्गलैण्ड के इतिहास पर भूगोल का प्रभाव

प्रत्येक देश के इतिहास पर भूगोल का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है और इसीलिए किसी देश के इतिहास को जानने में पहले उसके स्थानीय भूगोल का ज्ञान करना अत्यन्त आवश्यक है। इंगलैण्ड के इतिहास पर भी उसकी स्थिति और प्राकृतिक दशा का एक विशेष प्रभाव पड़ा है, इसलिए उस देश के भूगोल का अध्ययन करना आवश्यक है।

ब्रिटेन की स्थिति व सीमा—ब्रिटेन के इतिहास पर भूगोल का प्रभाव तीन प्रकार से पड़ा है:—

(१) उसकी स्थिति तथा सीमा से (२) उसकी प्राकृतिक दशा से (३) उसकी उपज से।

स्थलगोलार्द्ध का नकशा देखने से ज्ञात होता है कि ब्रिटिश द्वीप समूह बिल्कुल उस गोलार्द्ध के केन्द्र मे स्थित है, जहां से संसार के प्रत्येक भाग से सरलता पूर्वक आवागमन हो सकता है। क्योंकि यह एक टापू है और चारों ओर समुद्र से घिरा है, इसलिए समुद्र ही इसका रक्षक है और समुद्र ही अन्य देशों का मार्ग है। इसके पच्छिम में अटलांटिक महासागर है जिसके उस ओर अमेरिका का महाद्वीप है। पूर्व में यूरोप स्थित है और यद्यपि इसके और ब्रिटिश टापुओं के बीच में डोवर (Dover) का जल डमरू मध्य है तो भी समुद्र का

८ कम होने के कारण से यूरोप ब्रिटेन का सबसे निकट पड़ोसी है। उत्तर में उत्तरी समुद्र अर्थात् नौर्थ सी (North Sea) है जिसके द्वारा ब्रिटेन के निवासी यूरोप के उत्तरी तथा पश्चिमी देशों मे सुगमता से पहुँच सकते हैं। दक्षिण मे इंग्लिश चैनल (English Channel) और बिस्के की खाड़ी है जिसको पार करके और जिब्राल्टर के फाटक से गुज़र कर यहाँ के लोग भूमध्यसागर और वहाँ से पूर्वी देशों तक जा सकते हैं। प्राचीनकाल और मध्यकाल मे छोटे छोटे समुद्रों के द्वारा व्यापार होता था और इस कारण से उस समय में बाल्टिक सागर और भूमध्य सागर के किनारों पर आबाद होने वाली जातियाँ ही यूरोप मे सबसे अधिक धनी थीं और ब्रिटिश द्वीप वालों को उन्नति करने का कोई अवसर नहीं था, लेकिन नये देशों का पता मालूम होने और नये व्यापारिक मार्गों के खुलने से ब्रिटिश टापुओं की जाति का भाग्य खुल गया। अतएव स्थिति और सीमाओं के विचार से इस टापू की तीन विशेषताएं हुई—प्रथम यह कि ब्रिटेन एक टापू है। दूसरे यूरोप के अति निकट है। तीसरे स्थल गोलार्द्ध के बीच में स्थित है।

टापू होने से लाभ—ब्रिटिश जाति की उन्नति का एक मुख्य कारण यही है कि उनका देश एक टापू है जो कि उनके लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है। प्रथम तो इस प्रकार कि उनपर बाहर से आक्रमण होना बहुत कठिन है क्योंकि पूरी तैयारी के बिना किसी शत्रु की सेना किसी टापू पर अकस्मात् आक्रमण नहीं कर सकती। दूसरे अगर यह देश अपने समुद्री बेड़े को पूरे तौर से सुसज्जित कर

ले तो आक्रमणों का कोई अन्देशा ही नहीं रहता।

तीसरे इस टापू की प्राकृतिक सीमा होने के कारण पड़ोसी जातियों से देश की सीमा आदि के विषय में लड़ाई-झगड़े करने की नौबत नहीं आई। न तो कोई अन्य देश ही इसकी सीमा को तोड़ सकता है और न इस टापू के निवासियों ही को किसी की अधिक भूमि दबा लेने का लालच हो सकता है। इसीलिए ब्रिटेन को फ्रांस या जर्मनी की तरह सीमा के लिए अपने पड़ोसियों से झगड़ा नहीं करना पड़ा और इसपर रोमन आक्रमण के बाद और कोई आक्रमण सफलता के साथ नहीं हो सका।

चौथे यह कि अंग्रेजों को अपने किनारे की रक्षा के लिए जहाजों का एक जबर्दस्त बेड़ा रखना पड़ता है और इस समुद्री शक्ति के बल पर अंग्रेजों ने समस्त संसार में व्यापार की मण्डियाँ स्थापित कर रक्खी है और आजकल व्यापार जातियों की उन्नति का मुख्य साधन है। साथ ही यह भी स्मरण रहे कि बिना अपना समुद्र तट हुए अन्य देशों से व्यापार करने में बड़ी कठिनाई होती है, लेकिन ब्रिटेन का कोई भाग समुद्री तट से ७० मील से अधिक दूर नहीं है। इसी से अनुमान लगता है कि ब्रिटिश जाति को समुद्री व्यापार में उन्नति करने का कितना अच्छा अवसर है।

पाँचवें यह कि टापू होने के कारण से इसको दूसरे देशों की तरह एक स्थायी स्थानीय सेना रखने की आवश्यकता नहीं रही। दूसरे देशों में स्थायी स्थानीय सेना की सहायता से उन देशों के बादशाहों ने लोगों की स्वतन्त्रता को कुचल कर साम्राज्य शक्ति को बढ़ाया। यह

साधन इङ्गलैण्ड के बादशाहों के पास नहीं था और इसलिए वे लोगा की स्वतन्त्रता को कुचल नहीं सके।

यूरोप का पड़ोस—महाद्वीप यूरोप और ब्रिटिश टापुओं के बीच एक छोटासा डोवर का जलडमरू मध्य (Strait of Dover) है जिसके कारण से यह अकस्मात् के आक्रमणों से तो सुरक्षित है लेकिन निकट होने से यूरोप की सभ्यता और जागृति के प्रभाव से बच न सका अर्थात् प्रकृति की इस पर इतनी कृपा है कि टापू होने का लाभ उठाते हुए भी यहाँ के निवासी यूरोप की सभ्यता के प्रकाश से वंचित न रहे। १६वीं शताब्दी में तो यूरोप की नई शिक्षा की लहर ने और धार्मिक सुधारों ने इङ्गलैण्ड की एक प्रकार से काया ही पलट दी। राजनीतिक दृष्टिकोण से इसको बेलजियम की रक्षा सर्वदा दृष्टि में रखनी पड़ी और चौदहवें लुई, नेपोलियन और जर्मनी से बेलजियम के ही लिए युद्ध करने पड़े, दूसरे यूरोप की शक्तियों का पलड़ा बराबर रखने के लिए इसको बड़े लड़ाई-झगड़े करने पड़े जिसके कारण से १७वीं और १८वीं शताब्दियों मे उसको कई बड़े युद्ध करने पड़े।

स्थल गोलार्द्ध पर उसकी स्थिति व सीमा—जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है, १६ वी शताब्दी से पूर्व इस टापूवालों को उन्नति करने का कोई अवसर नहीं था। यह टापू भूमंडल के एक कोने में सबसे पृथक समझा जाता था जिसके कारण उसके व्यापार में कोई उन्नति नहीं हो सकी, लेकिन जब कोलंबस ने अमेरिका की खोज

करली तो इंग्लैन्ड को अपनी स्थिति और सीमा से बहुत लाभ हुआ। नक्शा देखने से ज्ञात होता है कि लन्दन स्थल गोलार्द्ध के केन्द्र में स्थित है और वहां से संसार के प्रत्येक भाग में समुद्री मार्ग स्थापित किये जा सकते है। इसी कारण से वर्तमान काल में इंग्लैण्ड के व्यापार को बहुत लाभ पहुँचा है। समुद्र निकट होने के कारण अंग्रेजों को जहाज चलाने की विद्या में बहुत काल से दक्षता प्राप्त रही है और नवीन देशों की खोज होने के बाद उनके व्यापार की उन्नति हुई है। डच और पुर्तगालियों को हराने के बाद तो इनका व्यापार उन्नति के शिखर पर पहुँच गया। दूसरे इनको राज्यों के स्थापित करने और उनका उचित प्रबन्ध करने में अत्यन्त सुविधा हुई। अमेरिका अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा एशिया इन सब महाद्वीपों में इनके राज्य स्थापित हो चुके है।

प्राकृतिक दशा का प्रभाव—पहली बात यह कि इंग्लैण्ड का समुद्रीतट बहुत दनदानेदार है और किनारा बहुत कटाफटा है और कहीं २ समुद्र दूर तक देश के अन्दर चला गया है। इससे यह लाभ हुआ कि देश में प्राकृतिक तौर पर सुरक्षित बन्दर-गाह अधिक संख्या में पाये जाते हैं। इससे प्रजा में समुद्री सैर और आवागमन की रुचि उत्पन्न हुई और देश के समुद्री बेड़े की शक्ति मे दिन-दिन उन्नति होती रही।

दूसरी बात यह है कि अगर एक रेखा टीज़ (Tees) के मुहाने से लगाकर सैवर्न (Severn) के मुहाने तक खींची जाय और बाद में उसे दक्षिण तक बढा दिया जाय तो इंग्लैण्ड दो भागों में बिभाजित

जाता है—दक्षिण पूर्व का लगातार समतल और उपजाऊ मैदान और दूसरी ओर वेल्स की पहाड़ी ऊँची नीची भूमि। इसका प्रभाव यह हुआ कि दक्षिणी पूर्वी भाग पर एंग्ल, सेक्सन, डेन्स और नार्मन आदि लोगों के दलों ने आक्रमण किये और वहाँ वे सुगमता से आबाद हो गये। भूमि के समतल होने के कारण ये जातियाँ परस्पर मिलजुल सकीं जिसका फल यह हुआ कि वे सब शीघ्र ही एक हो गईं लेकिन वेल्स के पहाड़ी भागों में जहाँ पुराने निवासियों ने शरण ली थी इन नई जातियों की पहुँच न हो सकी। फलतः वेल्स सभ्यता में पीछे रहा और वहाँ की भाषा और रहन-सहन का ढंग इंग्लैण्ड से अलग रह गया।

स्काटलैण्ड और इंग्लैण्ड के बीच में पहाड़ियाँ हैं जो शैवुआइट पहाड़ियाँ (Chevoit Hills) कहलाती हैं। इन्हीं पहाडियों के कारण ये दोनों देश बहुत काल तक एक-दूसरे से पृथक रहे। मध्य-काल में दोनों के बीच खूब लड़ाई-झगड़ा भी हुआ और ट्यूडर काल तक दोनों में पर्याप्त शत्रुता रही। जेम्स प्रथम के शासन काल मे दोनों देशों के राज सिंहासन सम्मिलित हो गये और एक सौ साल बाद दोनों देशों की पार्लियामेण्ट के भी एक ही हो जाने के कारण इंग्लैण्ड और स्काटलैण्ड मे एक संयुक्त शासन स्थापित हो गया। स्काटलैण्ड का बहुत सा भाग पहाड़ी है जहाँ भेड़ पालने का व्यवसाय खूब होता है। यहाँ के निवासियों को पठारी या हाईलैण्डर्स (Highlanders) कहते हैं। इन हाईलैण्डर्स ने जैकोबाइट विद्रोह के अवसर पर शत्रुओं का पूरा-पूरा साथ दिया था। अंग्रेजी

सेना के गोरे अधिकतर स्काटलण्ड के पहाड़ी लोग ही होते हैं।

आयरलैण्ड और इंग्लैण्ड के बीच में समुद्र है जो न बहुत गहरा है और न बहुत चौड़ा। अलग होने के कारण आयरलैण्ड सभ्यता और संस्कृति में इंग्लैण्ड से बिलकुल अलग है, लेकिन आयरलैण्ड इतना छोटा और इतना ग़रीब है कि वह स्वतन्त्र और शक्तिशाली देश नहीं रह सका। आयरलैण्ड के निवासी पक्के कैथोलिक मत के है। इसलिए धार्मिक सुधार के बाद इनका अँग्रेज़ों से बराबर झगड़ा होता रहा। इंग्लैण्ड के दुश्मनों ने इससे लाभ उठाया और कई बार आयरलैण्ड निवासियों को जोश दिलाकर और भड़काकर देश में विद्रोह करा दिया। सन् १८०१ ई० में आयरलैण्ड को भी इंग्लैण्ड और स्काटलैण्ड के संयुक्त राज्य मे सम्मिलित कर लिया गया मगर आयरलैण्ड के निवासियों को कैथोलिक होने के कारण इंग्लैण्ड की प्रोटेस्टैण्ट सरकार के प्रति कभी सहानुभूति न हो सकी। पूरे एक सौ साल तक आयरलैण्ड मे स्वतन्त्र शासन स्थापित करने का आन्दोलन जारी रहा। अभी कुछ दिनों से आयर्लैण्ड में स्वतन्त्र शासन अँग्रेज़ों की अध्यक्षता में स्थापित हुआ है।

खनिज और खेती—प्राचीन और मध्यकाल में अधिकतर लोग खेती का व्यवसाय करते थे इसलिए देश के दक्षिणी और पूर्वी मैदान में बहुत घनी आबादी थी। इंग्लैण्ड का मुख्य धन वहाँ के खनिज पदार्थ है। इंग्लैण्ड के उत्तरी और पच्छिमी भागों में पत्थर के कोयले की बहुत-सी खानें हैं और अत्यन्त लाभकारी बात यह है कि इन्हीं के समीप मे लोहा भी प्राप्त होता है। वर्तमान काल में

मशीनों आदि के लिए इन्हीं दोनों पदार्थों की आवश्यकता होती है। व्यवसायिक क्रान्ति (Industrial Revolu'ion) के बाद इन पदार्थों का प्रयोग बहुतायत से होने लगा और इसलिए लोग उत्तर पच्छिम में खानों के निकट पहाड़ी भाग में आबाद होने आरम्भ हो गये जिससे वहाँ की जनसंख्या में बहुत वृद्धि हो गई। इसके बाद मज़दूरों को शासन में अधिकार प्राप्त करने की इच्छा हुई और विभिन्न प्रकार के सुधारों के आन्दोलन आरम्भ हुए। बाद को वास्तव में प्रजा को शासन में बहुत कुछ अधिकार प्राप्त हो गये और प्रजातंत्र शासन की बुनियाद पड़ गई।

जलवायु—इंग्लैण्ड के जलवायु ने भी वहाँ के इतिहास पर बहुत प्रभाव डाला है। इंग्लैण्ड की विशेष उन्नति का कारण उनकी दिमागी ताक़त और शारीरिक शक्ति है जो कि वहाँ के जलवायु का प्रभाव है। यह समस्त देश शीतोष्ण कटिबंध (Temperate Zone) में स्थित है इसलिए यहाँ गर्मी बहुत कम पड़ती है। महाद्वीप की ठण्डी हवा के कारण इंग्लैण्ड का पूर्वी भाग पश्चिमी भाग की अपेक्षा अधिक ठण्डा रहता है। इसके अतिरिक्त अटलाँटिक महासागर में जो गरम पानी की धारा गल्फस्ट्रीम (Gulf Stream) बहती है, वह पच्छिमी भाग की जलवायु को अधिक सुहावना बना देती है। पछुआ हवा बहुत सा मेंह बरसाती है। कभी २ इंग्लैण्ड में बर्फ भी पड़ती है। इस देश में गर्मी अधिक नहीं होती इस कारण से वहाँ के लोग बहुत परिश्रमी होते हैं और अपने परिश्रम के कारण ही वे इतने बलवान और शक्तिशाली हैं तथा एक बड़े साम्राज्य के स्वामी बने बैठे हैं।

किसी देश की सरकार उस देश की दिमागी ताकत, आर्थिक दशा, सामाजिक दशा और भोगोलिक परिस्थिति का परिणाम है। इंग्लैण्ड में सबसे पहले कानूनी सरकार की बुनियाद पड़ी। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि एंग्लो-सेक्सन (Anglo-Saxon) जाति मे कोई मुख्य विशेपता थी परन्तु जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है यह भूगोग का परिणाम है। हिन्दुस्तान में स्वतंत्र शासन की बुनियाद न पड़ने से यह न समझना चाहिए कि आर्य जाति मे कोई बिशेप कमी थी परन्तु ये सब भौगोलिक रुकावटे थीं जिन्होंने यहां वैधानिक शासन की बुनियाद न पड़ने दी, लेकिन यह याद रहे कि विज्ञान की उन्नति होने के कारण इन भूगोल की रुकावटों को अब हमने अपने वस में कर लिया और अब भी अगर कोई ऐसी जाति है जो कि स्वतंत्र नहीं है तो यह उस जाति का ही दोप है और दूसरी कोई रुकावट अब नहीं है जो कि उसको स्वतंत्र होने से रोकती हो। इंग्लैण्ड के इतिहास से आपको यह स्पष्ट प्रगट हो जायगा कि सबसे पहली वस्तु जो जाति के नवयुवकों को प्राप्त करनी चाहिए वह देश-भक्ति और राष्ट्रीयता की भावना है। दूसरे शब्दों मे इसका यह अर्थ है कि हम यहीं उत्पन्न हुए है, यहीं बड़े हुए है और मरने के बाद यहीं दफ़न होंगे या यहीं जलाये जायेंगे। इसलिए हमें समझना चाहिए कि हम हिन्दुस्तानी पहले है और हिन्दू (आर्य्य), मुसलमान और ईसाई आदि बाद को है। इसीका नाम जातीयता है और जब ये भावना भारत मे उत्पन्न हो जायगी तो स्वतन्त्रता प्राप्त करने में कोई चीज बाधा नहीं डाल सकती।

दूसरा अध्याय

प्राचीन काल (१०६६ ई० तक)

कैल्ट जाति का आगमन और रोमन जाति का शासन

प्राचीन काल में इंगलैण्ड एक असभ्य और जंगली देश था और यहाँ पर जंगली और असभ्य जातियाँ आबाद थीं। वह काल जबकि ये लोग रहते थे प्राचीन पाषाण काल (Old Stone Age or Paleoalithic Age) कहलाता है। फिर आयवीरियन नाम की एक नई जाति आकर आबाद हुई। ये लोग पहले के निवासियों से अधिक सभ्य थे। उस काल का नाम जबकि ये लोग रहते थे नवीन पाषाण युग (Neolithic or New Stone Age) कहलाता है। सैकड़ों वर्ष तक ब्रिटिश टापू इन असभ्य मनुष्यों के अधिकार में रहे। इसके बाद ईसा मसीह के जन्म से लगभग सात सौ या आठ सौ वर्ष पहले इनको कैल्ट (Celt) नामी एक बाहरी जाति का सामना करना पड़ा। इस जाति ने दो बार ब्रिटिश जातियों पर आक्रमण किया। पहले इस जाति के एक समूह ने जो गेल (Gael) के नाम से प्रसिद्ध है, आयलैंण्ड और स्काटलैण्ड पर अपना अधिकार कर लिया और फिर उसके लगभग दो सौ वर्ष बाद कैल्ट जाति के दूसरे दल ने जो ब्रिटन (Briton) कहलाता था आक्रमण किया और गैलों को पश्चिम तथा उत्तर के जंगली भागों में मार भगाया और दक्षिणी भाग को अपने अधिकार में कर लिया। कैल्ट जाति के दोनों दल

सभ्यता और व्यवहार में पहले के निवासियों से बढ़े चढ़े थे।

रोमन विजय (सन ५५ ई० से पूर्व)—पहले काल में रोम सब से अधिक सभ्य और प्रसिद्ध था। रूम सागर के किनारे पर इटली में रोमन साम्राज्य की बुनियाद डाली जा रही थी। उस समय उनका साम्राज्य यूरोप, एशिया और उत्तरी अफ्रीका में फैला हुआ था और उनकी सेना का प्रसिद्ध वीर सेनापति जुलियस सीजर था। उसने यूरोप के उत्तरी व दक्षिणी भागों को विजय करने का निश्चय किया और गोल (Goal) अर्थात वर्तमान फ्रांस को अपने अधिकार में करने का प्रयत्न किया। फ्रांस के निवासी भी केल्ट जाति के थे। एक ही जाति के होने के कारण ब्रिटिश टापुओं के निवासी भी समय समय पर उनकी सहायता के लिए पहुंच जाते थे। इस सहायता को रोकने के लिए जुलियस सीजर ने दो बार जबर-दस्त सेना लेकर ब्रिटिश टापुओं पर आक्रमण किया। पहले आक्रमण मे जो कि ईसा से पचपन वर्ष पहले हुआ था उसने ब्रिटेन के निवासियों को तो

Caius Julius Caesar

किनारे से भगा दिया लेकिन घने जंगलों और दलदलों में प्रवेश करने का साहस न हुआ। अतएव पहली बार बिना किसी मुख्य विजय को प्राप्त किये वह अपने देश को वापिस चला गया।

दूसरी साल ईसा से चौवन वर्ष पूर्व उसने एक बड़ी सेना साथ लेकर इंग्लैण्ड पर फिर आक्रमण किया और अब की बार ब्रिटिश टापुओं के निवासी इतने भयभीत हो गये कि कई ब्रिटन सरदारों ने उसकी आधीनता स्वीकार करली। उसने इस पर सन्तोष किया और बिना राज्य स्थापित किये हुए फ्रांस होता हुआ फिर रोम वापिस चला गया क्योंकि उसका उद्देश्य ब्रिटन लोगों को केवल भयभीत करना ही था ताकि वे फ्रांस की फिर सहायता न करें।

जुलियस सीज़र के इस आक्रमण के बाद लगभग १०० वर्ष तक ब्रिटेन इन आक्रमणों से सुरक्षित रहा, लेकिन सन् ४३ ई० में जबकि क्लोडियस (Clodius) रोम में शासन कर रहा था, रोमन सेना ने फिर इंगलैन्ड पर आक्रमण किया और ब्रिटेन जाति को हराकर टापू का दक्षिणी भाग रोमन जाति के अधिकार में कर लिया और यह रोमन साम्राज्य का एक प्रान्त बन गया। ब्रिटिश टापुओं के दक्षिणी भाग में लगभग साढ़े तीन सौ वर्ष (सन् ४३ से ४१०) तक रोमन शासन स्थिर रहा।

इस रोमन शासन का ब्रिटेन पर वही प्रभाव हुआ जो कि इंगलैन्ड के शासन का भारत पर हुआ है। जिस तरह से अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान में शान्ति स्थापित की, नगर आबाद किये, नगरों में खूबसूरत इमारतें और भवन निर्माण कराए, एक नगर से दूसरे नगर तक जाने के लिए आवागमन के मार्गों का प्रबंध किया, देश में कलाकौशल की उन्नति हुई और अंग्रेज़ों के प्रभाव से हिन्दुस्तान वहुत कुछ सभ्य हो गया, शहरों के वहुत से निवासी

अंग्रेजी भाषा सीख गये और अंग्रेजी पोशाक पहनने लगे हैं, उसी तरह से रोमन लोगों के प्रभाव से इंगलैण्ड में भी इसी प्रकार के लाभ हुए थे। रोमवालों ने इँगलैन्ड में शान्ति स्थापित की, नगर आबाद कराये, उनमें खूबसूरत इमरतों का निर्माण कराया, आवागमन के लिए पुख्ता सड़कें बनवाईं और शहरों के निवासी लेटिन भाषा सीख गये, उन्होंने रोमन पहनावा स्वीकार किया। और जिस तरह से अंग्रेज़ी राज्य से हमको हानि भी हुई है कि हम स्वावलंबन, साहस और वीरता के उत्तम कार्य बिल्कुल भूले जा रहे हैं और हममें से अपने को विदेशियों से सुरक्षित रखने की शक्ति जाती रही है, क्योंकि इस काम का उत्तरदायित्व अंग्रेज़ों ने अपने हाथ में ले रक्खा है। इसी तरह से एक समय था, जबकि ये खूबियाँ विदेशियों के शासन के कारण उनमें से भी नष्ट हो गई थीं। ब्रिटेन लोगों को रोमवालों के शासन से हानि ही अधिक हुई। शहरवालों को छोड़कर और किसी पर रोमन सभ्यता का अधिक प्रभाव नहीं पड़ा। रोमन शासक ब्रिटेन लोगों को एक पराजित जाति की तरह मानते थे और देश के शासन में ब्रिटेन लोगों को कोई ऊँचा पद नहीं दिया जाता था। इन सब कारणों से ब्रिटेन लोगों में से जातीयता, साहस, वीरता तथा उच्च कार्य करने की अभिलाषा आदि धीरे-धीरे सब नष्ट होगई थी और रोमन सेनाओं के चले जाने के बाद ब्रिटिश जाति इतनी निर्बल और निरुत्साही हो गई कि दूसरी जातियों ने आकर बड़ी सरलता से इस टापू पर अधिकार कर लिया, लेकिन जिस तरह से एक दो ठोकर खाकर ये खूबियाँ उनमें फिर पैदा होगई हैं, उसी तरह से ठोकर खाकर ये उत्तम गुण हम भारत वासियों में भी उत्पन्न हो जायँगे।

तीसरा अध्याय

एंग्लो सेक्सन काल

(सन् ४१० ई० से १०६६ ई० तक)

रोमवालों के चले जाने के बाद उत्तर की असभ्य जातियों ने जिनको पिक्ट्स (Picts) आदि कहते थे, रोमन दीवार को पार करके ब्रिटेन पर आक्रमण किया और पश्चिम से आयरलैंन्ड के लोग जिनको स्कोट्स (Scots) कहते थे, पश्चिमी किनारे पर लूट मार करने लगे, ब्रिटेन के निवासियों ने उनका सामना किया, लेकिन सैंकड़ों वर्षों तक दासता में रहने के कारण वे इतने निर्बल होगये थे कि वे इन आक्रमणों को रोकने का कोई उचित प्रबन्ध न कर सके थे, यहाँ तक कि निराश होकर उन्होंने अपने पुराने शासकों अर्थात् रोमन लोगों से भी सहायता माँगी, लेकिन रोमन लोग उन दिनों स्वयं अपने ही देश की रक्षा करने मे इस प्रकार व्यस्त थे कि वे ब्रिटिश जाति को किसी प्रकार की भी सहायता न दे सके।

एक नवीन जाति का टापू में आगमन (४४९ ई०)— रोमन जाति की सहायता से निराश होकर कैन्ट (Kent) के बादशाह वोर्टी जर्न (Vortigern) ने एँग्लो सेक्सन जाति के एक दल को जिसे जूट्स (Jutes) कहते है, इस बात की सहायता के लिए बुलाने के लिए प्रार्थना की कि वह आकर

उनको पिक्ट स्काट लोगों से बचाए, सन् ४४६ ई० मे जूट जाति के दो सरदार होर्सा (Horsa) और हेनजेस्ट (Hengest) अपनी सेनाएँ लेकर आये और पिक्ट तथा स्काट लोगों को देश से बाहर निकालने मे सफल हुए, लेकिन वापिस जाने के वजाय उन्होंने वोर्टी जर्न को पराजित किया और ब्रिटिश टापुओं मे थेनेट (Thanet) पर अपना अधिकार कर लिया और जूट लोगों ने ब्रिटेन लोगों को भगाना आरम्भ कर दिया और स्वयं इस टापू मे आबाद हो गये। २५ साल के अन्दर ही उन्होंने केन्ट पर भी अपना अधिकार जमा लिया और उसके बादशाह वोर्टी जर्न और वहाँ के निवासी ब्रिटेन लोगों को निकाल कर बाहर भगा दिया।

अँग्रेजों का टापू में फैलना — जूट जाति की सफलता को देखकर उनकी समानता की अन्य जातियों अर्थात् एंगिल्स (Angles) और सेक्सनों (Saxons) ने भी ब्रिटिश टापुओं पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया और वहाँ पर बल पूर्वक आबाद हो गये। जूट, ऐंगिल्स, और सेक्सन ये सब जातियाँ ट्यूटानिक वंश (Teutonic Race) मे से थी। इनका असली देश डेनमार्क (Denmark) और जर्मनी (Germany) उस काल में उजाड़ होने के कारण इन लोगों ने ब्रिटानियाँ की उपजाऊ भूमि पर आबाद होना अच्छा समझा। जूट लोगों के बाद पहलेपहल सेक्सन लोगों ने आक्रमण किया और ससैक्स (Sussex) पर अपना अधिकार जमा लिया और अपना राज्य स्थापित कर लिया। उसके बाद एंगल लोगों ने आक्रमण किया और अपने तीन राज्य स्थापित किये।

(१) नोर्थमब्रिया (Noithumbiia)

(२) मर्सिया (Meicia)

(३) पूर्वी एंगलिया (Eastern Anglia) ये तीनों जातियाँ-जूट, एंगल और सेक्सन वास्तव में एक ही जाति में से थीं और अब एक ही टापू में रहने के कारण इनमे अधिक हेलमेल होगया यहाँ तक कि अब उनमें कोई अन्तर नही रहा। इन्हीं तीनों जातियों के परस्पर समिश्रण से अंग्रेज बने, जो उसी समय से बराबर इस टापू में आवाद है।

इन तीनों जातियों ने लगभग १५० वर्ष के अन्दर प्राचीन ब्रिटेन जाति को टापू के पूर्वी और दक्षिणी भागों से निकाल वाहर किया और वहाँ स्वयं अपना अधिकार जमा लिया लेकिन इस बीच में कई बार बड़े-बड़े युद्ध भी हुए।

ऍग्लो सेक्सन सभ्यता—जूट,एंगल और सेक्सन जातियों से मिलकर, जो जाति बनी उसका नाम ऍग्लो सेक्सन है। ये लोग रोमन लोगों के समान सभ्य नहीं थे। उनकी सभ्यता देहाती थी और वे लोग देहाती जीवन ही व्यतीत करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि रोमन काल के शहर धीरे-धीरे अब उजाड़ होगये, क्योंकि वहाँ अब कोई नहीं रहता था। ये लोग व्यापार भी पसन्द नही करते थे। ये लोग ईसाई मत के अनुयायी नहीं थे। ये वुडन (Woden) और थौर (Thor) आदि जर्मनी के देवताओं की पूजा करते थे। इस कारण से ईसाई मत भी इंग्लैण्ड से विलीन हो गया। इस प्रकार रोमन सभ्यता के अवशेष चिन्ह भी सर्वदा के लिए

लोप हो गये और एक नवीन प्रकार की सभ्यता आरम्भ हुई, जो एँग्लो सेक्सन सभ्यता (Anglo-Saxon Culture) के नाम से प्रसिद्ध है। वर्तमान अंग्रेज़ी भाषा तथा अंग्रेज़ी शासन पद्धति की बुनियाद यह सभ्यता ही समझी जाती है।

एंग्लो सेक्सन काल में देश की दशा—प्राचीन अंग्रेज़ों को किसान और गड़रियों की जाति समझनी चाहिए। उनकी सभ्यता देहाती थी, इसलिए वे शहरों में रहना पसन्द नहीं करते थे। खेती उनका मुख्य व्यवसाय था और इसीलिए वे अधिकतर देहात में आबाद थे। उस समय के मकान बहुत ही सादा, साधारण लकड़ी के बने हुए होते थे। चिमनी और खिड़कियां, उस काल में धुँआ निकलने के लिए नहीं होती थीं केवल छतों में सूराख कर दिया जाता था और मकान मे सूर्य के प्रकाश के आने का केवल यह प्रबन्ध था कि दीवारों में स्थान-स्थान पर सूराख छोड़ दिये जाते थे। कपड़े भी बहुत साधारण होते थे और घरों में स्त्रियां ही चर्खे पर सूत या ऊन कात कर कपड़ा आदि तैयार करने का प्रबन्ध कर लेती थीं।

इस काल में मुकद्दमेबाज़ी और सज़ा देने का नियम नहीं था। अपराधों का दण्ड केवल जुर्माने से वसूल किया जा सकता था। दण्ड धन (Wergild) उस धन को कहते थे, जो अपराध करनेवाला या वध कर्त्ता के द्वारा घायल या वध किये व्यक्ति के वय और अपने अपराध की गुरुता के विचार से वध किये गये मनुष्य के सम्बंधियों को दिया जाता था। कोई अदालती कार्यवाही नहीं होती थी। मुकद्दमे शपथों

के द्वारा तय होते थे। अतएव उस काल में ज़मीदार होना ही स्वतन्त्रता का मुख्य चिन्ह था, क्योंकि केवल जमीदारों ही के विषय में विश्वास के साथ यह कहा जा सकता कि अगर उन्होंने कोई अपराध किया तो उनसे उसका जुर्माना सरलता पूर्वक वसूल हो सकता है। जिनके पास भूमि नहीं होती थी, उनको किसी जमीदार के निरीक्षण में रहना पड़ता था, जो उनकी नेक चलनी के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता था। प्रजा की दो मुख्य श्रेणी होती थीं। एक ऊँची श्रेणी की प्रजा जो कि सरोल या चर्ल (Cerol or Churl) कहलाती थी, जिसमें केवल जमीदार ही शामिल हो सकते थे। इस श्रेणी के मनुष्यों में ठेगस (Thegus) लोग भी शामिल थे। ये लोग आरम्भ मे केवल सिपाहिओं की हैसियत रखते थे, लेकिन बाद में उनका पद अमीरों का-सा हो गया। उनको बादशाह की ओर से कुछ भूमि मुफ्त दी जाती थी। सबसे नीची श्रेणी गुलामों (Slaves or Sheows) की समझी जाती थी। ये गुलाम अधिकतर टापू के प्राचीन पराजित किये हुए निवासी अर्थात ब्रिटेन जाति के होते थे और उनके अतिरिक्त ऋणी और अपराधी लोग भी कभी-कभी दन्ड के रूप मे इसी श्रेणी में शामिल कर दिये जाते थे।

बादशाह अर्थात् जाति का नेता—बादशाह जाति का नेता होता था और उसका कर्तव्य यह होता था कि प्रजा की रक्षा करे और सेना का सेनापति बनकर शत्रु का सामना करने के लिए युद्ध क्षेत्र में जाये। बादशाह का पद वास्तव में प्रजा के निर्वाचन पर आश्रित था। मगर अधिकतर बादशाह वैसेक्स (Wessex) के

राजवंश में से ही निर्वाचित किये जाते थे। बादशाह की मृत्यु पर उसके बड़े लड़के को प्रायः उसका उत्तराधिकारी नियुक्त किया जाता था मगर अगर वह कम आयु का हो अथवा अयोग्य हो तो राजवंश के किसी दूसरे मनुष्य को, प्रायः राजा के भाई को ही बादशाह निर्वाचित कर लिया जाता था।

प्राचीन पार्लियामेन्ट अथवा 'विटन—(Witan) बादशाह को राज्य के कामों मे विटन जी मूट (Witenagimoot) से सहायता लेना और उसकी सलाह मानना आवश्यक था। विटन को वर्तमान पार्लियामेन्ट का प्राचीन रूप समझना चाहिए। आज कल के हाउस आफ़ कामन्स की तरह बादशाह था उसके मेम्बरों का चुनाव लोग स्वयं नहीं करते थे, किन्तु उसका रूप इस समय के हाउस आफ़ लार्डस की तरह था। बादशाह उसके मेम्बरों का निर्वाचन स्वयं ही करता था। उसकी बैठकों मे राज्य के मुख्य कार्यकर्ता, नवाब और जमींदार, बड़े पादरी, बादशाह के रिश्तेदार आदि शामिल होते थे। विटन प्रत्येक प्रकार के प्रबन्ध बादशाह की सहायता से करती थी वही बादशाह को गद्दी पर बिठाती और वही गद्दी से उतारती थी। उसी की सहायता से बादशाह क़ानून बनाता था और प्रजा की उन्नति के लिए विभिन्न प्रकार का कर लगाता था। युद्ध-सन्धि की आज्ञाए भी वहीं से जारी की जाती थीं, जागीरें दी जातीं थीं। पादरी लोगों की नियुक्ति का अधिकार भी उसी को था। योग्य और शक्तिशाली बादशाहों पर विटन का अधिक दबाव रहना कठिन था, मगर तो भी वह शासन-प्रबन्ध का एक मुख्य भाग समझी जाती थी।

शासन प्रबन्ध का वर्णन—शासन-प्रबन्ध के कामों के लिए देश कई प्रान्तों में विभाजित था। प्रान्त के लिए काउन्टी (County) अथवा शायर (Shire) शब्द का प्रयोग होता था। प्रान्त का प्रबन्ध प्रान्त की सभा (Countymoot or Shiremoot) करती थी और उस सभा का प्रधान शेरिफ़ (Sheriff) कहलाता था। सभा में सब एल्डरमैन (Elderman) बड़े पादरी, अफ़सर, अमीर, जमीदार और हर एक शहर के पादरी जमा होते थे। उस सभा को बहुत अधिक अधिकार प्राप्त थे। प्रान्त की सभा न्याय करने के लिए सबसे बड़ी अदालत समझी जाती थी और बड़े अपराधियों को सज़ा देने तथा जायदाद वग़ैरा का फ़ैसला करने का अधिकार केवल उसीको था प्रत्येक प्रान्त में कई ज़िले थे, जो हन्ड्रैड (Hundred) कहलाते थे और उनका प्रबन्ध जिले की सभा (Hundred moot) करती थी, जिसमें कि प्रत्येक शहर के जो कि उस जिले में होता था, प्रतिनिधि और बड़े जमीदार शामिल होते थे। इस सभा को साधारण अपराधों की सजा देने का अधिकार प्राप्त था। यह आरम्भ की अदालत थी और किसी बड़ी अदालत में जाने से पहले उसमें जाना आवश्यक था। हर एक शहर में एक नागरिक सभा (Town moot) होती थी, जो नगर का प्रबन्ध करती थी और जिसमें नगर के प्रत्येक निवासी को शामिल होने का अधिकार था।

अपराधों का दण्ड—अपराधों का दण्ड देने की रीति बड़ी विलक्षण थी। अपराधी अपने मित्रों और प्रिय लोगों को बुलाकर क़सम खिलवाता था कि वह निरपराध है तो उसको छोड़ दिया

जाता था, क्योंकि वे लोग क़समों पर विश्वास करते थे। इस तरीके को शपथ-शुद्धि (Conpurgation) कहते थे। वरना दूसरा ढंग यह था कि अपराधी को गरम कोयलों पर या अन्य किसी गरम चीज पर चलना या खौलते हुए पानी मे हाथ डालना पड़ता था और उसका निरपराधी सिद्ध होना इस बात पर आश्रित होता था कि उसके घाव तीन दिन में अच्छे हो जाते हैं या नहीं। इस तरीके को प्राकृतिक साक्षी प्रणाली (Ordeal System) कहते थे। प्रत्येक अपराध में यहाँ तक कि हत्या के दण्ड मे भी जुर्माना वसूल किया जाता था, जिसकी मात्रा उस मनुष्य की हैसियत-अनुसार ही होती थी, जिसको उस अपराध से हानि पहुँची हो। यह धन दण्ड (Wergild) कहलाता था।

सेना—इस समय स्थायी सेना का प्रबन्ध नहीं था। देश के समस्त निवासियों को सैनिक शिक्षा लेनी पड़ती थी और विपत्ति के समय उन्हीं निवासियों की सेना (Militia) से काम लिया जाता था बादशाह के कुछ मुख्य सरदार (King's Thegus) भी उसमें होते थे, जिनको थोड़े से अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित नवयुवक तैयार रखने पड़ते थे। समुद्री सेना उस समय बिलकुल नहीं थी।

चौथा अध्याय

ईसाई मत का इंग्लैण्ड में प्रचार

अंग्रेजों का प्राचीन मत—प्राचीन अंग्रेज़ नास्तिक (Heathen) थे और देवी देवताओं की पूजा करते थे। रोमन जाति के शासन काल में ब्रिटेन में ईसाई मत की चर्चा फैली, लेकिन सन्तोषजनक प्रचार का प्रबन्ध न होने से शीघ्र ही इंग्लैंड देश में से ईसाई मत का नामो निशान तक मिट गया।

अगस्टाइन द्वारा ईसाई मत का प्रचार—सन् ५९७ ई० में ग्रीगोरी पोप बन गया और उसके पोप बनने पर उसने ईसाई मत के प्रचार के उद्देश्य से अगस्टाइन नामी पादरी को इंग्लैंड भेजा। अगस्टाइन सन् ५९७ ई० में कैण्ट (Kent) के स्थान पर पहुंचा जहाँ का एथिलबर्ट (Ethelbert) था, जिसने स्वयं और उसकी अधिकतर प्रजा ने ईसाई मत स्वीकार कर लिया और उसने कैण्टर-बरी (Canterbury) में एक गिरजाघर बनवाया। इस गिरजाघर का इंग्लैंड में बड़ा भारी मान है और उसका पादरी इंग्लैंड के समस्त गिरजाघरों का धर्म गुरु माना जाता है। एथीलबर्ट ने अपनी पुत्री का विवाह नार्थमब्रिया (Northumbria) के बादशाह एडविन (Edwin) के साथ कर दिया। वह पुत्री एथिल बर्गा (Ethelburga) ईसाई धर्म को मानने वाली थी। उसके साथ

उसके पिता ने अगस्टाइन के साथी पादरी पालीनस (Poulinus) को भेज दिया। उसने एडविन को ईसाई बनाया और नार्थमब्रिया में ईसाई मत का प्रचार किया। लेकिन कुछ समय बाद एडविन और मर्सिया (Mercia) प्रान्त के राजा पेण्डा (Penda) के बीच युद्ध छिड़ गया। एडविन लड़ाई मे मारा गया और सन् ६३३ ई० में नार्थमब्रिया का राज्य भी पेण्डा ने अपने अधिकार में कर लिया। इससे ईसाई मत को बहुत हानि पहुंची, क्योंकि वह राजा ईसाई मत का कट्टर विरोधी था, लेकिन कुछ समय बाद वह खुद ही लड़ाई में मारा गया और तब ईसाई धर्म का विरोध करनेवाला कोई नहीं रहा।

सातवीं शताब्दी में उत्तरी प्रान्त में इस मत का प्रचार दूसरे ढंग से हुआ। कुछ पुराने ब्रिटेन के ईसाई आयरलैंड और स्काटलैंड में आबाद हो गये थे। नार्थमब्रिया के शासक आस वोल्ड ने आयोना (Iona) टापू से इस मत के प्रचार के लिए एडन (Aidan) नाम का पादरी बुलाया और उसने नार्थमब्रिया में नये सिरे से ईसाई मत का प्रचार प्रारम्भ किया। कुछ समय बाद मर्सिया के निवासियों ने ईसाई मत को स्वीकार कर लिया और धीरे-धीरे यह मत सन् ६६४ ई० तक समस्त ब्रिटेन में फैल गया।

पांचवां अध्याय

वैसेक्स के राजा का समस्त देश पर शासन

अल्फ्रेड महान्—सातवीं शताब्दी के आरम्भ में देश सात राज्यों में बटा हुआ था, जिनमें से नार्थमब्रिया, मर्सिया और वैसेक्स ये तीन मुख्य रियासतें थीं। ये आपस मे एक दूसरे से युद्ध करतो रहती थीं और जिसकी शक्ति अधिक होती थी उसके शासक को दूसरी रियासतें अपना बादशाह स्वीकार कर लेती थीं। पहले-पहल नार्थमब्रिया (Northumbria) के बादशाह ने दूसरी रियासतों पर अपना प्रभाव जमा लिया और फिर मर्सिया (Mercia) के बादशाह ने। अन्त में वैसेक्स (Wessex) के शासक एगबर्ट (Egbert) ने अपनी अपनी शक्ति बढ़ाली और समस्त देश ने उसको अपना बादशाह स्वीकार कर लिया। इसको ही संयुक्त इंग्लैंड का पहला बादशाह समझना चाहिए। इंग्लैंड के वर्तमान सम्राट् उसीके वंश में से है।

एगबर्ट का शासन काल सन् ८०२ से ८३६ ई० तक—एगबर्ट ने मरने से पहले कैण्ट (Kent), ससेक्स (Sussex) एसेक्स (Essex), मर्सिया (Mercia) और नार्थम ब्रिया (Northumbria) को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया था। उसकी राजधानी विनचेस्टर (Winchester) थी। उसके मरने के बाद

उसका राज्य उसके दो लड़कों में विभाजित कर दिया गया। एक लड़के को, जिसका कि नाम एथिलवुल्फ (Ethelwolf) था, उसको वैसेक्स मिला। उसने सन ८३९ से ८५९ ई० तक राज्य किया। अब इंग्लैंड के लिए एक नया दुश्मन पैदा होता है, अर्थात डेन्स (Danes) लोगों का आक्रमण आरम्भ हुआ।

डेन लोग (Danes)—एगवर्ट के शासन काल के कुछ समय पूर्व से इंग्लैंड पर एक और जाति के लोगों के आक्रमण आरम्भ हुए। ये नये आक्रमणकारी डेनमार्क, नारवे और स्वीडन के निवासी थे। अपने देश में अधिक पैदावार न होने के कारण से उन्होंने दूसरे देशों पर लूटमार करने के उद्देश्य से आक्रमण करने आरम्भ किये। इसी उद्देश्य से उन्होंने इंग्लैंड के समुद्री किनारे पर भी आक्रमण किये। प्रारम्भ में तो वे केवल लूटमार कर वापिस चले जाते थे, वाद मे उन्होंने यहाँ पर आवादी करना आरम्भ कर दिया और उसके बाद उन्होंने देश को विजय कर लिया। इनका सबसे पहला आक्रमण सन् ७८९ ई० मे इंग्लैंड के पूर्वी किनारे पर हुआ। उसके वाद उनके लगातार आक्रमण होते रहे और सन ८८१ ई० में एगवर्ट के पुत्र के समय मे उन्होंने आक्रमण करके यहीं निवास करना आरम्भ किया। फिर कुछ साल के अन्दर ही नार्थमब्रिया (Northumbria) पूर्वी ऐंग्लिया (East Anglia) तथा मर्सिया (Mercia) को एक एक करके विजय करने और सेक्सन जाति को वेल्स की ओर भगाने में सफल हुए।

इंग्लैंड की दशा सन् ८३९ से ८८१ ई० तक—सन ८५९ ई० एथिल वुल्फ (Ethelwolf) का देहान्त होगया। उसके

चार लड़के थे और उनमें सबसे छोटा एल्फ्रेड (Alfied) था। सन् ८६६ ई० तक दोनों बड़े लड़कों का देहान्त हो गया और उनके मरने के बाद एथिलरेड (Ethelred) गद्दी पर बठा। उसने सन ८६६ ई० ८७१ ई० तक राज्य किया। एथिलरेड और उसके छोटे भाई अल्फ्रेड दोनों ने डेन्स लोगों को मार भगाना चाहा लेकिन इसमें उनको सफलता प्राप्त नहीं हुई, बल्कि एथिलरेड सन ८७१ ई० मे डेन्स (Danes) के विरुद्ध लड़ाई में लड़ता हुआ मारा गया और उसके बाद उसका छोटा भाई अल्फ्रेड गद्दी पर बैठा।

अलफ्रेड का राज सिंहासन पर बैठना सन् ८७१ से ९०१ ई० तक—अल्फ्रेड (Alfied) को इँगलैन्ड के प्रसिद्ध और यशस्वी शासकों में एक ऊँचा दरजा दिया गया है। अल्फ्रेड इँगलन्ड के इतिहास में अल्फ्रेड महान् के नाम से प्रसिद्ध है। दूसरे किसी अंग्रेज़ी शासक को इंगलेन्ड के इतिहास में इतना सम्मान नहीं दिया गया। देश की रक्षा के लिए उसने एक जहाज़ी बेड़ा बनाया और एक सेना तैयार की। जिसे मिलिसिया (Militia) कहा जाता है। उसको बालकपन ही से विद्या से प्रेम था और वह अपने समय का एक महान् विद्वान था। दूसरे विद्वानों का आदर भी खूब करता था। उसने अपनी प्रजा को सभ्य शिक्षित बनाने के लिए शिक्षा का प्रचार किया। उसने देश के व्यापार का विस्तार किया। वह स्वयं पवित्र हृदय, सादगी पसन्द और प्रजा का सच्चा हितैषी था। उसने प्रजा की भलाई के लिए उत्तम दर्जे के क़ानून बनवाये। वह एक योग्य राजनीतिज्ञ और युद्धविद्या में बहुत निपुण था।

अल्फ्रेड और डेन्स—इस समय इंगलेन्ड पर लगातार डेन्स (Danes) लोगों के आक्रमण हो रहे थे। अल्फ्रेड का बड़ा भाई भी उनसे लड़ते हुए लड़ाई में ही मारा गया था और राज-सिंहासन पर बैठते ही अल्फ्रेड को भी डेन्स का सामना करना पड़ा। एक बार डेन लोगों को उसने भगा दिया, लेकिन सन् ८७७ ई० में एक डेनिस सरदार गुटरम (Guthrum) की सेना ने उसको चैपिनहम (Chappenham) के किले में घेर लिया और बड़ी मुसीबतों के बाद वह अपने कुछ राजभक्त साथियों के साथ वहाँ से छिप कर भागा और एक टापू मे जाकर शरण ली और कुछ समय तक वहीं पर छिपा रहा, लेकिन वह निराश नहीं हुआ। उसने वहाँ एक सेना तैयार की और एक रात जबकि डेन लोग तैयार नहीं थे, अंधेरे में अकस्मात् उनपर आक्रमण कर दिया। एडिंगटन (Edington) के स्थान पर उसने उनको पराजित किया। अन्त में गुटरम उससे संधि करने पर मजबूर हुआ।

वेडमोर की संधि ८७८ ई०—वेडमोर (Wedmore) के स्थान पर सन् ८७८ ई० में संधि हुई, जिसके अनुसार इंगलैन्ड का उत्तरी और पूर्वी भाग गुटरम को मिला और वैसेक्स और मर्सिया का पच्छिमी भाग अल्फ्रेड के अधिकार में रहा। लन्दन भी अल्फ्रेड के हिस्से में आया। इसके अतिरिक्त गुटरम और उसके साथियों ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया। अब ये डेन लोग अंग्रेज़ों से मिलजुल कर रहने लगे और अंग्रेज़ी भाषा बोलने लगे।

अल्फ्रेड के सैनिक सुधार और समुद्री शक्ति की स्थापना—देश को भविष्य में शत्रुओं से सुरक्षित रखने के लिए उसने सेना में बहुत से सुधार किये और उसकी शक्ति को खूब बढ़ाया। सेना का समुचित प्रबंध किया गया। ग्रामों के मुखिया (Ealdormen) बादशाह के सरदार हो गये। जिन लोगों ने लड़ाई में बादशाह की सहायता की थी, उनको रुपया और जागीर दीगई। ये लोग थेन्स (Thanes) कहलाते थे और युद्ध के समय वे बादशाह की सहायता किया करते थे। डेनों के आक्रमणों के भय से बहुत से लोग शहरों में आबाद हो गये। शहरों की मरम्मत कराई गई और नये शहर भी बनवाये गये। शहरों की रक्षा के लिए थेन लोग वहाँ अपने सिपाही रखते थे। अल्फ्रेड ने कई किले भी बनवाये, लेकिन मुख्य सुधार जिसके लिए वह बहुत प्रसिद्ध है, यह था कि उसने सबसे पहले यह अनुभव किया कि इंगलैण्ड के लिए यही हितकर है कि वह अपनी समुद्री शक्ति बढ़ाए ताकि अगर डेन लोग इंगलैन्ड पर फिर आक्रमण करें तो उनका सामना स्थल के बजाय समुद्र पर ही किया जाये। इसलिए उसने बड़े-बड़े जहाज बनवाए और मल्लाह बनने के लिए अपनी प्रजा को खूब प्रोत्साहन दिया। इसका फल यह हुआ कि बहुत जल्दी ही इंगलैन्ड के लोग अच्छे मल्लाह बन गये और जहाज़ी बेड़ा जिसको अल्फ्रेड ने बनवाया था और उसके उत्तराधिकारियों ने बढ़ाया था, वही इंगलैन्ड का सबसे बड़ा सहायक और रक्षक (Safeguard) सिद्ध हुआ।

अल्फ्रेड और डेनों का दुबारा आक्रमण— इन सब सुधारों का फल यह हुआ कि अल्फ्रेड की सेना की शक्ति इतनी अधिक होगई कि उसके राज्य के अन्तिम काल में जब डेन लोगों ने फिर आक्रमण किया तो अल्फ्रेड की सेना ने उनका अच्छी तरह से सामना किया। उनकी सेना को हरा दिया और उनके जहाजी बेड़े को नष्ट भ्रष्ट कर दिया, तब सन ८९७ ई० मे वे नारमंडी वापिस चले गये।

कानून और गिरजाघर का सुधार—इसके बाद अल्फ्रेड ने देश में शान्ति स्थापित रखने के लिए कई सुधार किये। उसने आवश्यक क़ानून और नियम बनाए और एक ग्रंथ मे लिखवा दिये। उनके प्रयोग में लाने के लिए अदालतों में मुन्सिफों और सरकारी एहलकारों को नियुक्त किया।

उसने डेन लोगों के नष्ट किये हुए गिरजाघरों को फिर से स्थापित किया। बहुत से नये मठ भी स्थापित किये गये। उसने गिरजाघरों में योग्य और सदाचारी पादरियों को नियुक्त किया और ईसाई धर्म को मिटने से बचा लिया।

अल्फ्रेड के समय में विद्या की उन्नति—अपने बाल्यकाल से ही अल्फ्रेड विद्या का बहुत प्रेमी था और विद्वानों का आदर करता था। ऊँची श्रेणी के लोगों के लिए उसने स्कूल खोले। अल्फ्रेड ने स्वयं बहुतसी पवित्र तथा धार्मिक पुस्तकों का जैसे बीडा (Beda) का धार्मिक इतिहास (Ecclesiastical History) तथा डेन इतिहास आदि का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया और उसने

1st PERIOD—Saxon kings-long reign of Ethelred the unready (978-1016);

Short reign of Edmund Ironside(1016-17),ending in Danish Conquest & Danish Kings (1017-42)

2nd PERIOD—Saxon kings-long reign of Edwand the Confessor (1042-66);

Short reign of Harold(1066),ending in Norman conquest & Norman kings (1066).
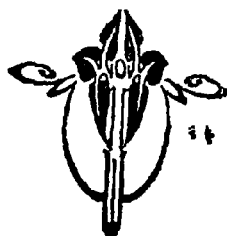
छठा अध्याय

डेन लोगों की इंगलैन्ड पर विजय सन् ९७५ से १०४२ तक:—सन् ९७९ ई० में एडवर्ड का वध कर डाला गया। यह वध एडवर्ड की सौतेली माता ने अपने लड़के एथिलरेड द्वितीय को राजगद्दी दिलाने के लिए कराया था, अतएव एडवर्ड के वध हो जाने पर एथिलरेड द्वितीय (Ethelred II) गद्दी पर बैठा, लेकिन यह एक निर्बल बादशाह निकला जो दूरन्देश नहीं था। इसलिए वह इतिहास में बेखबर अथवा कुविचार वाला पुरुष (Unready or the man of ill Counsel) के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि वह बिना सोचे-विचारे कोई काम कर डालता था और उसमें यह शक्ति बिलकुल नहीं थी कि बड़े-बड़े अर्ल (Earl) तथा एल्डरमैन (Ealdormen) जिनके कि हाथ में शासन का बहुत-सा काम था, उनपर शासन रख सके।

डेन लोगों का आक्रमण—इंगलैन्ड की यह दशा देखकर डेन लोगों ने फिर आक्रमण करने आरम्भ किए। इन दिनों डेन लोग केवल लुटेरे ही न थे किन्तु वे अब सुसज्जित सिपाही थे और डेनमार्क तथा नार्वे में अपने राज्य भी स्थापित कर चुके थे। इंगलैन्ड पर आक्रमण करने से उनका प्रयोजन लूटमार करने का नहीं था, बल्कि उन डेन लोगों की सहायता से जो कि वहां पर पहले से

आबाद थे, समस्त इंगलैन्ड को विजय करना था। अगर समस्त इंगलैन्ड एक होकर उनका सामना करता तो उनकी विजय सम्भव नहीं थी, लेकिन अब इंगलैन्ड में कोई प्रान्त Shire) एक दूसरे को सहायता देने को तैयार नहीं था और एथिलरेड में उनका सामना करने की शक्ति बिलकुल नहीं थी।

डेन्स और डैनीगैल्ड---एथिलरेड ने अपने सुयोग्य राजनीतिज्ञ मंत्री डन्सटन (Dunstan) को जोकि उसके बाप एडगर (Edger) के समय से प्रधान मंत्री था और कैन्टरबरी का आर्च विशप था, अपने पद से बर्खास्त कर दिया और उसके स्थान पर सिगरिक (Sigiric) को नियुक्त किया। उसकी सलाह से उसने इॅंगलैन्ड को डेन्स के आक्रमण से बचाने के लिए उनको धन देकर वापिस करने की नीति स्वीकार की। धन प्राप्त करने के लिए उसने अपनी प्रजा पर एक विशेष टैक्स लगा दिया, जिसको डैनीगैल्ड (Danegeld) कहते है, लेकिन उससे डेन्स के आक्रमण नहीं रुके और रुपया मिलने पर वे प्रति वर्ष और भी अधिक संख्या में अधिक शक्ति के साथ आने लगे। डेनीगैल्ड सबसे पहले सन् ९९१ ई० में लगाया गया था और उसके बाद सन् ९९४ में, फिर १००२ में और सन् १०११ मे लगाया गया था और सबसे अधिक आश्चर्य की बात यह है कि इस नीति को एथिल रैड की विटन (Witan) सभा ने भी स्वीकार कर लिया था, जिससे यह स्पष्ट प्रकट होता है कि बादशाह ही केवल कमज़ोर नहीं था, किन्तु समस्त जाति में उन दिनों अवनति और गिरावट उत्पन्न हो गई थी। यह नीति ख़राब थी और

दूसरी नीति जो उसने स्वीकार की, वह इससे भी अधिक खराब थी और एथिल रेड के लिए बहुत ही अधिक हानिकार सिद्ध हुई।

सेन्ट ब्राइस का वध—जबकि उसने नार्वे के नेता ओलफ़ (Olaf) और डेनमार्क के बादशाह स्वेन (Sweyn) से संधि कर ली थी तो सेन्टब्राइस के दिन सन् १०१२ ई० में उन समस्त डेन लोगों को जिनका कि वह वध करा सकता था, कत्ल करा दिया, यह वध "सेन्ट ब्राइस दिवस का वध" (Massacre of St. Brice Day) के नाम से प्रसिद्ध है। इन लोगों में जो इस निर्दय बध के शिकार हुए थे, डेन मार्क के बादशाह स्वेन की बहन, उसका पति और लड़का भी शामिल था।

स्वेन का आक्रमण और एथिल रेड का भागना—इसका बदला लेने के लिए सन १०१३ ई० में स्वेन बादशाह ने एक बड़ी भारी सेना के साथ इंग्लैण्ड पर आक्रमण किया, लेकिन एथिल रेड उसका सामना न कर सका और अपना देश छोड़कर नारमण्डी भाग गया और स्वेन इंग्लैंड का बादशाह बन बैठा, लेकिन स्वेन उस विजय के तीन सप्ताह बाद ही मर गया और उसका बेटा कैन्यूट (Canute) बादशाह हुआ। स्वेन के मरने के बाद एथिल रेड फिर वापिस इंग्लैंड आया, लेकिन दो साल बाद उसकी मृत्यु हो गई। इंग्लैण्ड का अधिकतर भाग डेन लोगों के अधिकार में आ गया और उन्होंने स्वेन के बेटे कैन्यूट को अपना बादशाह स्वीकार कर लिया, लेकिन लन्दन पर आरम्भ में उनका अधिकार नहीं होने पाया और

वहाँ पर एथिल रेड के लड़के एडमन्ड (Edmund) का राज्य कुछ समय तक रहा।

कैन्यूट और एडमन्ड का युद्ध (सन् १०१६-१७ ई०)—एडमन्ड अपने बाप की तरह कमज़ोर नहीं था। वह अपनी वीरता और योग्यता के कारण लोह वीर एडमन्ड (Edmund the Ironside) के नाम से प्रसिद्ध है। अब एडमन्ड और स्वेन के लड़के कैन्यूट के बीच परस्पर युद्ध छिड़ गया। इसी बीच में एथिल रेड का देहान्त हो गया और विसैक्स के निवासियों ने एडमन्ड का साथ दिया और कई लड़ाइयों में एडमन्ड की ही विजय हुई। लेकिन सन् १०१७ ई० में एडमन्ड के बध हो जाने पर सब लोगों ने कैन्यूट ही को अपना बादशाह स्वीकार कर लिया।

कैन्यूट सन् १०१६ से १०३५ ई० तक—यद्यपि कैन्यूट एक अन्य देश का निवासी था, मगर उसने अपने आपको अंग्रेजों का एक बुद्धिमान और न्यायप्रिय बादशाह सिद्ध किया। विसैक्स वंश के जितने बादशाह अभी तक हुए थे, उनमें यह सबसे बलवान् था, क्योंकि इंग्लैंड तो उनके राज्य का केवल एक प्रान्त ही था। वास्तव में तो वह नार्वे, डेनमार्क और इंग्लैंड तीनों देशों का बादशाह था।

उसका मुख्य उद्देश्य देश में शान्ति स्थापित करना था। अंग्रेज़ों को प्रसन्न करने और अपने आपको देश में स्थिर करने के लिए उसने इंग्लैंड के भूतपूर्व बादशाह एथिल रेड की विधवा पत्नी ऐमा

(Emma) के साथ विवाह कर लिया अंग्रेजों के पुराने अच्छे कानून प्रचलित किए। उसने अंग्रेजों और डेण्स दोनों के साथ समानता का व्यवहा. किया और कई अंग्रेजों को इंग्लैंड और डेनमार्क दोनों देशों में ऊँचे-ऊंचे पदों पर नियुक्त किया। डेन्स का वह जातीय बादशाह था और इस प्रकार अंग्रेज़ और डेन दोनों जातियाँ उससे प्रसन्न और सन्तुष्ट थीं। उसने वहुत शीघ्र यह समझ लिया कि वह अकेला इतने विशाल साम्राज्य पर शासन नहीं कर सकता, इसलिए उसने इंग्लैंड को चार बड़े प्रान्तों (Earldors) मे विभाजित कर दिया और हर एक प्रान्त का एक वड़ा शासक नियुक्त किया, जिसको अर्ल (Earl) कहते थे। कैन्यूट का काम राजनीति के विरुद्ध था, क्योंकि ये अर्ल बादशाह के तावेदार और आधीन नहीं रहते थे किन्तु उन्होंने अपने प्रान्तों में इस प्रकार शासन करना आरम्भ कर दिया मानों कि वे ही वहाँ के बादशाह हैं। इस प्रकार पुराने एंग्लो सेक्सन राज्य फिर उत्पन्न हो गये। सन् १०३५ ई० में चालीस वर्ष की आयु में कैन्यूट ने अपनी सांसारिक यात्रा समाप्त की और वह परलोक गामी हुआ।

कैन्यूट के उत्तराधिकारी सन् १०३५ से १०४२ तक—कैन्यूट (Canute) की मृत्यु के बाद उसके दो बेटे हैरोल्ड (Harold) तथा हार्डी कैन्यूट (Hardi Canute) बादशाह हुए, लेकिन जीवन ने उनका साथ न दिया और वे दोनों अतिशीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो गये। अब प्रजा ने इरादा किया कि अब से शासन की बागडोर किसी अन्य देशवासी के हाथ में न दी जाय इसलिए सन् १०४२

ई० में फिर प्रजा की सभा विटन (Witan) ने राजगद्दी एथिल रेड के बेटे एडमन्ड के सौतेले भाई पवित्र एडवर्ड (Edward the Confessor) के सुपुर्द की। इस प्रकार इंग्लैंड में डेन्स का शासन समाप्त हुआ और अल्फ्रेड की संतान देश पर दुबारा शासन करने लगी।

सातवाँ अध्याय

नार्मन जाति का प्रारम्भ।

पवित्र एडवर्ड सन् १०४२ से १०६६ तक—एडवर्ड बहुत सज्जन और अत्यन्त पवित्र विचारों का मनुष्य था और इसी कारण से उसको पवित्र एडवर्ड (Edward the Confessor) की उपाधि मिली थी। एडवर्ड की माँ (Emma) नारमंडी के ड्यूक रिचर्ड (Richard) की पुत्री थी। जिस समय वह गद्दी पर बैठा उसकी आयु ३५ वर्ष की थी। वादशाह होने से पूर्व लगभग २५ वर्ष स्वयं एडवर्ड ने नारमंडी में विताये थे, इसलिए उसको इंग्लैण्ड की अपेक्षा नारमंडी से अधिक प्रेम था और इसीलिए उसने नार्मन लोगों को इंग्लैण्ड में बुलाकर ऊँचे ऊँचे पदों पर नियुक्त किया जिससे नार्मन लोगों का वल और शक्ति अधिक बढ़ने लगी और अन्न लोगों को यह अन्देशा उत्पन्न हुआ कि इंग्लैण्ड का राज्य कहीं नार्मन लोगों के हाथ मे न चला जाय। यह देख कर देश में वड़ी सनसनी फैली जिससे देश मे दो बड़े दल स्थापित हो गये। एक तो नार्मनों और उनके साथियों का और दूसरा सेक्सनों और उनके साथियों का। इस सेक्सन पार्टी का नेता वेसेक्स का सूबेदार गोडविन (Earl of Godwin) था। उसने वादशाह की इस प्रकार को नार्मन पक्ष वाली नीति का सख्त विरोध किया और वादशाह तथा उसमें सन् १०५१ ई०

तक लड़ाई होती रही और अन्त मे सन् १०५१ ई० में गोडविन को देश से निर्वासित कर दिया गया।

नारमंडी के विलियम का इंग्लैण्ड में आगमन, सन् १०५१—पवित्र एडवर्ड जो इंग्लैण्ड का बादशाह था और नारमंडी के ड्यूक विलियम (William Duke of Normandy) निकट के रिस्तेदार थे। एडवर्ड के कोई सन्तान नही थी और उसको उसके बाद गद्दी पर बैठने वाला कोई दिखाई न देता था। सन १०५१ ई० में जबकि नार्मन दल का प्रभाव इंग्लैण्ड में उच्च शिखर पर पहुँचा हुआ था, उस समय ड्यूक विलियम स्वयं इंग्लैण्ड आया और ऐसा कहा जाता है कि उस बादशाह ने विलयम ड्यूक आफ़ नारमंडी के साथ वायदा किया कि बादशाह की मृत्यु के बाद इंग्लैण्ड की गद्दी का स्वामी विलियम ही होगा।

गोडविन का इंग्लैण्ड वापिस आना, सन् १०५२ ई०—इससे इंग्लैण्ड की प्रजा बादशाह एडवर्ड पवित्र के विरुद्ध हो गई और प्रजा ने अब पूर्ण रूप से गोडविन का पक्ष लिया। गोडविन अव फिर वापिस इंग्लैण्ड आया। अब उसकी इतनी अधिक शक्ति हो गई थी कि एडवर्ड ने उसके साथ सन्धि करली और उसने राज्य का शासन प्रबन्ध भी गोडविन को सौंप दिया। थोड़े दिन बाद जब गोडविन इस संसार से कूंच कर गया तो बादशाह ने उसके लड़के हैरौल्ड (Harold) को उसके समस्त अधिकार दे दिये और राज्य का प्रबन्ध भी उसके सुपुर्द कर दिया।

हैरोल्ड की नीति हैरोल्ड का मुख्य प्रयोजन यह रहता था कि मैं दूसरों का देश लेकर या तो अपने राज्य में मिला लूं या अपने बन्धुओं को वे देश राज्य करने को दे दूं। इसलिए उसने नोर्थमब्रिया (Northumbria) के सूबे (Earldom) पर अधिकार करके उसको अपने भाई टोस्टिग (Tostig) के सुपुर्द कर दिया। हालांकि नोर्थमब्रिया के अर्ल का बेटा मौजूद था, लेकिन नोर्थमब्रिया वालों ने उसका शासन स्वीकार नहीं किया और वहाँ पर कई विद्रोह हुए, इस लिए टोस्टिग (Tostig) को बादशाह के अपने पद से हटा दिया गया, इसलिए टोस्टिग अब हैरोल्ड का जानी दुश्मन बन गया और उसने विलियम और नार्वे के बादशाह दोनों से इंग्लैण्ड पर आक्रमण करने को कहा। उसके अतिरिक्त मर्सिया के सूबे पर स्वयं हैरोल्ड ने अधिकार कर लिया यद्यपि वहाँ के अर्ल के दो लड़के मौजूद थे। इसका फल यह हुआ कि लोग उसके दुश्मन हो गये। उन्होंने उसकी सहायता नही की, जबकि नार्मन लोगों ने इंग्लैण्ड पर आक्रमण किया।

तीसरे एक विपत्ति अकस्मात् उनपर यह आई कि एक दिन हैरोल्ड का जहाज़ नारमंडी के किनारे से टकराया और वह स्वयं गिरफ्तार करके विलियम के दरबार में लाया गया और तब विलियम ने उसे मजबूर करके उससे यह वादा करा लिया कि एडवर्ड के बाद वही इंग्लैण्ड का बादशाह बनेगा। सन् १०६६ ई० में पवित्र एडवर्ड मर गया और उसके मरने पर प्रजा की सभा (Witan) ने हैरोल्ड को गद्दी का स्वामी ठहराया।

हैरोल्ड और उसकी कठिनाइयाँ—हैरोल्ड ने गद्दी पर बैठते ही अपने को चारों ओर से कठिनाइयों से घिरा हुआ पाया। एडविन और मरकार (Edwin and Morcar) उससे द्वेष रखते थे, क्योंकि वह राज वंश में से नहीं था। टोस्टिग उसका भाई होते हुए भी यूरोप के कई देशों से इंग्लैण्ड पर आक्रमण करने के लिए षड्-यन्त्र रच रहा था और नारमंडी का ड्यूक विलियम इंग्लैण्ड पर आक्रमण करने के लिए सेना इकट्ठी कर रहा था।

टोस्टिग और नार्वे के बादशाह का इंग्लैण्ड पर आक्रमण—हैरोल्ड दक्षिण में शत्रु का सामना करने के लिए सेनाएँ इकट्ठी कर रहा था, इतने में उसको समाचार मिला कि टोस्टिग और नार्वे के बादशाह ने इंग्लैण्ड के उत्तरी भाग पर आक्रमण कर दिया है और यार्कशायर (Yorkshire) में वे उतर आये है। हैरोल्ड ने तुरंत उत्तर की ओर प्रस्थान किया और एक लड़ाई स्टेमफोर्डब्रिज (Stamford Bridge) में लड़ कर अपने भाई और नार्वे के राजा को पराजित करके कत्ल कर डाला। यह लड़ाई २५ सितम्बर सन् १०६६ ई० को हुई थी।

विलियम का इंग्लैण्ड पर आक्रमण, सन् १०६६ ई०—जब नारमंडी के ड्यूक विलियम को यह पता लगा कि विटन (Witan) ने अर्ल हैरोल्ड को अपना बादशाह निर्वाचित कर लिया है तो उसके क्रोध की कोई सीमा न रही। उसने एक जहाज़ी बेड़ा तैयार किया और एक बड़ी सेना के साथ इंग्लैण्ड पर आक्रमण कर दिया।

सैन लेक की लड़ाई, सन् १०६६ ई०--अभी हैरोल्ड विजय की खुशियाँ मना रहा था कि उसको समाचार मिला कि विलियम ने इंग्लैण्ड के दक्षिण भाग पर आक्रमण कर दिया है। हैरोल्ड यह समाचार पाते ही अपनी सेना को लेकर विलियम के मुकाबिले को तुरन्त चल दिया और दूसरे सरदारों को आज्ञा दी कि वे इसके बाद को आयें। ये दूसरे सरदार और खास तौर पर एडविन और मरकार (Edwin and Morcar) उससे द्वेष रखते थे। इसलिए वे तमाशा देखते रहे और उन्होंने आने मे बहुत देर लगाई। हैरोल्ड ने हेस्टिंगस (Hastings) से नौ मोल की दूरी पर दक्षिण में एक पहाड़ी पर अपनी सेना इकट्ठी की और फिर युद्ध मे वह बड़ी वीरता से लड़ा, लेकिन उसकी हार हुई और उसका अन्त हुआ; मैदान विलियम के हाथ रहा।

हैरोल्ड की पराजय का कारण वही है जो कि हिन्दुस्तान में पृथ्वीराज की पराजय का कारण है। अगर राजपूतों में मेल होता और वे सब मिलकर पृथ्वीराज को सहायता देते तो मुहम्मद गोरी पृथ्वीराज को कभी हरा नहीं सकता था। इसी प्रकार से अगर हैरोल्ड को उत्तरी और मध्य के इँगलैण्ड के निवासियों ने सहायता दी होती तो विलियम को विजय प्राप्त करना कठिन होता। इस प्रकार इतिहास हमको यह शिक्षा देता है कि देश को उन्नति के लिए एकता मुख्य वस्तु है। इँगलैण्ड में भी प्रारम्भ मे एकता नहीं थी जिस प्रकार से कि हिन्दुस्तान में प्राचीन काल से अभी तक एकता का अभाव चला आरहा है, लेकिन बहुत जल्द इँगलैण्ड वालों ने इस बात को

अनुभव कर लिया कि अगर देश में इस तरह की फूट रही तो देश हमेशा अन्य जातियों के आक्रमणों का शिकार होता रहेगा और दूसरी जातियों के आगे इँगलैन्ड वालों को सिर झुकाना पड़ेगा। इसलिए उस आक्रमण के बाद जब कभी इँगलैण्ड पर आक्रमण हुआ तो इँगलैण्ड वालों ने एक दिल होकर हमेशा दुश्मनों का मुक़ाबिला किया। इसका नतीजा यह हुआ कि हमेशा उनकी विजय हुई और वे लोग अपने देश में स्वतंत्र राज्य स्थापित करके दूसरे देशों का भी बहुत-सा भाग अपने अधिकार में करके उसपर राज्य कर रहे हैं। हिन्दुस्तान वालों ने यह पाठ अभी तक नहीं सीखा है और इसी लिए वे हानि उठा रहे हैं। सिकन्दर महान् के आक्रमण से लेकर अभी तक यदि ध्यान पूर्वक देखा जाय तो यह स्पष्ट प्रगट हो जायगा कि विदेशियों के आगे हमारी पराजय का मुख्य कारण आपस की फूट है, वीरता की कमी नहीं जैसा कि विचार किया जाता है। इस लिए अब भी अगर हमारे देश के लोग एकता के साथ और एक दिल होकर काम करें तो बहुत कुछ उन्नति हो सकती है।

आठवाँ अध्याय

इँगलैण्ड में नार्मन शासन

विलियम प्रथम (सन् १०६६ से १०८७ तक)

विलियम का बाल्य काल—विलियम सन् १०२७ ई० में उत्पन्न हुआ था, लेकिन जब वह केवल सात वर्ष का ही था तभी नार्मण्डी शासन का भार उसके ऊपर आपड़ा था। ऐसे बचपन के समय में बहुत कुछ गड़बड़ी का अन्देशा रहता है लेकिन विलियम एक जबर्दस्त आदमी सिद्ध हुआ, जिसने ये सब कुछ होते हुए भी अपने देश का अच्छा प्रबंध किया। सन् १०४७ ई० में जबकि उसकी डची (Duchy) के समस्त पूर्वी भाग मे विद्रोह हो गया तो उसने हिम्मत न हारी और फ्रांस के बादशाह की सहायता से सबको हराकर अपने आधीन कर लिया। धीरे-धीरे उसकी शक्ति बहुत बढ़ गई यहाँ तक कि उसने फ्रांस के बादशाह को भी हराकर संधि करने पर मजबूर किया। सन १०५१ ई० में एडवर्ड के समय में वह इँगलैन्ड भी आया था और चूँकि एडवर्ड के कोई सन्तान नही थी। इसलिए उसने ऐसा वादा भी किया था कि उसके बाद वही ईंगलैण्ड का बादशाह होगा। एडवर्ड के मरने के बाद उसने ईंगलैण्ड पर आक्रमण किया और १४ अक्टूबर सन् १०६५ ई० में हैरोल्ड को हराकर इंगलैण्ड का दक्षिणी और पूर्वी भाग उसने अपने अधिकार में कर लिया।

इँगलैण्ड की गद्दी पर उसका अधिकार—इँगलैण्ड की राजगद्दी के लिए विलियम ने दो दावे किये थे, एक तो यह कि पवित्र एडवर्ड ने उसको अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था। दूसरे मज़बूर होकर विटन (Witan) ने उसको अपना बादशाह स्वीकार कर लिया था, लेकिन वास्तव में अंग्रेज़ी राज्य सिंहासन उसको युद्ध में विजयी होने के कारण ही प्राप्त हुआ था और यही उसका अधिकार था। इसी कारण से उसको विजयी विलियम (William the Conqueror) भी कहते हैं।

इँगलैण्ड पर विजय, सन् १०६६ से १०७१ तक—हेस्टिंगस के युद्ध में विजय प्राप्त होने से इँगलैण्ड का केवल दक्षिणी और पूर्वी भाग विलियम के अधिकार में आया था। देश के शेष भाग पर अपना अधिकार स्थापित करने में विलियम को ५ वर्ष लगाने पड़े। उत्तरी और पश्चिमी भागों के शासकों (Earls) ने जिनकी स्वतंत्रता मे बाधा पड़ती थी, विद्रोह कर दिया। अगर वे पहले ही सब मिलकर हैरोल्ड का साथ देते तो विलियम को इँगलैण्ड पर कदापि विजय प्राप्त न होती। अब भी उनमें फूट काफ़ी थी और उन्होंने मिलकर उसका मुक़ाबिला नहीं किया। विलियम ने एक-एक करके सबको परास्त कर दिया और उनकी जायदाद ज़ब्त करके अपने नार्मन साथियों को देदी। इसी प्रकार जिन लोगों ने हैरोल्ड का साथ दिया था, उनकी भी जायदाद जब्त करके अपने साथियों मे विभाजित कर दीं। इस प्रकार समस्त इँगलैण्ड में नार्मन शासन स्थापित हो गया।

विलियम के दो उद्देश्य—विलियम को दो शक्तियों को अपने अधिकार में रखना पड़ा—एक तो नार्मन लोग दूसरे अंग्रेज। इसलिए उसके दो मुख्य उद्देश्य थे :—

(१) अंग्रेजों को पूरे तौर से आधीन रखना।

(२) इस बात की भी रोकथाम करना कि नार्मन सरदार जो उसके साथ आये थे और जिनकी वीरता के कारण उसको अंग्रेजों पर विजय प्राप्त हुई थी, वे इतनी शक्ति न पकड़ जाय कि वे उसके लिए भय का कारण बन जांय।

पहले उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसने निम्नलिखित उपाय काम में लाने स्वीकार किये :—

(अ) जागीरदारी की प्रथा (Feudal System)—उसने घोषणा कर दी कि वह इंग्लैण्ड का विजयी होने के रूप में वहां की समस्त भूमियों का स्वामी है और इस तरह उसने अंग्रेजी सरदारों की तमाम ज़मीनों को जब्त कर लिया। प्राकृतिक तौर पर अंग्रेज़ी सरदारों की राजनीतिक और सामाजिक शक्ति इससे कम हो गई। इन जब्त की हुई जमीनों को उसने नार्मन सरदारों को जागीरों के रूप में दे दिया। इन जमींदारों के लिए वेरन (Baron) का पद प्रयोग में आता था और वे नवाब अथवा मुख्य ज़मींदार (Tenant-in-Chief) कहलाते थे। यह जमीन इन जमींदारों को इस शर्त पर दी गई थी कि युद्ध के अवसर पर वे बादशाह की सहायता करेंगे। यह भी शर्त थी कि केवल ४० दिन ही के लिए हर एक

बैरन सेना इकट्ठी करेगा। और कुछ सेना हमेशा अपने पास आवश्यकता के लिए तैयार रक्खेगा। सिपाहियों की संख्या जायदाद के क्षेत्रफल पर आश्रित होती थी। मुख्य-मुख्य अवसरों पर नियत किये हुए नजराने पेश करने होते थे और साथ ही उनको यह शपथ लेनी पड़ती थी कि वे बादशाह के स्वामिभक्त रहेंगे।

ये बड़े सरदार अर्थात् (Tenant-in-Chief) लगभग इसी प्रकार की शर्तों पर अपनी ज़मीनें छोटे सरदारों को दे देते थे। इन छोटे सरदारों को माल गुजार (Tenants) कहते थे। जमीन को इस तरीके पर देने को "जगीरीदारी की प्रथा" (Feudal System) कहते थे। जिस तरह कि (Tenant-in-Chief) ने बादशाह से वादा किया था कि वे उसके स्वामिभक्त रहेंगे और उसकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझते थे, उसी प्रकार छोटे ज़मीदार अर्थात् (Tenants) बड़े ज़मीदार अर्थात् (Tenant-in-Chief) के हाथ में हाथ देकर आधीनता और स्वमिभक्ति का शपथ लेते और वादा करते थे कि वे अन्तिम श्वास तक उसके भक्त और सेवक रहेंगे, उसकी सेवा के लिए सिपाहियों की एक नियत संख्या उपस्थित करेंगे और युद्ध के समय उसकी ओर से लड़ेंगे। ये ज़मीदार काश्तकारी के लिए किसानों को ज़मीन दे दिया करते थे, जो सर्फ़ (Serf or Villeirs) कहलाते थे।

ज़मीदारों के अधिकार और काश्तकारों के कर्तव्य- ये किसान लोग स्वतन्त्र नहीं थे, लेकिन तो भी कई बातों में उनकी दशा गुलामों से बढ़कर होती थी। ये किसान (Villen or Serf)

अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दिला सकते थे और अपने स्वामी की इच्छा के विरुद्ध न तो लड़के बच्चों का विवाह कर सकते थे और न किसी 'प्रकार की रीति-रस्म पूरी कर सकते थे। उनको अपने स्वामी की नौकरी छोड़ने का अधिकार नहीं था। जिसके इलाके में वे पैदा हुए हों, वे जमींदार प्रायः काश्तकारों को ज़मीन इस शर्त पर देते थे कि उनको उसके बदले प्रति सप्ताह दो-तीन दिन अपने स्वामी की ज़मीन पर काम करना होगा। वह गाँव जिसमें जमींदार का मकान और उसकी अपनी जायदाद होती थी, वह मैनर (Manor) कहलाता था और हर एक मैनर में एक अदालत (Manorial Court) होती थी, जिसमे या तो खुद ज़मीदार या उसका कोई कारिंदा आसामियों के मामलों का फ़ैसला करता था। इस प्रबन्ध को जागीरदारी की प्रथा (Feudal System) कहते हैं।*

जागीरदारी प्रथा से हानि—जागीरदारी प्रथा मे सबसे बड़ा दोष यह था कि बादशाह को सैनिक सहायता के लिए हमेशा बड़े जमींदारों के आश्रय पर रहना पड़ता था। छोटे ज़मींदारों और मामूली लोगों का बादशाह से कोई सम्बन्ध नहीं था। वे बड़े जमींदार ही को अपना स्वामी समझते थे। जबतक बादशाह शक्तिशाली रहता था, बड़े

*विलियम के एक लड़के ने बैरनो और ज़मीदारो से यह समझौता किया कि अगर वे युद्ध के लिए सिपाही न दे सके, तो वे उसके बदले में धन दे दे ताकि वे स्वय सेना रख ले। इस प्रकार के धन को स्कटेज (Scutage or Shield Money) कहते थे।

ज़मींदार या वरन लोग उसकी आज्ञाओं का पालन करते, नहीं तो जब वे अवसर पाते बादशाह के विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर देते थे।

(ब) किलों का निर्माण—अँग्रेज़ों को भयभीत करने के लिए और उनके विद्रोहों को दबाने के लिए बादशाह विलियम ने बड़े-बड़े शहरों, बन्दरगाहों, राजमार्गों और प्रसिद्ध स्थानों पर किले निर्माण कराये और उनमें नार्मन सैनिक रख दिये ताकि आवश्यकता के समय वे अँग्रेज़ों के विद्रोह को दबा सकें। लन्दन का टावर (Tower of London) भी उसने उसी समय बनवाया था।

(स) करफ्यू घंटा—इन समस्त उपायों के करने पर भी विलियम को भय था कि कहीं लोग रात को जमा होकर उसके विरुद्ध षड़यन्त्र न रचें, इसलिए उसने आज्ञा दे रक्खी थी कि आठ बजे शाम को तमाम लैम्प और लालटेनें बुझा दी जाया करें। इस आज्ञा को कार्यरूप में परिणत करने के लिए देश के प्रत्येक भाग के गिरजा-घरों में एक घंटा (Curfew Bell) बजता था, जिसके बाद किसी स्थान पर भी किसी प्रकार का प्रकाश शेष नहीं रक्खा जाता था।

अपने दूसरे उद्देश्य को पूरा करने के लिए अर्थात् नार्मन सरदारों की शक्ति को कम करने के लिये उसने निम्नलिखित उपाय काम में लाने प्रारम्भ किये :—

(अ) विभिन्न भागों में बैरनों को जागीरें देना—जब विलियम नारमंडी का शासक था उसकी हैसियत फ्रांस के साधारण जागीरदार से कम न थी। इसलिए उसे अच्छी तरह मालूम

था कि जागीरदारी प्रथा के आधीन अमीर और रईस सरदारों की शक्ति कितनी ज़बरदस्त होती है। वे अगर विद्रोह करने पर तुल जायं तो राज्य का तख्ता पलटने में भी सफल हो सकते हैं। इन खतरों की रोकथाम के लिए उसने नार्मन वैरनों को एक ही जगह पर बहुत-सी जमीन जागीर के तौर पर नहीं दी ताकि वह ताक़त न पकड़ सकें। प्रत्येक वैरन की जागीर देश के विभिन्न भागों में जो एक दूसरे से बहुत दूर थे, फैली हुई होती थी। इसका परिणाम यह हुआ कि बादशाह के विरुद्ध विद्रोह का भय बहुत कम हो गया, क्योंकि जागीरदार के लिए यह बिल्कुल सम्भव नहीं था कि वह अपने आदमियों को एक विशेष केन्द्र पर इकट्ठा कर सके।

(घ) सैलिसबरी की शपथ १०८६ई०—जैसाकि ऊपर वर्णन किया गया है, जागीरदारी प्रथा में मुख्य जमीदार अपनी जमीने छोटे ज़मीदारों को दे दिया करते थे और उनसे शपथ लिया करते थे कि वे उनके स्वामिभक्त रहेंगे और आवश्यकता के समय उनकी सैनिक सेवा अपनी शक्तिभर करेंगे। इसका प्राकृतिक परिणाम यह था कि छोटे ज़मीदार अपने लिए अपने बड़े ज़मीदार की सेवा और भक्ति का दम भरते थे और आवश्यकता के समय उनकी सहायता करना अपना प्रथम कर्तव्य समझते थे और बादशाह के मुकाबिले में वे अपने स्वामी बड़े जमीदारों का साथ देना मुख्य समझा करते थे। इस ख़राबी को रोकने और वैरनों की शक्ति को कम करने के लिए, उसने सन १०८६ ई० में सैलिसबरी के स्थान पर तमाम बड़े ज़मीदारों (Tenants-in-Chief) और छोटे जमीदारों (Tenants)

और उनके कारिन्दों को इकट्ठा किया और उनसे शपथ ली कि वे सब बादशाह के स्वामि भक्त रहेंगे और अगर कोई बड़ा जागीरदार कभी बादशाह के विरुद्ध विद्रोह करेगा तो उसके अधीनस्थ उसका पक्ष लेने की बजाय बादशाह का पक्ष लेंगे। इस शपथ को "सैलिसबरी शपथ" (Oath of Salislbury) के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध किया जाता है।

विलयम का एक केन्द्रीय शासन स्थापित करना और अपने आप को एक तंत्री शासक बनाना—विलियम की इस प्रकार की नीतिसे नार्मन लोग अप्रसन्न होगये, क्योंकि वे इंग्लैण्ड में अपनी-अपनी छोटी-छोटी स्वतन्त्र रियासतें स्थापित करने की आशाएँ लेकर आये थे, लेकिन बादशाह की शक्ति और इन क़ानूनों से उनकी समस्त आशाओं पर पानी पड़ गया। उन में से दो बड़े सरदारों ने विद्रोह कर दिया। बादशाह ने जल्दी ही उस विद्रोह को शान्त कर दिया और एक सरदार की जागीर जब्त कर ली। बादशाह की शक्ति और भी बढ़ गई और अब अंग्रेजी प्रजा ने भी समझ लिया कि नार्मन जागीर दारों की अपेक्षा बादशाह उनके लिए अधिक हितकारी हो सकता है। जागीरदार लोग अंग्रेजों पर बहुत अत्याचार करते थे, लेकिन बादशाह ने उनके साथ अच्छा वर्ताव करके, उनको अपनी ओर मिला लिया। बादशाह जागीरदारों के अत्याचारों से अंग्रेज़ों को बचाने का हमेशा प्रयत्न करता था। इसका परिणाम यह हुआ कि जब कभी अवसर आया अंग्रेज लोग बादशाह की ओर से नार्मन ज़मीदारों के विरुद्ध लड़े और

इस प्रकार विलियम ने अपने को एक बहुत ही शक्तिशाली वादशाह वना लिया। जागीरदारों की शक्ति को कम करने के प्रयोजन से उसने अंग्रेजों की पुरानी जातीय सेना (Fyrd) को हमेशा तैयार रक्खा और पुरानी न्याय की अदालतों (Hundred Court and shire Court) को यथा पूर्व जारी रक्खा। उसने प्राचीन प्रजा की सभा विटन (Witan) को मिटाकर जागीरदारों की एक बड़ी सभा (Great Council) स्थापित की, जिसमें बड़े ज़मीदार, बड़े पादरी और छोटे जागीरदार सभी शामिल थे। यह कौंसिल राज्य के प्रबन्ध में वादशाह की सहायता करती थी, लेकिन पूरे तौर से उसके आधीन थी। इस प्रकार विलियम ने एक पूर्णरूप से केन्द्राधिकारी शासन स्थापित किया और साथ ही साथ अपने आपको एकतन्त्री स्वेच्छाचारी शासक भी वना लिया।

डूम्स डे वुक सन् १०८६ ई०—विलियम ने इस बात को मालूम करने के लिए कि उसके नये राज्य की आर्थिक और कृषि सम्बंधी दशा कैसी है और उससे कितना धन या कर वसूल हो सकता है, अपने कर्मचारियों को आज्ञा दी कि वे समस्त देश का दौरा करें और प्रत्येक मनुष्य की ज़मीनों, जानवरों, और मकानों की सूची तैयार करें। यह सूची बड़ी सावधानी से तैयार की गई और उन अंकों को, जो इस प्रकार से इकट्ठे किये गये थे, एक पुस्तक मे अंकित किया गया था, जिसको "अन्तिम निर्णय पुस्तक" या डूम्सडेवुक (Domes Day Book) कहते हैं। इस सारे परिश्रम से एक ओर तो यह लाभ हुआ कि वादशाह को प्रत्येक मनुष्य की हैसियत का

पता लग गया और उसने उनपर टैक्स लगाए। दूसरी ओर यह बड़ा लाभ हुआ कि आज हम इतने समय के पश्चात् भी विलियम के काल के इंगलैण्ड की दशा से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए इतिहासकारों के निकट यह पुस्तक इतिहास की सामग्री का एक बड़ा लाभदायक भंडार है।

TERRA WILLI DE BRAIOSE In Redinges hd.
xxv Wills de Braiose ten de rege Suecote Brictuard
tenuit de rege E. Tc se defd p ii hid modo p una hida.
Tra e iii car. In dnio e una 7 v uitti 7 viii bord cu ii
car. Ibi molin de xviii solid 7 piscaria de L denar.
Valuit iiii lib modo c solid

TERRA WILLELMI LOVET In Lucchi hd.
xxvi Wills Louet ten de rege Bertone. Tou tenuit de rege E
in alod. Tc se defd p viii hid modo p i hida 7 una v.
Tra e v car. In dnio dim car 7 iiii uitti 7 iii bord cu ii
car. Ibi ii serui 7 molin de xii solid 7 iiii ac pa.
Silua de v porc. Valuit viii lib 7 post c sol. modo lxx sol.
Ipse W ten Auuorde. Tou tenuit. In Bechetrees hd.
de rege E in alod p ... Tc 7 m p iii hid 7 una v.
Tra e ii car. Ibi sunt ii uitti 7 vii bord cu ii car
7 xiii ac pa. Silua de clausura. Valuit xl sol modo xxx solid.
Ipse W ten Morcone. Tou tenuit. In Bluetberie hd.
de rege E. Tc p v hid m p ii hid 7 dimid. Tra e
iiii car. In dnio e una 7 iii uitti 7 iiii cot cu i car
7 dimid. Ibi molin de xii sol 7 vi den 7 xl ac pa.
Valuit vi lib 7 ualet quis redd vii lib

Part of domes day book

विलियम विजयी और चर्च—विलियम के आगमन से पहले इंगलैण्ड के गिरजाघरों की दशा कुछ अच्छी न थी। उसने उनमें बहुत से परिवर्तन किये जो निम्नलिखित प्रकार से है :—

(१) धीरे-धीरे अंग्रेज़ों के बजाय नार्मन लोगों को, चर्च के आसामियों पर नियुक्त किया। सन् १०७० ई० में लैन फ्रैन्क (Lanfranc) को कैन्टरबरी का आर्च विशप अर्थात् बड़ा पादरी नियुक्त किया।

(२) सैक्सन काल में अदालतों में पादरी और सरकारी कर्मचारी, दोनों मिलकर न्याय किया करते थे। उसने चर्च को अपनी अलग धार्मिक अदालतें स्थापित करने की आज्ञा देदी, जिनमें पादरियों के मुकद्मों का फैसला होता था।

(३) चर्च को वह अपने आधीन रखना चाहता था इसलिए पादरियों को वह स्वयं ही नियुक्त करता था और वे पादरी उसकी स्वीकृति के बिना कोई भी क़ानून नहीं बना सकते थे। पोप के हस्ताक्षेप को रोकने के लिए उसने यह आदेश दिया कि इंगलैण्ड में उसकी स्वीकारी के बिना पोप के किसी आज्ञा पत्र (Bull) को कार्य रूप में न लाया जाय। बहुत से गिरजाघर और महन्तों के मठ भी निर्माण कराए गये।

इन सुधारों से देश की सभ्यता में भी बड़ी उन्नति हुई। इस प्रकार उसने इंगलैन्ड की धार्मिक अवस्था को सुधारा। धर्म को राजनीति से अलग किया और अपना प्रभाव बढ़ाया।

नया जंगल—विलियम की शिकार में बहुत रुचि थी, इसलिए उसने इंगलैण्ड के दक्षिण में एक जंगल को अपने शिकार खेलने के लिए नियत किया। उस जंगल की रक्षा के लिए, उसने विशेष

क़ानून बनाये। उस शाही जंगल में उसकी आज्ञा के बिना और कोई शिकार नहीं खेल सकता था।

विलियम की मृत्यु और योग्यता—सन् १०८७ ई० में इस प्रसिद्ध और महान् बादशाह का देहावसान हुआ। विलियम एक उच्च कोटि का सिपाही और जनरल था। वह बहुत चतुर और बुद्धिमान् शासक था और जो काम करता था, उसको बड़े धैर्य्य के साथ स्थिर चित्त होकर पूरा किया करता था। उसने अपने बाहुबल से इँगलैण्ड को न केवल विजय किया किन्तु अपनी बुद्धिमत्ता और शक्ति से अपने राज्य को खूब ही दृढ़ भी बनाया। इँगलैन्ड में शान्ति स्थापित की। यद्यपि उसने अँग्रेज़ों की ज़मीन जब्त कर ली और उन ज़मीनों को नार्मन जागीरदारों को दे दिया, फिर भी उसने नार्मन जागीर-दारों को इतनी ताक़त न पकड़ने दी कि वे उसकी अँग्रेजी प्रजा पर अत्याचार कर सकें। चर्च में सुधार करके, उसने इँगलैण्ड की धार्मिक अवस्था को बहुत कुछ सुधारा। इसमें सन्देह नहीं कि वह सख्त और कठोर शासक था; लेकिन उसने अपनी प्रजा पर न्याय से राज्य किया। केन्द्रीय शासन को मज़बूत करना और देश मे शान्ति रखना, उसकी शासननीति का रहस्य था और हम निसंदेह कह सकते है कि वह ऐसा करने में पूर्ण रूप से सफल हुआ।

नवाँ अध्याय

विजयी विलियम के उत्तराधिकारी

विलियम द्वितीय (सन् १०८७ से ११०० ई० तक)

विलियम के उत्तराधिकारी—विलियम विजयी अथवा विलियम प्रथम के तीन लड़के थे—रोबर्ट (Robert), विलियम (William) और हेनरी (Henry)। विलियम प्रथम ने अपनी मृत्यु से पहले इस बात का फैसला कर दिया था कि रोबर्ट नार्मण्डी का शासक रहे, विलियम को इंगलैण्ड का बादशाह बनाया जाय और हेनरी को पाँच हज़ार पौंड नक़द दिये जाँय। अतएव इस फैसले के अनुसार इंगलैण्ड की राष्ट्रीय सभा ने नार्मन जागीरदारों के विरोध करने पर भी विलियम द्वितीय को सन् १०८७ ई० में इंगलैण्ड का बादशाह निर्वाचित किया। विलियम द्वितीय को विलियम रूफस (William Rufus) अर्थात् लालविलियम भी कहते है, क्योंकि उसके मुख और बालों का रंग आग की तरह लाल था। उसने विलियम द्वितीय के नाम से सन् १०८७ से ११०० ई० तक राज्य किया।

जागीरदारों का (Barons) विलियम का विरोध करने का कारण

दूर का कारण—विलियम ने इंगलैण्ड विजय करने के बाद

बहुतसी ज़मीन अंग्रेज़ी सरदारों की छीनकर नार्मन सरदारों को जागीरों के रूप में दे दी थी और इससे नार्मन सरदार बहुत शक्तिशाली हो गये थे; लेकिन विलियम ने उनको अलग-अलग भागों में ज़मीन देकर और सेलिसबरी की शपथ के द्वारा उनकी शक्ति को अधिक नहीं बढ़ने दिया था; लेकिन उस विलियम विजयी के मरने के बाद नार्मन सरदारों ने एका करके फिर बादशाह के विरुद्ध अवसर पाकर अपनी शक्ति की परीक्षा करनी चाही।

निकट का कारण—नार्मन सरदारों का स्वामिभक्त होना।—कई नार्मन सरदारों की जागीरें दोनों जगह अर्थात् नार्मण्डी और इंग्लैण्ड दोनों देशों में थी और इसलिए अब यह आवश्यक था कि वे विलियम द्वितीय और रोबर्ट दोनों के भक्त रहें। वे सरदार, जो झगड़ने पर ही तुले हुए थे, सोचने लगे कि उनको अच्छा अवसर मिल गया, क्योंकि उन्होंने कहा कि विलियम को गद्दी पर बैठने का कोई अधिकार नहीं था, क्योंकि प्रथम तो वह विजयी विलियम का दूसरा पुत्र है नकि सबसे बड़ा, जोकि गद्दी का अधिकारी होता है। दूसरे यदि उनमें आपस में लड़ाई हो जावे तो नार्मन सरदारों को यह तय करना होगा कि वे किसके भक्त रहकर किसका साथ दें।

विलियम का चाल-चलन—नार्मन सरदार विलियम द्वितीय की अपेक्षा रोबर्ट को अधिक चाहते थे, क्योंकि विलियम अपने पिता की तरह वीर और साहसी था और रोबर्ट एक कमज़ोर मनुष्य था, इसलिए उसके कमज़ोर शासन के दिनों में उनको लूटमार

करने और अपनी शक्ति बढ़ाने के अधिक अवसर प्राप्त होने की आशा थी।

रैनल्फ फ्लैमबार्ड की नीति—बादशाह ने एक सबसे बड़ी ग़लती यह की कि उसने अपने मन्त्री (Justicier)* के पदपर रैनल्फ (Ranulf) को नियुक्त किया, जोकि बाद में अति कठोर होने के कारण फ्लैमबार्ड (Flambard) कहलाया। उसके जीवन का उद्देश्य यही मालूम होता था कि बादशाह के लिए वह हर तरह से रुपया इकट्ठा करे। उसने नये महसूल लगाये और सजा के बदले जुर्माना करना आरम्भ किया। उसने जागीरदारी-प्रथा के महसूलों को और भी बढ़ा दिया। इस हर तरह से रुपया इकट्ठे करने की नीति ने जागीरदारों को बादशाह के और भी विरुद्ध कर दिया।

विलियम का अँग्रेज़ों के साथ बर्ताव—क्योंकि नार्मन जागीरदार उससे अप्रसन्न थे, इसलिए बादशाह ने अब अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए अंग्रेजों को अपनी ओर मिला लिया; लेकिन उससे नार्मन जागीरदार और भी अधिक विरुद्ध हो गये। उसने अंग्रेज़ों से यह वादा किया कि वह उनके लिए अच्छे क़ानून बनायेगा, उनके ऊपर अनुचित कर नहीं लगायेगा और उनको इस बात की स्वतन्त्रता मिल जायगी कि वे जंगल में जा सकें और शिकार खेल सकें। इस पर अंग्रेज़ लोगों ने प्रसन्न होकर बादशाह की पूरी-पूरी सहायता की।

*Justicier means the officer who represented the king, when he was absent from the kingdom Flambard means devouring 'torch.'

नार्मन जागीरदारों के विद्रोह—इन ऊपर लिखे हुए कारणों से उसके समय में कई विद्रोह हुए। सबसे पहला सन् १०८८ ई० में ओडो आफ़ बेऐंक्स (Odo of Bayenx) ने रोबर्ट को इंग्लैण्ड की गद्दी पर बिठाने के लिए विद्रोह किया। विलियम द्वितीय ने अंग्रेज़ों की सहायता से उसको शान्त किया। उसके बाद सन् १०९१ ई० में स्काटलैंड (Scotland) के बादशाह मालकौम (Malcolm) ने विद्रोह किया; लेकिन वह भी दबा दिया गया। उसके बाद सन् १०९५ ई० में रोबर्ट मोबरे (Robert Mowbray) के द्वारा जोकि नोर्थम्बर लैंड का अर्ल (Earl) अर्थात् शासक था, वहाँ और साथ ही वेल्स में विद्रोह हुए; लेकिन वे भी सब शान्त कर दिये गये और अन्त में नारमण्डी का इलाका भी उसने अपने राज्य में मिला लिया। उसके भाई रोबर्ट को धार्मिक युद्ध के लिए पैलसटाइन जाने के लिए छः हज़ार पौण्ड की आवश्यकता हुई। उसने इतना धन लेकर नारमण्डी उसके शासन में कर दी।

विलियम द्वितीय के समय की घटनाएँ—विलियम द्वितीय अपने पिता की तरह वीर और साहसी था, लेकिन वह बहुत ही लालची और राजनीति के ज्ञान से शून्य था। उसने जागीरदारों और साधारण लोगों सबसे किसी-न-किसी बहाने से खूब रुपया वसूल किया, यहाँ तक कि चर्च की आमदनी तक में से उसने बहुत-सा रुपया लिया। अगर कभी किसी बिशप (Bishop) की जगह खाली हो जाती, तो उसकी जायदाद की आमदनी के लालच से उस

जगह पर वह नया विशप नियुक्त न करता था। कैन्टरवरी के आर्च विशप लैनफ्रैंक (Lanfranc) की मृत्यु के बाद कई साल तक उसके स्थान को खाली रक्खा और उसकी आमदनी को स्वयं वसूल करता रहा। एक बार जबकि वह एक भयंकर रोग से पीड़ित हुआ, तो उसने उस स्थान पर एक प्रसिद्ध विद्वान् एन्सलम (Anselm) को नियुक्त किया। वह यद्यपि आयु वृद्ध था, किन्तु सत्य बात कहने और चर्च के अधिकारों की रक्षा करने में वह बादशाह से भी न डरता था, इसलिए बहुत जल्द उन दोनों में झगड़ा हो गया और तब उसको अपना देश छोड़कर रोम चला जाना पड़ा। अन्त में एक दिन, जब वह जंगल मे शिकार खेलने गया. तो उसको किसी मन चले ने अपने तीर का निशाना बनाया और वह मर गया। इस प्रकार सन् ११०० ई० में विलियम द्वितीय का अन्त हुआ।
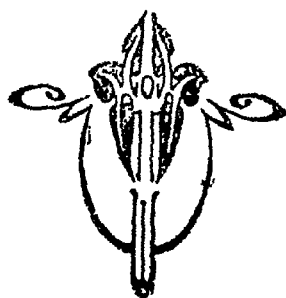
दसवाँ अध्याय

हेनरी प्रथम सन् ११०० से ११३५ ई० तक

हेनरी का राज्याभिषेक—विलियम द्वितीय की मृत्यु के समय नार्मण्डी का ड्यूक रोबर्ट धार्मिक युद्ध (Crusade) के लिए पैलसटाइन गया हुआ था। विलियम के छोटे भाई हेनरी ने इस अवसर को अच्छा समझा और राजसिंहासन पर अधिकार कर बैठा। अब इंगलैण्ड और नारमण्डी दोनों ही उसके हाथ लगे। हेनरी ने राजसिंहासन पर बैठते ही यह अनुभव किया कि रोबर्ट के वापिस आने के पहले, उसको अपना राज्य स्थिर कर लेना आवश्यक है। इसलिए उसने अंग्रेज़ों को प्रसन्न करने के लिए निम्नलिखित उपाय किये :—

हैनरी द्वारा राजसिंहासन को स्थिर करने के उपाय :—

(१) इंगलैण्ड निवासियों के हृदयों पर अधिकार करने के लिए उसने स्काटलैन्ड के राजा की पुत्री मटिल्डा (Matılda) से अपना विवाह किया, जिसका संवन्ध अपनी माता के द्वारा अल्फ्रेड के राज-घराने से था। इस संबंध से अंग्रेज़ लोग उसको अपना सजातीय बादशाह समझने लगे।

(२) उसने रैनल्फ फ्लेमबार्ड (Ranulf flambard) को क़ैद कर लिया और एन्सलम को (Anselm) जो सर्व प्रिय

मनुष्य था, वापिस बुला लिया और उसको लाट पादरी के पद पर नियुक्त कर दिया।

(३) उसने राजसिंहासन पर बैठते ही स्वतंत्रता का चार्टर (Charter) जारी किया। उस (Charter of liberty) में उसने निम्नलिखित वाइदे किये:—

(अ) एडवर्ड के क़ानूनों के अनुसार वह राज्य करेगा।

(ब) अपने भाई रूफस (Rufus) के समय के अनुचित महसूल बन्द कर दिये जायंगे और वह नज़रें भेंटें, अत्याचार और अन्याय से स्वीकार नहीं करेगा।

(स) वह चर्च का कोई पद खाली न रक्खेगा और बिना रिश्वत लिए उन जगहों को तुरंत भर देगा।

(द) वह शिकार के जंगल के क़ानूनों को सरल कर देगा और महसूलों को भी कम कर देगा।

उसके इस चार्टर से देश के पादरी और साधारण जन सब प्रसन्न होगये। बादशाह की इस कार्यनीति से धीरे-धीरे नार्मन और अंग्रेज़ों के पारस्परिक झगड़े सब दूर हो गये, यहाँ तक कि बारहवीं शताब्दी के अन्ततक नार्मन लोग भी अपने आप को अंग्रेज़ कहकर पुकारने लगे।

गद्दी के लिए रोबर्ट का प्रयत्न और हेनरी का विद्रोह—हेनरी के अनुमान के अनुसार रोबर्ट एक बड़ी सेना लेकर पोर्ट्स माऊथ (Portsmouth) बन्दरगाह पर उतरा ताकि

इँगलैण्ड पर अधिकार करले और कुछ वैरन सरदारों ने उसकी सहायता की; लेकिन हेनरी ने उसको बहुत बुद्धिमानी से इस शर्त पर वापिस कर दिया कि वह उसको सालाना पेन्शन देगा और नार्मन्डी उसको वापिस भी लौटा दी लेकिन यह संधि कुछ समय ही रह सकी, क्योंकि एक वैरन ने हेनरी के विरुद्ध विद्रोह किया और उसने रोवर्ट को भी अपनी ओर मिलाकर हेनरी से लड़ने को तैयार किया और फिर सन् ११०४ ई० के बाद भाइयों में कभी मेल नहीं हुआ। सन् ११०६ ई० में हेनरी ने नार्मन्डी जाकर टिन्चब्रे (Tinchebrai) के युद्ध में उसको हरा दिया और उसको क़ैद करके इंगलैण्ड ले आया। फिर उसका शेष जीवन जेलखाने में बीता और नार्मण्डी फिर अँग्रेज़ी बादशाह के अधिकार में होगई।

बादशाह की शक्ति को स्थिर करने के लिए देश के शासन प्रबंध में सुधार— अँग्रेज़ों को प्रसन्न करने और नार्मन जागीरदारों की शक्ति को कम करने के लिए, उसने देश के प्रबंध में निम्नलिखित सुधार किये:—

(१) पुरानी न्याय करनेवाली अदालतों को जोकि ग्रामसभा (Moots of the Hundred) तथा प्रान्तीय सभाएं (Shire Moots) कहलाती थी, उनको नार्मन सरदार नापसन्द करते थे। उसने उनको फिर से जारी किया और उनसे केवल न्याय ही न होने लगा, किन्तु यह भी प्रभाव हुआ कि जागीरदारी प्रथा के सरदारों की शक्ति भी कम होगई, क्योंकि उससे जागीरदारी अदालतों

(Manorial Courts) का अन्त भी हो गया, जिनमें कि जागीर-दार (Feudal Lord) न्याय किया करता था।

(२) इन न्यायालयों में केवल एक आदमी ही न्याय नहीं करता था; किन्तु कई मनुष्यों का एक मण्डल बैठकर न्याय करता था, जोकि मण्डल के सदस्य स्वतन्त्र मालगुज़ार (Free Tenants) होते थे। और प्रान्तीय न्यायालयों (Shire Courts) में शेरिफ़ (Sheriff) फ़ैसला सुनाता था, जो कि बादशाह का एक अफ़सर होता था और जिसकी बहुत अधिकशक्ति और अधिकार होते थे। इस प्रकार ब्रिटिश अदालतों में जूरी की प्रणाली चली।

शाही कौन्सिल या राजकीय सभा—इस काल में न्याय विभाग, माल के बन्दोबस्त का महकमा अथवा अर्थ विभाग, क़ानून बनाने का विभाग, जो कि एक दूसरे से आजकल बिलकुल पृथक विभाग है, उस काल में ये सब विभाग एक ही थे। यह बात बादशाह की कौन्सिल का अध्ययन करने से स्पष्ट प्रकट हो जाती है। बाद-शाह की कौन्सिल "महा सभा" (Magnum Concilium) कहलाती थी। प्राचीन काल में इससे पूर्व सेक्सन कौन्सिल विटन (Witan) कहलाती थी। विटन "बुद्धिमान" मनुष्यों की एक सभा थी। उसमें गिरजाघरों के अफ़सर ऊँचे पदों वाले व्यक्ति तथा जमींदार मेम्बर होते थे। बादशाह की बड़ी कौन्सिल अर्थात् (Magnum Concilium) जो थी, उसके मेम्बर बादशाह के तमाम बड़े ज़मींदार (Tenants-in-chief) होते थे और ये भी गिरजाघरों के अफ़सर, बड़े पदवाले लोग और जमींदार ही होते थे;

लेकिन इस कारण से नहीं कि वे "बुद्धिमान" होते थे किन्तु इस कारण से कि वे मुख्य जागीरदार (Tenants-in-chief) होते थे; अर्थात् बादशाह के द्वारा उनको जागीरें स्वयं प्रदान की हुई होती थीं। Magnum concilium एक बहुत बड़ी कौन्सिल थी और उसके मेम्बरों की संख्या बहुत अधिक थी। इतनी बड़ी सभा को जिसमें इतने अधिक मेम्बर हों, उनको हर समय इकट्ठा करने में बहुत कठिनाइयाँ उपस्थित होती थीं। इसलिये देश के शासन-प्रबन्ध का कार्य एक छोटी सभा अर्थात् साधारण कौन्सिल जिसको "Curia Regis" कहते थे, उसके हाथ में आगया। इस सभा में बादशाह सबके ऊपर होता था और निम्नलिखित सदस्य होते थेः—

(१) जस्टीसियर (Justicier) वह मनुष्य, जो बादशाह की अनुपस्थिति में बादशाह का काम करता था।

(२) चान्सलर (Chancellor) जो कि उसका मंत्री होता था।

(३) चैम्बरलेन (Chamberlain) जो कि औडीटर (Auditor) और एकाउन्टेन्ट (Accountant) का काम करते थे।

(४) मार्शल (Marshal) तथा कान्सटेबल (Constable) जो कि सेना की देख-रेख करते थे।

इस सभा के कर्त्तव्य भिन्न-भिन्न प्रकार के थे। उसमें देश के प्रबन्ध की बातें तय होती थीं, इसीलिये वह सभा कौन्सिल आफ स्टेट (Council of state) थी। वह न्याय करने की अदालत का

काम भी करती थी और इसलिये वह न्यायालय (Law Court) थी। वह मालगुजारी भी इकट्ठा करती थी। सारांश यह कि वह समस्त कामों के लिये एक ही सभा या अदालत (Court of all work) थी।

इस प्रकार करने से हेनरी ने जागीरदारों की शक्ति को कम कर दिया और अपनी शक्ति को स्थिर करके बढ़ा लिया।
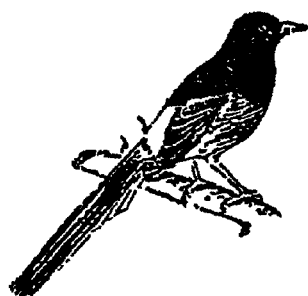
ग्यारहवाँ अध्याय

स्टीफेन (Stephen) सन् ११३५ से ११५४ तक

बादशाह स्टीफेन—हेनरी की मृत्यु के बाद जागीरदारों ने उस वायदे की कुछ भी परवाह न की कि वे हेनरी के मरने के बाद उसकी लड़की मटिल्डा (Matilda) को अपना शासक स्वीकार करेंगे। उन्होंने मटिल्डा के स्थान पर स्टीफेन को, जो हेनरी का भानजा और विलियम प्रथम का धेवता था, अपना बादशाह निर्वाचित कर लिया। स्पष्टतः उन्होंने इस आधार पर ऐसा किया कि वे अपने ऊपर एक स्त्री के शासन को सहन नहीं कर सकते थे; लेकिन वास्तव में उनका उद्देश्य यह था कि स्टीफेन के शासनकाल में जोकि एक निर्बल और डरपोक मनुष्य था, वे अपने मन माने काम कर सकेंगे।

स्टीफेन और मटिल्डा का गृहयुद्ध—मटिल्डा को जब यह मालूम हुआ कि जागीरदारों ने स्टीफेन को अपना बादशाह स्वीकार कर लिया है, तो उसने इंगलैण्ड पहुँचकर अपने पिता के सिंहासन को प्राप्त करने के लिए युद्ध ठान लिया। कई जागीरदारों ने उसका साथ दिया। इस प्रकार देश में एक ज़बर्दस्त युद्ध प्रारम्भ होगया, जो पूरे १६ साल तक लगातार चलता रहा। इस युद्ध की वर्णन करने योग्य दो तीन घटनाएँ निम्नलिखित हैं:—

स्टेण्डर्ड का युद्ध सन् ११३६ से ११३८ तक—स्काटलैण्ड के बादशाह ने जो मटिल्डा का मामा था, उसका पक्ष लिया, लेकिन उसने स्टेण्डर्ड के युद्ध मे पराजय पाई।

स्टीफेन का चर्च से झगड़ा, सन् ११३९—अभी तक सब गिरजा घर स्टीफेन के पक्ष में थे; लेकिन अब वे भी उसके विरुद्ध हो गये, क्योंकि उसने सेलिसबरी (Salisbury) और लिंकलन (Lincoln) से उनके किले वापिस मांगे और उनके इनकार करने पर लड़ाई-झगड़ा आरम्भ हो गया। तीन साल के लड़ाई-झगड़े के बाद, वे लोग लिंकलन के स्थान पर स्टीफन को गिरफ्तार करने में सफल हुए और मटिल्डा इँगलैण्ड की महारानी बन बैठी; लेकिन वह बहुत घमंडी और बुरे स्वभाव की स्त्री थी। वह यह न समझ सकी कि जो लोग गद्दी पर बैठाते है, वही गद्दी से उतार भी सकते हैं। अतएव जागीरदार लोग तुरन्त उससे अप्रसन्न हो गये और उन्होंने स्टीफेन को क़ैद से छुड़ा लिया और मटिल्डा को क़ैद कर दिया।

वेलिङ्गफोर्ड की संधि, सन् ११५३ ई०—अन्त में स्टीफेन के इकलौते पुत्र के मर जाने पर, दोनों पक्षों में समझौता हो गया और यह निश्चय हुआ कि अपने जीवन भर स्टीफेन बादशाह रहे; मगर उसकी मृत्यु के बाद मटिल्डा का पुत्र सिंहासन तथा राजमुकुट का उत्तराधिकारी होगा।

स्टीफेन के शासनकाल में इँगलैण्ड की दशा—इस १९ वर्ष के लम्बे समय में (Ninteen Long Winters)

साधारण प्रजा की दशा बहुत खराब थी। जिस दल को इस काल में अधिक लाभ पहुँचा, वह अमीरों का दल था। उन्होंने गृहयुद्ध से लाभ उठाकर बड़े मज़बूत किले बनवाए, जिनमें अत्याचारी आदमी रक्खे और उन आदमियों की सहायता से, उन्होंने प्रजा का बध कराया और उसका माल असबाब लूटा। जब गाँव के लोगों के पास उनको देने के लिए कुछ शेष न रहता था, तो ये अत्याचारी लोग उनके घरों में आग लगा देते थे। इस काल का एक लेखक लिखता है, "अनाज, मँहगा था। मान्स, मक्खन और पनीर के मूल्य पर भी न मिलता था और ऐसा मालूम होता था कि ये पदार्थ देश में शेष ही नहीं रहे। भूमि से अनाज उत्पन्न नहीं होता था और यह बात डके की चोट कही जाती थी कि ईसामसीह और उनके देव दूत सब गहरी नींद सो रहे हैं।"

Geneology of the Norman Kings :—
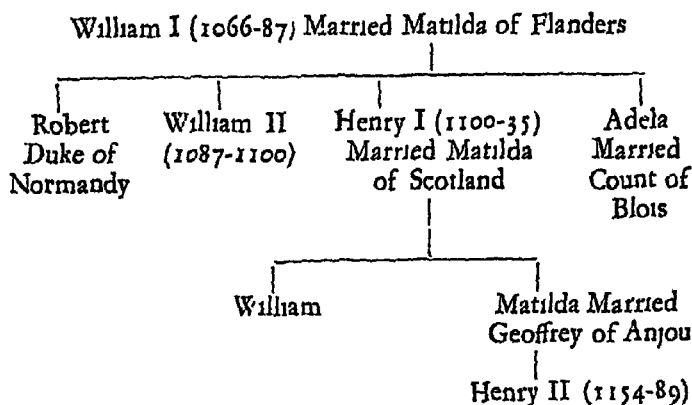
बारहवां अध्याय

नार्मन लोगों का इंगलैण्ड पर प्रभाव

नार्मन की विजय का इंग्लैण्ड पर वही प्रभाव हुआ, जो कि मुसलमानों की विजय का हिन्दुस्तान में हुआ है। जो हैसियत कि आर्य लोग हिन्दुस्तान में रखते थे, वही सम्मान ऐंग्लो सैक्सन जाति के लोगों को इंग्लैण्ड में प्राप्त था और जिस तरह से कि मुसलमानों का हिन्दुस्तान पर बहुत प्रभाव हुआ, उसी प्रकार से नार्मन जाति का इंगलैण्ड पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। नार्मन प्रभाव की मुख्य बातें निम्नलिखित हैं—

(१) नार्मन जाति ने अंग्रेज़ों से राजकीय विवाह किये और आजकल की जो अंग्रेज जाति है। वह ऐंग्लोसैक्सन और नार्मन लोगों के मिलने से अस्तित्व में आई है।

(२) अंग्रेजी सभ्यता पर नार्मन सभ्यता का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। नार्मन सभ्यता फ्रांस की सभ्यता थी और फ्रांस की सभ्यता रोमन (Roman) अथवा लेटिन (Latin) सभ्यता है। अतएव नार्मन सभ्यता के कारण कुल इंगलैण्ड में रोमन सभ्यता का प्रचार हुआ जिसका कि प्रभाव ऐंग्लिस (Angles) और सैक्सन (Saxon) लोगों के कारण से बहुत कम होगया था।

(३) नार्मन सभ्यता के कारण इंग्लैण्ड में बहुत उन्नति हुई, क्योंकि नार्मन लोग सभ्यता और विद्या में अंग्रेजों से बहुत बढ़ कर थे।

(४) विलियम ने एक नया ढंग निकाला था, जिसको कि जागीरदारी प्रथा कहते है और जिसका कि वर्णन और उसके हानि तथा लाभ उस अध्याय में दिये है, जिसमें कि विलियम का वर्णन लिखा है।

(५) नार्मन आक्रमण का प्रभाव यह भी हुआ कि गिरजाघरों की शक्ति अधिक होगई। फ्रांस में गिरजा की शक्ति बहुत अधिक थी और नार्मन विजय के पश्चात् इंगलण्ड में भी गिरजा की शक्ति बहुत अधिक बढ़ गई।

(६) अन्तिम परिणाम यह हुआ कि इंग्लैण्ड का फ्रांस के साथ भी सबन्ध हो गया और नार्मन बादशाह दोनों जगह राज्य करने लगे। इससे यह लाभ अवश्य हुआ कि यूरोप से मेल-जोल हो जाने से इंगलैण्ड ने उन्नति की; लेकिन इससे हांनियां भी हुई जैसेः—

(अ) एक बादशाह का दोनों जगह राज्य करना सम्भव नहीं था।

(ब) फ्रांस और इंगलैण्ड में लगातार युद्ध होते रहे।

इसके अतिरिक्त नार्मनकाल में शासन-विधान (Constitution) और शासन-प्रबन्ध में भी परिवर्तन हुए—प्रथम यह कि बादशाह की शक्ति कम होगई और केन्द्रीय शासन स्थापित हुआ। बादशाह की कौंसिल (Magnum Concilium) कहलाने लगी, जोकि सैक्सन काल में विटन (Witan) कहलाती थी और उसीको बाद में पार्लियामेण्ट का प्रारम्भ कहना चाहिए। देश के प्रबन्ध का काम एक छोटी सभा अर्थात् साधारण कौंसिल, जिसको कि Curia Regis कहते थे, उसके हाथ में आगया और उसको आजकल के मन्त्रिमण्डल (Cabinet) का प्रारम्भ कहना चाहिए।

तेरहवाँ अध्याय

प्लांटेजेनेट तथा अंजविन वंश की उत्पत्ति

वंश के नाम पड़ने का कारण—हेनरी द्वितीय काउण्ट जौफ्रे का पुत्र था। उसकी माता माटिल्डा (Matilda) थी, जो हेनरी प्रथम की पुत्री थी और काउण्ट जौफ्रे फ्रांस के एक प्रान्त आंजू (Anjou) का काउन्ट था और इसलिए लोग हेनरी द्वितीय और उसके उत्तराधिकारियों को अंजवियन (Angevians) कहते हैं। इस वंश को प्लांटेजेनेट भी कहते हैं, क्योंकि काउन्ट जौफ्रे (Count Geoffrey) अपनी टोपी में एक प्रकार का फूल, जिसको लैटिन भाषा में प्लांटा जेनिस्टा (Planta Genista) कहते हैं, लगाया करता था। इस अधार पर यह वंश प्लाटेजेनेट कहलाता है।

हेनरी द्वितीय (११५४ से ११८६ ई० तक)

हेनरी के राज्य का विस्तार—हेनरी द्वितीय एक विस्तृत राज्य का बादशाह था। उसके पिता काउन्ट जोफ्रे (Count Geoffrey) को इंग्लैण्ड में तो सफलता प्राप्त हुई; लेकिन उसने नारमण्डी को विजय कर लिया और सन् ११५१ ई० में उसके मरने पर हेनरी को निम्नलिखित प्रान्त मिले:—

(१) आंजू (Anjou) में मेन (Maine) और टूरेन

(Touraine) के इलाके उसको अपने बाप से प्राप्त हुए और वहाँ का वह काउन्ट बन गया।

(२) नारमण्डी अपनी माता की ओर से उत्तराधिकार के रूप में मिला और वहाँ का वह राजा नियुक्त हुआ।

(३) लुई सप्तम् (Louis VII) की तलाक दी हुई पत्नी इलीनोर (Eleanor) से विवाह करने पर, उसको निम्न लिखित इलाके और मिले-एक्वांटेन (Acquitaine), टूलूज (Toulouse) और सेन्ट औंग (Saint Onge)।

(४) उसने अपने पुत्र जौफ्री का विवाह ब्रिटेनी प्रान्त की उत्तराधिकारिणी के साथ करके सन् ११६६ ई० में उस प्रान्त को भी प्राप्त कर लिया। ये सब स्थान फ्रांस में स्थित थे।

(५) सन् ११५४ ई० के वेलिंगफोर्ड के सन्धि पत्र के अनुसार इंग्लैण्ड की राजगद्दी भी उसको मिल गई। धीरे-धीरे उसे वेल्स का भी कुछ भाग प्राप्त हो गया और कुछ समय बाद, आयर्लैंड को भी उसने विजय कर लिया। सारांश यह है कि वह समस्त ब्रिटेन और आधे से अधिक फ्रान्स का शासक हो गया।

फ्रान्स मे उसकी शक्ति फ्रान्स के बादशाह से भी अधिक थी और यूरोप में एक दो शासनकर्त्ताओं को छोड़कर सबसे अधिक शक्तिशाली बादशाह वही था और यूरोप में शक्तिशाली होने के कारण, वह इंग्लैंड में भी शान्ति स्थापित कर सका। जागीरदारों को उसका सामना करने का साहस भी न होता था। हेनरी द्वितीय के इन फ्रांसीसी प्रान्तों के कारण, इंग्लैंड और फ्रांस में शताब्दियों तक लड़ाइयाँ होती रहीं।

हेनरी द्वितीय द्वारा शांति स्थापना के उपाय— राजसिंहासन पर बैठते ही उसका पहला काम यह था कि वह स्टीफेन के समय की १९ वर्ष की अशान्ति को दूर करके देश में सुख और शान्ति की पुनः स्थापना करे। इसलिए उसने निम्नलिखित उपायों को प्रयोग में लाना आरम्भ किया :—

(१) उसने अमीरों को आदेश दिया कि वे अपने उन किलों को गिरायें, जो कि बादशाह की आज्ञा के बिना निर्माण किये गये थे। अमीरों को इस प्रकार किले गिराने पर मजबूर किया गया और बादशाह के किले जो कि अमीरों के हाथ मे थे, वापिस ले लिये गये।

(२) अमीरों को अपने सिक्के चलाने से रोक दिया।

(३) उन जमीनों को जो स्टीफेन ने कई एक लोगों को उनकी सहायता प्राप्त करने के बदले में दे दी थी, वापिस ले लिया।

(४) उसने जागीरदारी प्रथा (Feudal Syste) में यह सिलसिला जारी किया कि लोग व्यक्तिगत सेवा के स्थान में बादशाह को कुछ धन दे दिया करें। यह धन "युद्ध कर" (Scutage) कहलाता था। यह सिलसिला इससे पूर्व हेनरी प्रथम ने केवल छोटे जमींदारों में जारी किया था। अब हेनरी द्वितीय ने उसको फिर जारी किया और इस प्रकार धन लेकर, एक नियमित और सुशिक्षित सेना को नौकर रक्खा, जो उसके हित मे हर जगह और हर समय लड़ने के लिए तैयार रहती थी। इससे बादशाह की शक्ति में पर्याप्त वृद्धि हो गई और अमीरों की शक्ति बहुत कम हो गई क्योंकि प्रथम तो उनमें इससे लड़ने की शक्ति कम हो गई और दूसरे जब कभी वे लोग

विद्रोह करते तो वे बादशाह के निकट एक सुसज्जित सेना पाते और उनकी अपनी सेना उसको तुलना में बहुत असंगठित और निकृष्ट होती थी।

(५) हेनरी ने एक और कानून बनाया जो कि "शस्त्र कानून" (Assize of Arms) कहलाता है। उसके द्वारा एंग्लों सेक्सन काल की नागरिक सेना (Militia or Fyrd) की फिर नये सिरे से बुनियाद डाली। यह क़ानून सन् ११८१ ई० में पास हुआ था और इस क़ानून के अनुसार प्रत्येक किसान के लिए यह अनिवार्य हो गया कि वह अपने पास कोई-न-कोई शस्त्र अवश्य रक्खे ताकि अवसर आने पर वह अपने बादशाह और अपने देश की रक्षा कर सके। इन शस्त्रों का समय-समय पर निरीक्षण होता था, यह देखने के लिए कि वे शस्त्र प्रयोग में आने के योग्य भी हैं या नहीं। अब बादशाह के पास दो सेनाएं थी। एक तो वह सेना जिसके कि सिपाही बादशाह की नौकरी में थे। और दूसरी यह (Militia) जिसका कि वर्णन अभी किया गया है। यह क़ानून बहुत ही लाभकारी सिद्ध हुआ और उसने अमीरों की शक्ति को और भी अधिक तोड़ दिया।

(६) हेनरी के पहले अदालतों का प्रबन्ध भी खराब हो गया था। जागीरदारों की अदालतों का नम्बर बढ़ रहा था, जिससे बादशाह के क़ानून का पालन कम होने लगा था। हेनरी द्वितीय ने देश की अदालतों में भी पर्याप्त सुधार किया। उसने अपने नाना हेनरी प्रथम के शासनकाल के दौरा करनेवाले जजों (Itinerant Judges) के प्रबन्ध को दुबारा आरम्भ किया, जिससे प्रजा को अपने नगर में

ही न्याय प्राप्त करने की सुविधा मिल जाये। लेकिन इससे भी अधिक सुधार उसने यह किया कि एसाईज आफ क्लेरेण्डन (The Assize of Clarendon) के कानून के अनुसार उसने अपने जजों को आज्ञा दी कि वे समय पर प्रत्येक काउन्टी (County) में जायें और उस प्रान्त के विश्वासपात्र और ईमानदार, योग्य मनुष्यों को बुलायें, जो उनको यह बतला सकें कि उस काउन्टी में किस-किस मनुष्य ने किस अपराध को किया है; लेकिन यह केवल फौजदारी के मुकद्दमों में ही होता था। इस दल को (Jury) कहते थे और यह रीति जूरी द्वारा न्याय (Trial by Jury) के नाम से प्रसिद्ध है। हेनरी ने जूरी का सिलसिला तो प्रारम्भ किया, मगर उस समय उनका काम केवल पुलिस का था। वे असली अपराधियों को बादशाह के दौरा करने वाली अदालतों के सामने पेश करते थे और न्याय करने या दण्ड देने में वे कोई भाग न लेते थे। तो भी इस जूरी प्रणाली का अच्छा प्रभाव पड़ा। प्रजा समझने लगी कि बादशाह न्याय करने में साधारण जनता को भी भाग लेने देता है। इस प्रकार के लोग इन राजकीय न्यायालयों की ओर स्वभावतः झुकने लगे। इस तरह हेनरी द्वितीय ने शेरिफ़ (Sheriff) नियुक्तकरके और अपने कारिन्दों को देश में चारों ओर भेजकर अपने शासन की शक्ति को सुदृढ़ बना लिया और जागीरदारों को अच्छी तरह वश में कर लिया। इस प्रकार इंग्लैण्ड अब एक संयुक्तशक्ति वाला राष्ट्र बन गया।

हेनरी द्वितीय और गिरजाघर—हेनरी द्वितीय की यह इच्छा थी कि गिरजा घर की अदालतों की शक्ति कम करदी

जावे और बादशाह का क़ानून गिरजा के मनुष्यों पर भी लागू होवे जिस प्रकार कि वह साधारण मनुष्यों पर लागू था। वह यह चाहता था कि न्याय के विषय में समस्त प्रजा के साथ एक ही प्रकार का वर्ताव हो।

विलियम विजयी के समय से इंग्लैण्ड में दो प्रकार की अदालतें थीं, एक शाही अदालत और दूसरी धार्मिक अदालत। पादरियों* के फैसले धार्मिक अदालतों में होते थे और ये लोग भारी-से-भारी अपराध करके भी सख्त सजा से बच जाते थे क्योंकि चर्च की अदालतें अपराधियों को साधारण दण्ड देकर छोड़ देती थीं। इस खराबी को दूर करने के लिए हेनरी द्वितीय ने सन् ११६४ में एक क़ानून प्रचलित किया, जिसको क्लैरेण्डन का विधान (Constitution of Clarendon) कहते है। इस विधान की मुख्य बातें निम्नलिखित थीं :—

(१) अपराधी पहले राजकीय न्यायालय (शाही अदालत) में यह प्रमाण दे कि वह पादरी है तब उसका मुक़द्दमा धार्मिक अदालत में होगा और वहाँ अगर वह अपराधी ठहराया जाय तो वह

---

*इस काल मे पादरी और गिरजा के मनुष्य उस धार्मिक अदालत के लिए, वे समस्त मनुष्य शुमार किये जाते थे, जो किसी प्रकार से भी गिरजा से सबन्ध रखते हो, यहाँ तक कि वे आदमी भी जो गिरजा में नौकर थे और कुछ भी पढे लिखे थे, वे सब गिरजा के मनुष्य समझे जाते थे। सिवाय सिपाही और वकीलो के अन्य समस्त लोग पादरी (Clergies) समझे जाते थे।

अपने पद से अलग कर दिया जाय और शाही अदालत में साधारण अपराधी की तरह सज़ा पाने के लिए भेजा जाय।

(२) बादशाह की आज्ञा के बिना किसी मुक़द्दमे की अपील रोम के पोप के पास न भेजी जाय।

(३) पादरियों के पास जायदाद होने के कारण उनको भी साधारण ज़मीदारों की तरह बादशाह की भक्ति की शपथ खानी होगी।

(४) बादशाह की आज्ञा के बिना कोई भी पादरी देश के बाहर नहीं जा सकेगा।

टामस बेकेट और चर्च तथा राज्य का पारस्परिक झगड़ा— टामस बेकेट को हेनरी ने कैन्टरबरी के गिरजाघर का बड़ा पादरी (Archbishop) नियुक्त किया। हेनरी ने विचार किया था कि वह पादरी राजा को चर्च पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सहायता देगा; लेकिन उसने उसके बिल्कुल विरुद्ध किया और क्लेरेण्डन के विधान (Constitution of Clarendon) को स्वीकार करने से साफ़ मना कर दिया। इस पर बादशाह ने उसकी जागीरें छीनलीं और उसको देश से बाहर निकाल दिया। बैकेट लगभग छः साल तक इंग्लैण्ड के बाहर फ्रांस में रहा। सन् ११७० ई० में उसका हेनरी से कुछ समझौता होगया और वह इंगलैन्ड में वापिस आगया; मगर वापिस आते ही चर्च और राज्य के परस्पर सम्बंध के विषय मे फिर दोनों मे झगड़ा प्रारम्भ हो गया और अन्त में झगड़ा इतना बढ़ गया कि एक दिन क्रोध में आकर खुले दरबार में हेनरी ने कह दिया कि क्या मेरा नमक खाने वालों में कोई भी

मनुष्य ऐसा नहीं है जो इस झगड़ालू पादरी से मेरा पीछा छुड़ा सके ? हेनरी ने ये शब्द क्रोध में आकर कहे थे; लेकिन उसके कुछ सरदारों ने उनका अक्षरशः पालन किया। वे तुरन्त कैन्टरबरी को चल दिये और वहाँ पहुँचकर खास उसी के गिरजाघर में उन्होंने बैकेट का वध कर डाला। इस प्रकार चर्च के अधिकारों की रक्षा के लिए बैकेट ने अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

बैकेट के वध से न केवल इंगलैण्ड में, किन्तु समस्त यूरोप में शोर मच गया। उसका सम्मान धर्म के शहीदों की तरह होने लगा और पोप ने यह घोषणा की कि वह एक देवदूत था और कैन्टरबरी में बैकेट की समाधि एक महान् पावन तीर्थ स्थान बन गया और समस्त यूरोप से लोग वहाँ तीर्थ यात्रा के लिए आने लगे। हेनरी स्वयं नंगे पैर बैकेट की समाधि पर गया और इस प्रकार लोगों को विश्वास करा दिया कि वह बैकेट के वध के लिए स्वयं शोकाकुल है। इसपर पोप ने उसको क्षमा कर दिया और बदले में हेनरी ने क्लैरेन्डन के विधान को रद्द कर दिया। इस प्रकार राज्य पर चर्च की विजय हुई और लगभग तीन शताब्दियों तक पादरियों की धार्मिक अदालतें अलग ही स्थापित रहीं और उन्होंने रोम के पोप के अतिरिक्त किसी को भी अपना स्वामी स्वीकार नहीं किया।

आयरलैण्ड की विजय—सन् ११६६ ई० में लीन्स्टर के बादशाह डर्मट (Dermot King of Leinster) को आयरलैण्ड वालों ने निकाल कर भगा दिया। उसने हेनरी से सहायता मांगी और उसकी आधीनता स्वीकार कर ली। इसपर हेनरी ने सेना इकट्ठी

करने का आदेश दे दिया। डर्मेट ने एक सेना इकट्ठी की। उसमें दो मुख्य मनुष्य थे, फिट्जिस्टीफेन (Fitz-Stephen) तथा पुष्टकमान रिचार्ड डी क्लेअर (Richard de clare Strongbow) इन्हीं लोगों की सहायता से उसने आयरलैन्ड पर विजय प्राप्त की थी। रिचार्ड डीक्लेअर ने डर्मोट की पुत्री के साथ विवाह कर लिया और उसके मरने के बाद सन् ११७० ई० में लीस्टर का बादशाह बन गया; लेकिन हेनरी को यह बात पसन्द नहीं आई और वह सन् ११७१ ई० में आयरलैण्ड के लिए चल पड़ा। आयरलैण्ड में जिन-जिन स्थानों में से गुजरा उन-उन स्थानों के राजाओं ने उसकी आधीनता स्वीकार कर ली और इस प्रकार समस्त आयरलैण्ड ने उसको अपना स्वामी अंगीकार कर लिया; लेकिन न तो हेनरी ने और न उसके उत्तराधिकारियों में से किसी ने आयरलैण्ड पर राज्य किया। राज्य वहाँ पर जैसा था वैसा ही स्थिर रहा।

हेनरी के पुत्रों का विद्रोह—हेनरी का अन्तिम समय अच्छी तरह से व्यतीत नहीं हुआ, क्योंकि हेनरी के पुत्रों ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया। स्काटलैण्ड के बादशाह विलियम ने हेनरी के पुत्र की सहायता की और इंगलैण्ड पर आक्रमण कर दिया हैनरी को इस आक्रमण से इतनी परेशानी हुई कि उसने यह अनुमान किया कि यह बैकेट के वध का प्रभाव है, इसलिए वह उसकी समाधि पर अपने पाप क्षमा कराने के लिए गया और उसके बाद अकस्मात् ऐसा हुआ कि उसने स्काटलैण्ड वालों को हरा दिया और विलियम ने हेनरी को अपना स्वामी स्वीकार कर लिया लेकिन उसके

बाद फिर उसके पुत्रों का विद्रोह हुआ और जिस साल अन्तिम विद्रोह हुआ, उसी साल वह संसार से परलोक सिधार गया।

हेनरी द्वितीय का चरित्र नीति और योग्यता— संसार के मध्यकालीन इतिहास में हेनरी द्वितीय से बढ़कर शक्तिशाली शायद ही कोई दूसरा बादशाह हुआ हो। इंग्लैण्ड में वह दो मुख्य बातों के लिए प्रसिद्ध है। प्रथम उसने अमीरों की शक्ति का अन्त करके बादशाह की शक्ति को बढ़ाया और इस प्रकार से बारहवीं शताब्दी में इंगलैण्ड मे एक सुदृढ़ केन्द्रीय, एक सत्तात्मक शासन की नीव डाली, जिसकी कि फ्रांस में चौदहवाँ लुई कई शताब्दियों बाद डाल सका और इस एकतन्त्रीय शासन के ही कारण से इंगलैण्ड मे जातीय महासभा और लोगों के स्वायत्त शासन अर्थात् स्वतंत्र शासन की नींव पड़ी। दूसरे उसने एक ही कानून धनी-निर्धनी सब पर लागू किया और न्याय के विषय मे समस्त प्रजा के साथ एक ही सा बर्ताव किया इसकी इच्छा चर्च पर भी अपना शासन जमाने की थी, लेकिन उसमें उसको सफलता नहीं हुई। उसकी वैदेशिक नीनि में भी उसको बहुत सफलता हुई। इन सब बातों से उसकी गिनती इंगलैण्ड के महान सम्राटों मे की जाती है।

चौदहवाँ अध्याय

सिंह-हृदय रिचार्ड प्रथम

जन्म-सन् ११५७ ई०

राज्याभिषेक—सन् ११८९ में ३२ वर्ष की आयु में। मृत्यु—सन् ११९९ ई०।

Richard Queen Berengaria

रिचार्ड आफ़ एक्वीटिन जो कि सिंह-हृदय और सिंह के समान बलवाला कहलाता है, हेनरी द्वितीय का तीसरा पुत्र था। वह सन् ११५७ ई० में औक्सफोर्ड में उत्पन्न हुआ था और ११ वर्ष की अवस्था में उसके पिता ने उसको इक्वाटीन का ड्यूक बना दिया था। उसने (Bereugaria of Navara) के सिप्रन (Cypron) के स्थान पर विवाह किया था, जबकि वह यात्रा से वापिस आ रहा था। उसके कोई सन्तान नहीं हुई।

हेनरी के पश्चात् रिचार्ड राजमुकुट और सिंहासन का उत्तराधिकारी बना। उसने लगभग ११ साल तक राज किया; लेकिन अधिक से अधिक ६ महीने वह इंग्लैंड में रहा होगा। उसका राज्यकाल दो बराबर भागों में विभाजित होता है—प्रथम उसका धार्मिक युद्ध (Third Crusade) के लिए यूरोशलम को प्रस्थान और वहाँ उसकी गिरफ्तारी; दूसरे, उसकी फिलिप द्वितीय के विरुद्ध लगातार लड़ाई।

धन एकत्रित करना—राजसिंहासन पर बैठते ही सबसे पहली इच्छा उसकी यह थी कि धार्मिक युद्ध में भाग लेने के लिए यूरोशलम को प्रस्तान करें; लेकिन युद्ध आरम्भ करने से पूर्व उसको धन की आवश्यका थी। अतएव जो पदार्थ भी उसके हाथ आया, उसने बेच दिया। उसने गिरजाघरों की भूमि और पद भी बेचना आरम्भ कर दिया। उसने महसूल लगाये और अमीरों से धन भी वसूल किया, यहाँ तक कि अगर कोई अच्छा ग्राहक मिल जाता तो वह लन्दन नगर को भी उसके हाथ बेच देता। इस प्रकार जितना रुपया उसे मिल सका, उसने जमा करके यूरोशलम को प्रस्थान किया और इस अपनी अनुपस्थिति के काल में शासन के प्रबन्ध के लिये इंग्लैण्ड में उसने एक अपना प्रतिनिधि (King's Justicier) नियुक्त किया, जिसका नाम विलयम आफ़ लौंग चैम्प, बिशाप आफ़ ऐली (Willam of Longchamp, Bishop of Ely) था। रिचार्ड उस प्रतिनिधि के भरोसे इंग्लैंड पर अपना अधिकार अच्छी तरह से रख सका। इससे सिद्ध होता है कि उसके पिता हेनरी द्वितीय ने शासन

का इतना उत्तम प्रबन्ध कर दिया था कि बादशाह की अनुपस्थिति में भी राज्य का समस्त कार्य बड़ी सुगमता पूर्वक चलता रहा था।

धार्मिक युद्ध (Crusades) क्या थे ?

पैलस्टाइन में हजरत ईसामसीह ने अपने जीवन के ३० वर्ष व्यतीय किये थे और यूरोशलम (Jerusalem) में जो उस प्रान्त की राजधानी थी, उनको सूली दी गई थी। इसलिये यूरोशलम ईसाइयों का पवित्र तीर्थस्थान गिना जाता था। पाँचवीं शताब्दी तक वह ईसाइयों के राज्य में तथा अधिकार में रहा जो पूर्व में फैला हुआ था; लेकिन सन् ६३५ ई० में वह अरब लोगों के हाथ में पड़ गया। उन लोगों ने ईसाइयों पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं किया और न किसी ईसाई को उसकी पवित्र तीर्थ यात्रा करने से रोका। ग्यारहवीं शताब्दी के अन्त में अर्थात् सन् १०७६ ई० में मध्य एशिया के तुर्क मुसलमानों ने पैलस्टाइन पर अपना अधिकार कर लिया। ये लोग ईसाइयों पर बहुत अत्याचार करते थे और उन ईसाइयों को जो इस स्थान पर तीर्थ यात्रा करने जाते थे, वे बहुत परेशान किया करते थे। पैलस्टाइन की इन घटनाओं के समाचारों को सुनकर यूरोप वासियों के हृदयों पर गहरी चोट लगी और यूरोप के तथा अन्य ईसाई बादशाहों ने मिलकर पैलस्टाइन को विजय करने का निश्चय किया। जिन लोगों ने इस धर्म युद्ध में भाग लेने की इच्छा की, वे लोग "धर्मयुद्ध के सनिक" (Crusaders) कहलाये और उस धर्मयुद्ध को क्रूसेड (Crusade) कहते है। इस धर्मयुद्ध के लिये ९ बार सेनायें भेजी गईं। पहला धर्मयुद्ध सन् १०९५ ई० में हुआ

था। उसमें विलियम रूफ़स के वड़े भाई नार्मण्डी के ड्यूक रावर्ट (Robert of Norwandy) ने भाग लिया था। पहले और दूसरे युद्धों के वाद यूरोशलम मे ईसाइयों का शासन स्थापित हो चुका था। मगर थोड़े ही समय वाद मुसलमानों के ज़बर्दस्त बादशाह सलादीन (Saladin) ने यूरोशलम पर फिर अधिकार कर लिया; इसलिये मुसलमानों का सामना करने को अब तीसरा धर्मयुद्ध आरम्भ हुआ।

इँगलैण्ड और धर्मयुद्ध (११८६–६२)—हेनरी द्वितीय ने भी इस धर्मयुद्ध में भाग लेने की इच्छा की थी; लेकिन कुछ समय बाद ही उसकी मृत्यु होगई। उसके वाद सिंहहृदय वीर रिचार्ड अपनी सेना लेकर फ्रांस और अस्ट्रिया के राजाओं के साथ यूरोशलम को प्रस्थान कर गया; लेकिन इस युद्ध में इन मित्रों की विजय नहीं हुई, क्योंकि पहले तो रिचार्ड स्वयं एक अनुदार हृदय और झगड़ालू पुरुष था, जिसने आरम्भ से ही झगड़ा करना प्रारम्भ कर दिया। दूसरे उसके साथी राजा ईर्पाद्वेष के कारण उसको सहायता नहीं करते थे। पैलस्टाइन पहुँचते ही उसके साथियों ने और उसने एकर (Acre) के बन्दरगाह और कुछ अन्य स्थानों पर अपना अधिकार कर लिया और उसके वाद रिचार्ड ने यूरोशलम पर अपना अधिकार जमाने का निश्चय किया; लेकिन इससे पूर्व कि यूरोशलम को विजय किया जाय, आपस में इस वात पर लड़ाई होगइ कि यूरोशलम विजय हो जाने के वाद उसका वादशाह कौन बनाया जावे। इसी वात पर फ्रांस और अस्ट्रिया के शासक ईर्पा के

कारण रिचार्ड को अकेला छोडकर अपने-अपने देश को वापिस चले गये। अतएव अब थोडी-सी सेना से यरोशलम जैसे बड़े नगर को विजय करना कठिन था। उधर टर्की का बादशाह सलादीन स्वयं एक वीर और युद्ध-विद्या में कुशल सैनिक था। उसने रिचार्ड का अच्छी तरह से सामना किया। अन्त में तंग आकर रिचार्ड ने सलादीन से सन्धि करली, जिसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि पवित्र स्थान की तीर्थयात्रा के लिये ईसाइयों के आनेजाने में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित न की जायगी।

रिचार्ड का वापिस लौटना और मार्ग में गिरफ्तारी

जब कि रिचार्ड सौदागर का भेष बदल कर आस्ट्रिया होकर वापिस आरहा था तो उसको (Leofold Duke of Austria) अस्ट्रिया के ड्यूक ल्यूपोल्ड ने गिरफ्तार कर लिया और उसको जर्मनी के बादशाह हेनरी षष्ट को बेच दिया, जिसने उसको जेलखाने में बन्द कर दिया और जबतक कि इंगलैण्ड के निवासियों ने बहुत सा धन इकट्ठा करके उसे नहीं दिया तबतक उसको मुक्त नहीं किया। मुक्त होने पर वह इंगलैण्ड में सन १०९४ ई० में वापिस आया।

धर्मयुद्धों के प्रभाव (Effects of the Crusades)

इन धर्मयुद्धों के कई प्रभाव हुये और उनमे से एक यह भी था कि इनसे इंगलैण्ड को कई झगड़ालू और भयानक अमीरों से छुटकारा मिल गया और अमीरों की शक्ति कम होगई। कुछ तो इंगलैण्ड में वापिस ही नहीं आये और जो कोई वापिस आये उनको मार्ग का व्यय चुकाने के लिये अपनी भूमि और जायदाद नीलाम करनी पडी

और इससे उनकी शक्ति बहुत कम होगई। नार्मण्डी के ड्यूक राबर्ट ने अपनी जायदाद अपने भाई के पास गिरवी रखदी और वह फिर उसको वापिस नहीं मिली। रिचार्ड ने स्वयं एक बार यह कहा था कि मैं इंगलैण्ड को भी बेच देता, अगर मुझे उसका कोई मोल लेनेवाला मिला होता। उसने वास्तव में सब कुछ बेच दिया जो कि वह बेच सकता था, यहाँ तक कि उसने स्काटलैंड का बादशाहों का इंगलैंड के सम्राटों को प्रणाम करने के अधिकार को भी नीलाम कर दिया।

इन धर्मयुद्धों से दूसरा लाभ यह हुआ कि कई नगरों को स्वायत्त शासन के अधिकार (Charter) मिल गये। उस समय बहुत से नगर किसी न किसी लार्ड के आधीन थे। या तो बादशाह के या किसी अमीर के, जिसको सीमा में वह नगर स्थिर था, उसका शैरिफ़ (Sheriff or Baieiff) राज्य करता था और उसी के ऊपर महसूल चुकाने का भार था। बहुत से शहरों ने इस धार्मिक युद्ध से लाभ उठाकर आज्ञापत्र (Charter) ख़रीद लिये, जिससे उनको इस भार से मुक्ति मिल गई और अब भविष्य के लिये वे स्वतन्त्र होकर किसी के आधीन नहीं रहे। उनका शासन उनके स्वयं के हाथ में आगया। वे अब स्वयं कर लगा सकते थे और उसे एकत्रित कर सकते थे। वे अब अपने व्यापार के लिये स्वयं अपने कानून बना सकते थे। इस प्रकार इस धर्मयुद्ध से शहरों को अपनी उन्नति करने में बहुत सहायता मिली।

इस धर्मयुद्ध से एक लाभ और भी हुआ। वह व्यापार में उन्नति सेनाओं ने व्यापार के लिये मार्ग खुलवाये। उसके साथ ही

पूर्वी सेनाओं के मनुष्य पाश्चात्य सभ्यता से परिचित हुए जो कि इस काल में बहुत उन्नति पर थी और वापिस आने पर उन्होंने पश्चमी सभ्यता की वस्तुएँ और भोगविलास की सामग्री अपने पूर्वी घरों में प्रचलित करदीं। इन सब बातों से पश्चिम और पूर्व में आपस में मेल-जोल आरम्भ होगया, लेकिन यह व्यापारिक प्रभाव इंग्लैण्ड पर बहुत कम हुआ। ये सारे लाभ अधिकतर भूमध्यसागर (Mediterranean) के आस पास बसने वाले देशों को ही प्राप्त हुए और इंग्लैण्ड दूर होने के कारण इन लाभों से वंचित रहा।

रिचार्ड के अन्तिम दिन और मृत्यु

जेल से मुक्त होकर रिचार्ड सन् ११९४ ई० में इंग्लैण्ड आया और कुछ मास पश्चात् फ्रांस के बादशाह अथवा अपने विद्रोही सरदारों से युद्ध करने में बिताये। अन्त में एक युद्ध में उसके एक तीर लगा और वह सन् ११९९ ई० में परलोकगामी हुआ।

रिचार्ड की योग्यता—रिचार्ड वीर सेनापति था और अपनी वीरता के कारण वह इतिहास में "सिंह हृदय रिचार्ड" (Richard the Lion Hearted) के नाम से विख्यात है। वह शारीरिक बल में बहुत बढ़ा चढ़ा था। हथियार चलाने में बहुत निपुण था। उसको कलाओं से भी प्रेम था। उस काल में बादशाह में जितने गुण होने चाहिये, वे सब उसमें मौजूद थे; लेकिन ये सब गुण होते हुए भी वह अंग्रेज नहीं था और इंग्लैण्ड के मामलों में बहुत कम रुचि रखता था। यह इससे प्रकट होता है कि १० साल के शासन काल में उसने १० महीने ही इंग्लैण्ड में व्यतीत किये।

पन्द्रहवाँ अध्याय

राजा जौन (John)

(सन् ११९९ से १२१६ ई० तक)

जन्म सन ११६७ ई० में हुआ। ३२ वर्ष की आयु अर्थात् सन ११९९ ई० में सिंहासन पर बैठा। कुल १७ वष राज्य किया। सन् १२१६ ई० में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

King John

जौन के प्रारम्भिक दिनों का वर्णन— छोटी आयु में हेनरी द्वितीय ने उसको आयर-लैंण्ड का बादशाह बनाने के उद्देश्य से उसको आयलैंड भेजा। और वहाँपर बजाय इसके कि वहाँ के अमीरों को अपनी ओर कर लेता, उसने उन अमीरों का बहुत निरादर किया जो कि उसकी श्रद्धाभक्ति करने आये थे। इसपर उसके पिता ने उसको वापिस बुला लिया और फिर उसने फ्राँस के बादशाह से मिल कर अपने पिता के विरुद्ध षड्यंत्र रचा और उसको उसके अन्तिम दिनों मे बहुत कष्ट दिया। रिचार्ड

के सिंहासन पर बैठने पर उसने अपने राज्य का एक तिहाई भाग उसको दे दिया और धर्मयुद्ध में जाने से पूर्व उसने उससे शपथ खिलवाई कि उसकी अनुपस्थिति मे वह इंग्लैण्ड मे आ रहेगा लेकिन उसके जाने के कुछ समय बाद ही वह इंग्लैण्ड में आया और वहाँ पर शासन करने लगा। लेकिन उसके वापिस आने पर उससे मेल कर लिया और रिचार्ड ने फिर उसका कोई भी भाग उसको वापिस नहीं दिया।

जौन का राज्याभिषेक—रिचार्ड की मृत्यु पर राजसिंहासन का ठीक उत्तराधिकारी उसका भतीजा आर्थर (Prince Arthur of Brittany) जो कि ज्योफ्री का पुत्र था, होना चाहिये था। वह उस समय फ्रांस के ब्रिटेनी प्रान्त और अंजू प्रान्त का काउण्ट था। उसकी अवस्था उस समय केवल १२ वर्ष की थी; लेकिन इंग्लैण्ड के अमीरों ने उसके अधिकारों का विचार न करके हेनरी द्वितीय के सब से छोटे लड़के जौन को अपना बादशाह स्वीकार किया। आर्थर के अधिकार को विचार में न लाने के दो कारण प्रतीत होते है, प्रथम तो यह कि वह केवल १२ वर्ष का बालक था और दूसरे उसका पिता ज्योफ्री हेनरी द्वितीय के सब लड़कों मे सब से अधिक बदनाम था।

उसके शासन के विभाग—सुगमता के लिए उसका शासनकाल तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:—

(१) फ्रांस के बादशाह फिलिप द्वितीय से युद्ध और नारमण्डी का उसके हाथ से निकल जाना।

(२) इंग्लैण्ड के चर्च से उसका झगड़ा और बाद को रोम के पोप की स्वाधीनता को स्वीकार करना।

(३) उसका इंग्लेण्ड के अमीरों और प्रजा से झगड़ा करना और बाद में चारटर पर हस्ताक्षर करके अपनी शक्ति का और कम करना।

इन सब का परिणाम यह हुआ कि महाद्वीप पर तो वह अपने तमाम प्रदेशों को खो बैठा और संभव था कि वह इंगलैण्ड का मुकुट भी खो देता, अगर उसी अवसर उसका देहान्त न हो गया होता।

जौन का फ्रांस से युद्ध और उसका प्रभाव— फ्रांस के प्रान्तों की प्रजा जोन से बहुत अधिक घृणा करने लगी थी। उन्होंने ज्योफ्री के पुत्र आर्थर के जो कि राजगद्दी का वास्तविक अधिकारी था और अभी बालक था, पक्ष का समर्थन किया और फ्रांस के बादशाह फिलिप द्वितीय ने उसको गद्दी से हटाकर आर्थर को बादशाह बनाने का प्रयत्न किया। जौन युद्ध में पराजित हुआ और फ्रांस मे नारमण्डी (Normandy), अंजू (Anjou), टूरेन (Touraine), मेन (Maine) और एक्वीटेन (Aquitaine) के प्रान्तों पर अपना अधिकार कर लिया और जौन के पास फ्रांस में गैसकोनी (Gasceony) के छोटे से प्रान्त के अतिरिक्त और कुछ शेष न रहा। जौन ने उसको कई बार लेने की फिर चेष्टा की; लेकिन हरबार असफल रहा। इन प्रान्तों के निकल जाने से इंगलैण्ड को बड़ी हानि पहुँची, लेकिन अंग्रेजी प्रजा को लाभ हुआ। अभी तक नार्मन और अंजविन बादशाहों का ध्यान इंगलैण्ड और फ्रांस दोनों देशों

में बँटा हुआ रहता था और वे इंगलैण्ड को अपने सम्पूर्ण साम्राज्य का एक भाग गिनते थे लेकिन अब उनके इस विचार मे परिवर्तन हो गया और अब वे इंगलैण्ड को ही अपना देश समझने लगे। अभी तक जब कभी इंग्लैंड मे गड़बड़ी होती तो वहाँ का व दशाह इंगलैण्ड छोड़कर अपने फ्रांस के प्रान्तों में जाकर शरण लेता और गड़बड़ी समाप्त हो जाती थी, तो फिर इंगलैण्ड चला जाता; लेकिन अब यह सम्भव नहीं रहा। इसीलिए अब यह आवश्यक हो गया कि बादशाह शासनकार्य में अधिक ध्यान दे, नहीं तो उसको गद्दी छोड़कर भागना पड़ेगा। अमीरों की जायदादें भी दोनों देशों मे थीं। इनमे से कुछ ने इंगलैण्ड में ही रहना पसन्द किया और वे इसकी ही उन्नति की ओर ध्यान देने लगे। तब उन्होंने इस बात का भी यत्न किया कि बादशाह अपने अत्याचारों से बाज आये और इनके इस प्रयत्न के ही कारण इंगलैण्ड की शासन नीति में बहुत उन्नति हुई।

पोप से झगड़ा—सन् १२०५ ई० मे केन्टबरी का लाट पादरी होवर्ट वाल्टर संसार से चल बसा। अब लाट पादरी के पद पर दो मनुष्य मनोनीति हुए थे। गिरजाघर के पादरियों ने उस पद के लिए रेगनोल्ड (Reignold) को चुना; लेकिन बादशाह ने उस चुनाव से अपनी असहमति प्रकट की और अपने दबाव से गिर्जा के पादरियों से जान डी ग्रे (Gohn de Grey, Bishop of Norwich) का चुनाव करा दिया। और दो नाम पृथक्-पृथक् रूप से रोम के पोप की अन्तिम स्वीकृत के लिए भेजे। रोम के पोप इन्नोसेंट तृतीय (Innocent III) ने दोनों में से किसी नाम को स्वीकार

नहीं किया और पादरियों से जो कि स्वीकृति प्राप्त करने के लिए रोम गये हुए थे, उसने स्टीफेन लैंगटन (Stephen Langton) का नाम प्रस्तुत कराके उसको अपनी ओर से लाट पादरी नियुक्त कर दिया। जौन ने पोप के इस निर्णय को स्वीकार नहीं किया और उसने यह आदेश जारी कर दिया कि लैंगटन अपना पद स्वीकार करने के लिए इंगलैण्ड में न आये। पोप बादशाह के इस काम से बहुत अप्रसन्न हुआ और उसने पुराने निर्णय को समझाने के लिए निम्न लिखित उपायों का प्रयोग किया :—

इन्टरडिक्ट (१२०८)—उसने समस्त इंगलैण्ड में आज्ञापत्र (Interdict) जारी कर दिया अर्थात् उसने पादरियों को यह आज्ञा दी कि वे अंग्रेजों की धामिक रीतियों और विवाह आदि को न करायें; मगर जौन ने इसकी कुछ परवाह न की और आज्ञा दी कि गिरजाघरों की छोटी पादरियों की जमीन जागीरें सब जब्त कर ली जावें और अगर गिर्जा के पादरियों पर कोई अत्याचार करता या का कानून के विरुद्ध उनके साथ बर्ताव करता तो वह उस आदमी को कुछ भी दण्ड न देता था।

जौन का बिरादरी से बहिष्कार (सन् १२०६)— फिर पोप ने जौन को धार्मिक बिरादरी से बहिष्कृत कर दिया और उससे भी वह न सुधरा तो अन्त में पोप ने यह घोषणा कर दी कि उसको इंग्लैण्ड की गद्दी से उतार दिया गया है और फ्रांस के बादशाह फिलिप को आज्ञा दी कि वह इंग्लैण्ड को विजय करले। इस पर जौन को खटका हुआ कि अगर फ्रांस का बादशाह इंग्लैण्ड पर आक्रमण

कर बठा, तो कहीं ऐसा न हो कि ये लोग भी देश में ऊधम करने पर तुल जायें। तब तो ये दोनों खतरे उससे संभाले न संभलेंगे। अतएव उसने सन् १२१३ ई० में पोप से संधि करली और स्टीपन लैंग्टन की नियुक्ति को स्वीकार कर लिया और अपना राजमुकुट उसके सिर रख कर फिर वापिस लिया और यह निश्चय हुआ कि वह सालाना एक निश्चित रक़म पोप को दिया करे।

जौन और जागीरदारों में झगड़ा—जौन बहुत अत्याचारी था। वह अपनी इच्छा के अनुसार कर लगा देता था और लोगों को हर तरह से तंग करता था। लोगों ने इसलिये स्टीफ़न लैंग्टन की अध्यक्षता में आवाज उठाई। हेनरी प्रथम के चार्टर को पेश किया और तमाम जागीरदारों और लोगों को साथ लेकर बादशाह को रनी मेड (Runny mede) के स्थान पर जा घेरा और उसे मजबूर किया कि वह एक प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर करे। जौन ने मजबूर होकर सन् १२१५ ई० में उस पर हस्ताक्षर कर दिये। इस प्रतिज्ञा पत्र को (Magna Charta) अथवा महान् आदेशपत्र (Great Charter) कहते है "स्वतन्त्रता का महान् आदेश पत्र" यही, लैटिन भाषा में लिखा हुआ था और इसमे ६३ दफ़ा थीं, जैसेः—

(१) जौन ने वादा किया कि इंग्लैण्ड के पादरी लोग बादशाह के प्रभाव से बिल्कुल पृथक रहेंगे, पादरी स्वतन्त्रता से अपने बिशपों का चुनाव करेंगे और बादशाह उनके निर्वाचन में कोई हस्ताक्षेप न करेगा।

(२) जगीरदारी प्रथा (Feudal System) के अनुसार जो

भेंट ली जाती थीं, वे तीन भेंटों के अतिरिक्त और सब बन्द करदी जावेंगी।

(३) चौदहवीं धारा के अनुसार यह भी निश्चय हुआ कि उन भेंटों के अतिरिक्त और दूसरे नज़राने के लिये अथवा दूसरे कर लगाने के लिये एक बड़ी सभा (Great Council) बुलाई जाया करेगी, जिसमें पादरी और छोटे बड़े सब जागीरदारों को निमंत्रित किया जाया करेगा और उनकी स्वीकृति के बिना बादशाह किसी प्रकार का नया कर जमींदारों पर नहीं लगायेगा।

(४) कोई स्वतन्त्र नागरिक जब तक उसका मुक़द्दमा न हो ले, न तो जेल भेजा जावेगा और न देश से निर्वासित किया जा सकेगा।

(५) धारा ४० के अनुसार यह निश्चय हुआ कि न्याय बेचा नहीं जावेगा और न मुकद्दमों के करने में देर लगाई जायेगी।

(६) किसी मनुष्य को उन हथियारों से अथवा यंत्रों से वंचित न किया जायेगा, जिनसे वह अपनी जीविका कमा सकता हो।

(७) लंदन नगर के पुराने अधिकार, पुरानी स्वाधीनता और रीति रस्म सब वैसे ही रहेगे और दूसरे नगरों और ग्रामों में भी वही प्राचीन बातें प्रचलित रहेंगी।

(८) एक ही नाप, तोल और मानदण्ड (Standard) समस्त देश में प्रचलित रहेगा।

(९) अन्य देशों के व्यापारियों को इंगलैण्ड आने-जाने में कोई कष्ट नहीं होगा।

(१०) देश के २४ जागीरदार और लन्दन के मेअर (Mayor

London) अर्थात् २५ मेम्बरों की एक कमेटी इस प्रयोजन से नियुक्त की गई कि वह देखे कि बादशाह उस चार्टर की शर्तों का पालन करता है या नहीं।

जौन ने मजबूर होकर १९ जून सन १२१५ ई० को उस स्वतंत्रता के आदेश पत्र (Magna Charta) पर हस्ताक्षर कर दिये; लेकिन वह उसके अनुसार कार्य करने को तत्पर नहीं था और पोप ने भी उस प्रतिज्ञा पत्र को क़ानून के विरुद्ध ठहरा दिया और बादशाह के पक्ष करने के लिये स्टीफन लैंग्टन और कुछ दूसरे चर्च के अधिकारियों को बादशाह का विरोध करने के कारण से चर्च से पृथक कर दिया; लेकिन इससे कुछ बना नहीं। जौन अब इस बात पर तुल गया था कि जागीरदारों की शक्ति को नष्ट कर देना चाहिये। अतएव उसने पानी की तरह रुपया बहाया और दूसरे देशों की सेनाओं को अपने देश के विरुद्ध लड़ने के लिये इकट्ठा किया। जागीरदारों की सहायता के लिये भी फ्रांस का राजकुमार लुई एक विशाल सेना लेकर आया। देश में गृह युद्ध आरम्भ हो गया। इसी अवसर पर जौन अकस्मात् बीमार हुआ और १९ अक्टूबर सन १२१६ ई० को परलोकगामी हुआ।

आदेशपत्र (Charter) का महत्व—यह चार्टर इंग्लैण्ड के इतिहास में एक महत्त्व रखता है। यह वह नीव है जिस पर इंग्लैण्ड निवासियों की स्वतंत्रता का विशाल भवन खड़ा हुआ है। उसने बादशाह के अधिकारों को सिमित करके प्रजा पर होने वाले अत्याचारों तथा अन्याओं का द्वार बन्द कर दिया। यद्यपि उस

चार्टर में कोई बात नई नहीं है बल्कि यह पहले बादशाहों के विभिन्न चार्टरों का एक समूह मात्र है, लेकिन उसका महत्व अधिक है, क्योंकि उसके लिये समस्त प्रजा, चर्च के अधिकारी, जागीरदार और साधारण जनता, सबने मिलकर यत्न किया था। उस चार्टर में केवल तीन तरह के मनुष्यों के अधिकारों की रक्षा की गई— (१) चर्च (२) अमीर लोग (३) स्वतंत्र नागरिक। साधारण जनता के अधिकारों पर कुछ ध्यान नहीं दिया गया। उस समय में इंग्लैण्ड मे विलियनों (Villiene)की संख्या बहुत अधिक थी। उन बेचारों की स्वतंत्रता की रक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं किया गया, लेकिन बाद में इसी चार्टर की धाराओं के अर्थ विस्तृत कर दिये गये। बारहवीं और चौदहवीं धारा के यह अर्थ निकाले गये है कि बादशाह पार्लियामेंट की स्वीकारी के बिना किसी पर कर नहीं लगा सकता है। इसी प्रकार ३९वीं और ४०वीं धाराओं के अर्थ निकाले गये कि प्रत्येक मनुष्य को जूरी की सहायता से अपने मुकद्दमें का फैसला कराने का अधिकार प्राप्त है, कानून के आगे सब मनुष्य समान हैं और सब मनुष्यों की स्वतंत्रता सुरक्षित है। कितनी ही शताब्दी क्यों न व्यतीत हो गई हों, जब कभी भी बादशाह ने क़ानून के विरुद्ध कुछ काम करना चाहा तो इस महान् आज्ञापत्र (Magna Charta) ही की धाराओं को पेश करके बादशाह को क़ानून के विरुद्ध करने से रोका गया।

जौन का चरित्र—इंग्लैण्ड में जितने बादशाह अभीतक हुए है, उनमे जौन सबसे अधिक ख़राब था। वह अयोग्य, नीच,

पतित, स्वार्थी, अत्याचारी, विलासप्रिय और महान् धोखा देनेवाला था। आर्थर का वध कराके उसने अपने चरित्र पर एक ऐसा कलंक का धब्बा लगाया है जो कभी मिट नहीं सकता। उसने प्रजा की उन्नति की ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। अन्त में समस्त प्रजा उससे उकता गई थी और सबने मिलकर अपने अधिकारों की रक्षा के लिये महान् आदेशपत्र (Magna Charta) जैसे महत्वपूर्ण प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर करने को उसे मजबूर किया।
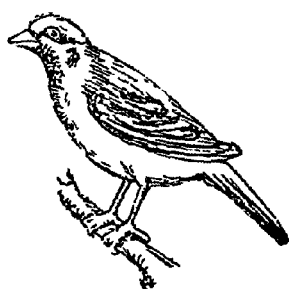
सोलहवां अध्याय

हेनरी तृतीय और साइमन डी मोन्टफोर्ड

हाउस आफ कामन्स का प्रारम्भ

जौन के मरने के समय इंगलैण्ड में गृह युद्ध होरहा था और जागीरदारों ने जौन के अत्याचारों से उकताकर फ्रांस के लुई को अपनी सहायता के लिए इंगलैण्ड बुलवाया था। जौन के अकस्मात् मर जाने को लुई ने अच्छा अवसर समझा और इंगलैण्ड को विजय करके फ्रांस का एक प्रान्त बनाने का उसने इरादा किया; लेकिन इतने मे अंग्रेज अमीरों ने जौन के एक बालक पुत्र को इंगलैण्ड का बादशाह स्वीकार कर लिया और सन् १२१६ ई० में यह लड़का हेनरी तृतीय के नाम से राज सिंहासन पर विराजमान हुआ।

henry III

बालकपन का समय—राजा के बालकपन के समय में प्रथम विलियम मार्सल ने सन् १२१६ से १२१९ ई० तक और उसके मरने के बाद हूबर्ट डी बर्ग (Hubert de Burgh) ने सन् १२१९ से १२३२ तक राज्य का प्रबन्ध संरक्षक के रूप मे किया। इस

काल में सबसे पहले फ्रांसीसियों को इंगलैण्ड से निकाला गया। दूसरे यह घोषणा की गई कि हेनरी मेगना कार्टा की शर्तों पर कार्य करेगा। हेनरी वास्तव में सन १२२७ ई० से शासन के कामों मे राज्य का हस्ताक्षेप करने लगा था। उसने सन १२३० ई० से घोषणा करके सारा काम अपने हाथ में लेलिया और सन १२७२ ई० तक शासन करता रहा।

स्काटलैण्ड से संबन्ध—जौन के मरने पर जब अमीर लोग फ्रांस के राजकुमार का साथ छोड़कर हेनरी के पक्ष मे हो गये तो स्काटलेण्ड के वादशाह अलैगजेन्डर (Alexander) ने भी लड़ना वन्द कर दिया और हेनरी को इंगलैण्ड का वादशाह स्वीकार कर लिया। इसके बाद हेनरी ने अपनी बहिन जेन (Jane) का विवाह स्काटलैण्ड के वादशाह से कर दिया। इससे दोनों में मेल अधिक बढ़ गया और फिर उनकी लड़ाई आपस मे कभी खुल्लम-खुल्ला नहीं हुई। वेल्स से भी लगातार लड़ाई रही और अन्त में सन् १२४६ में संधि होगई।

हेनरी तृतीय की अमीरों से लड़ाई के कारण:—

(१) फ्रांसीसी लोगों का इंगलैण्ड में ज़ोर होना और जागीरदारों का इस पर विरोध, जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है।

(२) हेनरी का इंगलैण्ड के जागीरदारों की विरुद्ध सम्मत्ति होते हुए भी फ्रांस के नवाब काउन्ट आफ़ ला मार्चे (Count of La Marche) के साथ लुई के विरुद्ध लड़ना और उसमें विना सफलता प्राप्त किये व्यर्थ में धन का व्यय करना जिससे जागीरदार

और अधिक अप्रसन्न हो गये। इसका वर्णन भी ऊपर हो चुका है।

(३) इंगलैण्ड के मामलों में पोप का अधिक हस्तक्षेप :—पोप ने हैनरी की निर्बलता से लाभ उठाकर इॅगलैण्ड में अधिक हस्ताक्षेप करना आरम्भ कर दिया। पोप के कहने से उसने अपने दूसरे लड़के एडमन्ड (Edmund) के लिए नोपिल्स और सिसली(Noples and Sicily) का राज मुकुट स्वीकार कर लिया। और उसका नतीजा यह हुआ कि उसको एक बहुत बड़ा धन इंगलैण्ड से इकट्ठा करके रोम के पोप के पास भेजना पड़ा। इसके अतिरिक्त हेनरी प्रति वर्ष लोगों पर नये कर लगाकर रुपया इकट्ठा करता रहा और पोप को भेजता रहा। जागीरदारों ने हेनरी को इस प्रकार टैक्स लगाकर रोम को रुपया भेजने पर बहुत बदनाम किया।

हेनरी को धन की सदा आवश्यकता रहती थी और जब कभी वह जागीरदारों से रुपया मांगता तो वे ये शर्तें पेश करते कि वह अच्छे अफ़सर और मंत्री नियुक्त करे और महान् चार्टर के अनुसार चले। हेनरी उस समय तो शपथ खा लेता; लेकिन बाद में कभी अपने वचन के अनुसार नहीं करता था। चार्टर के अनुसार काम करने की उसने लगभग दस बार सपथ खाई और हर बार रुपया मिलजाने के बाद अपनी शपथ का कुछ भी विचार न किया। इसपर जागीरदार इससे बहुत ही अप्रसन्न होगये और उन्होंने उसको बहुत बदनाम किया और यह कहा कि वह बहुत अपव्यय करता है और लोगों से रुपया लेकर उसको व्यर्थ में खोता है।

उपरोक्त बातों से लोगों के हृदयों में यह धारणा उत्पन्न होगई

कि हेनरी उनके अधिकारों को नियम विरुद्ध छीनता है और बार-बार वचन देकर भी महान चार्टर के अनुसार नहीं चलता और इंगलैण्ड का रुपया अन्य देशों में भेजता रहता है। इसलिए समस्त प्रजा उससे अत्यन्त रुष्ट होगई। इस विरोध में साइमन डी मोन्टफोर्ड ने लोगों का नेतृत्व किया।

सायमन डी मोण्टफोर्ड के सुधार और विद्रोह— सायमन डी मोण्टफोर्ड (Simon de Montfoid) ने जोकि लीसैस्टर का शासक (Earl of Leicester) था और फ्रांस का रहनेवाला था, हेनरी तृतीय की बहिन एलिएण्ड (Elcand) से विवाह किया था लेकिन वह बहुत सज्जन था। उसने बादशाह के अनुचित कार्यों से उकता कर उसके विरुद्ध काम करना अपना कर्तव्य समझा उसको अंग्रेज़ों से पूरी सहानुभूति थी और अंग्रेजों में वह "न्यायी सायमन" (Sir Simon the Rightcaus) के नाम से प्रसिद्ध था।

उन्मत्त पार्लियामेण्ट सन् १२५८ ई०— सन् १२५८ ई० में बादशाह को धन की बहुत अधिक आवश्यकता हुई और उसने जागीरदारों से फिर रुपये के लिए प्रार्थना की। इसलिए सब बड़े जमींदार सन् १२५८ ई० में ओक्सफोर्ड (Oxford) के स्थान पर इकट्ठे हुए। यह अधिवेशन उन्मत्त या पागल पार्लियामेण्ट (Mod Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है क्योंकि ज़मीदारों का बादशाह पर विश्वास न होने के कारण वे सब पार्लियामेण्ट में शस्त्रों से सुसज्जित होकर सम्मिलित हुए। इसलिए बादशाह के पक्ष वालों ने

उस अधिवेशन को उन्मत्त या पागल पार्लियामैण्ट के नाम से प्रसिद्ध किया। उस पार्लियामैण्ट ने बादशाह को यह बात स्पष्ट प्रकट करदी कि शासन में कुछ परिवर्तन करने पर उसको धन की सहायता दी जायगी। जैसे ही बादशाह इस बात पर तैयार हुआ, वैसे ही पागल पार्लियामैण्ट ने एक मसविदा तैयार किया जिसको कि ओक्सफोर्ड का मसविदा (Mise of Oxford) कहते हैं। उसके अनुसार निम्नलिखित परिवर्तन शासन में किये गयेः—

(१) समस्त अन्य देशीय मंत्रियों को निकाल दिया जाय और उनके स्थान पर नये मंत्री नियुक्त किये जायँ।

(२) एक स्थाई सभा १५ सदस्यों की नियुक्त की गई जिसकी सम्मति और परामर्श से बादशाह भविष्य में शासन का काम चलाए।

(३) यह स्थाई कौंसिल वर्ष में तीन बार बुलाई जाय और जागीरदारों के चुने हुए १२ सदस्यों की सम्मति पर विचार करके काम करे।

गृह युद्ध सन् १२६३ ई०—इन पंद्रह सदस्यों मे परस्पर एक मत नहीं था। दूसरे, प्रारम्भ में तो बादशाह ने उन शर्तों को मान लिया लेकिन बाद में उनके अनुसार काम करने से इन्कार कर दिया और पोप से कहा कि तुम मुझे मेरी शपथ से मुक्त करादो और फ्रांस के बादशाह लुई नवम् (Louis IX) से यह तय करा दिया कि शपथ जो उसने खाई थी वह अनिवार्य नहीं है और वह अपनी इच्छा के अनुसार जो चाहे कर सकता है। इसको आमीन्स का समझौता (Mise of Amiens) कहते हैं।

(नोट—Mise शब्द फ्रांस की भाषा का है जिनका अर्थ होता है समझौता या पंचायत।)

गृह युद्ध का प्रारम्भ—यह देख कर सायमन डी मोण्टफोर्ड और उसके सहायक जमींदारों के पास और कोई उपाय शेष न रहा सिवाय इसके कि वे वादशाह के विरुद्ध हथियार उठाए और इस प्रकार अधिकारों की रक्षा के लिए युद्ध आरम्भ हो गया। शहरों के रहने वाले और लन्दन निवासियों ने भी सायमन का साथ दिया सायमन ने जागीरदारों को अपनी ओर किया और उसका सहायता पर दक्षिणी भाग के निवासी तैयार थे। हेनरी को उत्तरी भाग के निवासियों ने सहायता दी। सन १२६४ ई० मे लीविस (Lewis) के स्थान पर सायमन ने हेनरी को पराजित किया। हेनरी और उसका लड़का एडवर्ड गिरफ्तार हो गये और सायमन डी मोण्टफोर्ड ने शासन की वागडोर अपने हाथ मे ले ली।

पार्लियामेण्ट में प्रजा के प्रतिनिधियों का प्रवेश (सन् १२६५ ई०)—अभीतक जो काम सायमन ने किया था वह केवल विद्रोही पने ही का काम था, यद्यपि उससे उसका प्रयोजन विद्रोह करने का नहीं था किन्तु देश के कुप्रवन्ध को ठीक करना था लेकिन अब आगे उसने जो काम किया उससे यह प्रकट होता है कि वह एक वड़ा भारी राजनीतिज्ञ था। जबकि उसने यह देखा कि वादशाह की शक्ति दिन पर दिन अधिक होती जा रही है और उसकी शक्ति कम हो रही है। जागीरदार ईर्षा द्वेष के मारे

उसका साथ छोड़कर बादशाह की ओर हो रहे थे, तो उसने अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए मध्यम श्रेणी के मनुष्यों को, विशेषकर नगरों के निवासियों को अपनी ओर किया और इसीलिए उस सभा का जो बाद में कामन सभा (House of Commons) कहलाई यह प्रवर्तक (Founder of the House of Commons) गिना जाता है।

सन १२६५ ई० में उसने पार्लियामेण्ट की एक बैठक बुलाई जिसके मेम्बरों का निर्वाचन एक नये सिद्धान्त पर होने के कारण यह सभा इतिहास में बड़े मार्के की मानी जाती है। सायमन ने पार्लियामेण्ट के इस अधिवेशन में बड़े जमींदारों और बड़े पादरियों के अतिरिक्त प्रत्येक प्रान्त से दो सरदारों (Knights) और प्रत्येक नगर से दो नागरिकों (Burgers) को प्रतिनिधि बनाकर निमंत्रित किया। यह पहला अवसर था जब साधारण प्रजा के प्रतिनिधि बड़े जमींदारों और बड़े पादरियों के साथ पार्लियामेण्ट के अधिवेशन में सम्मिलित हुए।

अबतक पार्लियामेण्ट केवल धनी लोगों की एक सभा थी। उसमें जागीरदार अथवा प्रान्तों के सरदार (Barons or Knights of the Shires ही थे जो कि सब जमींदार थे लेकिन अब प्रत्येक नगर और बरो (Borough) से दो नागरिक (burgesses) और दो निवासी जो व्यापारी होते थे आने के कारण इसने जातीय प्रतिनिधियों की महासभा का रूप ग्रहण कर लिया अर्थात् अब वह प्रतिनिधि परिषद् (Representative

Assembly) होगई। साइमन ने कुछ प्रान्तों और नगरों से जो उसके विरोधी थे, किसी प्रतिनिधि को निमन्त्रित नहीं किया था, लेकिन तो भी यह मानना पड़ेगा कि वह पहला राजनीतिज्ञ था जिसने साधारण प्रजा के लोगों को देश के शासन प्रबन्ध में भाग लेने का अवसर प्रदान किया। सन १२६५ ई० की पार्लियामेण्ट के समय से वर्तमान कामन सभा (House of Commons) का आरम्भ समझा जाता है और इतिहास में साइमन "कामन सभा का प्रवर्तक" कहलाता है। लेकिन साइमन की पार्लियामेण्ट में जागीरदार (Barons), प्रान्तीय सरदार (Knights of shires), नागरिक (Citizens), आदि सब एक ही सम्मिलित अधिवेशन मे उपस्थित हुए थे। अभी पार्लियामेण्ट दो भागों में अर्थात् कामन सभा और लार्ड सभा में विभाजित नहीं हुई थी। धीरे २ जमींदार (Knights), व्यापारी लोग अर्थात् (Citizens and Burgesses) के साथ काम करने के स्वभाव वाले हो गये। इस प्रकार से उन्होंने साधारण जनता (Commons) की एक पार्टी बनाई जो कि लार्डस (Lords) से बिल्कुल भिन्न थी।

साइमन का पतन—साइमन अधिक समय तक शासन नहीं कर सका। उसके साथी और विशेषकर अमीर लोग उससे ईर्ष्या द्वेष रखने लगे। उन्होंने राजकुमार एडवर्ड (Edward) को जिसे साइमन ने गिरफ्तार कर रखा था, युद्ध के लिये उभारना आरम्भ किया। अन्त में राजकुमार एडवर्ड अवसर पाकर एक दिन साइमन की कैद से भाग निकला उसने एक सेना एकत्रित करके

साइमन पर आक्रमण किया और ईवशाम (Evesham) के स्थान पर उसे पराजित करके वध कर डाला साइमन संसार से उठ गया लेकिन उसके गौरवपूर्ण कार्य अबतक जीवित है।

हेनरी तृतीय को पुनः राजसिंहासन तथा उसका शासन (सन् १२६६-७२)—हेनरी तृतीय को फिर कैदखाने से निकाल कर दुबारा राजसिंहासन पर बिठाया गया। उसने ६ वर्ष तक शासन किया। अब घटनाओं ने उसे भली प्रकार अनुभवी बना दिया था। उसके बाद उसने न तो अन्य देशीय मित्रों को इंग्लैण्ड में वापिस बुलाने का यत्न किया और न महान् आज्ञापत्र (Magna Caharta) के विरुद्ध कार्य करने का कभी साहस किया।

सत्रहवाँ अध्याय

एडवर्ड प्रथम सन् १२७१ से १३०७ ई. तक

एडवर्ड का स्वभाव—एडवर्ड को इंग्लैण्ड के बादशाहों में बहुत ऊंचा स्थान मिला है। वह मध्यकालीन बादशाहों में सबसे अधिक शक्तिशाली, योग्य और प्रजापालक राजा हुआ है। इंग्लैण्ड का वर्तमान शासन स्थापित करने का श्रेय उसीको दिया जा सकता है वह एक वीर सिपाही, चतुर राजनीतिज्ञ और सत्यप्रिय था। वह शासन करने के प्रबन्ध और क़ानून बनवाने के कार्य दोनों बातों में अत्यन्त निपुण था और इसलिए वह प्लेण्टजैनीज वंश का सबसे बड़ा बादशाह समझा जाता है और साथ में इंगलिश जस्टीनियन (English Justinian) के नाम से भी प्रसिद्ध है।

एडवर्ड के उद्देश्य— उसके दो मुख्य उद्देश्य थे, प्रथम ब्रिटिश टापुओं के विभिन्न भागों को इंग्लैण्ड के बादशाह के आधीन करना, दूसरे अपने राज्य मे सुदृढ़ और सुव्यवस्थित सरकार स्थापित करना।

वेल्स की विजय—वेल्स एक पहाड़ी प्रान्त है जिसके निवासी कैल्टिक (Celic) जाति के है और जब कभी इंग्लैण्ड मे झगडा होता तो वेल्स के शासक इंग्लैंड के बादशाह के विरुद्ध अमीरों की सहायता करते थे इसलिए एडवर्ड ने अंग्रेज़ अमीरों की शक्ति

कम करने के लिए वेल्स पर आक्रमण करना उचित समझा। सन् १२८२ ई० में वेल्स के शासक प्रिंस ल्यूलिन (Prince Llewlyn) से छः वर्ष लगातार युद्ध करने के बाद वेल्स को अपने राज्य में मिला लिया। वेल्स के निवासी इस बात से अप्रसन्न थे इसलिए सन् १२८४ ई० में बादशाह के वेल्स के प्रदेश में एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसके लिये कि उसने वेल्स वालों से कहा कि यह आपका बादशाह है और उन लोगों ने हर्ष पूर्वक इस बात को स्वीकार कर लिया। तब से अर्थात् सन् १३०१ ई० से इंग्लैण्ड के सिंहासन का उत्तराधिकारी प्रिंस ओफ़ वेल्स (Prince of Wales) कहलाता है।

सन् १२९० ई० में एडवर्ड प्रथम ने यहूदियों को इंग्लैण्ड से बाहर निकलवा दिया।

एडवर्ड प्रथम और स्काटलैण्ड—सन १२८१ ई० में स्काटलैण्ड के बादशाह अलेगजेण्डर तृतीय की मृत्यु के बाद उसके कोई पुत्र न होने के कारण से यह प्रश्न उठा कि उसका उत्तराधिकारी कौन हो। दो अधिकारी निकले, जान बैलियल (John Balliol) और रोबर्ट ब्रूस (Robert Burce)। इसका फैसला एडवर्ड प्रथम पर छोड़ा गया। उसने जौन बैलियल के पक्ष में फैसला दिया और उसमें अपने वचन के अनुसार एडवर्ड की आधीनता में रहने की शपथ ली लेकिन बादशाह एडवर्ड के वहाँ के आन्तरिक मामलों मे हस्तक्षेप करने के कारण से बैलियल ने फ्रांस के बादशाह से सन्धि करली। इसपर एडवर्ड ने स्काटलैण्ड पर आक्रमण कर दिया और डन बार (Dan Bar) के स्थान पर पराजित करके बैलियल को

गद्दी से उतार कर स्वयं अपनी ओर से प्रतिनिधि नियुक्त करके अपना शासन स्थापित कर दिया।

स्काटलैण्ड वाले अपनी स्वतन्त्रता खोना नहीं चाहते थे और इसलिए उन्होंने दो आन्दोलन जारी किये—एक सन् १२९७ ई० में विलियम वालेस (William Wallace) की अध्यक्षता में, जोकि सन १३०५ ई० तक चला जबकि विलियम वालेस को एडवर्ड ने गिरफ्तार कर लिया और उसको फाँसी देदी गई। दूसरा आन्दोलन सन् १३०६ में रोबर्ट ब्रूस के नेतृत्व मे हुआ। एडवर्ड प्रथम ने तीसरी बार स्काटलैण्ड पर आक्रमण किया लेकिन उसके वहाँतक पहुँचने के पहले ही उसकी मृत्यु होगई।

एडवर्ड और फ्राँस— फ्रांस में केवल गैस्कनी (Gascony) प्रान्त ही अँग्रेज़ों के अधिकार में रह गया था जिसको भी फ्रांस वाले अपने अधिकार मे करना चाहते थे। १४ अप्रैल सन् १२९३ ई० में सैण्ट माही (St. Mahe) के स्थान पर युद्ध हुआ और एडवर्ड का फ्रास के बादशाह के बुलाने पर पेरिस आने से इन्कार करने पर फ्रांस के बादशाह फिलिप गैस कोनी पर भी सन् १२९३ ई० में अपना अधिकार कर लिया।

एडवर्ड प्रथम और आदर्श पार्लियामेण्ट (सन् १२९५)

अच्छी सरकार के काम को पूर्ण करने के लिए उसने एक पार्लियामेण्ट बुलाई जो आदर्श पार्लियामेण्ट (Model Parıament) के नाम से प्रसिद्ध है। इस पार्लियामेण्ट को निमंत्रित करने का मुख्य क़ारण यह था कि एडवर्ड उस समय स्काटलैण्ड, वेल्स और फ्रांस

तीनों से युद्धसंलग्न हुआ और इसलिए उसको धन की अत्यन्त आवश्यकता हुई। अतएव उन युद्धों में सहायता प्राप्त करने और अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने के लिए एडवर्ड प्रथम ने सन १२९५ ई० में पार्लियामेण्ट का एक अधिवेशन बुलाया जो इतिहास में आदर्श पार्लियामेण्ट के नाम से प्रसिद्ध है।

यह पार्लियामेण्ट साइमन द्वारा बुलाई गई सन् १२६५ ई० की पार्लियामेण्ट से भी अधिक महत्वपूर्ण रही। साइमन ने छोटे पादरियों के प्रतिनिधियों को शामिल नहीं किया था और उसने कुछ ऐसे नगरों और प्रान्तों को भी छोड़ दिया था जहाँ के निवासी उसकी कार्य-शैली के विरोधी थे। उसने केवल उन स्थानों से प्रतिनिधि बुलाए थे जो उसके पक्ष वाले थे मगर एडवर्ड ने इस आदर्श पार्लियामेण्ट में बड़े ज़मीदार, बड़े पादरी, छोटे पादरियों प्रतिनिधि और प्रत्येक प्रांत तथा प्रत्येक नगर से दो-दो प्रतिनिधि निमंत्रित किये। इस पार्लियामेन्ट में देश की लगभग प्रत्येक श्रेणी के लोगों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। और इसका अधिवेशन विशेषरूप से बादशाह की अध्यक्षता में होने के कारण उसका पद और भी ऊँचा था। और इसलिए उसका नाम 'प्रथम पूर्ण तथा आदर्श पार्लियामेण्ट' First complete and Model Parliament) पड़ा। इस पार्लियामेंट में भी पहली पार्लियामेन्ट की तरह समस्त श्रेणियों के प्रतिनिधि एक ही संयुक्त अधिवेशन में सम्मिलित न हुए थे और लगभग दो सौ वर्ष तक इस प्रकार पार्लियामेन्ट के संयुक्त अधिवेशन होते रहे।

महान् स्वतन्त्रता के आदेश पत्र का पुन. प्रकाशन—सन १२९७ ई० मे फ्रास से युद्ध छिड जाने के कारण एडवर्ड को रुपये की वहुत आवश्यकता हुई, इसलिए उसने पार्लियामेण्ट की स्वीकारी विना लिए हुए टैक्स वढा दिये और रुपया वसूल करके युद्ध के लिए प्रस्थान किया। जमीदारों ने इस बात से अप्रसन्न हो कर पार्लियामेण्ट का अधिवेशन बुलाया और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि स्वतन्त्रता के महान आज्ञापत्र को दुवारा वादशाह की ओर से प्रकाशित कराया जावे और उस प्रतिज्ञापत्र का नाम जोकि वादशाह के पास स्वीकारी के लिए भेजा गया था, "पुष्टीकृत आदेश पत्र" (Confirmatia Charterum) है। सन १२९७ ई० मे वादशाह ने स्वीकारी दे दी और वादशाह जौन का स्वतन्त्रता का महान् आदेशपत्र (Magna Charta) एक राजकीय कानून के रूप में दुवारा प्रकाशित किया गया। इस वार उसमें कुछ नवीन धारायें जोड़ दी गई। वादशाह जौन ने केवल यह वादा किया था कि वादशाह पार्लियामेन्ट की स्वीकारी के विना जमीदारों से किसी प्रकार का टैक्स वसूल नहीं कर सकता। इस वार उस सिद्धान्त को और भी विस्तृत कर दिया गया कि वादशाह को कोई भी नया टैक्स लगाने के लिए, चाहे उसका सम्बन्ध जमीदारों से या अन्य प्रजा से पार्लियामेन्ट की स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक है। इस प्रकार पार्लियामेण्ट को एक वहुत वड़ा अधिकार प्राप्त होगया, क्योंकि राज्य के शासनकार्य को चलाने के लिए वादशाह का वहुधा नये टैक्स लगाने की आवश्यकता सामने आती रहती है।

एडवर्ड प्रथम के कानून

(१) स्टेट्यूट आफमार्टमेन (Statute of Mortmain), सन् १२७९—चर्च और अन्य धार्मिक संस्थाओं की ज़मीनों पर न तो सरकारी लगान लग सकता था और नहीं उनको कोई जागीर-दारी प्रथा की सेवा करनी पड़ती थी। इसलिए बहुत से लोग उससे बचने के लिए अपनी ज़मीनें नाम मात्र के लिए चर्च या किसी धार्मिक सोसाइटी के नाम पर दान मे दे दिया करते थे। इसका नतीजा यह हुआ कि बादशाह की आमदनी धीरे-धीरे कम होती गई और गिरजों का धन बढ़ता गया। एडवर्ड ने सन् १२७९ ई० में एक मार्टमेन का क़ानून पास किया। इस क़ानून के अनुसार किसी मनुष्य को अपनी जायदाद किसी गिरजा या धार्मिक सोसाइटी के नाम पर सरकार की आज्ञा के बिना दान करने का अधिकार नहीं रहा। इस क़ानून से लोगों ने गिरजों के नाम पर अपनी ज़मीनों को दान करना बन्द कर दिया।

(२) स्टेट्यूट आफ वैस्ट मिन्सटर—इस समय तक अमीर लोग भूमि के सर्वेसर्वा होते थे। वे अपनी इच्छानुसार उसका क्रयविक्रय कर सकते थे, लेकिन एडवर्ड ने सन् १२८५ ई० में दूसरी इन्सटी स्टेट्यूट आफ़ वेस्ट मिन्स्टर (Statute of West minster) निकाली, जिससे जागीरदारों को अपनी जागीर के बेचने और खरीदने का अधिकार नहीं रहा। अब वे केवल ज़मीन की आमदनी से अपने जीवन भर लाभ उठा सकते। मरने के बाद

उनकी सन्तानें उस जागीर के उत्तराधिकारी समझी जाती थीं।

(३) स्टेट्यूट आफ विनचैस्टर—(Statute of Winchester) इस क़ानून के अनुसार आवश्यक था कि प्रत्येक मनुष्य अपनी रक्षा के लिए अपनी हैसियत के अनुसार हथियार रक्खे।

एडवर्ड के सुधार—इस प्रयोजन से कि देश में न्याय अच्छा हो सके, वह जजों की पूरी देखभाल रखता था और रिश्वत लेनेवाले जजों को कड़ी सजाएँ देता था। उसने अदालतों के न्याय को तीन भागों में विभाजित किया हुआ था—

(१) किंग्स बेंच (King's Bench) इस अदालत में उन मुकद्दमों का फैसला होता था, जो सरकार और प्रजा के बीच होते थे।

(२) कोर्ट आफ़ कामन प्लीज (Court of common pleas) यह अदालत उन लोगों के प्राईवेट मुकद्दमों की सुनवाई करती थी।

(३) कोर्ट आफ़ एक्सचेकर (Court of the Exchequer) यह अदालत उस लगान के संबन्ध में फैसला करती थी, जो सरकार से संबन्ध रखता हो।

इन अदालतों के अतिरिक्त एक उच्च अफ़सर जिसको कि (Chancellor) कहते थे, उन प्रार्थनापत्रों पर विचार करता था, जो बादशाह के पास दया और कृपा के लिए उपस्थित किये जाते थे।

अठारहवाँ अध्याय

एडवर्ड द्वितीय (सन् १३०७ से १३२७ ई० तक)

एडवर्ड द्वितीय का चाल-चलन—सन १३०७ ई० में एडवर्ड प्रथम की मृत्यु के बाद इसका उत्तराधिकारी एडवर्ड द्वितीय के नाम से राजसिंहासन पर बैठा। वह लम्बा और अपने पिता की भाँति सुन्दर था लेकिन वह सुस्त, आराम तलब, व्यर्थ खर्च करनेवाला और हठी था। उसके लिए यह कहना ठीक होगा कि वह योग्य पिता का एक अयोग्य पुत्र था।

Edward II

एडवर्ड द्वितीय और बैनक बर्न का युद्ध—एडवर्ड प्रथम् ने मरते समय यह नसीहत की थी कि सबसे पहले रोबर्ट ब्रूस को पराजित करके स्काटलैण्ड पर विजय प्राप्त करना। एडवर्ड द्वितीय ने इस पर कुछ ध्यान नहीं दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि रोबर्ट ब्रूस ने तीन साल के समय में सारे स्काटलैण्ड पर अधिकार कर लिया, तब बादशाह ने सेना लेकर स्काटलैण्ड को प्रस्थान किया और २४ जून

सन् १३१४ ई० को वैनक वर्न (Bannack Burn) नदी के किनारे एक युद्ध हुआ, जिसमें अंग्रेजी सेना भगा दी गई; लेकिन अन्त में सन् १३२८ ई० में दोनों में सन्धि होगई, जिसके अनुसार स्काटलैण्ड की स्वतंत्रता पूरे तौर से स्वीकार करली गई। वैनक वर्न के स्थान पर रोबर्ट ब्रूस के द्वारा अँग्रेज़ी सेना का पराजित होना एक प्रकार का भारी सैनिक अपमान था। इसके कारण से वादशाह वहुत बदनाम हो गया।

क्योंकि उसने फ्रांस के अमीरों का अधिक पक्ष लिया था, इसलिए बादशाह और अंग्रेज़ी जागीरदारों के बीच वहुत मन मुटाव हो गया और इस बार उसकी रानी आयसावैला (Isabella) और लार्ड मार्टीमर (Lord Mortemer) ने भी विद्रोहियों का साथ दिया। एक षड़यन्त्र रचा गया और पार्लियामेण्ट ने वादशाह को सन १३२७ ई० में इस आधार पर गद्दी से उतार दिया कि वह राज्य करने के योग्य नहीं है और उसको निगरानी में रखकर कुछ समय बाद क़ैद कर लिया और उसके लड़के एडवर्ड तृतीय को वादशाह स्वीकार कर लिया। यह घटना इस बात का प्रमाण है कि देश में पार्लियामेण्ट की अब एक बहुत ज़बर्दस्त शक्ति बन चुकी थी।

उन्नीसवां अध्याय

एडवर्ड तृतीय (सन् १३२७ ई० से १३७७ ई० तक)

एडवर्ड तृतीय का बालकपन—राज सिंहासन पर बैठने के समय एडवर्ड तृतीय की आयु केवल १४ वर्ष की थी। उसके बाल्य-

Edward III Queen Philippa

काल में शासन का काम नाम मात्र के लिये जागीरदारों की एक सभा के सुपुर्द रहा, लेकिन वास्तव मे उसकी माता (Isa Bella) और मार्टीमर (Mortimer) शासन करते रहे, क्योंकि वे स्काटलैण्ड निवासियों के साथ लड़ाई जारी न रख सके इसलिये उन्हों ने स्काटलैण्ड वालों के साथ सन १३२८ ई० मे नार्थेम्पटन (Northampton) के स्थान पर एक प्रतिज्ञा-पत्र लिखा, जिसके अनुसार

स्काटलण्ड को शासन की पूरी स्वतन्त्रता प्रदान की गई; लेकिन उस संधि से ये दोनों इंग्लेण्ड में बहुत बदनाम हो गये। तीन वर्ष बाद सन १३३० ई० मे जबकि १८ वर्ष की आयु मे एडवर्ड ने समग्त अधिकार अपने हाथ में ले लिये, तो उसने मार्टीमर को गिरफ्तार कराया और पार्लियामेण्ट की सम्मति के अनुसार सन १३३० ई० में उसको फांसी का दण्ड दिया और अपनी माता को जन्म भर के लिए कैद मे डाल दिया।

एडवर्ड तृतीय और स्काटलैण्ड की विजय के उपाय—एडवर्ड तृतीय ने शासन की बागडोर अपने हाथ में लेकर स्काटलैण्ड को नये सिरे से विजय करने का प्रयत्न किया। सन १३२९ ई० में रोबर्ट ब्रूस मर चुका था और वहाँ पर राजसिंहासन पर अधिकार करने का झगड़ा आरम्भ हो गया। एडवर्ड बेलियल (Edward Balliol) और डेविड ब्रूस (David Bruce) दोनों भूतपूर्व बादशाहों के सन्तान होने से गद्दी के अधिकारी थे। एडवर्ड ने बेलियल का पक्ष लिया और स्काटलैण्ड पर आक्रमण किया और ब्रूस को हैलीडन पहाड़ी (Holidon Hill) के मैदान में सन् १३३३ ई० मे पराजित करके बैलियल को गद्दी पर बिठलाया; लेकिन स्काटलैण्ड की प्रजा एक अन्य देश के बनाये हुए मनुष्य को अपना शासक स्वीकार नहीं कर सकती थी, इसलिए बैलियल दुबारा देश से भगा दिया गया और रावर्ट ब्रूस के नाबालिग लड़के डेविड को बादशाह स्वीकार कर लिया गया। अबकी बार स्काटलेण्डवालों ने फ्रांस से सहायता मांगी और उनकी सहायता देने पर फ्रांस और इंग्लैण्ड मे एक युद्ध छिड़ गया, जो एक सौ बरस तक जारी रहा।

फ्रांस से शत वर्षीय युद्ध

(सन् १३३७ से सन् १४५३ ई० तक)

शत वर्षीय कहे जाने का कारण—एडवर्ड के जीवन का उद्देश्य यह था कि वह दूसरे देशों में अपनी युद्ध वीरता दिखाकर यश प्राप्त करे। उसके शासनकाल की सबसे प्रसिद्ध घटना शत वर्षीय युद्ध है, जो अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच सन् १३३८ ई० से १४५३ ई० तक होता रहा। इसका यह अर्थ नहीं कि लगभग सौ वर्ष तक दो देश लगातार युद्ध करते रहे, किन्तु यह अर्थ है कि इस काल में दोनों देशों के सम्बन्ध शत्रुतापूर्ण रहे और समय-समय पर उनमें युद्ध होता रहा। कभी-कभी ऐसा भी हो जाता था कि आपस में क्षणिक संधि हो जाती थी, लेकिन फिर युद्ध छिड़ जाता था।

युद्ध के कारण—(१) फ्रांस में जितने अंग्रेजों के अधिकार में प्रान्त थे, वे सब उनके हाथ से एक एक करके छिन गये थे और अब केवल गैस कोनी (GasCony) ही शेष बच रहा था। फ्रांसीसी बादशाह उसको भी अपने अधिकार में करना चाहता था।

(२) अंग्रेज़ी और फ्रांसीसी जहाज चलानेवाले आपस में झगड़ते रहते थे, इससे दोनों देशों के मित्रता के सम्बन्ध स्थिर न रह सके और दोनों जातियों में एक दूसरे के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई।

(३) फ्रांस वाले स्काटलैण्ड वालों के मित्र थे। जिस समय में अंग्रेज़ स्काटलैण्ड पर आक्रमण करते थे, तो फ्रांस वाले अंग्रेजों के विरुद्ध उनकी सहायता करते थे।

(४) फ्लैंडर्स (flanders) अर्थात् वेलजियम और हालैण्ड का प्रदेश अँग्रेजी ऊन की सबसे बड़ी मण्डी थी। वहाँ के जुलाहे सबसे अधिक अंग्रेज़ी ऊन प्रयोग में लाते थे। फ्रांस का बादशाह फ्लैंडर्स का प्रदेश विजय करना चाहता था। अगर उसको अपने उद्देश्य में सफलता हो जाती, तो अंग्रेज़ी व्यापार को बहुत हानि पहुँचती। इसलिए एडवर्ड ने फ्लैंडर्स वालों से वादा किया कि अगर फ्रांस वाले उनपर आक्रमण करेंगे, तो वह उनकी सहायता करेगा। जब फ्रांस के बादशाह को इस बात का पता चला, तो वह अँग्रेजों का और भी अधिक शत्रु हो गया।
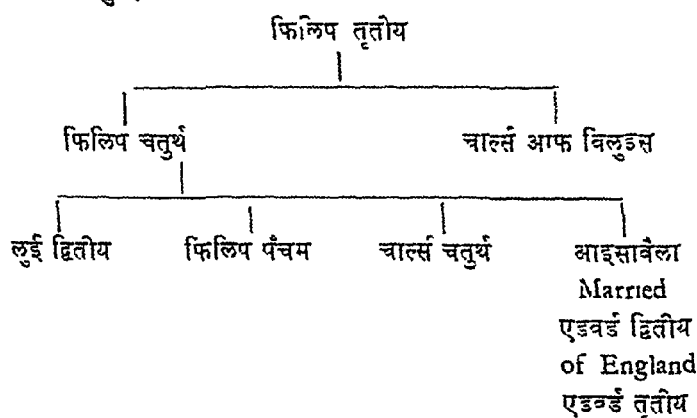
जैसा कि इस वंशवृक्ष से प्रकट है, फिलिप चतुर्थ के बाद उसके तीन लड़के एक के बाद दूसरा फ्रास के बादशाह हुए और बिना किसी सन्तान को अपने पीछे छोड़े हुए मृत्यु को प्राप्त हो गये। उनके बाद राजसिंहासन उनकी बहन आइसाबैला को पहुँचना था, लेकिन फ्रासवालों ने उसको अपना शासक स्वीकार नहीं किया,

क्योंकि सैलिक कानून (Salic Law) के अनुसार फ्रांस में किसी स्त्री को सिंहासन नहीं मिल सकता था, इसलिए फ्रास के अमीरों ने सन् १३२८ ई० में आइसाबैला के चचेरे भाई फिलिप षष्ठ को अपना बादशाह बनाया। एडवर्ड को यह बहुत बुरी लगी और उसने यह तर्क उपस्थित करके फ्रांस के सिंहासन पर दावा किया कि यद्यपि क़ानून के अनुसार आइसबैला सिंहासन पर नहीं बैठ सकती थी, लेकिन उसकी नियमित सन्मान उसकी अधिकारिणी है और इस लिए वह स्वयं सिंहासन का उत्तराधिकारी है; लेकिन फ्रांसीसियों ने इसके उस तर्क और अधिकार को स्वीकार नहीं किया, क्योंकि उसका कोई अधिकार न था। इस पर युद्ध छिड़ गया।

शतवर्षीय युद्ध की घटनायें—इस शतवर्षीय युद्ध में दो वार इंगलैण्ड की बहुत भारी विजय हुई और दो बार पराजय भी हुई। पहली बार की विजय सन् १३३८ से १३४७ तक रही जब कि स्लूईस (Sluys) के स्थान पर सन् १३४६ ई० में समुद्री लड़ाई हुई, जिसमें अंग्रेजों ने विजय पाई। दूसरी मुख्य लड़ाई क्रेसी (Crecy) के स्थान पर सन् १३४६ ई० में हुई। उसमें भी अंग्रेज़ों की विजय हुई। क्रेसी की लड़ाई के बाद एडवर्ड ने कैले (Calais) को घेरा और एक साल के लगातार परिश्रम के बाद उस स्थान पर अधिकार कर लिया। फिर कैले लगभग दो साल तक अंग्रेजों के हाथ मे रहा।

दूसरी वार युद्ध लगभग ८ वर्ष तक रहने के बाद सन् १३५५ ई० में फिर आरम्भ होकर सन १३६० ई० तक जारी रहा। इस बीच में
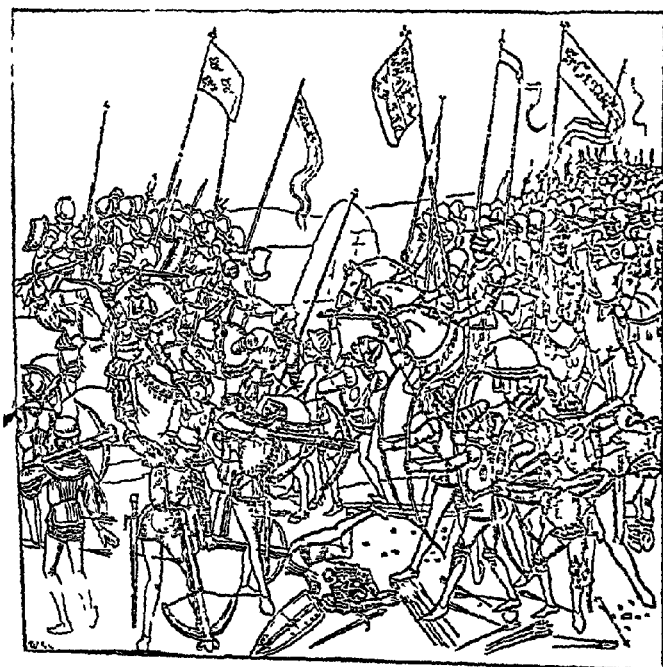
The Battle of Crecy

The Campaign of Edward III in 1346

फ्रास के बादशाह छठे फिलिप की मृत्यु हो चुकी थी और जौन गद्दी पर था। युद्ध पोयटीअर्स (Poitierp) के स्थान पर हुआ जिसमें अंग्रेजों की फिर विजय हुई और फ्रांस का बादशाह जौन द्वितीय स्वयं अंग्रेज़ों के हाथ में गिरफ्तार हो गया। अन्त में सन् १३६० ई० में ब्रेटिगनी (Bretigny) के स्थान पर दोनों में संधि हो गई, जिसके अनुसार अंग्रेज़ों को एक्वीटेन (Aquitoine) कैले (Calais) और पोनथ्यू (Punthiew) के प्रान्त प्राप्त हुए। फ्रांस के बादशाह जौन को स्वतन्त्र कर दिया और उसने युद्ध की हानि का रुपया देने का वादा किया। एडवर्ड ने फ्रांस के सिंहासन पर अपने अधिकार को छोड़ दिया और नारमण्डी (Normandy), मेंन (Moine) अंजू (Anjou) पर भी अपने अधिकार को छोड़ दिया।

(१) **अंग्रेजों की विजय के कारण**—युद्ध के प्रारंभिक काल में एक चर्चा फैल गई थी कि अंग्रेज सिपाही अधिक वीर, साहसी और नियम पूर्वक लड़नेवाले हैं।

(२) एडवर्ड तृतीय एक वीर सिपाही था। उसके विरोधी फिलिप षष्ट और जौन उतने वीर नहीं थे और पुराने काल की लड़ाई बहुत कुछ राजा के सेना पतित्व पर निर्भर थी।

(३) अंग्रेजों की विजय का मुख्य कारण उनके लम्बे बाणों का प्रयोग था।

(४) फ्रांस में अभीतक जागीरदारी प्रथा (Feudalism) जारी थी और इंगलैण्ड में यह बहुत कुछ मिट चुकी थी। इससे इंगलैण्ड में बहुत कुछ मेल हो चुका था, जो कि अभीतक फ्रांस में नहीं हो सका था।
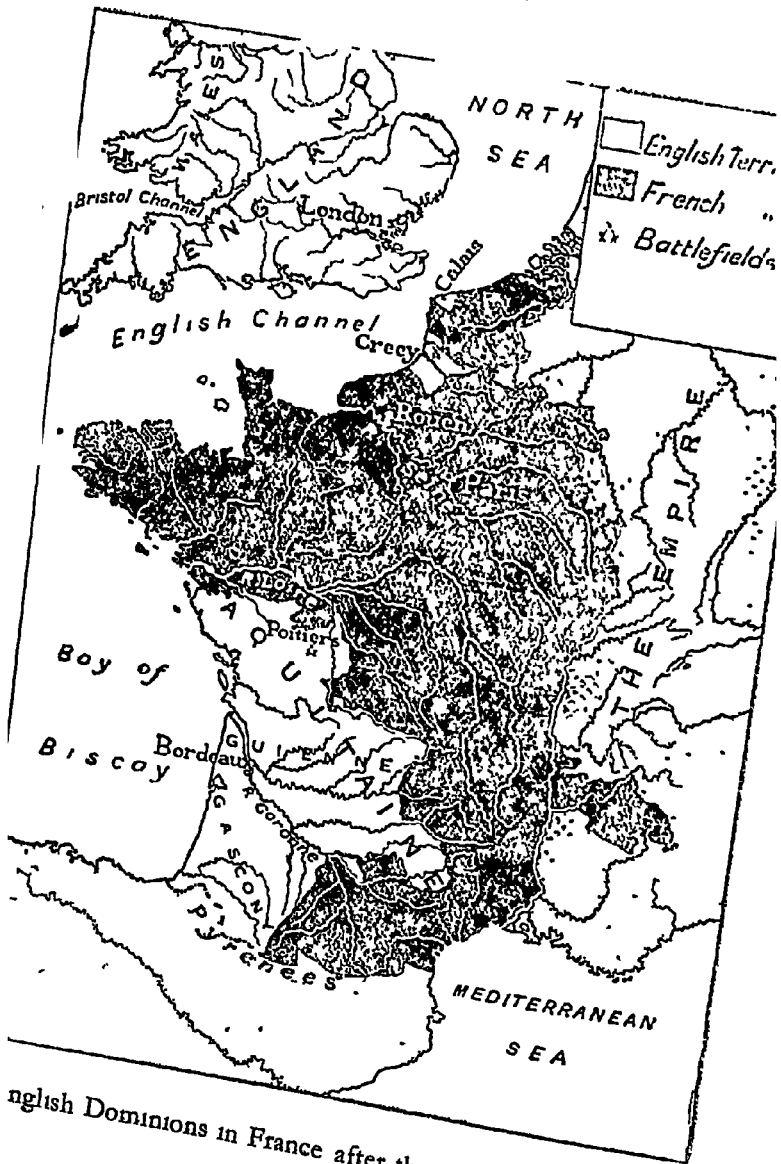
nglish Dominions in France after the treaty of Bretigny

भयंकर महामारी (सन् १३४७-५०)—सन १३४८ ई० में एक बड़ी भारी बीमारी फैली जो "काली महामारी" (Black death) के नाम से प्रसिद्ध है। उससे बहुत हानि हुई जनसंख्या का लगभग $\frac{1}{3}$ भाग इसका शिकार हो गया। इस महामारी से मज़दूरों की संख्या में बहुत कमी होगई और जो शेष रहे वे अधिक मज़दूरी मांगने लगे। जमींदारों ने आसपास की भूमि पर अधिकार कर लिया था, मगर उनको अपनी भूमि पर काम कराने के लिये मज़दूर नहीं मिलते थे। परिणाम यह हुआ कि अनाज का भाव तेज होगया और एक भीषण अकाल पड़ गया।

पूँजीपति और मजदूरों का झगड़ा—प्राचीन इंगलैण्ड में जमीदारों के प्रत्येक आसामी (Surf or Villien) को सप्ताह मे कुछ दिन अपने स्वामी के खेतों में काम करना अनिवार्य था लेकिन अब सिक्के के प्रचलन के कारण जमीदारों ने अपने आसामियों से सेवा के बदले में नक़द रुपया लेना आरम्भ कर दिया था और उस रुपये मे से मज़दूरी देकर मज़दूरों को नौकर रख लेते थे, क्योंकि अब वस्तुओं के भाव तेज होगये थे और मजदूर कम थे, इसलिये मजदूरी की दर में भी पर्याप्त वृद्धि हो गई थी। ऐसी दशा में जमीदारों को बड़ी हानि होने लगी, क्योंकि उनको आसामियों से से तो नियत धन ही मिलता था मगर अपने खेतों पर काम कराने के लिये उनको मजदूरी अधिक देनी पड़ती थी।

मजदूरों का कानून (Statute of Labourers) पार्लिया-

मेंट में जमीदारों की पर्याप्त शक्ति थी। अतएव उन्होंने पार्लियामेण्ट से कई कानून पास कराये, जिनका यह उद्देश्य था कि मजदूरों की मजदूरी की दर वही स्थिर रहनी चाहिए जो "काली महामारी" से पहले थी और जो मजदूर इस वेतन पर काम करने को तैयार न हो, उसको दण्ड दिया जाय। यह कानून "मजदूरों का कानून" (Statute o Labourers) के नाम से प्रसिद्ध है। इंगलैण्ड के इतिहास में यह पहला अवसर है जब पूंजीपतियों (Capitalist) और मजदूरों (Labourers) में मजदूरी की दर के विषय में झगड़ा हुआ; लेकिन इस कानून से भी जमीदार अपना प्रयोजन सिद्ध नहीं कर सके।

उत्तम पार्लियामेण्ट (Good Parliament), १३७६ ई०

एडवर्ड तृतीय अपने जीवन के अन्तिम दिनों में वृद्धावस्था और बीमारी के कारण राज्य का काम ठीक तौर से नहीं सम्भाल सकता था। प्रिंस आफ वेल्स भी रुग्न बीमार था और इसीलिए वह भी शासन का काम नहीं सभाल सका। अब बादशाह का तीसरा लड़का जान आफ गाट और उसके मन्त्री शासन कर रहे थे, लेकिन वे सफलतापूर्वक अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं कर सके। अन्त में सन १३७६ ई० मे "काले राजकुमार" (Black Prince), ने जो बादशाह के सबसे बड़े लड़के का नाम पड़ गया था, वह पार्लियामेण्ट का अधिवेशन बुलवाया जो इतिहास मे कि "उत्तम पार्लियामेण्ट" (Good Parliament) कहलाती है। हाउस आफ कामन्स ने हाउस आफ लार्डस के सामने मन्त्रियों पर दोषारोपण किये कि उन्होंने जनता

के धन का ग़बन किया है और पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के बिना लोगों पर भारी टैक्स लगाये हैं। जौन आफ़ गांट ने मन्त्रियों को बचाने का प्रयत्न किया; लेकिन बचा न सके। और उनको पदच्युत कर दिया गया। कारण यह था कि "काला राजकुमार" (Black Prince) हाउस आफ़ कामन्स की सहायता पर था। उस पार्लियामेण्ट ने बादशाह को १६० प्रार्थनापत्र उपस्थित किये, जिनमें कि प्रजा पर जितने अत्याचार और अन्याय होते थे, उन सबका वर्णन था। इससे पहले गिरजा के मनुष्य, अमीर तथा साधारण प्रजा ये तीनों सब एक ही जगह बैठते थे और अभीतक पार्लिया-मेण्ट की एक ही सभा होती थी, यद्यपि वोट पृथक्-पृथक् दिया जाता था; लेकिन अब अमीर लोगों और साधारण प्रजाजनों ने मिल-कर एक अलग सभा स्थापित की जो "हाउस आफ़ कामन्स" (House of Commons) कहलाने लगी। यह बात ध्यान देने योग्य है कि "हाउस आफ़ कामन्स" इतना शक्तिशाली हो गया था कि उसने बादशाह के मंत्रियों पर भी अभियोग लगाया और उन्हे दंड दिलवा कर यह बात सिद्ध कर दी कि मंत्री का काम और नीति के लिये पार्लियामेण्ट के प्रति उत्तरदायी है, न कि बादशाह के प्रति।

बीसवाँ अध्याय

रिचार्ड द्वितीय (सन् १३७७-९९ ई०)

रिचार्ड द्वितीय का राज्याभिषेक और बाल्यकाल—एडवर्ड तृतीय की मृत्यु के बाद उसका पोता रिचार्ड द्वितीय जो "काले राजकुमार" (Black Prince) का लड़का था केवल ११ वर्ष की आयु मे इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर बैठा, क्योंकि वह नाबालिग था, इसलिए शासन के काम को चलाने के लिए एक कौंसिल नियुक्त की गई, लेकिन उस कौंसिल में उसके चाचा जौन आफ गांट, ड्यूक आफ लंकास्टर (John of Gont, Duke of Lancaster) का अधिक प्रभाव था और सारा शासनकार्य उसकी सम्मति से ही होता था। उसके समय की प्रसिद्ध घटना "कृषक विद्रोह" (Peasants' Revolt) है जो सन् १३८१ ई० में हुआ था।
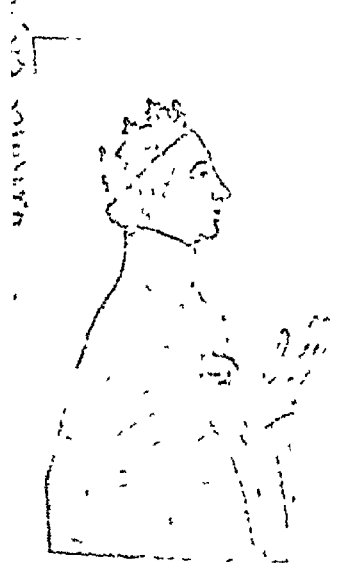
Richard II

किसानों का विद्रोह (सन् १३८१ ई०)

विद्रोह के कारण :—

(१) मज़दूर लोग "मज़दूरों के क़ानून" से जोकि एडवर्ड तृतीय के समय में पास किया गया था, बहुत अप्रसन्न थे, क्योंकि वह उनके लिए बहुत हानिकारक था।

(२) मज़दूरों की एक श्रेणी, जिसको आसामी (Serfs or Villiens) कहते थे, वे लोग स्वतन्त्र होना चाहते थे।

(३) जान विकलिफ़ (John Wikliffe) और उसके साथियों ने बड़े प्रभावशाली ढँग से यह प्रकट कर दिया था कि समस्त मनुष्य संसार में समान है। इसका परिणाम यह हुआ कि मज़दूरों और किसानों में स्वतन्त्रता की भावना उत्पन्न हो गई।

(४) जान आफ़ गाण्ट और कौंसिल का शासन अत्यन्त ही निन्दनीय था। उन्होंने लोगों पर भारी टैक्स लगाये। सन १३८१ ई० में एक प्रकार का नया टैक्स लगाया, जिसे पोल टैक्स (Poll Tax) कहते है, यह टैक्स प्रत्येक मनुष्य को जिसकी आयु १५ वर्ष से अधिक थी, बिना इस बात की छानबीन किये कि उस मनुष्य की आर्थिक दशा कैसी है, अनिवार्य रूप से देना पड़ता था। इससे निर्धन लोग बहुत रुष्ट हो गये। अन्त में दिन प्रतिदिन अपने कष्टों और कठिनाइयों में वृद्धि होते देखकर खेतों पर काम करने वाले मजदूरों ने एक काश्तकार वाट टेलर (Watt Taylor) नामक के नेतृत्व में एक जबर्दस्त विद्रोह आरम्भ कर दिया, जो "किसानों का

विद्रोह" (Peasants' Revolt) के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है।

विद्रोह की घटनायें—विद्रोहियों ने लन्दन नगर पर आक्रमण किया। नगर को लूटा, मकानों और भवनों को गिराया। बादशाह द्वारा नियुक्त किये मंत्रियों का वध किया; लेकिन विद्रोहियों के नेता वाट टेलर (Watt Taylor) को किसी ने वध कर दिया और बादशाह बिल्कुल घबराया नहीं, उसने बहुत वीरता और साहस से काम लिया और वह स्वयं विद्रोहियों के पास चला गया और उनसे उनके कष्टों के दूर करने का वादा किया, अगर वे उसी समय अपने घरों को वापिस चले जायें।

विद्रोह के परिणाम—(१) जान आफ़ गान्ट की शक्ति कम हो गई और सरकार को अपनी शासन नीति में सुधार करना पड़ा।

(२) जहाँ तक मजदूरों के कष्टों का प्रश्न था, उस समय वह हल नहीं हो सका, क्योंकि पार्लियामेण्ट ने रिचार्ड के वादे को कोई महत्व नहीं दिया; मगर धीरे-धीरे किसानों और मजदूरों की अवस्था मे सुधार होता गया, क्योंकि पूँजीपतियों में यह भाव उत्पन्न हो गया कि मजदूरों से बहुत अधिक काम कराने से कोई विशेष लाभ नहीं होता, यद्यपि आरम्भ में जमींदार लोग और चर्च के अधिकारी मज़दूरों को दबाने के लिये दोनों आपस मे मिल गये थे।

रिचार्ड का अपयश और जमींदारों का विरोध—किसानों के विद्रोह के कुछ दिनों बाद रिचार्ड अपने मित्रों रावर्ट डी

वेरी (Robert de Vere) तथा माइकेल डीला पोल (Michael dela pole) की सम्मति के अनुसार काम करने लगा था; लेकिन अमीरों ने ड्यूक आफ़ ग्लाउसेस्टर (Duke of Gloucester) के नेतृत्व में उसका विरोध किया। उन्होंने विद्रोह किया और रिचार्ड के मित्रों को हरा दिया। फिर उन्होंने पार्लियामेण्ट बुलाई और उन्हीं पर विद्रोह का दोष लगाया और इसलिए वे स्वय (Lord Appellant) कहलाते हैं। क्योंकि पार्लियामेण्ट ने रिचार्ड के मित्रों को दंड दिया इसलिए वह निर्दयी पार्लियामेण्ट (Merciless Parliament) कहलाती है।

अच्छे शासन का योग—सन् १३८६ से सन १३९७ तक रिचार्ड ने क़ानून के अनुसार और बुद्धिमत्ता के साथ राज्य किया और यह अच्छे शासन का समय था।

बल पूर्वक शासन—सन् १३९७ से १३९९ ई० तक रिचार्ड ने बल पूर्वक शासन करना आरम्भ कर दिया। उसने अपने चाचा और कुछ जागीरदारों को वध कर डाला और कई को देश मे बाहर निकाल दिया और उसने अपने चाचा जौन आफ़ गांट के लड़के हेनरी आफ़ हर फोर्ड (Henry of Hereford) को दस साल के लिए देश से बाहर निकाल दिया और सन १३९९ ई० में उसकी जागीरें भी ज़ब्त करनी चाही। जब हेनरी को यह पता लगा तो वह जागीरें प्राप्त करने के लिए इंगलैण्ड पहुँचा। उस समय रिचार्ड आयरलैण्ड में विद्रोहियों को पराजित करने के लिए गया हुआ था। हेनरी ने यह अवसर अच्छा समझ कर एक सेना इकट्ठी की

और यार्क शायर (Yorkshire) मे उपस्थित हुआ और कहा कि मैं अपने पिता की जागीर पर अधिकार करने आया हूँ। इंगलैण्ड पहुँचकर यहाँ हर श्रेणी के लोगों ने बड़े उत्साह से हेनरी का स्वागत किया, क्योंकि वे रिचार्ड के अत्याचारों से तंग आ गये थे। इस पर उसका साहस और बढ़ गया और उसने इंगलैण्ड के सिंहासन पर अपना अधिकार प्रगट किया। लोगों ने उसकी सहायता की। ज्यों ही रिचार्ड आयरलैण्ड से उसका सामना करने के लिए आया, तो उसने अनुभव किया कि देश उसके हाथ से निकल चला है पार्लियामेण्ट ने रिचार्ड को राज सिंहासन को त्याग देने के लिए मजबूर किया और हेनरी को बादशाह स्वीकार कर लिया। कुछ समय बाद रिचार्ड का वध कर दिया गया।

जान विकिलिफ और लोलार्डस—जान विकिलिफ़ (John Wicliffe) एक धार्मिक सुधारक सन १३३० ई० मे यार्क शायर में उत्पन्न हुआ था। रोमन कैथोलिक चर्च की बुराइयों को देखकर उसको बहुत दुःख हुआ, विशेष कर पादरियों का अज्ञान और भोगविलास का जीवन उसको बहुत अनुचित प्रतीत हुआ। उसने बाइबिल की सच्ची शिक्षा लोगों तक पहुँचाने के लिए बाईबिल का अंग्रेजी भाषा मे शुद्ध अनुवाद किया और अपने अनुयायियों को (Lollards) के नाम से प्रसिद्ध किया। हेनरी चतुर्थ ने लोलार्ड लोगों को दबाकर इस सुधार के आन्दोलन को भी दबा दिया। रिचार्ड द्वितीय के कोई सन्तान नहीं थी इसलिए रिचार्ड को सिंहासन से उतारने के बाद, गद्दी का अधिकारी मार्च का अर्ल (Earl of March)

एडमण्ड मार्टीमर (Edmund Mortimer) था, क्योंकि वह एडवर्ड तृतीय के दूसरे लड़के का परपोता था और इसलिए सबसे निकट सम्बन्धी वही था लेकिन पार्लियामेण्ट ने उसको सिंहासन पर नहीं बिठाया; किन्तु उसके स्थान पर हेनरी बोलिनवर्क को गद्दी पर बिठाया, यद्यपि वह एडवर्ड तृतीय के तीसरे लड़के जौन आफ़ गांट का लड़का था और क्योंकि तीसरे लड़के की सन्तान की अपेक्षा दूसरे लड़के की सन्तान का अधिकार अधिक समुचित हैं इसलिए एडमण्ड मार्टीमर (Edmund Mortimer) के होते हुए इसका अधिकार कम था; लेकिन पार्लियामेण्ट ने हेनरी चतुर्थ को ही उचित समझा। यह लंकास्टर वंश के द्वारा शासन की क्रान्ति कहलाती है, क्योंकि रिचार्ड द्वितीय के बाद सिंहासन का नियमानुसार उत्तराधिकारी बादशाह स्वीकार नहीं किया गया, किन्तु पार्लियामेण्ट ने राजवंश के सबसे योग्य पुरुष को सिंहासन के निकट उत्तराधिकारी से बढ़कर समझकर बादशाह निर्वाचित किया।

इस घटना से यह स्पष्ट प्रकट होता कि पार्लियामेण्ट की शक्ति इस समय बहुत बढ़ गई थी। यह दूसरा अवसर था जबकि पार्लियामेण्ट ने एक को सिंहासन से उतार कर दूसरे पुरुष को सिंहासन पर बिठाया। अब हेनरी चतुर्थ को भूतपूर्व बादशाहों की अपेक्षा यह विचार अधिक रखना पड़ा कि पार्लियामेण्ट कहीं उससे अप्रसन्न न होजाय, क्योंकि हेनरी चतुर्थ ने पार्लियामेण्ट की कृपा से सिंहासन प्राप्त किया था, इसलिए उसके लड़के और पोते को पर्लियामेण्ट की इच्छा के अनुसार चलने पर मजबूर होना पड़ा। अब पर्लियामेण्ट

इस बात का प्रयत्न करती रही कि रिचार्ड द्वितीय की भाँति उसके उतराधिकारी बलपूर्वकशासन स्थिर न करने पायें। सन १३९९ ई० में रिचार्ड को सिंहासन से उतार करके हेनरी चतुर्थ को सिंहासन पर आरूढ़ करना इतिहास में "लंकास्टर वंश के द्वारा शासन की क्रांति" के नाम से प्रसिद्ध है।
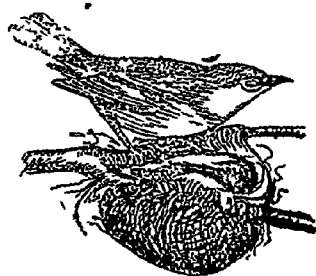
इक्कीसवाँ अध्याय

लंकास्टर वंश के राजा

हेनरी चतुर्थ सन् १३९९ ई० से १४१३ ई० तक

हेनरी चतुर्थ का सिंहासन पर अधिकार और उसका कानूनी महत्व—जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है हेनरी का वंशाधिकार के दृष्टिकोण से सिंहासन पर कोई अधिकार नहीं था, किन्तु हेनरी चतुर्थ का राजसिंहासन के लिए अधिकार बिल्कुल पार्लियामेण्ट की स्वीकारी पर निर्भर था, जिसके कारण उसने और लंकास्टर वंश के दूसरे बादशाह ने सर्वदा पार्लियामेण्ट को प्रसन्न रखने का प्रयत्न किया। इसका प्रभाव यह हुआ कि पार्लियामेण्ट का महत्व और गौरव बहुत बढ़ गया और बादशाह की व्यक्तिगत शक्ति कम हो गई और तब यह क़ानून बन गया कि पार्लियामेण्ट की इच्छा के बिना बादशाह किसी प्रकार का टैक्स प्रजा के लोगों पर नहीं लगा सकता और नहीं उस समय तक किसी प्रकार का धन वसूल कर सकता है, जब तक कि पार्लियामेण्ट की शिकायतें दूर न करदी जावें।

हेनरी चतुर्थ की कठिनाइयाँ—उसको कई एक विद्रोहों का सामना करना पड़ा। रिचार्ड द्वितीय के साथ सहानुभूति रखने वालों ने उसके विरुद्ध विद्रोह किया, जिसको उसने दबा दिया। फिर

ओविन ग्लेण्डोवर (Owen Glendower) ने षडयन्त्र रचा। वेल्स के समस्त निवासी उसके साथ मिल गये। ग्लेण्डोवर एक उच्च कोटि का सेनापति था। उसने दस वर्ष तक हेनरी का सामना किया।

इसी प्रकार स्काटलैण्ड ने परसी, अर्ल आफ़ नार्थम्बरलैण्ड (Percy, Earl of Northumberland) की देख रेख में विद्रोह का झण्डा ऊंचा करके इंग्लैण्ड पर आक्रमण किया, मगर उस आक्रमण का कोई फल नहीं हुआ।

धार्मिक नीति—क्योंकि चर्च ने सिंहासन प्राप्त करने में उसको सहायता दी थी, इस कारण से उसको पादरियों को प्रसन्न रखना पड़ा। पार्लियामेण्ट ने लोलार्डों (Lollards) के विरुद्ध एक क़ानून पास किया और बादशाह ने चर्च के भय से उसे स्वीकार कर लिया। इस क़ानून के अनुसार कई लोलार्ड्स जीवित जला दिये गये और इस प्रकार उनका आन्दोलन कुछ समय में ही दब गया।

लंकास्ट्रियन क्रान्ति के प्रभाव—(Effects of the Lancastrian Revolution) पार्लियामेण्ट का प्रभाव बहुत बढ़ गया और बादशाह की व्यक्तिगति शक्ति घट गई। इस क्रान्ति ने यह सिद्ध कर दिया कि पार्लियामेण्ट एक बादशाह को सिंहासन से उतार कर दूसरे बादशाह को सिंहासन पर बैठा सकती है और इस अधिकार के नियम को स्थिर कर दिया कि वह राजवंश के सबसे योग्य पुरुष को सिंहासन के निकट उत्तराधिकारी की अपपेक्षा अच्छा समझकर बादशाह निर्वाचित कर सकती है।

बाईसवाँ अध्याय

हेनरी पञ्चम (१४१३ से १४२२ ईस्वी तक)

Henry V

हेनरी पंचम का सिंहासन पर बैठना—वह हेनरी चतुर्थ का सबसे बड़ा लड़का था। हेनरी चतुर्थ सन् १४१३ ई० में मर गया और उसके मरने पर हेनरी पंचम सिंहासन पर बैठा।

हैनरी के उद्देश्य—

(१) लार्ड लोगों की शक्ति को कम करना।

(२) अपने वंश के राज्य करने के अधिकार को सुदृढ़ करना।

फ्रांस के विरुद्ध शतवर्षीय युद्ध का पुनः आरम्भ—उस युद्ध के पुनः आरम्भ होने के कारण हेनरी पंचम के समय के यह है, जैसे :—

(१) उसने भी एडवर्ड तृतीय की भाँति फ्रान्स के राजसिंहासन

लिए अपना अधिकार प्रकट करना आरम्भ किया। यह अधिकार बिलकुल अनुचित था।

(२) फ्रांस का बादशाह चार्ल्स षष्ट कुछ पागल हो गया था और अमीरों के आपस के झगड़ों के कारण फ्रांस की दशा कुछ अवनत थी।

(३) दोनों अंग्रेज और फ्रांसीसी आपस में एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखते थे। और अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने और जागीरदारों की शक्ति को कम करने के लिए बादशाह ने यह उपाय सोचा कि अन्य देशों से एक सफल युद्ध आरम्भ किया जाये ताकि लोगों का ध्यान उसी ओर लगा रहे। यह सोचकर उसने फ्रांस से युद्ध आरम्भ कर दिया।

युद्ध की घटनायें—तीन आक्रमण हुए पहले-पहल सन् १४१५ ई० मे हेनरी एष्चम ने नारमण्डी पहुँच कर हरफ्लूर (Harefleur) पर अधिकार कर लिया और उसके बाद कैले (Calais) की ओर प्रस्थान किया, लेकिन फ्रांसीसियों ने उसका सामना किया और २५ अक्टूबर सन् १४१५ ई० मे अगिनकोर्ट (Agincourt) पर दोनों की मुठभेड़ हो गई और उसमें अंग्रेज़ों ने फ्रांसीसियों को पराजित कर दिया।

दो साल के बाद हेनरी ने दुबारा नारमण्डी पर आक्रमण किया और रूअन (Roun) को विजय कर लिया। इस समय फ्रांस के अमीरों में आपस में फूट थी और इन विजयों के बाद भी उनमें परस्पर मेल नहीं हुआ। इस समय फ्रांस में दो मुख्य दल थे, एक वर-

गण्डी वालों का था और दूसरा ओरलियन्स (Orleans) वालों का था। अवसर पाकर ओरलियन्स वालों ने बरगंडो (Burgundy)]
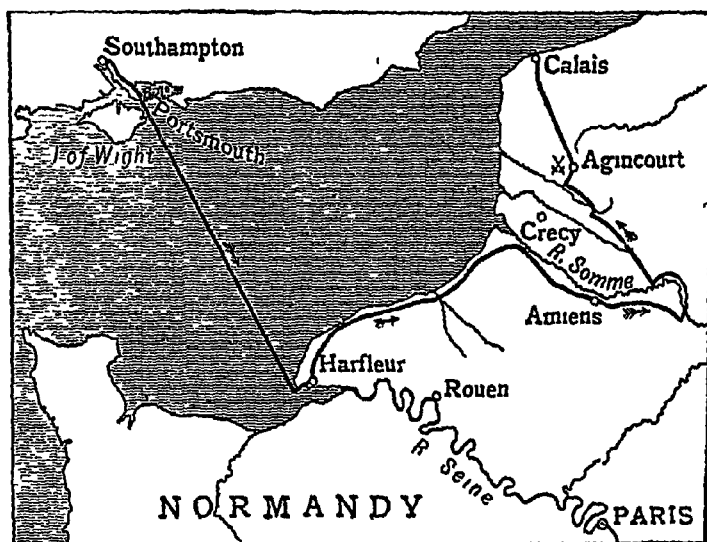
Henry V Compaign in 1415

के शासक ड्यूक का बध कर डाला। इसका बदला लेने के लिए बर-गण्डी के नये ड्यूक फिलप ने अंग्रेजों से मित्रता की और शतवर्षीय युद्ध में अँग्रेजों को सहायता देना आरम्भ किया। इससे अँग्रेजों की शक्ति में और भी बढ़ती हो गई।

सन् १४२० ई० मे फ्राँसीसी ट्रोयस की संधि (Treaty of Troyes) करने पर मजबूर हुये, जिसके अनुसार हेनरी पञ्चम ने फ्रांस के बादशाह चार्ल्स षष्ट की लड़की से विवाह किया और वह अपने ससुर का उत्तराधिकारी भी स्वीकार कर लिया गया। यह निश्चय हुआ

कि चार्ल्स षष्ट के पागल हो जाने के कारण उसके जीवन में हेनरी पञ्चम रक्षक (Protector) के रूप में फ्रांस का प्रवन्ध करेगा और अपने ससुर की मृत्यु के बाद वह फ्रांस का बादशाह हो जायगा। इन सबका परिणाम यह हुआ कि फ्रांस के उत्तर का भाग अंग्रेजों और बरगण्डी वालों के सम्मिलित शासन में आगया; लेकिन चार्ल्स का उत्तराधिकारी उनके विरुद्ध दक्षिण में षड्यन्त्र रचता रहा और उसका यह भी यत्न था कि उसका देश फिर वापिस उसके अधिकार में आ जाय।

इसलिए हेनरी ने तीसरी वार फ्रांस पर फिर आक्रमण किया (सन १४२२ ई० मे); लेकिन वह इस समय लगभग ४५ वर्ष की आयु में परलोकगामी हुआ और दो महीने बाद उसका ससुर भी मर गया।
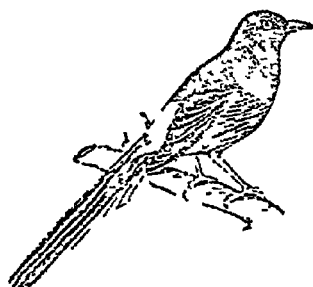
तेईसवां अध्याय

हेनरी षष्ठ

(सन् १४२२ ई० से १४६१ ई० तक)

हेनरी का बाल्यकाल—हेनरी पंचम की मृत्यु के समय उसके पुत्र की आयु केवल ९ मास की थी। अतएव वह हेनरी षष्ठ के नाम से इंगलैण्ड के सिंहासन पर बिठा दिया गया। उसके कुछ समय बाद फ्रांस के बादशाह चार्ल्स षष्ठ की भी मृत्यु होगई और फ्रांस के सन्धिनामे (Treaty of Troyes) के अनुसार हेनरी षष्ठ फ्रांस का भी बादशाह होगया। हेनरी की वसीयत के अनुसार जान, ड्यूक आफ़ बेडफोर्ड (John Duke of Bedford) राज्य का संरक्षक नियुक्त हुआ और उसने फ्रांस और इंगलैण्ड दोनों का प्रबन्ध करना आरम्भ किया। उत्तरी फ्रांस के समस्त प्रान्तों ने जहाँ बरगंडी दलवालों (Burgundians) का ज़ोर था, हेनरी षष्ठ को फ्रांस का बादशाह स्वीकार कर लिया। मगर दक्षिणी प्रान्तों ने जहाँ आर्लियन्स दलवालों (Orleanists) का ज़ोर था, एक विदेशी राजा के शासन में रहना स्वीकार न किया और वे चार्ल्स षष्ठ के लड़के अर्थात् डाफिन (फ्रांस के राजकुमार) को फ्रांस का बादशाह बनाने का प्रयत्न करने लगे।

बैडफोर्ड की दक्षिणी फ्रांस को विजय करने की इच्छा—
दक्षिणी फ्रांस में आर्लियन्स वालोंका ज़ोर था और वे हेनरी को फ्रांस का बादशाह स्वीकार नहीं कर रहे थे। बैडफ़ोर्ड दक्षिणी फ्रांस को भी विजय करना चाहता था, मगर लाइर नदी के किनारे पर आर्लियन्स का सुदृढ़ क़िला अभी तक फ्रांसीसियों के अधिकार ही में था, इसलिये उसने एक शक्तिशाली सेना उस क़िले का घेरा करने के लिये भेजी; मगर कई महीनों तक अंग्रेज़ उस क़िले को न लेसके। ज्यों-ज्यों रसद कम होती जाती थी, त्यों-त्यों क़िले वालों का साहस दूना बढ़ता जाता था। क़िला विजय होने ही वाला था कि इतने में एक साधारण देहाती लड़की ने फ्रांसीसियों को सहायता पहुँचाई और अंग्रेजों को फ्रांस से निकालकर फ्रांसवालों को सर्वदा के लिये विदेशियों से मुक्ति दिलादी।

जौन आफ आर्क (१४२९ ई०)—इस लड़की का नाम जौन आफ़ आर्क (John of Arc) था (यद्यपि उसका असली नाम जीन डी आर्क (Jeannie D' Arc) था; मगर अधिकतर इतिहासकार उसको जौन आफ़ आर्क के नाम से ही पुकारते हैं।) उसका घर फ्रांस की पूर्वी सीमा पर डूमरेमी (Domremy) नामक ग्राम में था और वह एक साधारण देहाती मनुष्य की लड़की थी। उसने घोषणा की "कि ईश्वर के स्वर्गीय दूत मेरे पास आते और कहते हैं कि तुम सचेत होजाओ—अपने देश को बाहरी आक्रमणों से बचाने के लिये साहस धारण करो—फ्रांस की सेनाओं को अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ाओ—ईश्वर उन्हे विजयी बनायेगा, और उत्तराधिकारी

Joan of Arc

चार्ल्स के राज्याभिषेक का उत्सव तुम्हारे हाथ से किया जायगा, जो रीम्स (Rheims) के गिरजे में होगा।"

अतएव जौन फ्रांस के बादशाह के पास गई और उसे सब प्रकार से साहस दिलाया। उसके बाद स्वयं जिरहबख्तर पहन घोड़े पर सवार होकर जौन ने कुछ सिपाहियों के साथ आर्लियन्स को प्रस्थान किया। फ्रांस के सिपाही जौन को बिल्कुल देवदूत ही समझने लगे थे और उसकी सेना में रहकर उन्होंने शराब पीना आदि दुर्गुण भी छोड़ दिये थे। उनमें एक नवीन उत्साह की लहर चल पड़ी थी। फ्रांसीसी सेना के आते ही अंग्रेज़ों को आर्लियन्स का घेरा छोड़ देना पड़ा और कुछ दिनों के ही बाद पेटे (Patay) के स्थान पर अंग्रेज़ों की बुरी तरह से पराजय हुई। जौन ने जाकर अपनी भविष्यवाणी के अनुसार रीम्स (Rheims) के स्थान पर ठीक उत्तरी फ्रांस में जहाँ शत्रुओं का जोर था, डाफिन का राज्याभिषेक किया और उसको चार्ल्स सप्तम के नाम से फ्रांस का बादशाह बना दिया। उसके बाद सन् १४३० ई० में जौन अंग्रेज़ों के हाथ मे पड़ गई और उन्होंने उसे जादूगरनी समझकर जीवित ही अग्नि में जला डाला।

अँग्रेजों की शक्ति की दुबारा अवनति—चार्ल्स सप्तम के सिंहासनारूढ होने के समय से अंग्रेज़ों की शक्ति फ्रांस में दिन पर दिन कम होती गई। बैडफोर्ड का जो अँग्रेज़ों की ओर से फ्रांस में संरक्षक के रूप मे शतवर्षीय युद्ध का संचालन कर रहा था, बरगंडी वालों से झगड़ा हो गया। सन् १४३५ ई० जब कि फ्रांस ने अंग्रेज़ों को नारमण्डी और एक्वीटिन देने का वादा किया इस शर्त पर कि वे

फ्रांस के सिंहासन पर अंग्रेज़ी अधिकार का दावा छोड़ दगे, तो अंग्रेज़ों ने उस शर्त को अस्वीकार किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि वरगंडी बिल्कुल अंग्रेज़ों के विरुद्ध होगया और वह अब फ्रांस की ओर होगया। इसी समय अर्थात् सन् १४३५ ई० में वैडफोर्ड की भी मृत्यु हो गई।

सन् १४३५ से १४५३ ई० तक शतवर्षीय युद्ध का अन्तिम भाग है, जिसमें अंग्रेज़ों की दशा खराब होती गई यहाँ तक कि उन्होंने एक एक करके समस्त फ्रांसीसी अधिकृत प्रान्त हाथ से खो दिये। वैड-फोर्ड के बाद इंग्लैण्ड में कोई अच्छा नेता नहीं था। अमीर लोग आपस में एक दूसरे से लड़ रहे थे और हेनरी षष्ठ की आयु कम पाकर राजसिंहासन को हड़प जाने के लिए चेष्टा और झगड़ा कर रहे थे। अंग्रेज़ों ने हेनरी षष्ठ का विवाह चार्ल्स सप्तम की भतीजी मारग्रेट (Margaret) से कर दिया और इस प्रकार फ्रांस में अपनी शक्ति की अवनति को रोकने की चेष्टा की, लेकिन फ्रांसीसियों में इस समय अत्यन्त उत्साह भरा हुआ था और उन्होंने यह प्रतिज्ञा करली थी कि अन्य देशवालों को फ्रांस से बाहर निकालकर ही दम लेंगे। परिणाम यह हुआ कि फ्रांसीसी प्रांत एक के बाद दूसरा अंग्रेजों के अधिकार से निकल गये। सन् १४५३ ई० मे केवल कैले (Calais) का किला अंग्रेजों के हाथ में रह गया और फ्रांस के अन्य प्रान्तों से अंग्रेज़ों का कोई सम्बन्ध नहीं रह गया।

शतवर्षीय युद्ध के फल तथा प्रभाव:—

(१) केवल कैले (Calais) ही एक ऐसा प्रान्त था जो अंग्रेज़ों

को इस शतवर्षीय युद्ध से मिला। उसके अतिरिक्त अंग्रेज़ों को इस युद्ध से कुछ नहीं प्राप्त हुआ।

(२) इस युद्ध के समाप्त होने पर अंग्रेज़ी सिपाही बेकार होगये और वे सब अपने देश में ही लड़ाई-झगड़ा करके अवसर की खोज़ करने लगे।

(३) इस युद्ध से अमीर लोग बहुत झगड़ालू हो गये। युद्ध समाप्त होने पर उनके पास कोई काम नहीं रहा। वे हाथ पर हाथ धर कर बेकार चुप-चाप तो बैठ नहीं सकते थे, इसलिए उन्होंने सिपाहियों को अपने यहाँ नौकर रख लिया और बहुत शीघ्र गुलाबों का युद्ध (War of Roses) आरम्भ हुआ। बादशाह बहुत निर्बल शासक था और शतवर्षीय युद्ध से उसकी आर्थिक दशा बहुत ख़राब होगई थी, इसलिए सरकार अमीरों को झगड़ा करने से रोक नहीं सकी।

(४) इस युद्ध से अंग्रेजों में देशभक्ति और जातीयता की भावना जागृत हो गई और अब राष्ट्रीयता का उत्साह उत्पन्न हो जाने के कारण लोग गिरजाघरों के मामलों में रोम के पोप के आधीन रहना पसन्द नहीं करते थे। उससे अब वे स्वतंत्र होना चाहते थे, इसलिए उन्होंने गिरजाघर की आमदनी को रोम भेजने से इन्कार कर दिया और उसको रोकने के लिए कानून बनवाये। इसके अतिरिक्त जातीयता की भावना उत्पन्न हो जाने से अब अंग्रेज़ी भाषा की बुनियाद पड़ी और अंग्रेज़ों ने यह अनुभव किया कि जब वे फ्रांस से युद्ध कर रहे हैं, तब वे फ्रांस-की भाषा प्रयोग क्यों करें। इसलिए सन् १३६२ ई०

में पार्लियामेण्ट ने एक कानून बनाया जिसके अनुसार अंग्रेज़ी को अदालती भाषा ठहराया गया।

(५) इस युद्ध से फ्रांस में भी जातीय उत्साह उत्पन्न हो गया था और यद्यपि दो बार अंग्रेजों ने फ्रांस को विजय कर लिया, लेकिन दोनों बार कुछ समय के बाद ही फ्रांस उनके अधिकार से निकल गया। यह बात सिद्ध हो गई कि देश के निवासियों में जातीय अभिमान का भाव उत्पन्न होने पर विदेशी शासन का स्थिर रहना असम्भव है।

(६) इस शतवर्षीय युद्ध से एक बहुत बड़ा लाभ भी हुआ, वह यह कि पार्लियामेण्ट के अधिकारों में पहले की अपेक्षा वृद्धि हो गई और उस सभा की सुदृढ़ नींव स्थापित हो सकी, क्योंकि युद्ध के समय में युद्ध के कारण से और युद्ध समाप्त होने पर आर्थिक दशा खराब होने के कारण से बादशाह को रुपये की आवश्यकता रहती थी और इसे पार्लियामेण्ट के सामने झुकना पड़ता था। पार्लियामेण्ट ने यह अच्छा अवसर देख कर अपने अधिकार और भी बढ़ा लिए। सन् १४०१ ई० में वार्तालाप और बाद विवाद की स्वतन्त्रता (Freeddom of Debate) प्रदान की गई। सन १४०४ ई० में पार्लियामेण्ट ने कोषाध्यक्ष नियुक्त किया और सन १४०७ ई० मे कामन सभा को यह अधिकार मिला कि रुपये के सम्बन्ध के बिल पहले कामन सभा में उपस्थित हुआ करें।

अंग्रेजों की असफलता के कारण—इस शतवर्षीय युद्ध में अंग्रेज़ों की असफलता के निम्नलिखित कारण थे:—

(१) बेडफोर्ड की असमय मृत्यु हो गई और उसके बाद अंग्रेज़ों को कोई योग्य नेता नहीं मिला।

(२) अंग्रेजी कौंसिल मे झगड़ा हो गया। वहाँ पर दो पार्टियाँ हो गई एक लड़ाई के पक्ष मे थी जिसका नेता ड्यूक आफ़ ग्लाऊसेस्टर (Duke of Gloucester) था और दूसरी पार्टी लड़ाई के विरुद्ध थी। वह संधि चाहती थी। उसका नेता ब्यूफ़ार्ट (Beaufort) था।

(३) ड्यूक आफ़ बरगंडी से झगड़ा कर लेना एक बहुत बड़ी भूल थी और इससे अंग्रेजों की शक्ति और भी कम हो गई।

(४) जौन आफ़ आर्क के मारे जाने से फ्रांसीसियों में एक नवीन उत्साह उत्पन्न हो गया था और उनको यह विश्वास हो गया था कि वे अंग्रेजों का सामना करके उनको देश से निकाल सकते हैं और उन्होंने लगभग बीस साल तक लगातार लड़ाई लड़ी और अन्त मे कैले (Calais) के अतिरिक्त समस्त फ्रास से उनको निकाल दिया। इस प्रकार अंग्रेजों की पराजय फ्रांस में नवीन उत्साह उत्पन्न होने और युद्ध उत्तमता के साथ न लड़े जाने के कारण से हुई।

चौबीसवां अध्याय

गुलाबों का युद्ध (सन् १४५५ ई. से १४८५ ई. तक)

शतवर्षीय युद्ध के समाप्त होने पर अंग्रेज़ी सिपाही बेकार हो गये और उन्होंने अमीरों के आधीन नौकरी करके देश को एक भयंकर गृहयुद्ध मे प्रवृत करा दिया। इन युद्धों को "गुलाब के फूलों का युद्ध" (War of Roses) कहते है।

युद्ध के दो पक्ष—यह युद्ध वास्तव में एडवर्ड तृतीय की सन्तानों के बीच हुआ, क्योंकि उनमें से प्रत्येक मनुष्य सिंहासन का उत्तराधिकारी बनना चाहता था। युद्ध के एक पक्ष को लंकास्ट्रियन (Lancastrian) और दूसरे पक्ष को यौर्किस्ट (Yorkist) कहते थे। लंकास्ट्रियन जान आफ़ गाण्ट की सन्तान थे जो एडवर्ड तृतीय का तीसरा लड़का था और यौर्किस्ट एडवर्ड तृतीय के दूसरे और छोटे लड़के की सन्तान थे। बड़े २ लार्डों ने अधिकतर लंकास्ट्रियन वंश का साथ दिया; लेकिन नगरों के निवासी अधिकतर ड्यूक आफ़ यौर्क के पक्ष में थे। हेनरी षष्ठ के अनुगामी लंकास्ट्रियन थे और वे निशान के तौर पर लाल गुलाब धारण करते थे। रिचार्ड (Richard) ड्यूक आफ़ यौर्क (Duke of York) दूसरे दल का नेता था, वह रिचार्ड तृतीय एडवर्ड तृतीय के दूसरे और छोटे लड़के की सन्तान में से था इसलिए वह सिंहासन का अधिकारी था।

यौर्क पक्ष के लोग भी सफ़ेद गुलाब निशान के तौर पर धारण करते थे। इसी आधार पर इन लड़ाइयों को गुलाबों का युद्ध कहते हैं। यह युद्ध लगभग ३० वर्ष तक जारी रहा।

युद्ध के कारण—(१) इस समय इंग्लैण्ड में कायर बादशाह राज्य कर रहे थे। देश में अशान्ति फैली हुई थी और बादशाह इतना शक्ति हीन था कि वह लार्डों की बढ़ती हुई शक्ति को रोक नहीं सका।

(२) हेनरी का विवाह सन् १४४५ ई० में मार ग्रेट आफ़ अंजू से हुआ था और विवाह के लगभग ८ वर्ष पश्चात् सन् १४५३ ई० में उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इस बीच में रिचार्ड ड्यूक आफ़ यौर्क (Richard Duke of York) को यह आशा थी कि हेनरी षष्ट की कोई सन्तान न होने के कारण वही उसका उत्तराधिकारीहोगा, क्योंकि यौक की माता एडवर्ड तृतीय के दूसरे लड़के के वंश में से थी और उसका पिता उसी बादशाह के चोथे लड़के की सन्तान था। इस प्रकार से यौर्क को एडवर्ड तृतीय के दूसरे और चौथे लड़कों के वंश का अधिकार पहुँचता था, जिसके अनुसार वह वंशागत अधिकार के दृष्टिकोण से हेनरी षष्ट (जो एडवर्ड तृतीय के तीसरे लड़के की सन्तान था) की अपेक्षा राजसिंहासन का अधिक अधिकारी था, लेकिन उसने इस विचार से कि सिंहासन उनको मिलेगा ही क्योंकि बादशाह निस्सन्तान है, प्रारम्भ में कोई अधिक गड़बड़ी नहीं की; लेकिन सन १४५३ ई० में जबकि बादशाद के पुत्र उत्पन्न हुआ और उसकी आशाओं पर पानी फिर गया, तब भी उसने कुछ गड़बड़ी

नहीं की। सन् १४५४ ई० में हेनरी षष्ठ को पागलपन का रोग आरम्भ हुआ तो रिचार्ड ड्यूक आफ़ यौर्क राजा का प्रतिनिधि नियुक्त हुआ और उसने बड़ी सुन्दरता से कार्य सम्पादन किया और स्वयं बादशाह बनने का कोई प्रयत्न नहीं किया; लेकिन रानी उससे द्वेष करने लगी, क्योंकि उसको यह अन्देशा था कि कहीं उसके लड़के को हटाकर वह स्वयं बादशाह न बन जाय। इसलिए जब बादशाह ने पागलपन के रोग से आराम पाया तो रानी ने रिचार्ड को अलग करके ड्यूक आफ़ सामरसेट (Duke of Somerset) को उसके स्थान पर नियुक्त किया और यौर्क के दुश्मनों को ऊँचे पदों पर नियुक्त करना आरम्भ किया।

प्रारम्भ की लड़ाई लंकास्टर वंश के विरुद्ध नहीं थी; किन्तु ड्यूक आफ़ सामरसेट के विरुद्ध थी। आरम्भ में इस लड़ाई का प्रयोज़न राजा के पद का छीनना नहीं था, किन्तु राजा के प्रतिनिधि के पद को लेना था। सन् १८५५ ई० में सेण्ट एलबन्स (St. Albons) के स्थान पर यौर्क ने अपने शत्रुओं को बहुत बुरी तरह से पराजित किया। सामरसेट मारा गया और स्वयं हेनरी षष्ठ उसी के हाथों गिरफ्तार हो गया।

इस विजय के पश्चात् यौर्क दुबारा राज्य का संरक्षक बन गया और बड़े २ पदों पर उसने अपने मित्रों को नियुक्त कर दिया; लेकिन मार्गरेट रानी चुप बैठनेवाली स्त्री नहीं थी। उसने एक सेना इकट्ठी की और सन् १४६० ई० में वेकफील्ड (Wakefield) के स्थान पर यौर्क वंश के पक्ष वालों को पराजित किया। स्वयं यार्क युद्ध में मारा

गया और मारगरेट ने उसकी लाश पर कागज़ का मुकुट लगाकर उसे एक ऊँचे खम्मे पर लटका दिया, जिससे लोग देखलें कि यार्क वंश के राजसिंहासन प्राप्त करने के प्रयत्न असत्य और व्यर्थ थे।

यार्क वंश की विजय—एडवर्ड चतुर्थ—(सन् १४६१ से १४८३ तक) कुछ समय तक सत्य प्रतीत हुआ कि लंकास्टर वंश की पूरी विजय हो गई; लेकिन यार्क के लड़के एडवर्ड ने शीघ्र ही यार्क पक्ष वालों का नेतृत्त्व ग्रहण किया। देश के कुछ अमीर और शक्तिशाली जागीरदार एडवर्ड की सहायता करते रहे। उनमें एक रिचार्ड अर्ल आफ़ वारविक (Earl of Warwick) था। एडवर्ड और वारविक दोनों लन्दन की ओर बढ़े और उसपर अधिकार कर लिया। पार्लियामेण्ट ने एडवर्ड चतुर्थ के नाम से उसके बादशाह होने की घोषणा करदी। मार्गरेट मजबूर होकर उत्तर की ओर भाग गई। एडवर्ड ने उसका पीछा किया और टाऊटन (Towton) के स्थान पर उसे पराजित करके लंकास्टर वालों पर विजय प्राप्त कर ली। मारगरेट की सेना बहुत बुरी तरह से हार गई और वह अपने लड़के को लेकर फ्रांस भाग गई। अन्त में बादशाह हेनरी षष्ट पकड़ा गया और वह लन्दन के राजकीय जेलखाने में क़ैद कर दिया गया।

टाऊटन की विजय एक निर्णयात्मक विजय थी। उसी के फलस्वरूप यार्क वंश इंगलैण्ड के राजमुकुट और सिंहासन का अधिकारी बन गया। इस वंश में कुल तीन बादशाह हुए हैं।

पच्चीसवाँ अध्याय

यार्क वंश सन् १४६१ से १४८५ ई. तक

एडवर्ड चतुर्थ सन् १४६१ से १४८३ ई० तक

नोट—हेनरी षष्ट सन् १४७० से १४७१ ई० तक एक वर्ष के लिए बीच में बादशाह रहा।

एडवर्ड चतुर्थ—एडवर्ड ड्यूक ओफ़ यार्क ने टाऊटन के स्थान पर विजय प्राप्त करने के बाद एडवर्ड चतुर्थ के नाम से अपने शासक होने की घोषणा की वह यार्क वंश का सबसे पहला बादशाह था। उसने इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर लगभग २२ वर्ष तक शासन सूत्र का संचालन किया।

वारविक का ड्यूक, रिचार्ड नेविल—एडवर्ड को सिंहासन प्राप्त करने में वारविक से बहुत सहायता मिली थी और बादशाह होने के बाद लगभग ८ साल तक बादशाह और वारविक के पारसपरिक सम्बन्ध बहुत अच्छे रहे लेकिन बाद में उनकी मित्रता में अन्तर पड़ गया और धीरे-धीरे झगड़ा यहाँ तक बढ़ गया कि वारविक को इंग्लैण्ड छोड़कर जाना पड़ा। वह फ्रांस वापिस चला गया और वहाँ जाकर वह महारानी मारगरेट के साथ मिल गया। थोड़े ही समय के पश्चात् वारविक और मारगरेट सेना लेकर इंग्लैण्ड आये और उन्होंने एडवर्ड चतुर्थ को बलपूर्वक सिंहासन से उतार

दिया। उस समय वारविक ने सन् १४७० ई० मे बूढ़े हेनरी षष्ट को कैदखाने से मुक्त करके फिर बादशाह बनाया और उसके नाम से स्वयं शासन प्रबन्ध करना आरम्भ किया लेकिन इस प्रकार की अवस्था केवल कुछ महीने तक ही रही।

वारनेट का युद्ध—एडवर्ड चतुर्थ फ्लेण्डर्स (Flanders) और बरगण्डी (Burgundy) से सेना लेकर इंग्लैण्ड पर आक्रमणकारी हुआ। पहली लड़ाई वारनेट (Barnett) के स्थान पर हुई जिसमे अर्ल ओफ़ वारविक की बहुत बुरी तरह से पराजय हुई और वह लड़ाई में ही मारा गया। हेनरी षष्ट को दुवारा टावर ओफ़ लन्दन मे क़ैद कर दिया गया।

ट्यूकसवरी की लड़ाई (सन् १४७१ ई०)

इस घटना के कुछ समय वाद मारगरेट की सेनायें ट्यूकसवरी के स्थान पर पूर्ण रूप से पराजित हुई। महारानी मारगरेट गिरफ्तार हो गई और उसका लड़का एडवर्ड प्रिंस ओफ़ वेल्स युद्ध क्षेत्र मे मारा गया। हेनरी षष्ट की कुछ समय वाद मृत्यु होगई। एडवर्ड चतुर्थ तब बेखटके इंग्लैण्ड के सिंहासन पर विराजमान हुआ और सन १४८३ ई० तक राज्य किया जब कि उसकी मृत्यु हुई। उसने शासन कार्य शान्ति और न्याय के साथ किया।

एडवर्ड चतुर्थ के अन्तिम दिन—एडवर्ड चतुर्थ को सन १४७१ ई० के वाद जागीरदारों की ओर से कोई भय नहीं था। पार्लियामेण्ट उसके आधीन थी और लंकास्टर वंश में कोई ऐसा नहीं

रहा था जो सिंहासन के लिए उसपर झगड़ा करता। मगर जब उसने अपना सिंहासन सुरक्षित समझा तो वह आलसी हो गया और भोगविलास में अपने दिन बिताने लगा। उसने शासन प्रबन्ध को उन्नति करने की ओर अपना ध्यान बिलकुल नहीं दिया। परिणाम यह हुआ कि उसकी मृत्यु के बाद जब सन् १४८३ ई० में उसका बड़ा लड़का एडवर्ड पंचम के नाम से सिंहासन पर बैठा तो थोड़े ही समय के बाद यार्क वंश का भी अन्त हो गया।

रिचार्ड तृतीय (सन् १४८३ से १४८५ ई०तक)—एडवर्ड चतुर्थ दो कम आयु के पुत्र छोड़कर मरा था। उसके चाचा रिचार्ड ड्यूक ओफ़ ग्लाऊसेस्टर ने शासन प्रबन्ध को अपने हाथ में ले लिया और फिर दोनों नाबालिग़ लड़कों को परे हटाकर स्वयं सिंहासन का स्वामी बन बैठा और रिचार्ड तृतीय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। दोनों रामकुमारों को पहले तो क़ैदखाने में बन्द किया गया और बाद में चुपचाप उनका वध कर डाला गया। उनके वध से लोग उसके विरुद्ध हो गये और उसी समय से उससे घृणा करने लगे।

वासवर्थ का युद्ध—रिचार्ड ने लगभग दो वर्ष तक राज्य किया और अन्त में सन १४८५ ई० में हेनरी ट्यूडर (Henry Tudor) फ्रांस से सेना लेकर इंग्लैण्ड में आया और वासवर्थ(Bosworth) के स्थान पर लड़ाई हुई। रिचार्ड मार डाला गया और इस प्रकार "गुलाबों का युद्ध" (War of Roses) का अन्त हुआ।

पार्लियामेण्ट का आरम्भ और विकास

ऐंग्लो सेक्सन काल में बादशाह को शासन प्रवन्ध के कार्यों में सहायता देने के लिए बुद्धिमान मनुष्यों की एक सभा थी जिसको विटन (Witan) कहते थे। नार्मन काल में जो कौंसिल थी उसका नाम मैगनम कंसोलियम पड़ा उसके मेम्बर गिरजा के वड़े अफसर बड़े उच्च पद वाले और जागीरदार ही होते थे। बादशाह जोन के काल मे सन् १२१५ ई० में स्टीफन लैण्टन की अध्यक्षता में अमीरों ने बादशाह को स्वतन्त्रता के महान पत्र (Magna Charta) पर हस्ताक्षर करने को मजबूर किया और बादशाह से एक शर्त यह ठहरी कि वह टैक्स लगाने के लिए एक बड़ी सभा (Great Council) बुलायेगा जिसमें पादरी और छोटे बड़े अमीर बुलाये जायँगे और उनकी स्वीकारी के बिना बादशाह किसी प्रकार का महसूल जमीदारों पर नहीं लगायेगा।

हैनरी तृतीय के समय मे सन १२६४ ई० मे गृह युद्ध हुआ और सन् १२६५ ई० मे सायमण्डीमोन्टफोर्ड पार्लियामेण्ट का एक अधिवेशन किया जिसमें जमीदार और बड़े पादरियों के अतिरिक्त उन प्रान्तों को छोड़ दिया जहाँ के प्रतिनिधि उनके विरुद्ध थे शेष प्रत्येक प्रान्त से दो सरदार (Knights) और प्रत्येक नगर से दो निवासी (Burgess) को प्रतिनिधि बनाकर बुलाया और उस सभा ने अब प्रतिनिधि (Representative Assembly) का रूप धारण कर

लिया लेकिन वे सब प्रतिनिधि एक ही संयुक्त अधिवेशन में सम्मिलित होते थे।

एडवर्ड प्रथम के शासन काल में सन् १२९५ ई० में प्रथम पूर्ण और आदर्श पार्लियामेण्ट (First Complete and Model Parliament) का अधिवेधन हुआ। उस अधिवेशन में बड़े जमीदार बड़े पादरी और छोटे पादरियों के प्रतिनिधि और प्रत्येक प्रान्त और नगर से दो दो प्रतिनिधि निमन्त्रित किये गये। उस पार्लियामेण्ट का अधिवेशन बादशाह की देखरेख में हुआ था लेकिन पहली पार्लियामेण्ट की तरह समस्त श्रेणियों के प्रतिनिधि एक ही संयुक्त अधिवेशन में सम्मिलित हुए थे और लगभग दो सौ वर्ष तक सम्मिलित अधिवेशन ही होते रहे।

एडवर्ड तृतीय के समय सन १३७६ ई० में काले राजकुमार (Black Prince) ने पार्लियामेण्ट बुलाई जो कि अच्छी (Good) पार्लियामेण्ट कहलाती है। इस पार्लियामेण्ट में साधारण आदमियों का दल पृथक स्थापित हुआ जो कि कामन सभा (House of Commons) कहलाने लगी और गिरजा के अधिकारी और अमीरों की एक सभा अलग हुई जो कि लार्ड सभा (House of Lords) कहलाने लगी। कामन सभा अब इतनी शक्तिशाली हो गई थी कि उन्होंने बादशाह के मन्त्रियों पर अभियोग लगा कर उन्हें दंड दिलवा दिया और यह प्रकट कर दिया कि मंत्री अपने कार्य और नीति के लिए पार्लियामेण्ट के प्रति उत्तरदायी है, न कि बादशाह के प्रति।

सन् १३९९ ई० में पार्लियामेण्ट की शक्ति इतनी अधिक हो गई कि पार्लियामेण्ट ने रिचार्ड द्वितीय को सिंहासन से त्यागपत्र देने पर मजबूर किया और उसके बाद सिंहासन के सच्चे उत्तराधिकारी को बादशाह स्वीकार नहीं किया बल्कि पार्लियामेण्ट ने राजवंश के सबसे योग्य पुरुष को निकट और उचित उत्तराधिकारी से बढ़कर समझकर उसे ही बादशाह निर्वाचित्त किया। उसको "लंकास्टर क्रान्ति" (Lancasterian Revolution) कहते हैं। उसके बाद पार्लियामेण्ट की शक्ति और भी अधिक हो गई और हेनरी चतुर्थ जिसको पार्लियामेण्ट ने बादशाह बनाया था, और उसका लड़का और पोता सब पार्लियामेण्ट की इच्छा के अनुसार चलने पर मजबूर हुए।

शत वर्षीय युद्ध से एक बहुत बड़ा लाभ हुआ था कि पार्लियामेण्ट के अधिकारों में वृद्धि होगई क्योंकि लड़ाई के समय में लड़ाई के कारण से और लड़ाई समाप्त होने पर आर्थिक दशा खराब होने पर बादशाह को रुपये की आवश्यकता रहती थी पार्लियामेण्ट को ऐसे अवसर पर अपने अधिकार बढ़ाने का अच्छा मौका मिलता था। सन १४०१ ई० में बातचीत और विवाह करने का अधिकार प्राप्त हुआ। सन १४०४ ई० में पार्लियामेण्ट ने कोषाध्यक्ष नियुक्त किया।

484
151
633

Summary of the Early Period

Reasons for the Success of William I in Conquering England

(1) All the leading fighting men of Wessex were killed at Hastings.

(2) The English were not united in opposing him.

(3) The English method of fighting on foot was out of date, and the practice of archery had died out

The Possessions of Henry II.

His father, Geoffrey Plantagenet, Count of Anjou, conquered Normandy from Stephen and presented it to Henry On Geoffrey's death, a year later, he inherited the Plantagenet possessions Anjou, Maine, Touraine. From his mother, Matilda, daughter of Henry I, he inherited England By his marriage to Eleanor of Aquitaine, he became Duke of Aquitaine, Count of Poitou, and suzerain of all lands west of the Rhine.

How did Henry II reduce the Power of the Barons?

He compelled the Barons (1) to pull down castles they had recently built, (2) to restore the grants of land made to them by Stephen and Matilda, (3) by the system of scutage, he induced them to give money instead of military service, thus reducing their power

of making money on him. (4) By encouraging the Fyrd, he kept alive the idea that all free-men ought to fight for the King when called upon.

Development of the Jury.

Juries of sworn witnesses had long been used for inquiries concerning royal interests. Henry II now extended the privilege *to disputes about land hitherto* decided by combat. Either claimant could now "appeal to the Grand Assize," when twelve knights of the neighbourhood were summoned by the sheriff to appear before the King's judges, and say what they knew about the facts of the case.

By the Assize of Clarendon (1166), Henry ordered the sheriff to see that "lawful men" of each hundred "presented" *suspected persons to the King's judges* when they came round. Even if they could not be proved guilty, by the Ordeal, they were exiled, which shows that the presentment was the important matter in considering their guilt.

This was the origin of the "Grand Jury" which was abolished. But the Church forbade the superstitions rites of the Ordeal in 1216, and the custom grew up *of calling upon a second jury to enquire into the* truth of the "presentment." This was the origin of the "Petty Jury" which exists to-day.

Relation between Henry II and his Sons

Henry II made his eldest son, Henry, co-King of England, his second, Richard, became Duke of Aquitane.

and his third son, Geoffry, became Count of Brittany But instigated by their mother, they repeatedly rebelled against him.

In the Great Rebellion of 1174, they made a coalition with (1) The King of France, (2) King of Scotland and (3) many chief nobles of Normandy, Aquitaine and England, but Henry defeated them all. He had, however, constant troubls from his family all through, and when he died, he was engaged in another war with his sons.

Effects of the Crusades upon England.

The first Crusade (1095-1099) caused Duke Robert to pawn Normandy to Rufus in order to raise money for necessary expenses

The second Crusade (1147-1149) produced certain calmness in the disturbed reign of Stephen, because troublesome barons had left England to take part in Crusade

The third Crusade (1189-1192) caused Richard I to sell charters to towns, and to restore Scottish independence, in return for money.

In general, the country was brought into closer touch with the continent, men's ideas were broadened by trevel; new avenues of trade were opened, new ideas of culture arose from contact with Saracens, which led to a revival of education and the founding of Universities

Magna Carta

The "undermentioned liberties" in Magna Carta were intended to apply to tenants-in-chief, but the later generation of Englishmen greatly enlarged the scope.

Baronial Rebellions against John and Henry II Compared.

Each of these kings was forced to give way (John by Magna Carta, Henry by the Provisions of Oxford), through lack of money.

Each of them had lost prestige through failure in France (John had lost the Angevian Empire, Henry had failed in his attempts to recover it).

Beneath the rebellions, there was in John's case a feeling that he was wicked, and in Henry's case a feeling that he was week.

The actual cause of the rising against John was his abuse of feudal rights; against Henry, it was his subservience to foreigners and to the Pope.

Causes of the Outbreak of the Hundred Years' War.

(1) England had lost all her possessions in France except Gascony, which also France wanted to take in her control.

(2) English and French naval officers often quarrelled, which embittered relations between two nations.

(3) The French King had supported the Scots against Edward III's claim to suzerainty.

(4) Edward III had supported the Flemish wool towns in revolt against their Count, who was Feudal Vassal to the King of France

(5) Edward III's eagerness for warlike renown

(6) After the war had begun, he put forward claim to the French Crown.

Note For the convenience of the student, we give below a schematic representation of the Hundred Years' War, in which the upward steps starting from the left denote English victories, and the downward steps English defeats

I PERIOD	II PERIOD	III PERIOD		IV PERIOD	
Edward III Black Prince	Du Guesclin	Henry V	Bedford	Joan of Arc	Last years
Poitiers Crecy Sluys	Bretigny Spanish Campaign Guerrilla Warfare Bruges	Agincourt Harfleur	Normandy	Orlean Patay Rheims	Paris Maine Anjou Normandy Chatillon Guienne
1338-60	1369-82	1415-20	1420-29	1429-31	1431-53

The Wars of Roses (1455-85)

It was a long contest between the Yorkist and Lancastrians.

Causes:—Henry's weakness, rivalry between Yorkist and Lancastrians and also many soldiers who returned to England, after Hundred Years' War, finding no war out of England, created a civil war within England. (2) Richard, Duke of York, claimed the throne, but his object was not to dethrone the king, but to succeed him (3) Richard, who was appointed protector, during Henry's madness, was driven from power when Henry recovered, and Somerset came into power This enraged Richard. (4) In 1453, a son was born to Henry VI, and Margaret, his queen, determined to defend the right of her young son.

Events:—

St. Albans—1455 Yorkists victorious, Somerset slain, Henry captured.

Northampton—1460 Yorkist victorious, Richard declared next heir.

Wakefield—1461. Lancastrians victorious, Richard slain.

St Albans (2nd)—1461 Lancasterians victorious.

Mortimer's Cross—1461. Yorkists victorious, Henry deposed, Richard became Edward IV.

Battle of Towton—1461. Yorkist victorious, Henry and Margaret fled to France.

Hedgely Moor and Hexam—1464 Yorkist victorious and Henry VI made a prisoner. Richard, Earl of Warwick, who was Edward IV's chief supporter, broke with him, joined Margaret and drove Edward out of England. Henry VI was placed on the throne.

Tewkesbury—1471. Edward IV defeated and killed Warwick, Margaret's son. Edward was killed and Henry murdered.

Bosworth—1485. Lancastrians victorious, Richard III, brother of Edward IV, was slain Henry Tudor, Earl of Richmond, was crowned as Henry VII.

Effects:—(1) Baron's power was weakened, most of them were killed (2) Owing to weakening of Baron's power, king's power was increased (3) On account of the despotic government by Tudors, the progress of constitutional development was checked. (4) The old nobility was crushed. (5) Feudalism and villeinage disappeared altogether. (6) The merchants and middle class, who had taken no part in the war, grew more powerful.

Chronology of the Early Period

55-54	B C	Invasions of Britain by Julius Cæsar.
43	B.C	Commencement of the Roman Conquest.
410	A D.	Romans leave Britain.
449	,,	Landing of the Jute in Kent.
577	,,	Victory of the West Saxons over the Britons.
597	,,	Conversion of Kent by St. Augustine.
664	,,	Synod of Whitby.
878	,,	Treaty of Wedmore.

1002 A D. Massacre of the Danes on St. Brice Day.
1016-1042 Reign of Danish King
1066 A.D. Battle of Hastings.
1086 ,, Oath of Salisbury Doomsday Book
1093 ,, Anselm becomes Archbishop of Canterbury.
1096-9 ,, First Crusade
1138 ,, Battle of Standard
1153 , Treaty of Wellingford.
1162 ,, Thomas Becket becomes Archbishop of Canterbury.
1164 ,, Constitution of Clarendon
1170 ,, Murder of Becket.
1172 ,, Conquest of Ireland
1189-92 ,, The Third Crusade
1204 ,, Loss of Normandy
1213 ,, John's submission to the Pope
1215 ,, Magna Carta
1258 ,, Mad Parliament. The Provisions of Oxford.
1264 ,, Battle of Lewes
1265 , Simon de Montford's Parliament.
1279 ,, Statute of Mortmain
1282 ,, Conquest ot Wales.
1284 ,, Statute of Wales.
1295 , The Model Parliament.
1376 ,, The Good Parliament.
1381 ,, The Peasants' Revolt.
1399 ,, Deposition of Richard II.
1401 ,, Statute for Burning Heretics.
1403 ,, Battle of Shrewsbury
1415 ,, Battle of Agincourt
1420 ,, Treaty of Troyes
1450 ,, Jack Cade's Rebellion
1455 ,, War of the Roses begin.

1471 A.D. Battle of Barnet Death of Henry VI.
1476 „ William Caxton's Introduction of Printing.
1485 „ Battle of Bosworth, and end of the War of Roses.

QUESTIONS

1 How has the geographical position of England affected the course of her history? Illustrate your answer by relating historical facts and especially point out the importance of the sea as a factor for the growth of the British Empire. (U. P Board, 1928).

2. Give an account of the social and political life of the Anglo-Saxons in England in the early period

3. Describe how England was converted to Christianity What is the importance of the Synod of Whitby in this connection?

4 Relate the circumstances leading to the conquest of England by William the Conqueror

5 What do you understand by Feudalism? How was it introduced into England? What were its effects on the social organisation of the country?

6 By what measures did William the Conqueror and his successors weaken the power of barons and strengthen their own position as kings? (U. P. Board, 1935)

7. Discuss the reforms of Henry II. Incidentally elucidate the statement "Over the barons,

Henry II triumphed, the church, on the other hand, worsted him."

8. Describe the circumstances that led to the grant of Magna Carta. What is its importance in the constitutional history of England?

9. Describe the part played by Simon de Montford in the constitutional history of England. Is it correct to regard him as the creator of the House of Commons?

10. Discuss the relations between England and Scotland during the reigns of the first three Edwards.

11. State the causes of the Hundred Years' War and trace the steps by which England lost her possessions in France. (U. P. Board, 1934).

12. What do you know of the Wars of Roses? What were their causes and results?

13. Describe the origin and growth of the English Parliament upto the year 1300. (U. P. Board, 1934).

14. Describe the condition of the Church in the Middle Ages What were the efforts made to reform it?

15. Give a brief account of the organisation of society and life in towns and villages in the Middle Ages.

16. What evils had crept into the church in the fourteenth century? Describe the reaction against them. Give the part played by Wycliffe in this connection

17. Describe the legal institutions and the administration of justice in England during the Middle Ages

18. Describe the condition of the workers in the 14th century. What led to the Peasants' Revolt ?

19. Give an account of the economic changes that occurred in England in the latter part of the Middle Ages

20. Write short notes on —

Augustine, Domesday Book, Salisbury Oath, Charter of Liberties, Model Parliament, Anselm Becket, Robert Balliol, Statute of Labourers, Black Death, Manor, Battle of Senlac, Guild, Chaucer, Lollard and Provisions of Oxford.

पहला अध्याय

आधुनिक काल का आरम्भ

प्रत्येक देश के इतिहास को तीन भागों में विभाजित किया जाता है—(१) प्राचीन काल (२) मध्यकाल (३) आधुनिक काल। इंग्लैण्ड का इतिहास भी इन्हीं तीन कालों में विभाजित किया जाता है; लेकिन ये सब सुविधा के ही लिए हैं, क्योंकि हम इन कालों के आरम्भ और अन्त के लिए कोई एक ऐसी सीमा नहीं बना सकते, जबकि पुराने काल की समाप्ति होकर एक दम नये युग का आरम्भ हो गया हो। इंग्लैण्ड के इतिहास में आधुनिक काल का आरम्भ हेनरी सप्तम के सिंहासन पर बैठने के समय से होता है, जब कि वर्तमान काल के चिन्ह पूरे और साफ़ तौर पर दिखलाई देते हैं। इसलिए ट्यूडर वंश से ही इंग्लैण्ड के वर्तमान काल का इतिहास आरम्भ होता है। इसके पूर्व मध्य युग का बोलबाला था।

नवीन युग के चिन्ह—मध्य कालीन युग की सभ्यता की एक मुख्य बात यह थी कि समाज में व्यक्तित्व को प्रकट करने के लिए कोई स्थान नहीं था, क्योंकि जागीरदारी प्रथा (Feudal System) के होने से प्रजा और बादशाह के बीच कोई ठीक-ठीक सम्बन्ध नहीं था। पादरियों का प्रभाव बहुत था। धर्म विश्वास पर जोर देता है और स्वतंत्र विचारों को दबाता है। इसलिए पादरी लोग जैसा उल्टा सीधा

समझा देते थे, उसी को लोग परमेश्वर की वाणी समझ कर स्वीकार कर लेते थे और अपनी बुद्धि को बिलकुल काम में नहीं लाते थे; मगर वर्तमान काल में ये सब बातें बदल गईं और उस सभ्यता का विस्तार हुआ, जो कि आज समस्त संसार में फैली हुई है।

वर्तमान काल की विशेषतायें—इस आधुनिक काल की विशेष बातें व्यक्ति की उन्नति, राष्ट्रीय सरकारों का अस्तित्व में आना और जातीय भावना का उत्साह लोगों के हृदयों मे उत्पन्न हो जाना आदि हैं। रोम और यूनान के प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन करने से लोगों में तर्क और जिज्ञासा की भावना उत्पन्न हुई, जिसका फल यह हुआ कि अज्ञानता दूर हो गई, धर्म में स्वतन्त्रता प्राप्त हुई और लोगों का ध्यान ज्ञान विज्ञान की ओर आकर्षित हुआ, जिससे नवीन-नवीन आविष्कार किये गये।

ज्ञान का पुनर्जन्म—१३वीं और १४वीं शताब्दियों में केवल कुसतुंतुनियाँ ही एक ऐसा स्थान रह गया था, जहाँ पर प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के अवशेष अब तक विद्यमान् थे। सन् १४५३ ई० में तुर्कों ने कुस्तुन्तुनियाँ पर आक्रमण करके उस पर अपना अधिकार कर लिया। यूनानी विद्वान् अपनी पुस्तकें लेकर वहाँ से भाग खड़े हुए और इटली में जाकर शरणार्थी हुए, जहाँ उनका सब प्रकार स्वागत किया गया। इन विद्वानों के द्वारा यूनानी विद्या और कलाओं का इटली में प्रचार हुआ। इस प्रकार इटलीवालों का ध्यान अपनी प्राचीन रोमन कलाओं की ओर आकृष्ट होने लगा। थोड़े ही काल में इटली का नगर फ्लोरेंस विद्या और कलाओं का केन्द्र बन

गया और वहाँ के विद्वानों के द्वारा समस्त यूरोप में ज्ञान का प्रकाश फैलने लगा। इस प्रकार यूरोप में ज्ञान का पुनर्जन्म हुआ, जिसको "ज्ञान की जागृति" (Renaissance) कहते हैं। १५वीं शताब्दी के अन्त तक यूरोप के समस्त देशों में इस नवीन जागृति का और उन्नति का आरम्भ हो गया।

इंग्लैण्ड का द्वीप समूह यूरोप से अलग है, लेकिन यूरोप के निकट होने के कारण से यूरोप में जा भी आन्दोलन हुए उनका प्रभाव इंग्लैण्ड पर अवश्य पड़ा। ज्ञान की जागृति (Renaissance) का जोर इंग्लैण्ड मे १६वीं शताब्दी में पहुँचा। आक्स फोर्ड का विश्व-विद्यालय नवीन ज्ञान का केन्द्र बन गया। यहाँ पर जान कालिट (John Collet), टामसमोर (Thomas More) और एरसमस (Erasmus) जैसे प्रसिद्ध विद्वान् विद्यमान थे। ऐलीजावेथ के शासनकाल तक पहुँचते-पहुँचते तो ज्ञान की बहुत कुछ उन्नति हुई। प्रसिद्ध कवि, नाटककार सेक्सपीअर (Shakespeare), फ्रांसिस बेकन (Francis Bacon) और स्पेन्सर (Spencer) आदि विद्वान् इसी काल में हुए है।

मुद्रण यंत्र—(Printing Press) छापे की कल के आविष्कार हो जाने से ज्ञान के विस्तार में बड़ी सहायता मिली। छपी हुई पुस्तकें सस्ती होने के कारण सर्व साधारण भी उनको पढ़ने लगे। सबसे पहले जर्मनी में छापने के यंत्र का आविष्कार हुआ। विलियम कैक्सटन (William Caxton) ने सन् १४७४ ई० में इंग्लैण्ड में पहला छापा खाना स्थापित किया।

युद्ध की रीति में परिवर्तन—अब गोला बारूद का भी आविष्कार हो गया और तोपों और बन्दूकों के प्रयोग ने लड़ाई के ढंग में भी बहुत परिवर्तन कर दिया। प्राचीन काल के वीर और बलवान सिपाही जो घोड़ों पर सवार होकर लड़ा करते थे, अब बिलकुल बेकार हो गये। चूँकि तोपखाना बादशाह के अतिरिक्त और कोई नहीं रख सकता था, इसलिए राजकीय शक्ति की वृद्धि हुई और इसी कारण से जागीरदारों की शक्ति कम होगई।

नवीन देशों की खोज और व्यापारिक उन्नति—१५वीं शताब्दी में कुतुबनुमा के आविष्कार होने से लोगों को समुद्री यात्रा में बहुत सुगमता होने लगी। सन् १४९२ ई० मे कोलंबस ने अमेरिका की खोज की। इसके छः वर्ष पश्चात् १४९८ ई० में वास्को डिगामा ने उत्तमाशा अन्तरीप का चक्कर काट कर हिन्दुस्तान में आने का मार्ग खोज निकाला। इन नवीन स्थानों और मार्गों का पता लग जाने से इंग्लैण्ड के व्यापार की बहुत उन्नति हुई। अमेरिका का पता लग जाने से यूरोप के व्यापार का केन्द्र भूमध्य सागर से उठ कर अटलांटिक महासागर में आगया। इससे अब इंग्लैण्ड का महत्व और भी बढ़ गया। लन्दन भूमण्डल के व्यापार का केन्द्र बन गया। अन्य देशों की तरह इंग्लैण्ड की भी इच्छा नये-नये उपनिवेश स्थापित करने की हुई और यहां के प्रसिद्ध नाविक भी दूर-दूर के देशों में चक्कर लगाने लगे।

धर्म पर प्रभाव—पहले पोप और चर्च के अधिकारियों ने

धर्म के नाम पर जो अनुचित काम चला रक्खे थे, लोग उनका विरोध अब तक नहीं करते थे क्योंकि ज्ञान न होने से वे अभी तक अज्ञानता में पड़े हुए थे। अब नवीन ज्ञान और जागृति की लहर फैल जाने के कारण से लोगों की आंखें खुलीं और वे अब व्यर्थ की रीतियों को ढकोसला मात्र समझने लगे और तत्कालीन प्रचलित ईसाई धर्म के विरुद्ध एक बड़ा आन्दोलन आरम्भ हुआ। इस आन्दोलन को "धर्म सुधार का आन्दोलन" (Reformation) के नाम से पुकारते हैं। इस लहर का प्रभाव इंग्लैण्ड में भी हुआ।

भारत की वर्तमान दशा— जिस प्रकार से कि यूरोप एवं इंग्लैण्ड मध्य युग में १४वीं शताब्दी तक अज्ञान के अन्धकार में पड़ा हुआ था और लोगों के स्वतन्त्र विचार दबे हुए थे। लोगों का ध्यान केवल धर्म और विश्वास पर था और बुद्धि को अथवा तर्क को वे बिलकुल काम में नही लाते थे, वैसी ही दशा इस समय भारत वर्ष की है। यहाँ पर अभी तक धार्मिक विश्वासों का प्रावल्य है और मुल्लामौलवी अथवा पण्डितपुजारी लोग जो कुछ उल्टासीधा समझा देते है, उसको लोग अपनी अज्ञानता के कारण परमेश्वर की वाणी समझकर स्वीकार कर लेते है; लेकिन अब एक नवीन युग का आरम्भ हो रहा है। झूठे धार्मिक विश्वासों का जोर कम होता जा रहा है। अब लोग प्रत्येक बात को तर्क की कसौटी पर कसने लगे हैं। अतएव हमारे देश मे अब इस जागृति का प्रारम्भ हुआ है जिसका कि प्रारम्भ यूरोप में लगभग ५ सौ वर्ष पहले हुआ था। इससे अच्छी तरह अनुमान लगाया जा सकता है कि हम लोग यूरोप से

कितने पीछे हैं; मगर अगर हम लोग प्रयत्न करें तो वह उन्नति जो यूरोप ने पाँच सौ वर्ष में प्राप्त की है, उसको हम लोग बहुत कम समय में सम्पन्न कर सकते हैं। इस विचार को प्रसिद्ध इतिहास लेखक प्रोफेसर जदुनाथ सरकार ने इस प्रकार अंकित किया है :—

"यदि भारतवर्ष कभी भी एक राष्ट्र बनना चाहता है, जो अपनी आन्तरिक शान्ति स्थिर रख सके, अपने सीमान्त की रक्षा कर सके, अपने आर्थिक साधनों का विकास कर सके तथा कला और विज्ञान की उन्नति कर सके, तो दोनों वर्तमान हिन्दू धर्म और इस्लाम की मृत्यु होकर उनका पुनर्जन्म होना चाहिए। इन दोनों धर्मों में से प्रत्येक को कठिन परीक्षण और तपस्या की भट्टी में से गुज़रना चाहिए। प्रत्येक को तर्क और विज्ञान के प्रभाव से अपने को पवित्र और पुनर्जीवित बनाना चाहिए।"
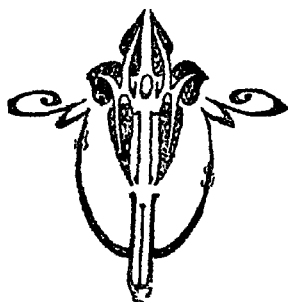
दूसरा अध्याय

यूरोप में धार्मिक सुधार की लहर

मध्य युग में यूरोप के अधिकतर लोग कैथोलिक चर्च के अनुयायी थे और पोप को जो रोम मे रहा करता था, ईसाई धर्म का सबसे बड़ा नेता और गुरु मानते थे; लेकिन दीर्घ काल से लोग चर्च की कार्य शैली और उसकी धनवान बनने की इच्छा के कारण से उससे तंग आ गये थे।

धार्मिक सुधार के कारण—१४वीं शताब्दी मे दो ऐसी प्रबल घटनाएँ हुईं जिनके कारण से पोप की शक्ति को बहुत बड़ा धक्का पहुँचा। इनमें से पहली घटना बैबीलोनियाँ कारागृह (Babylonian Captivity) की है। इस घटना का परिणाम यह हुआ कि पोप की राजधानी एविगनन (Avignon) हो गई और अब चूँकि पोप फ्राँस के बादशाह की रक्षा मे रहने लगा था, इसलिए वह केवल फ्राँस की राजनीति की कठपुतली मात्र बन गया था।

सन १३७८ ई० से सन १४१५ ई० तक के समय में महान मतभेद (Great Schism) उत्पन्न हुआ। उस समय में दो पोप हो गये थे एक तो एविगनन में रहा करता था और दूसरा रोम में। यह दोनों अपनी-अपनी शुद्धता और प्रभु भक्ति तथा अपनी प्रभु शक्ति का दावा करते थे, इसलिए उनमें आपस में झगड़ा रहता था।

इसको देखकर बुद्धिमान् लोग पोप की शक्ति के आधार और उसकी महत्ता की वास्तविकता पर विचार करने लगे।

पोप अब अपनी धार्मिक बातों को छोड़कर राजनैतिक संधियों में रुचि रखने लगे। वे बहुत भोग-विलास का जीवन व्यतीत करने लगे और कुछ पोप तो अत्यन्त दुराचारी भी थे। इस कारण से उनका लोगों पर प्रभाव भी कुछ न था। उनकी देखादेखी उनके आधीन पादरी भी सांसारिक वासनाओं में संलग्न हो गये थे और किसी का भी आचरण ठीक नहीं रहा था।

पोप अन्य देशों और अपने आधीन पादरियों से एक भारी रक़म वसूल किया करते थे। रुपया जमा करने के लिए पोपों के द्वारा विचित्र-विचित्र साधन काम में लाये जाते थे। चर्च के पद नीलाम किये जाते थे, जो सबसे अधिक दाम लगाता था, वही पद को पा लेता था। पोप को लोगों को स्वर्ग में प्रवेश कराने का अधिकार था, अतएव वह स्वर्ग में प्रवेश कराके स्थान दिलाने के लिए एक भारी रक़म लेकर "प्रवेशपत्र" देता था, जिससे पुरुष या स्त्री स्वर्ग के अधिकारी हो जाते थे। पादरी लोग राज्य के क़ानूनों और राजकीय अदालतों से मुक्त थे और उनकी अपील केवल पोप के पास जा सकती थी।

ज्ञान की उन्नति का प्रभाव—इन सब कारणों से किसी किसी देश में पोप के विरुद्ध एक आन्दोलन हो रहा था। दूसरे, इस समय ज्ञान की उन्नति का युग था और लोग पर्याप्त जागृत विचारों के हो गये थे। अतएव उनसे यह आशा कभी नहीं की जा सकती थी कि वे इन झूठे विश्वासों पर अपना ईमान लायेंगे।

मार्टिन लूथर और धार्मिक सुधार—मार्टिन लूथर (Martin Luther) एक जर्मन पादरी इस धार्मिक सुधार के आन्दोलन का प्रवर्तक था। वह सन् १४८३ ई० में सेक्सनी में उत्पन्न हुआ और उच्च शिक्षा प्राप्त करके जर्मनी के विटिनवर्ग के विश्वविद्यालय में प्रोफेसर नियुक्त हुआ था। अपने प्रारम्भिक जीवन में वह रोम के चर्च का भक्त विश्वासी और सहायक था। उसने सन १५१० ई० में रोम की यात्रा भी की। वहाँ उसको स्वयं अपने आप रोमन चर्च की खराबियाँ और पोप के भोग-विलास के जीवन को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। इस कारण से रोम के चर्च से उसका विश्वास उठ गया था।

जिस बुराई ने सबसे पहले उसको रोम के चर्च से विद्रोही बनाया, वह यह थी कि पोप लोगों से रुपया लेकर उन्हे उनके पापों का "क्षमापत्र" जिसको (Indulgence) कहते थे, लिख देता था। सन १५१७ ई० मे लूथर ने पोप के इस कार्य के विरुद्ध आवाज़ उठाई। कुछ समय बाद उसने रोमन कैथोलिक चर्च के सिद्धान्तों का विरोध करना आरम्भ किया और सन् १५२० ई० में पोप को ईश्वर का प्रतिनिधि मानने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। पोप लूथर की इन बातों से बहुत अप्रसन्न हुआ और उसने जर्मनी के शासक के नाम आज्ञा जारी की कि वह उसके सुधार की शिक्षा को बिल्कुल बन्द करदे, लेकिन मार्टिन लूथर अपने कार्य मे दृढ़ रहा और पोप का विरोध करना उसने नहीं छोड़ा। उसके उपदेशों का प्रभाव यह हुआ कि बहुत से लोग अपने पुराने धर्म को छोड़कर लूथर के अनुयायी बन गये।

ऐसे लोगों को जिन्होंने इस सुधरे हुए धर्म को स्वीकार किया और पुराने धर्म का विरोध (Protest) किया, प्रोटैस्टेंट (Protestants) कहते हैं, क्योंकि उन्होंने रोम के चर्च के विरुद्ध प्रोटैस्ट (विरोध) किया था।

लूथर के सिद्धान्त—मार्टिन लूथर के मुख्य सिद्धान्त इस प्रकार थे :—

(१) बाइबिल (Bible) के अनुसार पोप को धार्मिक गुरु बनाने का कोई अधिकार नहीं है। प्रत्येक मनुष्य को बाइबिल के पढ़ने और उसका अर्थ लगाने का अधिकार प्राप्त है।

(२) जो कुछ बाइबिल में लिखा है केवल उसी के अनुसार चलना चाहिए। इसलिए किसी को भी पादरियों के ढकोसलों में नहीं फँसना चाहिए। सर्वसाधारण के समझने के लिए उसने बाइबिल का अनुवाद देशी भाषा में कर दिया।

(३) उसकी शिक्षा का मुख्य विषय यह था कि मनुष्य को परमात्मा पर ईमान और विश्वास रखना और अपने आत्मा को पवित्र रखना चाहिए, इससे मनुष्य स्वर्ग का अधिकारी हो सकता है, न कि व्यर्थ के पूजापाठ और पादरियों को पापों के लिए धन देने से।

यह नया धर्म बहुत शीघ्र जर्मनी में फैल गया और दूसरे देशों में भी अन्य कई लोग धर्म का सुधार करने वाले उत्पन्न हो गये।

धार्मिक सुधार का क्या अर्थ है ?—यूरोप में सोलहवीं शताब्दी में एक बड़ा आन्दोलन आरम्भ हो गया जो "धार्मिक-

सुधार" (Reformation) के नाम से प्रसिद्ध है। इससे यूरोप दो पृथक्-पृथक् साम्प्रदायों में विभाजित हो गया।

(१) प्रथम तो वह जो पोप का अनुयायी था, इसलिए वह रोमन कैथोलिक (Roman Catholic) मत कहलाया।

(२) वह दल जिसने पोप का विरोध किया, प्रौटैस्टेंट (Protestants) कहलाया। इस धार्मिक नवीन आन्दोलन को धार्मिक सुधार (Reformation) कहते हैं। जर्मनी और यूरोप के उत्तरी देशों ने इस नवीन सुधरे हुये धर्म को स्वीकार किया और इटली, फ्रास और स्पेन प्राचीन धर्म के ही अनुयायी रहे। इन दोनों दलों में इतना धार्मिक मतभेद बढ़ा कि धर्म के नाम पर यूरोप में सौ वर्ष तक रक्त की नदियाँ बहती रहीं।

अन्य सुधारक—इसी काल में अथवा इसके कुछ समय पश्चात् अन्य देशों में भी धर्म के भिन्न-भिन्न रूप के सुधारक उत्पन्न हुये, जिन्होंने कैथोलिक धर्म और पोप का विरोध किया। स्विटजरलैण्ड (Switzerland) में ज्विंग्ली (Zwingli) ने अपना नवीन धर्म फैलाया, लेकिन उसका कोई विशेष प्रभाव नहीं हुआ। इसके बाद एक दूसरा उपदेशक जिसका नाम काल्विन (Calvin) था, जैनोवा (Genova) में आकर ठहरा और उसने वहाँ अपने मत का प्रचार किया। उसकी शिक्षा यह थी कि पवित्र बाईबिल में कोई बात अशुद्ध अथवा अमाननीय नहीं है और नर्क में जलना अथवा उससे मुक्ति पा जाना पहले ही से भाग्य में लिखा जा चुका है। वह पोप या विशप (पादरी) लोगों को नहीं मानता था;

लेकिन यह अवश्य चाहता था कि प्रत्येक प्रान्त का चर्च अथवा उपासना मन्दिर स्वतन्त्र होता ताकि उसके सदस्य अपने मामलों के स्वयं स्वामी हों और उनकी सहायता के लिए एक कौंसिल आफ एल्डर्स (Council of Elders or Presbyters) हो।

यद्यपि काल्विन ने स्वयं प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों के आधार पर उपदेश दिया, लेकिन वह स्वयं बड़ा पक्षपाती था और उसका धर्म अतिशीघ्र दूर-दूर के देशों में फैलगया।

स्टकाटलैण्ड में इसी धर्म का प्रचार जान (John Knox) के द्वारा किया गया और वहाँ उसके अनुयायी प्रेसविटेरियन (Presbyterians) कहलाये जाने लगे। इंग्लैण्ड और नीदरलैण्ड में भी उसका प्रभाव हुआ और ये लोग प्योरीटन (Puritans) कहलाने लगे, जिनसे बाद को असम्बादी या ननकानफार्मिस्ट (Non-conformists) निकले और फ्रांस में काल्विन के अनुयायी ह्यूगेनाट्स (Huguenots) कहलाये जाने लगे।

इस प्रकार सोलहवीं शताब्दी में समस्त देशों में धार्मिक सुधार का आन्दोलन होता रहा। यद्यपि यह सुधार आन्दोलन विभिन्न देशों में विभिन्न नामों से हुआ, लेकिन उन सबका उद्देश्य प्राचीन रोमन कैथोलिक मत का विरोध करके नवीन सुधारे हुए धर्म का प्रचार करना ही था।

धार्मिक सुधार के परिणाम—इस धार्मिक सुधार (Reformation) के निम्न लिखित परिणाम हुए :—

(१) यूरोप का ऐसी जातियों में विभाजन हो गया जो धार्मिक

झगड़ों के कारण से आपस मे युद्ध करने को सर्वदा तैयार रहती थीं।

(२) नार्वे, स्वीडन, डेन्मार्क, हालैण्ड, इंग्लैण्ड और जर्मनी का अधिकतर भाग रोम के पोप के प्रभाव से पृथक् हो गया। इससे रोमनचर्च के धार्मिक शासन का अन्त हो गया।

(३) इससे प्रोटैस्टेंट देशों मे स्वतन्त्रता और धार्मिक सहिष्णुता की वृद्धि हुई, यद्यपि प्रारम्भ में सुधारवादी लोग भी वैसे ही असहिष्णु और पक्षपाती थे जैसे कि कैथोलिक लोग।

(४) प्रोटैस्टेण्ट मत के लोगों ने पवित्र बाइबिल के विभिन्न अनुवादों के द्वारा जातीय साहित्य की उन्नति मे सहायता दी, जैसे लूथर का अनुवाद जर्मन भाषा मे, कालविन का फ्रेंच भाषा मे और टिंडेल (Tyndale) का अंग्रेजी मे। इससे लोगों के हृदयों मे अपनी राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीयता का भाव उत्पन्न हुआ।

(५) अन्तिम बात यह है कि इस सुधार से रोमन चर्च मे भी सुधार की आवश्यकता प्रतीत हुई। इगनोशियस लोयला (Ignotious Loyola) ने सन् १५४० ई० में पादरियों का एक दल बनाया जिसको हजरत मसीह का दल या जैसूइट (Jasuits) कहते थे। इसका उद्देश्य यह था कि रोमन चर्च मे फिर नये सिरे से जीवन डाला जाय।

तीसरा अध्याय

सोलहवीं शताब्दी—ट्यूडर काल

हेनरी सप्तम (सन् १४८५ से सन् १५०९ ई० तक)
हेनरी अष्टम (सन् १५०९ से सन् १५४७ ई० तक)
एडवर्ड षष्ट (सन् १५४७ से सन् १५५३ ई० तक)
मेरी (सन १५५४ से सन १५५८ ई० तक)
एलीजा वेथ (सन १५५८ से सन १६०३ ई० तक)

ट्यूडर वंश का प्रारम्भ—ट्यूडर वंश का पहला बादशाह हेनरी सप्तम था जो अर्ल ओफ़ रिचमण्ड (Earl of Richmond) था और एडवर्ड ट्यूडर का पुत्र था जो लंकास्टर वंश का था। बोस वर्ष के युद्ध क्षेत्र मे रिचार्ड तृतीय का काम तमाम कर दिया गया और हेनरी सप्तम की उपाधि स्वीकार करके इंग्लॅड का पहला ट्यूडर बादशाद बना।

Henry VII

सिंहासन पर अधिकार—इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर हेनरी सप्तम के तीन अधिकार थे—प्रथम तो वह लंकास्टर वंश में से था और एडवर्ड ट्यूडर का पुत्र था इसलिए वह सिंहासन का अधिकारी था। दूसरे वह विजयी होने के रूप में भी सिंहासन का अधिकारी था और वास्तविक अधिकार भी यही था। इसके बाद अपने अधिकार को और प्रबल बनाने के लिए हेनरी ने पार्लियामेण्ट से अपने बादशाह बनने की स्वीकारी कराली।

लैम्बर्ट सिमनल का विद्रोह—हेनरी को राजसिंहासन पर बैठे हुए दो साल भी नहीं बीते थे कि यार्क पार्टी के आदमियों ने उसके विरुद्ध विद्रोह का झण्डा उठाया और एक मनुष्य लैम्बर्ट सिमनल (Lambert Simnel) नाम को यह प्रगट किया कि वह अर्ल ओफ़ वारविक (Earl of Warwick) का लड़का और एडवर्ड चतुर्थ का भाई है इसलिए वह यार्क वंश की गद्दी का अधिकारी है। यह मनुष्य आयरलैण्ड मे आकर उतरा और बहुत से लोगों ने उसकी सहायता भी की लेकिन हेनरी ने इस विद्रोह को बहुत शीघ्र दबा दिया।

परकिन वारबैक का विद्रोह—उपरोक्त विद्रोह के बाद परकिन वारबैक (Perkin Warbeck) के नाम से एक दूसरा झूठा दावेदार खड़ा हुआ। उसने अपने आपको रिचार्ड ओफ यार्क के रूप में प्रकट किया। इस विद्रोह ने पहले विद्रोह की अपेक्षा अधिक भयंकर रूप धारण किया, प्रथम तो इसलिए कि स्काटलैण्ड के बादशाह जेम्स चतुर्थ ने उसका विवाह अपने एक निकट सम्बन्धी की

लड़की के साथ कर दिया और उसको धन और सेना से सहायता दी। दूसरे, फ्राँस के बादशाह ने भी उसकी सहायता की लेकिन हेनरी सप्तम की सेनाओं ने परकिन वारविक को सन् १४८७ ई० में पराजित किया और टावर ओफ़ लन्दन में क़ैद कर दिया।

हेनरी सप्तम की नीति—ट्यूडर बादशाहों की नीति जिसकी जड़ हेनरी सप्तम ने डाली थी यह है :—

(१) व्यक्तिगत शासन की नींव डालना और इसीलिए पार्लियामेण्ट के प्रभाव को कम करना।

(२) अमीरों और बड़े-बड़े जमींदारों की शक्ति को कम करना।

(३) बाहरी देशों की लड़ाइयों में जहाँतक होसके भाग न लेना क्योंकि इन लड़ाइयों में धन बहुत व्यय होता था।

(४) अपनी प्रजा के धन को बढ़ाने के लिए व्यापार की उन्नति करने का जहाँतक होसके प्रयत्न करना।

इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हेनरी सप्तम ने निम्नलिखित उपाय किये :—

(१) उसने यार्क वंश की राजकुमारी एलीज़ा वेथ से जो एडवर्ड चतुर्थ की लड़की थी विवाह कर लिया ताकि यार्क पार्टी उसकी सहायक और सहानुभूति करने वाली बन जाय और उसकी शक्ति सुदृढ़ हो जाय।

(२) अमीरों के साथ वर्ताव—हेनरी ने यह अच्छी तरह समझ लिया था कि देश में शान्ति स्थापित रखने के लिए यह

और इसलिए उसने एक क़ानून बनाया, जिसका कि नाम वर्दी का क़ानून (Statute of Livery) था, जिसके अनुसार जमीदारों के यहाँ प्राइवेट सेना रखना या किसी प्रकार की वर्दी पहनना भी या नौकरों का रहना बिलकुल निषेध कर दिया गया। यह इसलिए किया गया कि जागीरदारी (Feudalism) की प्रथा के अनुसार जमीदारों को इस शर्त पर ज़मीन दे दी जाती थी कि उनको अपने यहाँ शस्त्रों से सुसज्जित सिपाहियों की एक नियत संख्या तैयार रखनी होगी और आवश्यकता के समय उनको बादशाह की सहायता के लिए भेजना होगा। बाद में उन्हीं सिपाहियों से ये अमीर लोग अन्य लोगों पर अत्याचार करते और शान्ति भंग करते थे, यहाँ तक कि कभी-कभी बादशाह के विरुद्ध भी विद्रोह कर देते थे। इस कारण से इन बातों को रोकने के लिए यह क़ानून बनाया गया था।

दूसरी अनुचित प्रथा यह चली आती थी कि जब बड़े जमीदारों को किसी अपराध के उत्तर देने के लिए अदालत में उपस्थित होना पड़ता था। तो उनके नौकर अदालत मे पहुँच कर मुंसिफ आदि को धमकी देते थे और इस प्रकार अपने मालिकों के विरुद्ध न्याय नहीं होने देते थे। हेनरी ने एक राजकीय कानून (Statute of Maintenance) के अनुसार इस प्रथा को भी बन्द कर दिया। इन क़ानूनों का कड़ाई से पालन किया जाता था।

बड़े जमीदारों को पूरी तरह से बस मे करने के लिए सन् १४८७ ई० मे पार्लियामेण्ट से स्वीकार कराके हेनरी ने प्रीवीकौंसिल की एक विशेष कमेटी का अधिवेशन बुलाया, जिसको कोर्ट आफ स्टार चैम्बर

(Court of Star Chamber) कहते थे, क्योंकि जिस कमरे में यह कौंसिल बैठा करती थी, उसकी छत में सितारे जड़े हुए थे। उसके सामने उन्हीं लोगों का मुकद्दमा होता था, जिनका कि अन्य अदालतों में न्याय नहीं हो सकता था, क्योंकि वे लोग अन्य अदालतों पर अनुचित दबाव डालते थे और धमकी देते थे। ऐसे लोग बैरन (Baron) शेरिफ (Sheriff) आदि होते थे अथवा जिनका अपराध, दंगा, विद्रोह, षड्यंत्र या कोई और भारी पाप कर्म होता था। इस अदालत में बड़े जमीदार अपने ऊँचे पद का अनुचित लाभ नहीं उठा सकते थे। इस अदालत के द्वारा न केवल अमीरों की शक्ति और प्रभाव निर्बल हो गया; किन्तु अपराधियों के जुर्माने के धन से हेनरी ने अपनी शक्ति बहुत बढ़ा ली। यह अदालत भी अन्त में जाकर स्वतन्त्रता की शत्रु हो गई और प्रजा को इसके अस्तित्व से बड़ी विपत्तियाँ होने लगीं; मगर दीर्घ पार्लियामेण्ट ने सन १६४१ ई० में उसको तोड़ दिया।

राजकोष की उन्नति—हेनरी की नीति एक तंत्र शासन की नींव डालने की थी। अमीरों के बाद पार्लियामेण्ट बादशाह को अपने व्यक्तिगत शासन करने से रोक रही थी। कर वसूल करने की आज्ञा पार्लियामेण्ट ही बादशाह को देती थी। उसी धन से राज्य का काम चलता था। हेनरी ने पार्लियामेण्ट से स्वतन्त्र होने के लिए रुपये के वास्ते पार्लियामेण्ट को तंग नहीं किया; किन्तु दूसरे उपायों से स्वयं रुपया प्राप्त किया। वे उपाय निम्नलिखित हैं :—

(१) हेनरी ने मध्य कालीन बादशाहों की तरह राजकोष की

सहायता के लिए धनवानों से चन्दे के रूप में रुपया वसूल करना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार के चन्दों को (Benevolences) कहते हैं।

(२) उसने कोई अपराध करने पर क़ैद की सजा देने के बजाय आर्थिक दण्ड दे देकर राजकोष को धन सम्पन्न कर लिया और इसमें उसको एम्पसन (Empson) और डडले (Dudley) नाम के मन्त्रियों से बहुत सहायतता। मिली। उन्होंने लोगों पर जुर्माना कर-कर के राजकोष को रुपये से भर दिया।

(३) एक नया ढंग रुपये वसूल करने का यह भी निकाला था कि उनकी आर्थिक दशा और रहनसहन का प्रकार मालूम किया जाता था। अगर कोई अमीर होते थे, तो उनसे कहा जाता था कि जब तुम इतना रुपया अपने भोगविलास मे खर्च करते हो, तो बादशाह को भी देश के शासन प्रबन्ध के लिए पर्याप्त धन दे सकते हो और अगर कोई ग़रीब होते थे, तो उनसे कहा जाता था कि तुमने मित-व्ययता का जीवन व्यतीत करके पर्याप्त धन जमाकर लिया होगा, इसलिए बादशाह को देश के शासन-प्रबन्ध के लिए कुछ सहायता अवश्य दे सकते हो। इस काम मे पादरी मोर्टन (Morton) ने बादशाह को बहुत सहायता दी थी इसलिए मोर्टन के रुपया वसूल करने के इस तरीके को मोर्टन का कांटा (Morton's Fork) कहते हैं।

लड़ाई के ढंग में परिवर्तन—गोला-बारूद के आविष्कार से लड़ाई लड़ने के तरीके मे बहुत कुछ परिवर्तन हो गया। तोपखानों के सामने जमीदारों के किले बेकार हो गये और बढ़िया बन्दूकों के

प्रचलित होजाने से तलवार और तीरों की लड़ाई का अन्त हो गया। मध्य काल के सरदारों की युद्ध की योग्यता और अभ्यास अब अधिक उपयोगी नहीं रहा। इस परिवर्तन से राजकीय शक्ति की भी उन्नति हुई, क्योंकि बादशाह के अतिरिक्त और कोई तोपखाना नहीं रख सकता था।

व्यापार—बादशाह इस बात को अच्छी तरह अनुभव करता था कि उसकी प्रजा जितनी ही अधिक सम्पत्ति शालिनी होगी, उतना ही अधिक रुपया और धन वह उससे वसूल कर सकेगा। इसलिए उसने अपनी प्रजा की सम्पत्ति को बढ़ाने के लिए व्यापार की उन्नति करने के लिए प्रत्येक सम्भव उपाय से काम लिया। १४९६ ई० में फ्लेन्डर्स (Flanders) से एक संधि हुई, जिसका नाम (Intercapus Mangness) था। इसके अनुसार इन दोनों में बिना महसूल के व्यापार आरम्भ हो गया और इंग्लैण्ड का ऊन वहाँ जाने लगा। इस प्रकार देश में धन की वृद्धि हुई। हेनरी ने देश के अन्दर के व्यापार को भी बढ़ाने की चेष्टा की।

उपनिवेश स्थापित करने का उपाय—सन् १४९७ ई० में बादशाह ने जानकेबट (John Cabot) और उसके लड़के को एक-एक आज्ञा पत्र प्रदान किया कि वह उत्तरी अमेरिका में जाकर इंग्लैण्ड के बादशाह के नाम से अधिकार करे। केबट के जहाज़ उत्तरी अमेरिका के किनारे पर पहुँचे और इस प्रकार लेब्रेडर (Labrador), न्यू फाउन्ड लैण्ड (New Found Land), केप ब्रिटन द्वीप (Cape Breton Island), नोवास्कोटिया (Nova

Scotia) का पता लगा। इसका फल यह हुआ कि धीरे-धीरे व्यापार और समुद्री शक्ति में उन्नति हुई।

अन्य देशों से विवाहों द्वारा राजनैतिक सम्बन्ध दृढ़ करना—सबसे पहले हेनरी ने अपनी शक्ति को दृढ़ करने के लिए यार्क की राजकुमारी एलीजा वेथ से विवाह किया ताकि यार्क पार्टी के लोग भी उसके सहायक हो जायँ। उस समय यूरोप मे दो शक्तिशाली देश थे—पहला फ्रांस और दूसरा स्पेन। फ्रांस से उसको हमेशा डर लगा रहता था। इसलिए फ्रांस के विरुद्ध सहायता प्राप्त करने के लिए हेनरी ने स्पेन से मित्रता की और अपने पुत्र आर्थर का विवाह सन १५०१ ई० मे स्पेन के वादशाह फरडीनेण्ड की पुत्री कैथेरायन (Catherine) के साथ किया। जव आर्थर मर गया, तो यह सम्बन्ध स्थिर रखने के लिए उसने कैथेरायन का दूसरा विवाह पोप से विशेप आज्ञा (Dispensation) लेकर अपने दूसरे लड़के से कर लिया, जो कि आगे चलकर हेनरी अष्टम के नाम से इंग्लैण्ड का वादशाह हुआ।

हेनरी सप्तम् स्काटलैण्ड से भी मित्रता करना चाहता था। स्काटलैण्ड अवतक हमेशा फ्रास का साथ देता रहा और इंगलैण्ड को अपना शत्रु समझता था। हेनरी ने अपनी लड़की मारग्रेट (Margaret) का विवाह स्काटलैण्ड के वादशाह जेम्स चतुर्थ से कर दिया और इस प्रकार दोनों देशों की मित्रता का वीज वोया।

इस काल की वैदेशिक नीति की यह एक मुख्य विशेपता थी कि वादशाह लोग अपने राजनैतिक सम्बन्ध को विवाहों के सम्बन्ध से

सुदृढ़ कर लिया करते थे। हेनरी ने भी इससे उचित लाभ उठाया और इस प्रकार फ्रांस के विरोध से देश को बचाए रक्खा।

प्वाइनिंग का कानून (Poyning's Law)—सर एडवर्ड प्वाइनिंग आयरलैण्ड की प्रजा को दबाने के लिए भेजा गया। उसमें ड्रोगहैडा (Drogheda) के स्थान पर पार्लियामेण्ट का अधिवेशन करके सन् १४९५ ई० में एक क़ानून पास कराया कि वे समस्त कानून जो इंग्लैण्ड में पास हों, आयरलैण्ड में भी लागू होंगे। इस क़ानून का नाम प्वाइनिंग का क़ानून है।

हेनरी का चाल-चलन—अपने शासन-काल में हेनरी ने देश को बहुत से लाभ पहुँचाए। इंग्लेण्ड का गौरव उसने अन्य देशों की दृष्टि में बढ़ा दिया और देश का दबदबा दूर २ तक फैला दिया। अमीरों की शक्ति को कम करके लोगों को उनके अत्याचारों से बचाया और देश में सुख-शान्ति स्थापित की। उसने व्यापार में भी देश को लाभ पहुँचाया—जिससे कि देश की सम्पत्ति अधिक हो गई। समुद्री शक्ति को भी बढ़ाया और शिक्षा प्रचार के लिए विशेष ध्यान दिया। इन सब बातों में उसने प्रजा को सर्वदा अपने साथ रक्खा और ट्यूडर वंश के एक तंत्रशासन की जड़ डाल दी।

चौथा अध्याय

हेनरी अष्टम (सन् १५०९ से १५४७ ई० तक)

हेनरी अष्टम का चाल-चलन—हेनरी अष्टम १८ वर्ष की आयु में सिंहासन पर बठा। वह अत्यन्त दृढ़ निश्चय का मनुष्य था, अत्यन्त सुन्दर हृष्ट-पुष्ट और बड़ा विद्वान था। वह धार्मिक मामलों में बड़ी रुचि रखता था, लेकिन वह कृतघ्न और निर्दयी था। सिंहासन पर आरूढ़ होते ही उसने अपने पिता के मन्त्री डडले (Dudley) और एम्पसन (Empson) की हत्या करा डाली। इन लोगों ने उसके पिता हेनरी सप्तम् को रुपया जमा करने मे बहुत सहायता दी थी इसलिए इन दोनों से लोग बहुत अप्रसन्न थे। बादशाह ने लोगों को प्रसन्न करने के लिए इन दोनों का वध करा दिया।

हैनरी के शासन काल के दो भाग—सुगमता के लिए हैनरी अष्टम का शासन काल दो भागों मे विभाजित किया गया है:—

(१) सन् १५०९ ई० से सन १५२९ ई० तक प्रथम भाग है, जबकि हेनरी अन्य देशों के राजनैनिक मामलों में उलझा हुआ था। इस समय मे वूल्जे (Wolsey) उसका मन्त्री था और दोनों की सम्मति से वैदेशिक नीति स्थिर की जाती थी।

(२) हेनरी के शासन का दूसरा भाग सन १५२९ से आरम्भ होकर १५४७ ई० तक समाप्त होता है। यह काल धार्मिक सुधार का है।

Heniy VIII

इस काल में टाम्स क्रौमवैल (Thomas Cromwell) का प्रभाव शासन पर अधिक रहा।

कार्डीनल वूलजे का जीवन चरित्र—टाम्स वूल्जे इप्स विच (Ipswich) के एक व्यापारी का लड़का था। उसने बहुत

कम अवस्था में आक्सफ़ोर्ड के विश्वविद्यालय से बी० ए० की डिग्री प्राप्त की थी। फिर वह हेनरी सप्तम् की नौकरी में प्रविष्ट हुआ और हेनरी ने प्रसन्न होकर इसे अपना विशेष पादरी (Chaplain) बना लिया। हेनरी अष्टम् के शासन में वह पहले याक का बड़ा पादरी (Archbishop of York) नियुक्त हुआ और बाद में सन् १५१५ ई० में इसको प्रधान मन्त्री (Chancellor) का पद मिला और उसी वर्ष वह कार्डीनल (Cardinal) भी बनाया गया। इसके बाद सन् १५१७ ई० में पोप ने उसको अपना प्रतिनिधि (Papal Legater) भी नियुक्त किया। अब इसे धार्मिक और राजनैतिक दोनों प्रकार के अधिकार प्राप्त हो गये।

Cardinal Wolsey

वूल्जे की आन्तरिक नीति—देशी मामलों में वूल्जे की नीति का प्रयोजन बादशाह के गौरव को बढ़ाना और पार्लियामेन्ट के अधिवेशन बुलाये बिना शासन के काम को चलाना था। रुपये के लिए बादशाह को पार्लियामेण्ट से भीख न मांगनी पड़े, इसके लिए उसने लोगों से बल पूर्वक ऋण लिए और उनपर कई प्रकार के टॅक्स लगाये, जिसके कारण से लोग उससे अप्रसन्न होने लगे।

वूलज़े की वैदेशिक नीति—हैनरी की बाहरी नीति सन् १५२६ ई० तक वूल्ज़े के हाथ में रही। वूल्ज़े इंग्लैण्ड का पहला राजनीतिज्ञ था जिसने "शक्ति संतुलन" (Balance of Power) को अच्छी तरह समझा और उसका प्रचलन किया। इस नीति से उसका यह उद्देश्य था कि किसी देश को अधिक शक्तिशाली न होने दो। अतएव जिसको वह कमज़ोर पाता, उसीके पक्ष में वह युद्ध करने के लिए तत्पर हो जाता। इसलिए इस सिद्धान्त के प्रभाव ने बादशाह को प्रोत्साहन दिया कि वह अपने पिता की नीति पर अनुगमन करते हुए, अपने ससुर स्पेन के बादशाह के साथ संधि करे।

पवित्र संघ (Holy League) की स्थापना—हेनरी के सिंहासन पर बैठने के समय यूरोप के दो बड़े देश फ्रांस और स्पेन आपस में अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए एक दूसरे से लड़ रहे थे। फ्रांस इटली को विजय करना चाहता था। उसको ऐसा करने से रोकने के लिए रोम के पोप, जर्मनी के सम्राट और स्पेन के बादशाह ने मिलकर संघ बनाया, जिसको पोप के उसमें सामिल होने के कारण से पवित्र संघ (Holy League) कहते हैं।

गुलाबों के युद्ध (War of Roses) के समय में इंगलैण्ड यूरोप के कामों में बिल्कुल भाग नहीं ले सकता था, इसलिए यूरोप में अब इँगलैण्ड का गौरव बिल्कुल नहीं रहा था। हेनरी सप्तम् ने कोई ऐसा विशेष काम नहीं किया, जिसके कारण से इँगलैण्ड का गौरव यूरोप में बढ़ता। हाँ, उसने यह अवश्य किया था कि अपने लड़के आर्थर का विवाह स्पेन की राजकुमारी कैथरायन से कर लिया और आर्थर

के मरने पर उसी राजकुमारी का विवाह अपने दूसरे लड़के के साथ कर लिया, जो कि हेनरी अष्टम् के नाम से सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। इस प्रकार उसने राजनैतिक संबन्ध को विवाह के सम्बन्ध के द्वारा सुदृढ़ कर दिया। हेनरी अष्टम् ने भी अपने पिता की नीति पर ही कार्य किया और स्पेन का साथ दिया।

इसलिए हेनरी पवित्र संघ में सम्मिलित होगया। हेनरी का इससे यह प्रयोजन था कि फ्रांस से अपने खोये हुए देश वापिस छीन ले। इसलिए उसने एक विशाल सेना के साथ फ्रांस पर आक्रमण कर दिया और अंग्रेजी सेना मे सन १५१३ ई० में फ्रांसीसियों को स्पर्स की लड़ाई (Battle of Spurs) मे पराजित किया।

इसी बीच में फ्रांसीसियों ने स्काटलैण्ड के बादशाह जेम्स चतुर्थ को इंगलैण्ड पर आक्रमण करने के लिए उकसाया; मगर हेनरी की अनुपस्थिति मे फ्लाडन फील्ड (Flodden Field) के स्थान पर स्काटलैण्ड की सेना को अंग्रेजी सेनाओं ने पराजित किया और जेम्स चतुर्थ लड़ाई में मारा गया।

इन लड़ाइयों मे पवित्र संघ के सदस्यों ने हेनरी की कुछ भी सहायता न की और ये लोग भी गुप्त रूप से सन्धि करने का यत्न करने लगे। यह देखकर वूल्जे की सम्मति से हेनरी ने स्काटलैण्ड और फ्रांस के साथ सन्धि कर ली और फ्रांस के साथ अपनी मित्रता को अधिक दृढ़ करने के लिए हेनरी ने अपनी वहिन का विवाह फ्रांस के बादशाह बारहवें चार्ल्स के साथ कर दिया। इस प्रकार उसने अपना सम्बन्ध फ्रांस और स्पेन दोनों देशों के साथ कर लिया।

इस लड़ाई से हेनरी को कोई विशेष लाभ नहीं हुआ, यद्यपि यह अवश्य हुआ कि दूसरी बड़ी शक्तियों की तरह इंगलैण्ड का भी आदर होने लगा। अब हेनरी की नीति में एक परिवर्तन होने लगा। और उसने वूल्जे के कहने पर शक्ति संतुलन के सिद्धान्त का समर्थन किया।

जर्मनी की दशा—जर्मनी इस समय एक राज्य नहीं बना हुआ था; किन्तु लगभग तीन सौ छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था। और उन जर्मन शासकों में से सात शासकों को एक सम्राट् चुनने का अधिकार था' जिसको पवित्र रोमन साम्राज्य (Holy Roman Empire) का सम्राट् कहते थे। यूरोप के देशों के बादशाह इस उपाधि को प्राप्त करने के लिए अत्यन्त उत्सुक रहते थे और निर्वाचन के समय इसीलिये बड़ा भारी संघर्ष रहा करता था।

सन १५१६ ई० मे मेक्सी मिलियन (Maximilian) के मरने पर सम्राट् का स्थान रिक्त हुआ, तो स्पेन का बादशाह चार्ल्स पंचम् और बादशाह फ्रांसिस प्रथम ये दोनों पवित्र रोमन साम्राज्य का सम्राट् बनने के लिए उम्मीदवार खड़े हुए, लेकिन उनमें से स्पेन का बादशाह चार्ल्स पंचम सम्राट् निर्वाचित कर लिया गया, जिसके कारण से फ्रांस का बादशाह फ्रांसिस प्रथम उससे ईर्ष्या करने लगा। चार्ल्स की शक्ति एक तो पहले से ही जबर्दस्त थी, अब और भी बढ़ गई जिससे यूरोप का शक्ति संतुलन (Balance of Power) बिगड़ गया। चार्ल्स अब स्पेन, आस्ट्रीया, बरगण्डी, नीदरलैण्ड और इटली के आधे भाग पर शासन करता था। वह आस्ट्रीया का भी

बादशाह था और सम्राट् की उपाधि से वह जर्मन शासकों का सरदार भी होगया था, जिससे उसका गौरव और उसका सम्मान दोनों ही बढ़ गये।

फ्रांसिस और चार्ल्स में लड़ाई—फ्रांसिस और चार्ल्स में अब बहुत जल्द लड़ाई छिड़ गई। प्रथम इस कारण से कि ये दोनों आपस में एक दूसरे से द्वेष करते थे। दूसरे ये दोनों इटली पर अधिकार करना चाहते थे।

दोनों की हेनरी से प्रार्थना और उसे अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न—दोनों बादशाह फ्रांसिस और चार्ल्स हेनरी को अपने पक्ष का बनाना चाहते थे। सन् १५२० ई० मे फ्रांसिस और हेनरी मे कैले (Calais) के स्थान के पास भेंट हुई, जहाँ कि दोनों ओर से इतनी शान-शौकत दिखलाई गई कि वह स्थान "सुवर्ण वस्त्र का क्षेत्र" (Field of the cloth of Gold) के नाम से प्रसिद्ध हो गया। यह इसलिए किया गया कि दोनों मे मित्रता दृढ़ हो जाय, लेकिन जब खुशियाँ मनाई जा रही थीं, उस समय भी हेनरी स्पेन के बादशाह चार्ल्स से गुप्त षड्यंत्र कर रहा था और सन १५२१ ई० मे जब चार्ल्स और फ्रांसिस मे लड़ाई छिड़ी, तो हेनरी ने चार्ल्स का ही साथ दिया। इसके दो कारण थे:—

(१) फ्रांसिस इंग्लैण्ड का पुराना शत्रु था।

(२) वूल्ज़े को चार्ल्स की सहायता से पोप बनने की आशा थी।

लड़ाई छिड़ने पर अंग्रेजी सेना फ्रांस मे आ धमकी, लेकिन चार्ल्स ने फ्रांसिस को कई बार पराजित किया और सन् १५२५ ई० मे

पेडवा की लड़ाई के बाद फ्राँसिस की शक्ति यहाँ तक कम होगई कि कई वार चार्ल्स ने उसे क़ैद भी कर लिया। सन् १५२६ ई० में मैड्रिड की संधि (Treaty of Madrid) की संधि को मानने पर फ्रासिस को मजबूर किया गया। इससे चार्ल्स की शक्ति बहुत बढ़ गई थी और लोग उसकी बढ़ती हुई शक्ति से डरने लगे। दूसरे, हेनरी और चार्ल्स के बीच झगड़ा भी हो गया था और वूल्जे भी चार्ल्स के विरुद्ध हो गया था, क्योंकि उसके पोप बनने का उद्देश्य पूरा न हुआ था। उसके स्थान पर दूसरा पोप चुन लिया गया था, इसलिए हेनरी ने अब सन् १५२७ ई० में चार्ल्स का साथ छोड़ कर फ्राँस से संधि करली, ताकि चार्ल्स की शक्ति बढ़ने न पाये लेकिन उसका फल कुछ न निकला और हेनरी ने यूरोप की लड़ाइयों में भाग लेना बन्द कर दिया।

युद्ध का परिणाम—इन लड़ाइयों से इंग्लैण्ड को कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। हाँ, साधारण-सी विजय युद्ध में अवश्य हुई थी; लेकिन हेनरी को इतनी बड़ी सफलता प्राप्त नहीं हुई, जितनी कि एडवर्ड तृतीय और हेनरी पञ्चम् को प्राप्त हुई थी। इसके विपरीत इन लड़ाइयों में रुपया इतना अधिक खर्च हुआ कि हेनरी को पार्लियामेण्ट द्वारा लोगों पर टैक्स लगवाकर रुपया इकट्ठा कराना पड़ा। वूल्जे को राजकोष की सहायता के लिए प्रजा से मित्रतापूर्वक ऋण (Amicable Loan) लेना पड़ा, जो कि वास्तव मे दबाव डालकर वसूल किया जाता था और पादरियों तक की एक चौथाई जायदाद छीन ली गई। इन सब से प्रजा अप्रसन्न हो गई और उसने वूल्जे को ही इन सब बातों का दोषी ठहराया, यद्यपि वास्तव मे इन सब का दोषी स्वयं
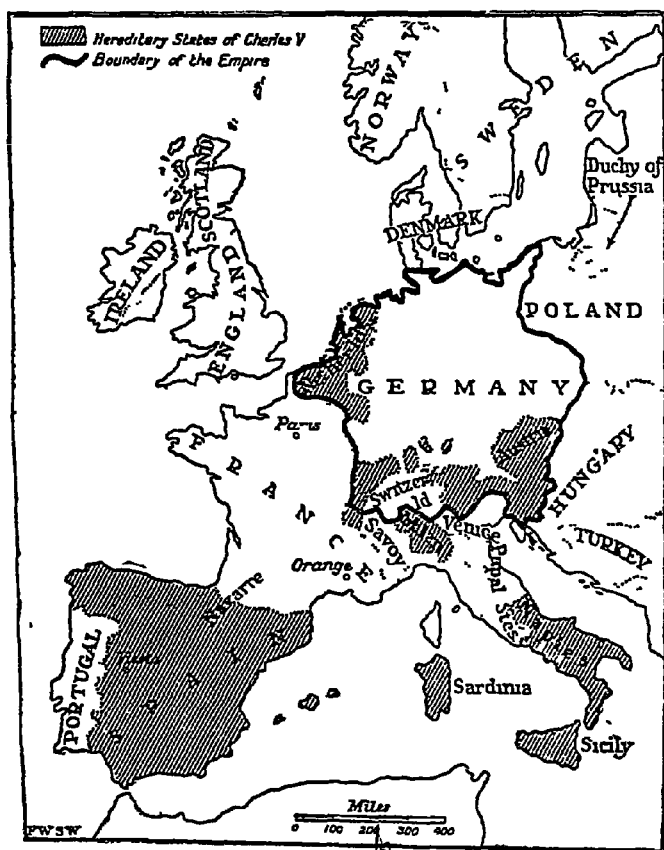
Map of Europe showing the Empire of Charles V.

बादशाह ही था; लेकिन यह बात अवश्य माननी होगी कि उसकी शक्ति सतुलन (Balance of Power) की नीति ने इंग्लैण्ड के गौरव को दूना कर दिया'। इससे पहले यूरोप के देश और राष्ट्र इंग्लैण्ड को बिल्कुल भूल गये थे, लेकिन अब स्पेन और फ्रांस दोनों देश इंग्लैण्ड की सहायता के इच्छुक रहने लगे। इस प्रकार इंग्लैण्ड का भी यूरोप के राज्यों मे पर्याप्त प्रभाव बढ़ने लगा।

वूल्जे की धार्मिक नीति—वूल्जे की धार्मिक नीति यह थी कि वह स्वयं पोप बन जाय, ताकि वह गिरजा घरों और पादरियों में सुधार कर सके। वह विद्या का प्रेमी था और विद्या का प्रचार करने के लिए उसने कई स्कूल और कालेज खुलवाये और आक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय की आर्थिक सहायता करके उसकी उन्नति की। इन सब विद्यालयों में भी वह नवीन जागृनि और धार्मिक ज्ञान का नये सुधारों के रूप मे प्रचार करना चाहता था।

वूल्जे का पतन—वूल्जे की आन्तरिक नीति से लोग अप्रसन्न थे, क्योंकि वह पार्लियामेण्ट की कुछ परवाह नहीं करता था। दूसरे हेनरी अष्टम् ने भी अपनी रानी कैथेरायन के त्याग करने के मामले मे वूल्जे से अप्रसन्न होकर उसको अपने पद से पृथक् कर दिया और फिर सन १५२९ ई० मे उसकी जायदाद छीन ली। फिर सन १५३० ई० में राजद्रोह का अपराध लगाकर उसको गिरफ्तार कर लिया और जब वह लन्दन को लाया जा रहा था, तो मार्ग में ही उसकी मृत्यु हो गई।

हेनरी अष्टम् का अपनी पत्नी कैथेरायन को तलाक—हेनरी अष्टम् का विवाह अपने स्वर्गवासी बड़े भाई की विधवा पत्नी कैथेरायन के साथ हुआ था। हेनरी ने कैथेरायन को सन १५२४ ई० मे निम्नलिखित कारणों से तलाक़ देने की (त्याग करने की) आवश्यकता अनुभव की :—

(१) कैथेरायन के केवल एक लड़की मेरी उत्पन्न हुई थी और कोई लड़का नहीं हुआ था, जिसकी कि हेनरी को बहुत अधिक इच्छा थी।

(२) हेनरी को यह विश्वास हो गया था कि मृतक भाई की विधवा पत्नी के साथ विवाह करने के कारण ही ईश्वर उससे अप्रसन्न हो गया है।

(३) उसका प्रेम अपनी पत्नी की सेविका ऐनी बुलीन (Anne Boleyn) से हो गया था इसलिए वह उसी से विवाह करना चाहता था लेकिन रोमन कैथोलिक ईसाई धर्म के अनुसार जब तक कि वह पहली पत्नी को तलाक न देवे तब तक दूसरा विवाह करने का अधिकारी नहीं हो सकता था।

अतएव हेनरी ने कैथेरायन को तलाक देने के लिए आज्ञा पाने के प्रयोजन से रोम के पोप से प्रार्थना की मगर पोप एक रानी को तलाक़ की आज्ञा देकर कैथोरायन के भतीजे स्पेन के बादशाह चार्ल्स पञ्चम को अप्रसन्न करना नहीं चाहता था इसलिए मामले को लम्बा करने के उद्देश्य से उसने वूल्ज़े और एक और पादरी को उसके फ़ैसले के लिए नियुक्त कर दिया। इससे पहले कि उन दोनों आदमियों

की कमेटी अपना कुछ फ़ैसला दे। पोप ने उनको निर्णय करने से रोक दिया और यह लिखा कि वह स्वयं रोम में इस मामले का फ़ैसला करेगा।

इसपर हेनरी अष्टम् बहुत अप्रसन्न हुआ और यह विचार करके कि पोप के इस कार्य का उत्तरदायी वूल्जे है, उसने अप्रसन्न होकर वूल्जे को उसके पद से पृथक कर दिया। इसके बाद हेनरी ने इस मामले में विश्वविद्यालयों से सम्मति माँगी, लेकिन उन्होंने भी एक मत होकर कोई एक निश्चित सम्मति नहीं दी, इसलिए उसने मजबूर होकर पार्लियामेण्ट से कुछ कानून पास कराये, जिनका फल यह हुआ कि पोप के अधिकारों का इंग्लैण्ड मे अन्त हो गया। टाम्सक्रेनमर (Thomos Cranmer) कैन्टरबरी का बड़ा पादरी (Archbishop of Canterbury) था। उसने हेनरी का विवाह जो कैथेरायन से हुआ था, उसको अनुचित और क़ानून के विरुद्ध ठहराया और हेनरी को स्वयं ही ऐनीबुलीन से विवाह करने की आज्ञा दे दी।

तलाक के प्रश्न का महत्व—इस तलाक की समस्या के कारण इंग्लैण्ड का गिरजा रोम के गिरजा से अलग हो गया। अगर पोप ने हेनरी को इस बात की आज्ञा दे दी होती कि वह कैथेरायन को तलाक़ देकर ऐनोबुलीन से विवाह कर सकता है, तो इंग्लैण्ड का चर्च रोमन चर्च से कम से कम हेनरी अष्टम् के समय मे अलग नहीं हुआ होता।

दूसरा सब से बड़ा प्रभाव यह हुआ कि इंग्लैण्ड का चर्च रोम के चर्च से अलग हो जाने के कारण इंग्लैण्ड मे धार्मिक सुधार की बुनि-

याद पड़ गई। वहाँ उसी तारीख़ से धार्मिक सुधार का आरम्भ होता है।

धर्म सुधार पार्लियामेण्ट (सन् १५२६ से १५३६ ई० तक)---इसके बाद हेनरी ने जो पार्लियामेण्ट बुलाई, वह धार्मिक सुधारों की पार्लियामेण्ट (Reformation Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है, वह लगभग सात वर्ष तक अर्थात् सन् १५२६ ई० से सन् १५३६ ई० तक जारी रही। उस पार्लियामेण्ट ने हेनरी के कहने के अनुसार कई नियम बनाये, जिनके कारण से हमेशा के लिए इंग्लैण्ड का रोम के पोप के साथ सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया गया; इन नियमों में से निम्नलिखित तीन नियम मुख्य रूप से प्रचलित किये गये:—

(१) सन् १५३२ ई० मे पहला कानून (Act of Annates) पास किया गया, जिसके अनुसार पोप के कोष के लिए किसी प्रकार का टैक्स का रुपया इंग्लैण्ड से रोम को नहीं भेजा जा सकता था।

(२) सन् १५३३ ई० में अपील का कानून (Act of Appeals) पास हुआ, जिसके अनुसार अब कोई अपील फैसले के लिए इंग्लैण्ड से रोम के पोप के पास नहीं भेजी जा सकती थी।

(३) सन् १५३४ ई० में बड़प्पन का कानून (Act of Supremacy) पास हुआ, जिसके अनुसार इंग्लैण्ड के चर्च का रोम के चर्च से बिल्कुल सम्बन्ध टूट गया और इसी क़ानून के अनुसार इंग्लैण्ड के चर्च का सबसे बड़ा शासक बादशाह को स्वीकर कर लिया गया।

टाम्स क्रेन्मर और तलाक की समस्या—कैन्टरबरी के बड़े पादरी का पद रिक्त होने पर बादशाह ने टाम्स क्रेन्मर (Thomas Cranmer) को उस पर नियुक्त किया। वह एक बड़े अच्छे स्वभाव का और धार्मिक प्रकृति का मनुष्य था; लेकिन वह एक बहुत निर्बल हृदय का था। जब पोप ने तलाक की आज्ञा नहीं दी, तो हेनरी ने टाम्स क्रेन्मर से ही तलाक़ की आज्ञा भी ले ली, क्योंकि अब अपील का क़ानून पास हो गया था, इसलिए उस आज्ञा की अपील अब रोम मे भी नहीं की जा सकती थी, अतएव हेनरी ने उसकी आज्ञा को भी अन्तिम आज्ञा मानकर कैथेरायन को तलाक़ दे दी और ऐनीबुलीन से विवाह कर दिया। टाम्स क्रेन्मर ने बाइबिल का लेटिन भाषा से अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया। चूँकि उसने हेनरी के साथ कैथेरायन के विवाह को क़ानून के विरुद्ध ठहराया था, इसलिए बाद में मेरी ट्यूडर ने क्रेन्मर को फाँसी का दण्ड दिया और इस तरह उसके जीवन का अन्त हुआ।

इस सब झगड़े का परिणाम यह हुआ कि रोम के चर्च का प्रभाव इंग्लैण्ड के चर्च से बिल्कुल जाता रहा और बादशाह की शक्ति चर्च के मालमों में भी बहुत बढ़ गई। अब वही राजनैतिक क्षेत्र की तरह धार्मिक क्षेत्र का भा प्रधान अधिनायक बन गया।

धार्मिक मठों का दमन (सन् १५३६ ई०)—इसके बाद बादशाह छोटे-छोटे धार्मिक मठों की ओर ध्यान देने लगा, जो इस समय इंग्लैण्ड में पर्याप्त संख्या में स्थापित थे। उनमें से कुछ मठा के लोग भोगविलास का जीवन व्यतीत करते थे। इन मठों के बारे में

विचार किया जाता था कि वे पोप की जायदाद में से हैं, इसलिए हेनरी उनके विरुद्ध था। अतएव उसने एक कमीशन उनकी दशा मालूम करने के लिए नियुक्त किया और फिर सन् १५३६ ई० में पार्लियामेण्ट की सम्मति से लगभग चार सौ छोटे मठ जब्त कर लिए गये; लेकिन यहीं पर इस दमन का अन्त नही हुआ। कमीशन की जाँच जारी रही और तीन वर्ष के बाद प्रत्येक मठ की बारी आई। सन् १५३९ ई० में पार्लियामेण्ट ने एक दूसरा क़ानून बनाया, जिसके अनुसार बड़े-बड़े मठों को भी दमन कर लिया गया।

धर्म की यात्रा—सन् १५३६ ई० में जब छोटे धार्मिक मठों का दमन कर दिया गया, तो यार्क शायर के कुछ निवासी अपने एक नव युवक वकील नेता रावर्ट आस्क (Robert Aske) के नेतृत्व में विद्रोह किये और लन्दन नगर की ओर वे इसे धार्मिक यात्रा समझ कर चले इस विद्रोह को धार्मिक यात्रा (Pilgrimage of Grace) कहते है; मगर बादशाह ने इस धार्मिक विद्रोह को शीघ्र ही दबा दिया।

मठों के तोड़ देने से लाभ—मठों के टूट जाने के कारण पोप के पक्षपातियों का अन्त हो गया। दूसरे, जिन लोगों ने मठों की जायदादों को खरीदा था, वे इस बात को कभी पसन्द नहीं कर सकते थे कि पोप फिर अंग्रेज़ी चर्च का सबसे बड़ा शासक नियुक्त हो जाये, क्योंकि ऐसी दशा में मठ फिर स्थापित किये जायेंगे, जिसके कारण से उनकी जायदादें मठों को फिर वापिस दिलाई जायेंगी। इस प्रकार देश में ऐसे लोगों की पर्याप्त संख्या होगई जो हमेशा के लिए अपनी नई खरीदी हुई जायदाद की रक्षा के उद्देश्य से धार्मिक सुधार के पक्ष में होगये।

तीसरे, मठों से जिनका कि दमन किया गया था, बादशाह को पर्याप्त धन प्राप्त हुआ।

चौथे, अब तक मठों के प्रवन्धक (Abbots) पार्लियामेण्ट में हाऊस आफ़ लार्डस के मेम्बर होते थे, उनके स्थान पर बादशाह के पक्ष के लोग, जिन्होंने उन मठों की जायदादें खरीद ली थीं, अब हाऊस आफ़ लार्डस के मेम्बर बना दिये गये। इस प्रकार पार्लियामेण्ट का एक विशेष भाग बादशाह के अधिकार में आगया।

लेकिन इन धार्मिक मठों के दमन से एक हानि भी अवश्य हुई। देश के ग़रीब लोगों का और अनेक महन्तों और पुजारियों का इन मठों से निर्वाह होता था, मगर अब इन मठों के दमन और विनाश हो जाने के कारण देश मे बेकारी बहुत फैल गई। इसलिए उस बेकारी को दूर करने के उद्देश्य से ट्यूडर बादशाहों ने कई क़ानून बनाये।

हेनरी अष्टम् ने एक कानून बनाया था, जिसके अनुसार अगर कोई तन्दुरुस्त आदमी भीख माँगते दिखाई देते तो उनको सख्त सज़ा दी जाती थी, उनके कोड़े लगाये जाते थे अथवा उनके हाथ-पैर नाक कान काट लिए जाते थे, लेकिन अंग-भंग लोगों या अपाहिजों पर यह क़ानून लागू नहीं था, अगर वे भीख माँगने की आज्ञा सरकार से पहले ही ले चुके हों।

हेनरी की धार्मिक नीति—हेनरी हृदय से तो कैथोलिक सिद्धान्तों का ही मानने वाला था और वह अन्त तक कैथोलिक ही रहा। सन् १५२१ ई० मे जब मार्टिन लूथर (Martin Luther) यूरोप मे पोप का विरोध कर रहा था और रोमन कैथोलिक मत की

बुराइयाँ लोगों को बतला रहा था, उस समय लूथर के विरुद्ध हेनरी ने एक पुस्तक प्रकाशित की जिसमें उसने पोप के पक्ष का समर्थन किया और रोमन चर्च के गुणों का भी वर्णन किया। उस समय पोप ने उस पुस्तक से प्रसन्न होकर हेनरी को "धर्म-रक्षक" (Defender of-Faith) की उपाधि प्रदान की। मगर सन् १५२५ ई० में एक व्यक्तिगत मामले पर अप्रसन्न होकर उसने पोप का विरोध किया और अंग्रेज़ी चर्च का पोप से संबध विच्छेद कर दिया और वह स्वयं अंग्रेज़ी चर्च का सबसे बड़ा शासक बनगया। लेकिन स्मरण रखना चाहिए कि यह पोप का विरोध हेनरी द्वारा केवल व्यक्तिगत अधार पर किया गया था और धार्मिक विश्वास में उसका किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ। यह एक राजनैतिक आन्दोलन था। किसी प्रकार धार्मिक अथवा जातीय आन्दोलन नहीं था। सन् १५३६ ई० मे हेनरी ने पार्लियामेण्ट से छः बातों का क़ानून (Statute of Six Articles) स्वीकार कराया जो सब पुराने कैथोलिक मत के सिद्धान्तों के आधार पर ही था और प्रोटैस्टेन्ट मत के विरुद्ध था। वास्तव में हेनरी हृदय से कैथोलिक सिद्धान्तों का ही समर्थक था और अगर हेनरी और पोप के बीच व्यक्तिगत मामले पर झगड़ा न हुआ होता, तो सम्भव था कि वह अंग्रेज़ी चर्च का संबन्ध रोमन चर्च से अथवा पोप से न तोड़ता।

टाम्स क्रामवैल का मन्त्रित्व—सन १४८५ ई० मे टाम्स क्रामवैल का जन्म एक दीन मनुष्य के घर में हुआ था। वह अपने प्रारम्भिक जीवन में हालैण्ड और इटली में एक व्यापारी बनकर रहा

था। सन् १५२० ई० में वूल्ज़े ने उसको कुछ क़ानूनी काम सौंपा और सन् १५२३ ई० में वह पार्लियामेण्ट का मेम्बर बना दिया गया। वूल्जे के पतन के पश्चात् हेनरी ने सन् १५३४ ई० में उसको अपना मन्त्री नियुक्त किया। उसकी नीति का मुख्य उद्देश्य यह था कि वह हेनरी को एक निरंकुश सर्वाधिकारी शासक बना दे। इसलिए उसने धार्मिक सुधार पार्लियामेण्ट (Reformation Parliament) का अधिवेशन किया था और उसीने उस पार्लियामेण्ट और रोम के पोप से इंग्लैण्ड का सम्बन्ध विच्छेद करादिया और धार्मिक मठों के दमन के क़ानून पास कराये। यह टाम्स क्रामवैल के सफल प्रयत्नों का परिणाम था कि बादशाह अंग्रेजी चर्च का प्रधान शासक नियुक्त हो गया। वूल्जे और टाम्स क्रामवैल दोनों देश में बादशाह के प्रभाव को बढ़ाना चाहते थे लेकिन उनकी नीति में बहुत अन्तर था:—

वूल्जे ने कभी भी पार्लियामेण्ट की परवाह नहीं की और उसका कोई अधिवेशन नहीं बुलाया, मगर क्रामवैल ने हेनरी की शक्ति को बढ़ाने के लिए जो कुछ चाहा पार्लियामेण्ट से करा लिया।

सन् १५४० ई० में क्रामवैल ने हेनरी का विवाह एक जर्मन राजकुमारी एन आफ़ क्लीव्ज (Anne of Cleves) से कराया। चूँकि वह वदसूरत स्त्री थी, इसलिए वह हेनरी को पसन्द न थी, इसलिए बादशाह ने अप्रसन्न होकर क्रामवैल पर राजद्रोह का अपराध लगाया। और उसका वध करा डाला।

सर टामस मोर—वूल्ज़े के बाद सर टामस मोर (Sir Thomas More) इंग्लैण्ड का चान्सलर नियुक्त हुआ था। वह

Sir Thomas More

बहुत ही विद्वान् और बुद्धिमान् मनुष्य था। वह नवीन शिक्षा और नवीन जागृति का समर्थक था और स्वतन्त्र विचारों का तो वह साक्षात् अवतार ही था, जिसका कि वर्णन उसने अपने एक पुस्तक युटोपिया (Utopia) नामक में किया है। युटोपिया शब्द का अर्थ है "कहीं नही।" इस पुस्तक में उसने एक ऐसे काल्पनिक द्वीप का वर्णन किया है, जहाँ प्रत्येक मानव सन्तान प्रसन्न चित्त और सुखी दृष्टि गोचर होती है। युटोपिया के मुख्य नगर अथवा राजधानी में अत्यन्त बढ़िया चौड़ी सड़कें हैं और प्रत्येक मकान के साथ एक-एक सुन्दर मनोरम उद्यान है। वहाँ कोई मनुष्य अधिक समय तक काम नहीं करता। प्रत्येक मनुष्य कुछ-न-कुछ थोड़ा काम अवश्य करता है, इसलिए वहाँ पर किसी प्रकार की बेकारी नहीं और न कोई महामारी है। प्रत्येक मनुष्य के लिये अपनी इच्छाके अनुसार धर्म को स्वीकार करने की स्वतन्त्रता है, क्योंकि युटोपिया के लोगों का विचार है कि अन्त में केवल वही धर्म स्थिर रहेगा, जो सबसे उत्तम होगा। वहां के लोग लड़ाई-झगड़े से घृणा करते है, इसलिए वहाँ न

कोई कलह है और न अशान्ति। वहां का जीवन अत्यन्त सुखमय और शान्तिमय है।

वह पोप से सम्बन्धविच्छेद करने और कैथेरायन के तलाक़ देने के पक्ष में सहमत न था। प्रधानता के क़ानून (Act of Supremacy) और उत्तराधिकार के क़ानून (Act of Succession) से सहमत न होने के कारण उसने राजाज्ञा के अनुसार शपथ लेने से इन्कार किया। इस पर उसको मृत्यु का दण्ड दिया गया।

हेनरी और पार्लियामेण्ट— हेनरी ने न तो पार्लियामेण्ट को प्रसन्न किया और न उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई काम किया। उसने पार्लियामेण्ट को अपने ही पक्ष के मेम्बरों से भर दिया, जो उसको सब प्रकार से सहायता देते थे। हेनरी ने जितने काम किये वे सब पार्लियामेण्ट की ही स्वीकारी लेकर किये।

हेनरी की आन्तरिक नीति—उसकी आन्तरिक नीति यह थी कि वह अपने आपको एक स्वतन्त्र सर्वाधिकारी बादशाह बनाये, क्योंकि पार्लियामेण्ट मे उसी के पक्ष के आदमी थे इसलिए पार्लियामेण्ट ने उसकी प्रत्येक क़ानून के विरुद्ध बात मे भी उसी की इच्छा के अनुसार उसकी पूरी-पूरी सहायता की। उसने अनुचित उपायों से रुपया इकट्ठा किया। जो लोग कि उसके पास कराये हुए अंग्रेजी चर्च के कानूनों को मानने से इन्कार करते थे, उन पर बड़ी सख्तियाँ की जाती थीं। यह बात भी उसने स्वयं ही तय कर दी कि उसके बाद इंगलैण्ड के सिंहासन पर कौन आरूढ़ होगा। जब कभी उसके मंत्री उसके विरुद्ध गये, तब उनको उनके पद से पृथक् करके

उसने दण्ड दिया। लोगों ने इन बातों को बड़े धैर्य्य और शान्ति के साथ सहन किया, क्योंकि उसके राज्य में सब प्रकार का सुख और आराम था। क़ानून को लोगों को मानना होता था। ये सब बातें निर्बल राजा के शासन में नहीं की जा सकती हैं।

हेनरी के विवाह— उसका सबसे पहला विवाह उसके स्वर्गीय ज्येष्ठ भ्राता की विधवा पत्नी कैथेराइन आफ़ अरागोन (Catherine of Aragon) के साथ हुआ था, जिसको उसने सन् १५३३ ई० में तलाक़ दे दिया था।

उसका दूसरा विवाह ऐनी बुलीन (Anne Boleyn) से हुआ, जो कि कैथेराइन की परिचारिकाओं में से एक थी और जिससे एलिज़ाबेथ (Elizabeth) उत्पन्न हुई थी, जो बाद को इंग्लैण्ड की महारानी बनी। अन्त में सन् १५३६ ई० में हेनरी ने ऐनी बुलीन को स्वामिभक्त न पाकर और उसपर कोई अपराध लगाकर उसे वध करवा डाला।

उसके बाद हेनरी का तीसरा विवाह जेन सीमूर (Jane Seymour) से हुआ। सन् १५३७ ई० में जेन सीमूर के गर्भ से एक पुत्र एडवर्ड (Edward) उत्पन्न हुआ था; लेकिन सन् १५३७ ई० में ही जेन सीमूर इस असार संसार से परलोक को सिधार गई।

उसके बाद सन् १५४० ई० में हेनरी ने एक जर्मन राजकुमारी एन आफ क्लीव्ज़ (Anne of Cleves) से विवाह किया, लेकिन क्योंकि वह एक बदसूरत राजकुमारी थी, इसलिए छः मास के भीतर ही हेनरी ने उसको भी तलाक दे दिया और चूंकि यह विवाह

टामस क्रामवैल (Thomas Cromwell) की सम्मति से हुआ था, इसलिये इसी अपराध मे उसको वध किये जाने की आज्ञा दे दी गई।

पांचवां विवाह फिर बादशाह ने कैथेराइन हावर्ड (Catherine Howard) से किया, जिसको बाद में दुराचारिणी होने के कारण मरवा डाला।

उसके बाद हेनरी अष्टम का छठा और अन्तिम विवाह कैथेराइन पार (Catherine Parr) के साथ हुआ। उसकी यह स्त्री हेनरी की मृत्यु के पश्चात् भी जीवित रही।
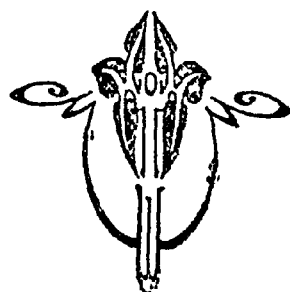
पांचवां अध्याय

एडवर्ड षष्ठ (सन् १५४७ से १५५३ ई० तक)

एडवर्ड षष्ठ और सौमरसैट—एडवर्ड षष्ठ (Edward VI) की आयु उसके सिंहासन पर बैठने के समय केवल नौ वर्ष की थी। उसकी नाबालिगी (बालकपन) के समय में एक कौंसिल

King Edward VI

आफ रीजेन्सी (Council of Regency) नियुक्त हुई, जिसका बड़ा कार्यकर्त्ता बादशाह एडवर्ड का मामा एडवर्ड सीमूर (Edward Seymour) था। उसने ड्यूक आफ़ सौमरसैट (Duke of Somerset) की उपाधि धारण करके शासन का कार्य किया। बादशाह एडवर्ड और ड्यूक आफ़ सौमरसैट दोनों ही प्रोटैस्टेन्ट विचारों के थे।

स्काटलैण्ड से युद्ध—ड्यूक आफ सौमरसैट की यह इच्छा थी कि स्काटलैण्ड की रानी मेरी (Mary Queen of Scotts) का विवाह बादशाह एडवर्ड से हो जाय, ताकि स्काटलैण्ड भी प्रोटैस्टेन्ट देश बन जाय, लेकिन स्काटलैण्ड का बादशाह (मेरी का पिता) इस बात के लिये तैयार नहीं हुआ। इसलिये सौमरसैट ने स्काटलैण्ड पर आक्रमण किया और पिनकी (Pinkie) के स्थान पर सन् १५४७ ई० मे स्काटलैण्ड वालों को पराजित कर दिया, लेकिन स्काटलैण्डवालों ने रुष्ट होकर मेरी को उसी समय फ्रांस भेज दिया, जहाँ उसका विवाह फ्रांस के बादशाह के सबसे बड़े लड़के के साथ कर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि इंगलेण्ड और स्काटलैण्ड में इसी करण से बहुत काल तक आगे तनातनी रही।

ड्यूक आफ सौमरसैट और धर्म-सुधार—जैसाकि पहले वर्णन हो चुका है, धर्मसुधार (Reformation) के दो पहलू है, एक तो पोप आफ़ रोम से सम्बन्ध विच्छेद करना और दूसरे रोमन कैथोलिक धर्म के सिद्धान्तों को न मानना अथवा उनका विरोध करना।

पहले प्रकार का धर्म सुधार तो हेनरी अष्टम् के समय मे हुआ

था, लेकिन उसने रोमन कैथोलिक धर्म के सिद्धान्तों में अभीतक कोई भी परिवर्तन नहीं किया था। एडवर्ड षष्ट के शासनकाल में ड्यूक आफ़ सोमरसैट ने इंग्लैण्ड के चर्च के सिद्धान्तों में भी परिवर्तन किये। इंग्लैण्ड में यहीं से धार्मिक सुधार (Reformation) का आरम्भ समझना चाहिये।

ड्यूक आफ़ सोमरसैट द्वारा किये परिवर्तन निम्नलिखित हैं:—

(१) गिरजाघरों से अवतारों और सन्तों की मूर्तियाँ और चित्र उतरवाकर तोड़ दिये गये और गिरजाघरों की सब जायदादें ज़ब्त करली गईं।

(२) गिरजाघरों के महन्तों और पुजारियों को विवाह करने की आज्ञा दे दी गई।

(३) हेनरी अष्टम् के समय का छः बातों का क़ानून (Statute of Six Articles) जिसका प्रयोजन यह था कि प्राचीन धर्म के सिद्धान्त ही स्थिर रहें, रद्द कर दिया गया।

(४) लैटिन भाषा में प्रार्थना करने के ढंग को बन्द कर दिया गया और यह आवश्यक ठहराया गया कि प्रत्येक गिरजाघर में अंग्रेजी भाषा में प्रार्थना की जाया करे।

(५) प्रार्थना की एक नवीन पुस्तक बनाई गई, जोकि "एडवर्ड षष्ट की प्रथम प्रार्थना पुस्तक" (First Prayer Book of Edward VI) कहलाई, जिसको कि पार्लियामेण्ट ने स्वीकार किया और उस पर कार्य कराने के लिये सन १५४९ ई० में एक क़ानून पास हुआ जोकि ऐक्ट आफ़ यूनीफ़ोर्मिटी या समन्वय का नियम

(Act of Uniformity) कहलाया, जिसके अनुसार इंगलैण्ड मे प्रार्थना पुस्तक का प्रचार हो गया।

सन् १५४६ ई० में राबर्ट केट का विद्रोह—एडवर्ड षष्ठ के समय किसान और मजदूरों की दशा बहुत खराब हो गई थी और अनाज का भाव बहुत तेज हो गया था। जमींदार लोग उन पर नाना प्रकार के अत्याचार करते थे। इन बातों से नारफोक (Norfolk) के लोग बहुत अप्रसन्न हो गये और उन्होंने राबर्ट केट (Robert Ket) की देख-रेख मे सन १५४६ ई० मे एक विद्रोह किया, जिसको कि अर्ल आफ वारवेक (Earl of Warbeck) ने दबा दिया, लेकिन चूंकि उस विद्रोह का उत्तरदायी सोमरसेट ठहराया गया, क्योंकि उसकी इन लोगों से सहानुभूति थी, इसलिए उसको अपने पद से हटा दिया गया और उसके स्थान पर अर्ल आफ वारवेक नियुक्त हुआ, जो कि उसी समय ड्यूक आफ नार्थम्बरलैण्ड (Duke of Northumberland) बना दिया गया।

नार्थम्बरलैण्ड और धार्मिक सुधार की प्रगति--ड्यूक आफ नोर्थम्बरलैण्ड के समय मे धार्मिक सुधारों (Reformation) की ओर भी तेज प्रगति होगई। उसने एक दूसरी प्रार्थना की पुस्तक (The Second Prayer Book of Edward VI) प्रकाशित की, जिसमे प्रथम प्रार्थना पुस्तक से भी अधिक प्रोटैस्टेण्ट मत का प्रभाव पाया जाता था। एक ४२ धाराओं का धर्म का क़ानून पास किया गया (Act of Forty two Articles of Religion) उसमे मार्टिन लूथर के बनाये हुए प्रोटैस्टेण्ट मत के समस्त सिद्धान्त

सम्मिलित थे। इस प्रकार अंग्रेजी चर्च अपनी रीति-रस्मों और सिद्धान्तों दोनों में पूरी तौर से प्रोटैस्टेण्ट हो गया। नये क़ानून (Act of Uniformity) के पास होने पर उसी के अनुसार समस्त गिरजाघरों में काम होने लगा।

लेडी जेन ग्रे--ड्यूक आफ़ नौर्थम्बरलैण्ड यह नहीं चाहता था कि एडवर्ड के बाद उसकी बहन मेरी, जो सिंहासन की उत्तराधिकारिणी थी, सिंहासन पर आरूढ़ होवे, क्योंकि मेरी पक्की कैथोलिक थी। अतएव एडवर्ड से उसने यह वसीयत लिखाई कि मेरे बाद इंगलैण्ड के सिंहासन की उत्तराधिकारिणी लेडी जेनग्रे (Lady Jane Grey) होगी, जोकि हेनरी अष्टम् की छोटी बहन की धेवती थी। वह पक्की प्रोटैस्टैण्ट थी और उसका विवाह ड्यूक आफ़ नौर्थम्बरलैण्ड के लड़के के साथ हो चुका था। सन् १५५३ ई० में एडवर्ड षष्ठ का देहावसान हुआ, तो नौर्थम्बरलैण्ड ने तुरन्त लेडी जेन ग्रे के महारानी होने की घोषणा कर दी, लेकिन पार्लियामेण्ट ने राजकुमारी मेरी के पक्ष में फैसला किया और नौर्थम्बरलैण्ड और लेडी जेन ग्रे दोनों का बध करा दिया गया।

छठा अध्याय

महारानी मेरी और कैथोलिक मत का पुनः प्रचार

(सन् १५५३ से १५५८ ई० तक)

महारानी मेरी—मेरी कैथेराइन आफ़ अरागोन की लड़की थी। वह स्वयं कट्टर कैथोलिक थी और पोप के अधिकारों को इंगलैण्ड में फिर से स्थापित करना चाहती थी, ताकि उसकी माँ के साथ जो अन्याय हुआ था, उसका प्रतिशोध हो जाय। अपने धार्मिक उत्साह मे वह देश के लाभ और न्याय का विचार न रख सकी और अपने मत के प्रचार के लिए उसने अन्याय पूर्वक अतीव रक्तपात किया।

स्पेन के बादशाह से विवाह और वाट का विद्रोह—

मेरी अपना विवाह स्पेन के बादशाह फिलिप द्वितीय के साथ करना चाहती थी, लेकिन उसकी प्रजा उसके विरुद्ध थी। सन् १५५३ ई० मे पार्लियामेण्ट ने इस काम मे रुकावटें उत्पन्न कीं, इस पर वह पार्लियामेण्ट भंग करदी गई और कई विद्रोह भी उसके विरुद्ध हुए। इनमे से एक विद्रोह का नेता (Wyett) बना। यह विद्रोह शीघ्र ही दबा दिया गया। लेडी जेन ग्रे (Jane Grey) और उसका पति तथा श्वसुर ड्यूक आफ नोर्थम्बरलैण्ड जिनका कि उस विद्रोह मे हाथ था, सबका वध करा दिया गया और एलिजाबेथ को लन्दन टावर में क़ैद कर दिया गया।

इसके बाद दूसरी पार्लियामेण्ट बुलाई गई, जिसमें अधिकतर मेम्बर इसके स्वयं के निर्वाचित किये हुए थे। इस पार्लियामेण्ट
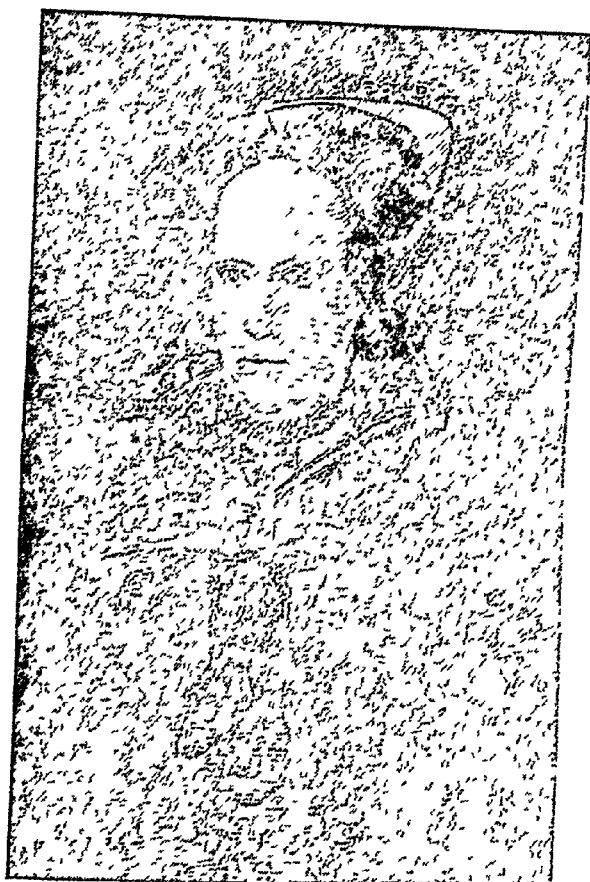
Mary Tudor

से मेरी ने अपने विवाह की स्वीकारी ले ली; लेकिन पार्लियामेण्ट ने फिर भी एक शर्त लगा दी कि इंग्लैण्ड और स्पेन दोनों का एक

शासक कभी न हो सकेगा। मेरी अकेली ही शासन करे और स्पेन के युद्धों में इंग्लैण्ड को अनुचित रूप में न सम्मिलित कर दिया जाय। इस विवाह से मेरी को कुछ भी आराम प्राप्त न हुआ, न तो फिलिप इंग्लैण्ड में आकर ही रहा और न उनकी कोई सन्तान ही हुई।

कैथोलिक धर्म का पुनः प्रचार—मेरी ने एडवर्ड द्वारा प्रचलित प्रोटैस्टेन्ट धर्म के ४२ सिद्धान्तों को रद्द करा दिया और एडवर्ड के समय के सारे क़ानून भी रद्द करा दिये और हेनरी अष्टम् के समय का "छः धाराओं का कानून" Statute of Six Articles) फिर से जारी कराके कैथोलिक मत का पुनः प्रचार करना आरम्भ कर दिया। इंग्लैण्ड मे पोप की शक्ति और प्रभाव को पुनर्जीवित करने के लिए उसने कार्डीनल पोल (Cardinal Pole) को रोम के पोप के प्रतिनिधि के रूप में इंग्लैण्ड में निमन्त्रित करके उसका सादर स्वागत किया और पोप का अपमान इंग्लैण्ड द्वारा किये जाने की क्षमा प्रार्थना की। फिर प्राचीन प्रथा के अनुसार गिरजाघरों में मूर्तियों की पूजा आरम्भ हो गई और पादरियों को अविवाहित रहना अनिवार्य कर दिया गया। प्रौटैस्टेन्ट पादरी सब निकाल कर बाहर कर दिये गये और उनके स्थानों पर कैथोलिक पादरी नियुक्त हुए, लेकिन मेरी धार्मिक मठों की जायदादें उनको पुनः वापिस न दिला सकी, क्योंकि ऐसा करने मे राजकीय कोष से बहुत-सा रुपया देने की आवश्यकता पड़ती थी। इस प्रकार धार्मिक सुधार(Reformation) का वृक्ष जड़ से नहीं उखाड़ा जा सका। कुछ शेष रह गया, जो अवसर पाकर फिर से हरा-भर हो गया।

प्रोटैस्टैंट धर्मवालों पर अत्याचार—इसके बाद मेरी ने इंग्लैण्ड में प्रोटैस्टेण्ट धर्मवालों के अस्तित्व को मिटाने के लिए सब सम्भव उपाय किये। कहा जाता है कि लगभग ३०० प्रोटैस्टैंट अपना धर्म परिवर्तन न कर सकने के कारण जीवित चिताओं में जलवा दिये गये। उनमें रोलैंडटेलर (Rowland Taylor) लैटीमर (Latimer) और रिडले (Ridley) का नाम वर्णन करने योग्य है। धर्म के नाम पर ऐसे अत्याचार देख कर लोगों को मेरी से घृणा होने लगी और प्रोटैस्टेण्ट लोग अपने धार्मिक विश्वासों में और भी कट्टर हो गये।

कैले का अंग्रेजों के हाथ से निकल जाना—मेरी ने स्पेन के बादशाह फिलिप को प्रसन्न करने के उद्देश्य से फ्रांस के विरुद्ध युद्ध में उसकी सहायता की; लेकिन इससे मेरी पर एक दूसरी विपत्ति आपड़ी। फल यह हुआ कि फ्रांसीसियों ने कैले (Calais) को जो दो सौ वर्ष से अंग्रेजों के हाथ में था, विजय कर लिया और इस प्रकार प्राचीन काल की फ्रांस पर होने वाली विजयों की अन्तिम यादगार भी इंग्लैण्ड के हाथ से निकल गई। मेरी का स्वास्थ्य पहले ही से खराब था और कैले के छिन जाने से उसके हृदय को इतना शोक का धक्का लगा कि उसके थोड़े ही दिन बाद वह परलोक को सिधार गई।

धार्मिक अत्याचारों की भारतवर्ष से तुलना—साधारण तौर पर हम लोग यह विचार करते है कि धार्मिक अत्याचार केवल भारत मे ही हुए है और कहीं नहीं। यह विचार बिल्कुल भ्रमपूर्ण है।

यूरोप और इंग्लैण्ड के इतिहास में हम भारतवर्ष से भी अधिक एक धर्मवालों को दूसरे धर्मवालों पर अत्याचार करते हुए पाते हैं। महारानी मेरी का यह कार्य कि उसने ३०० प्रोटेस्टेंट लोगों को अपना धर्म परिवर्तन करने के कारण से जीवित चिता मे जलवा दिया, एक ऐसा अत्याचार है कि जिसका उदाहरण हम भारत के इतिहास में नहीं पासकते हैं। भारतवर्ष मे भी मुसलमान बादशाहों ने हिन्दुओं पर जजिया टैक्स लगाया और कभी-कभी बहुत से अत्याचार भी अवश्य किये, लेकिन यह हम कहीं भी न पायेंगे कि अमुक बादशाह ने अपना धर्म परिवर्तन करने से इन्कार करने पर लोगों को जीवित जला दिया हो। इसके होते हुए भी हमें शोक है कि हमारे नवयुवकों के हृदयों में जम गया है कि मुसलमान बादशाहों ने हिन्दुओं पर सबसे अधिक अत्याचार किये थे। ऐसे भ्रमपूर्ण विचार परस्पर के मेल और प्रेम तथा सहानुभूति को नष्ट कर देते हैं।

इंग्लैण्ड का इतिहास पढ़ते हुए पाठकों को हिन्दुस्तान के इतिहास की तुलना करनी चाहिए और फिर स्वयं ही परिणाम निकालना चाहिए कि भारत वर्ष मे धार्मिक अत्याचार अधिक हुए हैं अथवा इंग्लैण्ड मे, और जिस प्रकार इंगलैण्ड मे इतने धार्मिक अत्याचार होने पर भी वहाँ के लोग अब इतने मेल-मिलाप के साथ रहते हैं और जब कोई भी प्रश्न उपस्थित होता है, तो उसको धार्मिक दृष्टिकोण से नहीं देखते, किन्तु उसको राजनैतिक दृष्टिकोण से देखते हैं और यह मालूम करने का प्रयत्न करते है कि उससे देश को लाभ होगा अथवा हानि। इसी प्रकार हमारे राष्ट्र के नवयुवकों को भी

यही चाहिए कि प्रत्येक प्रश्न को राजनैतिक दृष्टिकोण से देखें ताकि धार्मिक भेद-भाव दूर हो। परस्पर प्रेमभाव की वृद्धि हो और देश की उन्नति हो। धर्म का सम्बन्ध आत्मा से है, जिसका राजनैतिक मामलों से कोई सम्बन्ध नहीं है। राजनैतिक मामलों में बहुत कम ऐसी बातें उपस्थित होती हैं, जिनका कि धर्म से भी सम्बन्ध हो; लेकिन हम लोग राजनैतिक मामलों को धार्मिक दृष्टिकोण से देखते हैं, इसलिये इतना भ्रम फैल जाता है और द्वेष बढ जाता है।

सातवाँ अध्याय

महारानी एलिज़ाबेथ

(सन् १५५८ से १६०३ ई० तक)

एलिजावेथ का स्वभाव—मेरी की मृत्यु के वाद उसकी बहन एलिजावेथ महारानी वनी। एलिजावेथ हेनरी अष्टम् और एनी वुलीन की लड़की थी। वह ट्यूडर वंश के शासकों मे सबसे अधिक प्रसिद्ध है। इंग्लैण्ड के गौरव की नीव उसके शासन काल मे ही पड़ी थी। एलिजावेथ अपनी माता की तरह अभिमान वाली, आराम पसन्द और तड़क-भड़क तथा शान-शौकत की वहुत शौकीन थी, लेकिन उसके अन्दर वहुत से गुण पुरुषों के से उपस्थित थे। वह वीर, वलवान् मस्तिष्क वाली, राजकीय हृदयवाली, सुदृढ़ विचार वाली और अपने ऊपर आत्मविश्वास रखनेवाली थी और विपत्ति और संकट के समय कभी घवड़ाने वाली नहीं थी। किसी भी काम को करने से पहले वह उसके हर एक पहलू पर स्वयं खूव विचार करती थी और प्रत्येक वात मे वहुत फूँक-फूँक कर कदम रखती थी। विना पूरी तरह अनुसन्धान और छानबीन किये किसी काम का आरम्भ नहीं करती थी। जहाँ तक सम्भव होता, प्रत्येक कार्य मे मध्य का मार्ग ग्रहण करती थी। उसमें मेरी का सा धार्मिक पक्षपात ज़रा भी नहीं था। वह सव धर्मवालों को एक दृष्टि से देखती थी; लेकिन उसमें

Elizabeth

घमण्ड कूट-कूटकर भरा हुआ था। उसने अपने सारे जीवन में विवाह इसलिए नहीं किया कि उसे अपने पति के अधीन न रहना पड़े।

Willam Cecil

अपने शासन काल में एलिजावेथ को बहुतसी विपत्तियों का सामना करना पड़ा, मगर अपने अच्छे शासन-प्रवन्ध के कारण उसे कभी असफलता का मुख नहीं देखना पड़ा। सौभाग्य से उसे मंत्री भी योग्य मिल गये थे। एक का नाम विलियम सेसिल William Cecil था, जिसे उसने लार्ड वर्गले (Lord Burgley) बना दिया और

दूसरा मंत्री वालसिंघाम (Walsingham) था, जो गुप्त पुलिस विभाग का अधिष्ठाता था।

एलिज़ावेथ के शासन काल के प्रसिद्ध होने के कारण—एलिज़ावेथ के शासन-काल की घटनायें इतिहास में सुवर्ण अक्षरों में लिखी जाने योग्य है। वह इंग्लैण्ड के बलशाली शासकों में एक बहुत ऊचा स्थान रखती है और उसका शासन-काल निम्नलिखिति बातों के कारण बहुत प्रसिद्ध है :—

(१) उसके धार्मिक प्रवन्ध के आधार पर उसके शासन-काल में इंग्लैण्ड के लोगों ने पूर्णरूप से प्रोटैस्टेण्ट धर्म स्वीकार कर लिया।

(२) एलिज़ावेथ ने स्पेन की समुद्री शक्ति को नष्ट करके अँग्रेज़ी समुद्री शक्ति की धाक समस्त यूरोप मे विठा दी और उस समय से अंग्रेज़ों की समुद्री-शक्ति निरन्तर उन्नति ही करती गई।

(३) उसके शासन-काल में अंग्रेज़ी नाविकों के कारनामे और अंग्रेजी उपनिवेशों की स्थापना की प्रशंसा समस्त संसार में फैल गई।

(४) इंग्लैण्ड और स्काटलैण्ड के बीच चिरकाल से जो युद्ध चला आता था, उसका अन्त हो गया और आयरलैण्ड की विजय का काम पूर्णता को पहुँच गया।

(५) उसके शासन काल में अंग्रेज़ी शिक्षा और साहित्य ने बहुत उन्नति की।

एलिजावेथ का धार्मिक प्रवन्ध—शासन काल के प्रारंभ में एलिज़ावेथ के सामने सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न धार्मिक प्रवन्ध

का था। उसे इंग्लैण्ड के तीन धार्मिक दलों को सन्तुष्ट करना था (१) पक्के रोमन कैथोलिक लोग (२) मध्यम प्रोटस्टेण्ट दल वाले (३) और अतिवादी कट्टर प्रोटैस्टेण्ट लोग।

अतएव इस समय महारानी के सामने यह प्रश्न था कि क्या वह रोमन धर्म का पक्ष लेकर चले या प्रौटैस्टेण्ट बनी रहे। और ऐसा कौनसा उपाय करे कि तीनों दलों की सहानुभूति उसके साथ रहे। एलिजावेथ को स्वयं धार्मिक झगड़ों में कुछ भी रुचि न थी। उसने इसलिए उस प्रश्न पर एक राजनीतिज्ञ की तरह से दृष्टि डाली और फिर राजनैतिक दृष्टिकोण से ही अँग्रेज़ी चर्च का प्रवन्ध किया। इस-लिए उसने धार्मिक क्षेत्र में मध्यम मार्ग का अवलम्वन किया। उसने अँग्रेजी गिरजा। (Anglican Church) स्थापित किया, जिसमें कतिपय कट्टर लोगों को छोड़कर शेष सव दलों के लोग सम्मिलित हो सकते थे।

अँग्रेजी चर्च का प्रवन्ध—एलिजावेथ जानती थी कि इंग्लैण्ड निवासी पोप के आधीन रहना कभी स्वीकार नहीं करगे, इस-लिए उसने अपने पिता हैनरी अष्टम् की भांति सन् १५५९ ई० मे एक "प्रधानता का क़ानून" (Act of Supremacy) पास कराया, जिसके अनुसार महारानी एलिज़ावेथ अँग्रेजी चर्च की सर्वोच्च प्रधान वन गई। पोप का प्रधानत्व सर्वदा के लिए इंग्लैण्ड से उठा दिया। कैथोलिक लोगों को प्रसन्न करने के लिए "चर्च के प्रधान" (the Head of the Church) के स्थान पर इस पद का नाम "चर्च के शासक" (Governor of the church) रख दिया गया

और एडवर्ड षष्ठ की दूसरी प्रार्थना पुस्तक कुछ परिवर्तनों के साथ प्रचलित करदी गई और क़ानून एकता (Act of Uniformity) के अनुसार और किसी प्रकार से प्रार्थना करने का निषेध कर दिया गया। सन् १५४९ ई० वाले ४२ धाराओं के क़ानून (Act of Forty two Articles) को जिससे रोमन कैथोलिक धर्म वाले मत-भेद रखते थे, परिवर्तित कर दिया अर्थात् उसकी तीन धाराओं को निकाल कर अब ३९ धाराओं का क़ानून (Act of Thirty-nine Articles) प्रचलित कर दिया, जिसके अनुसार प्रौटैस्टेण्ट धर्म के रीतिरस्म प्रचलित किये गये। उनमें भी कोई ऐसी बात नहीं रखी गई, जिससे कैथोलिक लोगों के हृदय को कुछ भी कष्ट पहुँचे। प्रत्येक पादरी को प्रधानता के कानून (Act of Supremacy) के अनुसार अंग्रेज़ी चर्च की शपथ लेना आवश्यक था; लेकिन न लेने वालों को अपने प्राण गँवाने का भय नहीं होता था। केवल अपने पद से पृथक् होना पड़ता था। प्रत्येक मनुष्य को रविवार के दिन गिरजाघर में जाना आवश्यक था।

एलिजावेथ की धार्मिक नीति--एलिजावेथ ने चर्च के प्रबन्ध में मध्यम मार्ग का अवलम्बन किया। उसका उद्देश्य यह था कि अँग्रेज़ी चर्च एक राष्ट्रीय चर्च हो, जो अंग्रेज जातिभर का हो और जिसमें सब विचारों के लोग सम्मिलित हो सकें। वह चाहती थी कि मेरे शासन-काल मे किसी भी धर्मवाले को उसके धार्मिक विश्वास के कारण से दण्ड न दिया जाय। प्रधानता के नियम (Act of Supremacy) के अनुसार प्रत्येक गिरजाघर के पादरी को

शपथ लेना आवश्यक था। साधारण मनुष्य को जो गिरजा में किसी पद पर नहीं था, वह शपथ लेने की कोई आवश्यकता नहीं थी। पादरी और गिरजा के पदाधिकारियों को अपने जीवन का कोई भय नहीं था। यदि वे शपथ नहीं लेते थे, तो अपने पद से पृथक् कर दिये जाते थे। रोमन कैथोलिक लोगों को और सब को पूरी तरह से स्वतंत्रता थी कि वे जिस प्रकार से चाहे अपनी पूजाप्रार्थना करें। उनपर किसी प्रकार की सख्ती नहीं की जाती थी; मगर प्रत्येक मनुष्य को रविवार के दिन गिरजाघर मे जाना आवश्यक था। न जाने की दशा में एक शिलिंग जुर्माना देना पड़ता था। केवल इतनी सख्ती सरकार की ओर से की जाती थी।

एलिज़ाबेथ की धार्मिक नीति अत्यन्त सफल हुई। अंग्रेजी चर्च के अनुयाइयों की संख्या बढ़ने लगी। कुछ कट्टर कैथोलिकों ने और कुछ प्रोटैस्टेन्ट लोगों ने जो प्योरीटन (Puritans) कहलाते थे, उसकी धार्मिक नीति का विरोध किया। पहले तो एलीजाबेथ की धार्मिक नीति सख्त न थी, लेकिन जब उसने देखा कि कुछ साम्प्रदायिक पक्षपाती लोग ऊधम मचाने पर तुले हुये है, तो उसने उनको दबाने के लिये एक और अदालत खोली, जो कोर्ट आफ़ हाई कमीशन (Court of High Commission) के नाम से प्रसिद्ध है।

प्योरीटन दल (Puritans) से बर्ताव—प्रोटैस्टेण्ट लोगों में जो कट्टर अतिशयवादी थे, वे प्योरीटन कहलाये क्योंकि, वे लोग चर्च में अन्तिम श्रेणी के सुधार चाहते थे और धर्म को बुराइयों से बिल्कुल पवित्र (Pure) करना चाहते थे। ये लोग बाहरी दिखावे

के विरुद्ध थे और पादरी लोगों का विरोध करते थे। उनका मुख्य ध्यान आचरण के सुधार की ओर था। वे साधारण मनोरंजन के साधन नाच तमाशे, नाटक, ताश, शतरंज आदि को भी पसन्द नहीं करते थे। इंग्लैण्ड में उनकी संख्या एडवर्ड षष्ट के समय से बहुत बढ़ गई थी; लेकिन मेरी के समय में ये लोग अपना देश छोड़कर बाहर चले गये, लेकिन एलिज़ाबेथ के समय में वे फिर देश में वापिस आ गये।

इंग्लैण्ड का प्योरीटन दल एलिज़ाबेथ के चर्च के प्रबन्ध से संतुष्ट न था। वे लोग धार्मिक सुधार के प्रवाह को बड़े वेग से आगे बढ़ाना चाहते थे; मगर महारानी एलिज़ाबेथ उनके विचारों से सहमत न थी, बल्कि उनको अंग्रेज़ी चर्च का शत्रु समझती थी।

नियमानुसार सब पादरियों को प्रार्थना के समय एक विशेष प्रकार का वस्त्र धारण करना आवश्यक था और प्योरीटन दलवाले उस-को आवश्यक न समझते थे, इसलिये ही एलिज़ाबेथ ने उन लोगों को निकाल बाहर किया। इस प्रकार प्योरीटन दल वाले अंग्रेज़ी चर्च से पृथक् हो गये और यही लोग आगे चलकर विसम्वादी अथवा नानकन्फार्मिस्ट (Nonconformist) अथवा असहमत (Dis-senters) अर्थात् स्थापित अंग्रेज़ी चर्च के साथ सहमति न रखने वाले अथवा उसका विरोध करनेवाले कहलाये। एलिज़ाबेथ के शासन-काल के अन्तिम दिनों में इस दल के सदस्यों की संख्या में वृद्धि हुई; लेकिन सरकार को इन लोगों से अधिक भय नहीं था और यही कारण है कि प्योरीटन दल की उन्नति होती रही और आगे चलकर सत्रहवीं शताब्दी में उन्होंने बादशाह से धार्मिक तथा राज-

नतिक स्वतन्त्रता के लिये युद्ध किया।

रोमन कैथोलिक लोगों के साथ बर्ताव—धार्मिक मामलों में एलिज़ाबेथ का सब से अधिक विरोध कैथोलिक लोगों की ओर से हुआ। उनके सम्बन्ध मे केवल धर्म ही के विरोध का प्रश्न नहीं था, किन्तु राजनैतिक मामले भी उसमें सम्मिलित थे। कैथोलिक लोग अपना पुराना धर्म प्रचार करने के लिये एलिजावेथ को राजसिंहासन से उतार कर मेरी को महारानी बनाना चाहते थे और इस काम में उनको एलिजावेथ से शत्रुता रखने वाली जितनी शक्तियां थी, उनसे सहायता मिलने की आशा थी। स्काटलैण्ड की रानी मेरी और स्पेन का बादशाह फिलिप ये दोनों कैथोलिक लोगों के विशेष सहायक थे। उसके अतिरिक्त कैथोलिक धर्म के दुवारा प्रचार करने के लिये एक जैसुइट दल (Order of the Jasuits) स्थापित किया गया था।

इस जैसुइट दल का एक मुख्य उद्देश्य यह था कि समस्त यूरोप में पोप के अधिकार को फिर से स्थापित करदे और धार्मिक सुधार की बढ़ती हुई लहर को रोकने की यथा शक्ति चेष्टा करे। ईसाइयों के धार्मिक गुरु और शासक पोप ने यह घोषणा कर दी थी कि एलिजा-बेथ काफ़िर है और कैथोलिक लोगों को आज्ञा दे दी गई थी कि एलीजाबेथ के विरुद्ध विद्रोह करना धार्मिक कर्तव्य है। जैसुइट दल के कुछ लोग इंग्लैण्ड भी आ पहुँचे थे, जो एलिजाबेथ के विरुद्ध प्रजा को भड़काने लगे। अतएव ऐसी दशा में महारानी एलिजावेथ को सख्ती से काम लेना पड़ा।

एलिज़ाबेथ की धार्मिक नीति दो मुख्य भागों में विभाजित की जाती है :—

(१) प्रथम-वह काल जब कि रोमन कैथोलिक लोग केवल धार्मिक स्वतन्त्रता के अभिलाषी थे और उनपर कोई बाहरी प्रभाव नहीं पड़ा था। यह काल सन १५६८ ई० तक रहा। इस काल में महारानी की ओर से कैथोलिकों पर कोई विशेष अत्याचार नहीं हुआ। इस काल में जो लोग गिरजाघर में रविवार को नहीं जाते थे, उनपर केवल अर्थ दण्ड हो जाता था।

(२) दूसरा वह काल जब कि मेरी ने देश मे पदार्पण किया और इंग्लैण्ड की स्वतन्त्रता पर आक्रमण होने लगे। यह काल सन् १५६८ से सन् १५८८ ई० तक रहा और इस काल में धर्म की आड़ में राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयत्न होते रहे। अन्त में स्पेन को पराजित करके महारानी एलिज़ाबेथ को सुख और शान्ति प्राप्त हुई।
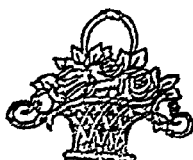
आठवाँ अध्याय

एलिज़ाबेथ और स्काटलैण्ड की रानी मेरी

(सन् १५६० से सन् १५८७ ई० तक)

स्काटलैण्ड की दशा—स्काटलैण्ड और इंग्लैण्ड में पुरानी शत्रुता चली आती थी। हेनरी सप्तम् ने दोनों देशों को मिलाने के उद्देश्य से अपनी पुत्री मारग्रेट का विवाह जेम्स चतुर्थ के साथ कर दिया था, मगर इन दोनों देशों में मेल नहीं हुआ। स्काटलैण्ट बराबर फ्रांस का ही साथ देता रहा। जब हेनरी अष्टम् फ्रांस के विरुद्ध युद्ध मे व्यस्त हो रहा था तब जेम्स चतुर्थ ने इंग्लैण्ड पर आक्रमण किया, मगर फ्लौडिनफील्ड (Flodden Field) के युद्ध में वह मारा गया। जेम्स पंचम भी फ्रांस ही से मित्रता रखता था और उसने भी इंग्लैण्ड पर आक्रमण किया था। उसको भी साल्वे मास (Salway-Moss) के युद्ध मे सन् १५४२ ई० मे पराजय प्राप्त हुई और फिर कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हो गई।

मेरी स्टुआर्ट का प्रारम्भिक जीवन—जेम्स पंचम की मृत्यु के पश्चात् उसकी पुत्री मेरी, जो कि सन् १५४२ ई० में उत्पन्न हुई थी, स्काटलैण्ड की रानी हुई, क्योंकि उसके कोई भाई नहीं था। वह अभी बच्ची ही थी, इसलिए उसकी माता राज्य की प्रवन्धकर्त्री

नियुक्त हुई। सौमरसैट ने मेरी का विवाह एडवर्ड से करना चाहा था, मगर स्काटलैण्ड वाले उसकी इस नीति से भड़क उठे और उन्होंने अपनी रानी मेरी को फ्रांस भेज दिया, जहाँ उसका विवाह सन् १५५८ ई० में फ्रांस के राजकुमार फ्रांसिस (Francis) के साथ होगया, जो सन् १५५६ ई० में फ्रांसिस द्वितीय के नाम से फ्रास का बादशाह बना। मगर यह सम्बन्ध कुछ अच्छा सिद्ध न हुआ। कारण यह था कि मेरी मारग्रेट की पुत्री होने से अपने आपको इंग्लैण्ड की भी महारानी समझती थी और इंग्लैण्ड के रोमन कैथोलिक लोग भी यही चाहते थे कि वह महारानी बन जाय और उसका पति फ्रांसिस भी उसका साथ देने को तैयार था, इसलिए एलिजाबेथ को मेरी की ओर से भय था; लेकिन विवाह के कुछ समय बाद ही सन् १५६१ ई० में मेरी के पति फ्रांसिस का देहान्त होगया और विधवा मेरी, जिसकी आयु अभी केवल १६ वर्ष की ही थी, स्काटलैण्ड वापिस चली आई।

इस बीच में जब कि वह फ्रांस में रही, स्काटलैण्ड में महत्वपूर्ण धार्मिक परिवर्तन हो गये। इससे पूर्व स्काटलैण्ड के लोग कैथोलिक थे; लेकिन एक प्रसिद्ध प्रोटैस्टट प्रचारक जान नाक्स (John Knox) के उपदेशों से वहां के लोग अतिशयवादी कट्टर प्रोटैस्टेट होगये थे, जिनको कि प्रेसबिटेरियन (Presbyterians) कहते थे।

महारानी मेरी स्टुआर्ट और लार्ड डार्नले—मेरी पक्की कैथोलिक थी और उधर स्काटलैण्ड में प्रेसबिटेरियन चर्च स्थापित हो चुका था। इस कारण से प्रजा की सहानुभूति अब मेरी के

साथ बिल्कुल नहीं थी। सन १५६५ ई० में मेरी ने अपने चचेरे भाई लार्ड डार्नले (Henry Stuart, Lord Darnley) के साथ दूसरा विवाह कर लिया। इस घटना के बाद दूसरे ही वर्ष जेम्स उत्पन्न हुआ, जो बाद में जेम्स प्रथम के नाम से इंग्लैण्ड के सिंहासन पर बैठा और वही स्टुआर्ट वंश का संस्थापक बना।

मेरी का यह दूसरा विवाह भी हर्षोत्पादक सिद्ध नहीं हुआ और मेरी उससे बहुत शीघ्र तंग आगई और तब उसने अपने मंत्री को अपने प्रेम का पात्र बना लिया, जिसका कि नाम रिज़ियो (Rizzio) था। यह देख कर डार्नले के द्वेष की आग भड़क उठी और उसने रानी मेरी के सामने ही सन् १५६६ ई० में रिज़ियो का वध करवा डाला। मेरी ने रिज़ियो की मृत्यु पर बहुत शोक मनाया।

लार्ड डार्नले का वध—इसके बाद मेरी जो कि अपने सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध थी, अर्ल आफ़ बोथवैल (Earl of Bothwell) के प्रेमपाश मे फँस गई और उससे विवाह करने के उद्देश्य से लार्ड डार्नले से छुटकारा पाने के उपाय सोचे जाने लगे। कुछ ही दिन बाद एडिनबरा (Edinborough) से थोड़ी ही दूरी पर कर्क ओ फील्ड (Kirk-o-Field) के स्थान पर डार्नले का मकान बारूद से उड़ा दिया गया और उसका मृतकशव पास के एक उद्यान में पड़ा हुआ पाया गया। यह घटना सन् १५६७ ई० में हुई।

मेरी का बोथवैल से विवाह और सिंहासन से त्यागपत्र—लोगों का यह अनुमान करना स्वाभाविक ही था कि डार्नले का वध बोथवैल के षड़यन्त्र का ही परिणाम है और इस मामले में मेरी का भी

हाथ अवश्य होगा। फिर जब मेरी ने बोथवैल से विवाह कर लिया, उस समय तो सबको पूर्ण विश्वास होगया कि उन्हीं दोनों ने डार्नले का बध कराया है। जब देश में यह समाचार फैला तो सारा स्काटलैण्ड अपनी निर्दयी और अत्याचारिणी तथा पापिनी रानी के विरुद्ध हो गया और एक बहुत बड़ा विद्रोह आरम्भ होगया। परिणाम यह हुआ कि मेरी को उसी समय स्काटलैण्ड के सिंहासन से त्यागपत्र देना पड़ा और उसका लड़का जेम्स षष्ठ (James VI) के नाम से सिंहासनारूढ़ हुआ।

जेम्स षष्ठ का जन्म अपने पिता लार्ड डार्नले के वध से थोड़े ही दिन पहले हुआ था। उसी समय मेरी के सौतेले भाई अर्ल आफ़ मरे (Earl of Murray) को राज्य का प्रबन्धक (Regent) नियुक्त करके राज्य के शासन के प्रबन्ध का कार्य उसके सुपुर्द किया गया और मेरी को लौकलेविन के क़िले (Lochleven Castle) में क़ैद कर लिया गया; मगर कुछ समय बाद सन् १५६८ ई० मे मेरी जेलखाने से निकल भागी और अपने समर्थकों और सहायकों को एकत्रित करके अपने फिर अपने सिंहासन को प्राप्त करने का प्रयत्न किया; मगर इसमें मेरी को पराजय मिली। तब वह शीघ्र ही इंग्लैण्ड भाग गई और वहाँ जाकर उसने महारानी एलिजाबेथ की शरण ली।

एलिजाबेथ मेरी को तनिक भी सहायता देना नहीं चाहती थी, इसलिये उसने यह बहाना किया कि सबसे पहले मेरी अपने को निरपराधिनी सिद्ध करे। इसके जाँच के लिये एक कमीशन नियुक्त

हुआ; मगर उसने कोई फ़सला नहीं दिया और मेरी को निरन्तर इंगलैण्ड के एक क़िले में नजरबन्द रहना पड़ा।

एलिजाबेथ के विरुद्ध षड्यंत्र (सन् १५७० से १५८८ तक)

स्काटलैण्ड की रानी मेरी की इंगलैण्ड में उपस्थिति एलिज़ाबेथ के जीवन के लिये बहुत भयङ्कर सिद्ध हुई। उसने एलिजाबेथ की कठिनाइयों को बहुत कुछ बढ़ा दिया। मेरी बहुत से षड्यन्त्रों का केन्द्र बन गई। रोमन कैथोलिक लोगों ने षड्यंत्र पर षड्यंत्र रचकर इस बात की चेष्टा की कि एलिजाबेथ को मारकर मेरी को इंगलैण्ड के सिंहासन पर बिठाया जावे। पोप और स्पेन के राजा फिलिप कैथोलिकों की बहुत कुछ सहायता करते रहे। पोप ने तो यहाँ तक किया कि सन १५७० ई० में एक घोषणा निकाल कर एलिजाबेथ को सिंहासन से उतारने का आदेश देते हुए प्रजा को आज्ञा दी कि वह एलिज़ाबेथ के स्थान पर मेरी को इंगलैण्ड के सिंहासन पर आरूढ़ करे।

इसी बीच में जैसुइट लोग (Jesuits) भी अन्य देशों से आकर इंगलैण्ड में एकत्रित होगये, उन्होंने विरोध की उस आग को अधिक भड़काने की चेष्टा की, मगर इंगलैण्ड निवासियों ने एलिज़ाबेथ का ही साथ दिया और देश के अधिकतर लोगों ने एक प्रतिज्ञापत्र (Bond of Association) पर हस्ताक्षर किये कि "हम लोग अपने तन-मन-धन से महारानी एलिज़ाबेथ की रक्षा करेंगे।"

इस समय में एलिज़ाबेथ के विरुद्ध चार षड्यंत्र रचे गये:—

(१) पहला षड्यंत्र सन् १५६९ ई० में उत्तरी प्रान्तों के कैथोलिक निवासियों ने किया।

(२) दूसरा षड्यंत्र सन् १५७१ ई० में इटली के एक निवासी रिडोल्फी (Ridolphi) के द्वारा किया गया, जिसमें पोप और स्पेन का बादशाह फिलिप तथा मेरी भी सम्मिलित थी।

(३) सन् १५८३ ई० में थ्रौकमार्टन का षड्यन्त्र (Throckmorton Plot) रचा गया, और

(४) सन १५८६ ई० बेबिंग्टन षड्यन्त्र (Babington plot) हुआ, जिसका पता लगाकर विद्रोहियों को दंड दिया गया।

इस अन्तिम षड्यन्त्र में पोप के भेजे हुये पादरियों का भी भाग था और उसमें मेरी के हाथ के लिखे कई पत्र भी पकड़े गये। अतएव पार्लियामेण्ट ने मेरी पर अभियोग चलाया और प्रमाग मिल जाने पर अदालत ने मेरी को मृत्यु का दंड दिया। सन १५८७ ई० में स्काटलैंण्ड की सुन्दरता की मूर्ति मेरी को फाँसी दे दी गई।

मेरी की मृत्यु के बाद अब इँगलैण्ड के सिहासन के लिए झगड़ा करनेवाला कोई भी न रह गया, इसलिये अब एलिजावेथ को षड्यन्त्रों के भय से छुटकारा मिल गया

नवाँ अध्याय

एलिज़ाबेथ का अन्य देशों से सम्बन्ध

एलिजाबेथ की वैदेशिक नीति—इस समय यूरोप में दो शक्तिशाली राष्ट्र थे—एक स्पेन जिसका बादशाह फिलिप था और दूसरा फ्रांस। इन दोनों देशों में पुरानी शत्रुता चली आती थी और दोनों का एक साथ मिलकर इंग्लैण्ड पर आक्रमण करना असम्भव था; लेकिन दोनों देशों से इंग्लैण्ड को भय अवश्य था।

एलिजाबेथ ने वूल्जे (Wolsey) की नीति को स्वीकार किया और फ्रांस के विरुद्ध तो स्पेन से और स्पेन के विरुद्ध फ्रांस से मित्रता रखी और इन जगहों के प्रोटेस्टेण्ट विद्रोहियों को सहायता पहुंचाकर दोनों देशों की शक्ति को क्षीण करती रही। फ्रांस से निरन्तर उसकी मित्रता रही; लेकिन फिर भी उसने वहां के प्रोटेस्टेण्ट विद्रोहियों को जिनको ह्यूगेनाट (Huguenots) कहते थे, बादशाह के विरुद्ध सहायता दी और फ्रांस को भी अवसर न मिलने दिया कि वह मेरी स्टुअर्ट की सहायता कर सके।

स्पेन का राज्य नीदरलैण्ड में भी था; लेकिन वहां की प्रोटेस्टेण्ट प्रजा स्पेन के विरुद्ध हो गई थी और स्पेन से स्वतन्त्र होने की चेष्टा कर रही थी। इस पर एलिजाबेथ ने नीदरलैण्ड के विद्रोहियों को सन १५८५ ई० के पहले गुप्त रूप से रुपया और आदमियों द्वारा

सहायता पहुँचाई। इससे उसका प्रयोजन यह था कि प्रथम तो उस आपसी झगड़े से स्पेन की शक्ति कम हो जायगी, दूसरे स्पेन जब कि आपसी झगड़े को तय करने में लगा रहेगा, तो उसको इंग्लैण्ड पर आक्रमण करने का अवसर न मिल सकेगा।

स्काटलैण्ड में भी एलिज़ाबेथ ने फूट के बीज बो दिये और वहाँ के प्रोटैस्टेण्ट लोगों को सहायता पहुँचाई ताकि उत्तर की ओर से किसी प्रकार के आक्रमण का भय न रह जाय।

लेकिन जब इंग्लैण्ड शक्तिशाली हो गया और मेरी स्टुअर्ट की मृत्यु के बाद देश के अन्दर किसी प्रकार का भी भय नहीं रह गया, तो एलिजाबेथ ने स्पेन के बादशाह फिलिप से युद्ध छेड़ दिया और उससे इंग्लैण्ड के गौरव को उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया। अपने विवाह के प्रश्न को उसने राजनैतिक दृष्टिकोण से देखा। जब तक उसको स्पेन से भय रहा, तबतक तो वह फिलिप को आशा दिलाती रही कि वह उससे विवाह करेगी; लेकिन बाद मे उसे अँगूठा दिखा दिया। फिर उसने फ्रांस के दो राजकुमारों को इसी आशा-पाश में बाँध रक्खा कि वह उनसे विवाह करेगी और इस प्रकार फ्रांस को अपना सहायक और मित्र बनाये रक्खा। सारांश यह कि जब तक उसे स्पेन से भय रहा और देश में उसका शासन सुदृढ़ न था, तब तक उसने वहाँ से अपने विवाह का प्रस्ताव किया और बाद में फ्रांस से प्रस्ताव करके देश मे शान्ति स्थापित रक्खी।

इंग्लैण्ड और स्पेन—अपने शासन काल के आरम्भ में एलिज़बेथ ने स्पेन के बादशाह फिलिप द्वितीय के साथ कम-से-कम

दिखावटी रूप मे मित्रता का सम्बन्ध स्थिर रखने की चेष्टा की, क्योंकि उस समय फ्रांस स्काटलैण्ड की रानी मेरी को एलिजावेथ के विरुद्ध सहायता कर रहा था, जिसने कि फ्रांस के बादशाह के बड़े लड़के के साथ विवाह कर लिया था। स्पेन के बादशाह फिलिप ने भी एलिजावेथ की सहायता की क्योंकि उसको फ्रांस के बादशाह से ईर्ष्या और द्वेष था; लेकिन इंग्लैण्ड और स्पेन के मध्य बहुत काल तक मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थिर न रह सका। यद्यपि सन १५८८ ई० तक खुले तौर पर सम्बन्धविच्छेद न हुआ, मगर आगे अवस्था ऐसी उत्पन्न होती गई, जिससे उन दिनों मे स्पेन के साथ एलिजावेथ की तनातनी बढती ही गई। इस तनातनी और लड़ाई के कारण निम्नलिखित है:—

(१) एलिजावेथ प्रोटेस्टेण्ट धर्म की अनुयायी थी और स्पेन का बादशाह फिलिप द्वितीय कट्टर रोमन कैथोलिक था और महारानी एलिजावेथ और उसके देश इंग्लैण्ड को दुबारा कैथोलिक-धर्म मे लाना चाहता था। इसलिए उन दोनों मे परस्पर मतभेद था।

(२) फिलिप ने इग्लैण्ड के कैथोलिक लोगों को महारानी एलिजावेथ के विरुद्ध भड़काना आरम्भ किया और इंग्लैण्ड मे उनसे कई विद्रोह कराये। इससे शत्रुता और भी अधिक बढ़ गई।

(३) एलिजावेथ ने भी नीदरलैण्ड मे फिलिप के विरुद्ध प्रोटेस्टेण्ट लोगों को पर्याप्त सहायता पहुचाई, और यद्यपि उसकी सहायता अधिक सफल न हुई, लेकिन फिर भी अंग्रेजों की सहायता से नीदरलैण्ड वालों का साहस बहुत बढ़ गया। इससे स्पेन और इंग्लैण्ड का पारस्परिक सम्बन्ध और भी बिगड़ गया।

(४) एलिज़ाबेथ ने अपने शासन के आरम्भ में यह आशा दिलाई थी कि वह उससे विवाह कर लेगी और इससे फिलिप बहुत प्रसन्न हो गया था, लेकिन बाद में उसने विवाह करने से इन्कार कर दिया। इसलिये अब फिलिप अत्यन्त रुष्ट हो गया था।

(५) स्पेन और पुर्तगाल ने अमेरिका और अन्य देशों को विजय करके वहाँ अपने उपनिवेश स्थापित कर लिए थे और वे वहां की सम्पति से खूब धनी बन रहे थे। उनको देख कर इंग्लैण्ड के लोगों के हृदयों में भी नवीन उपनिवेश स्थापित करने की इच्छा उत्पन्न हुई।

(६) अंग्रेज नाविकों ने जिनमें ड्रेक (Drake) हाकिन्स (Hawkins), और रैले (Raleigh) आदि प्रमुख थे, स्पेन वालों का नाक में दम कर रक्खा था। जब स्पेन के जहाज अमेरिका से माल लाद कर वापिस आरहे होते थे, उस समय मार्ग में ही अंग्रेजी मल्लाह उनको लूट लेते थे और इस प्रकार उनके व्यापार में रुकावट उत्पन्न करते थे, स्पेन वाले इन अंग्रेज़ी समुद्री डाकुओं से जिन्हे वे "समुद्री कुत्ते" (Sea Dogs) कहते थे, बहुत तंग आ गये थे।

स्पेन का जंगी बेड़ा—(Spanish Armada) अतएव उपरोक्त कारण स्पेन और इंग्लैण्ड में लड़ाई छिड़ने के लिए पर्याप्त थे, और जब फिलिप ने स्काटलैण्ड की रानी मेरी की फाँसी का समाचार सुना, तो उसने तुरन्त ही इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करदी और उस पर आक्रमण करने के लिए अवर्णनीय जंगी बेड़ा तैयार करना आरम्भ कर दिया। उस बेड़े को वह अजेय बेड़ा (Invinci-

ble Armada) कहता था। उस बेड़े मे में १३० जहाज और ६०० वीर सिपाही थे। उस बेड़े का अफसर मेडीना सिडोनिया (Medina Sidonia) था। उसके विरुद्ध अंग्रेजी बेड़ा तैयार था जिसका कमाडर लार्ड हावर्ड (Lord Howard) था जो एक रोमन कैथोलिक था।

१९ जुलाई सन् १५८८ ई० को उस स्पेन के "अजेय बेड़ा" के पाल प्लाईमाउथ (Plymouth) के बन्दरगाह से दृष्टिगोचर हुए और अंग्रेजी बेड़े ने उसको प्लाईमाउथ से गुजरने दिया और जब स्पेन के बेड़े के सब जहाज गुजर गये तो हावर्ड ने अपने जहाज उनके पीछे छोड़ दिये, जिससे स्पेन के जहाजों को बहुत हानि पहुंची, क्योंकि जब स्पेन के जहाज अंग्रेजी जहाजों पर आक्रमण करते थे तो वे हल्के और तीव्र-गति वाले होने के कारण से उनके आक्रमण से बच जाते थे। अन्त मे स्पेन के बेड़े को बन्दगाह कैले (Calais) मे शरण लेनी पड़ी। अब अंग्रेजी बेड़े ने स्पेन के बेड़े को खुले समुद्र मे आने के लिये मजबूर किया। प्रकृति अंग्रेजों के पक्ष मे थी, क्योंकि उसी समय ऐसे जोर का तूफान आया जो स्पेन के बेड़े के जहाजों को उत्तर की ओर उड़ा लेगया। इससे उस "अजेय बेड़े" के बहुत से जहाज नष्ट हो गये और बहुत कम जहाज स्काटलैण्ड के उत्तरी किनारे का चक्कर काट कर स्पेन वापिस पहुचे।

स्पैनिश आर्मेडा की पराजय के कारण—स्पेन के उस "अजये बेड़े" की पराजय के कारण निम्नलिखित थे:—

(१) अंग्रेजी बेड़ा स्पेन के बेड़े की अपेक्षा बहुत बढ़ कर था। आर्मेडा में जहाज बड़े-बड़े और धीमी गति से चलने वाले थे। इसके विपरीत अंग्रेजी जहाज हल्के, छोटे और तीव्र गति वाले थे।

(२) स्पेन के जहाजी बेड़े में मल्लाह भी बहुत कम थे। और उस बेड़े के कमान्डर मेडीना सिडोनिया (Medina Sidonia) को वास्तव में स्थली युद्धों का अनुभव था। इसलिये वह अधिकतर जहाज़ों में स्थली युद्ध के सिपाही सवार कराके लाया था जो कि स्थल के युद्ध में ही काम आसकते थे। उसने प्रबन्ध यह सोचा था कि इन सिपाहियों को वह इँगलैण्ड में उतार देगा और वहाँ वे अंग्रेज़ों से स्थल का युद्ध करेंगे और उन्हें पराजित कर देंगे, लेकिन ड्रेक (Drake) जैसे अनुभवी और चतुर नाविकों के होते हुये स्पेन वालों का इँगलैण्ड में उतरना ही संकटपूर्ण और असम्भव हो गया।
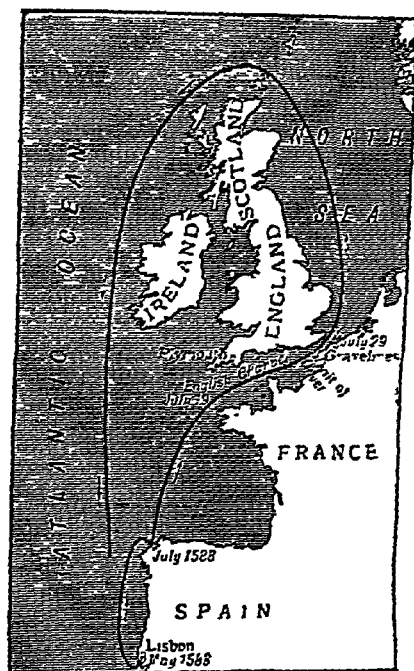
Spanish Armada

(३) समुद्री तूफ़ान ने आर्मेडा के विनाश को और भी पूर्ण कर दिया।

(४) आर्मेडा के प्रस्थान करते समय स्पेन के बादशाह फिलिप ने घोषणा की थी कि इस आक्रमण का उद्देश्य कैथोलिक धर्म की रक्षा करना है और इसलिये उसको आशा थी कि आर्मेडा के इंगलैण्ड के

किनारे पर पहुँचते ही इँगलैण्ड के कैथोलिक निवासी सब स्पेन वालों से आकर मिल जायेंगे। लेकिन फिलिप की आशा पूरी नहीं हुई। इँगलैण्ड में इस समय जातीयता का उत्साह उत्पन्न होगया था और इस आक्रमण का समाचार सुनते ही लोगों ने समस्त स्थानीय और धार्मिक मतभेद को भुला दिया और प्रत्येक धर्म और प्रत्येक सम्प्रदाय के लोग एक मन और एक प्राण होकर शत्रु का सामना करने के लिए तैयार होगये। उन्होंने इस समय देश की स्वतंत्रता और आत्म गौरव के सामने अपने प्राणों की भी कुछ पर्वाह नहीं की। यही इँगलैण्ड की विजय का मुख्य कारण था।

स्पेनिश आर्मेडा की पराजय के परिणाम—(१) उस समय स्पेन की युद्ध शक्ति और समुद्री शक्ति यूरोप में सबसे अधिक बलवती समझी जाती थी, लेकिन इस बेड़े केपराजय ने उसके प्रभाव और गौरव को धूल में मिला दिया। इससे स्पेन की शक्ति को बहुत धक्का लगा।

(२) इसके अतिरिक्त इस पराजय ने सर्वदा के लिये फ़ैसला कर दिया कि संसार की कोई विदेशी शक्ति इँगलैण्ड पर आक्रमण नहीं कर सकती और अगर वह ऐसा करेगी तो उसे अपार हानि के साथ पराभूत होना पड़ेगा।

(३) हालैण्ड अब तक स्पेन के ही आधीन था लेकिन हालैण्ड के निवासी सब प्रोटैस्टैंट थे, इसलिये वहाँ के लोग स्पेन के आधीन नहीं रहना चाहते थे। अब स्पेन का पराजय देखकर वे लोग बिल्कुल स्वतंत्र होगये। इससे स्पेन की शक्ति और भी कम होगई।

(४) स्पेन के "अजेय आर्मेडा" पर विजय प्राप्त करने से इंगलैण्ड की समुद्री युद्ध-शक्ति का सिक्का संसार के लोगों के हृदयों पर जम गया।

(५) स्पेन की शक्ति कमजोर होने से अंग्रेज़ों के लिये बाहर उपनिवेश स्थापित करना सरल होगया, क्योंकि एक बड़ी समुद्री रुकावट उनके मार्ग से दूर होगई। अब उन्होंने निर्भय होकर समुद्री व्यापार आरम्भ किया और निःशंक रूप से वे अपने उपनिवेश स्थापित करने लगे। क्योंकि इसके लिये एक शक्तिशाली समुद्री बेड़े की अत्यन्त आवश्यकता थी, इसलिये इंगलैण्ड ने अपने समुद्री बेड़े को पूर्वापेक्षा और भी शक्तिशाली बना लिया।

(६) एलिज़ाबेथ को जो भय रोमन कैथोलिक लोगों से था, वह स्पेन की शक्ति कमज़ोर हो जाने से बहुत कुछ दूर हो गया। कैथोलिक मत को इग्लैण्ड और यूरोप में दोनों जगह बहुत हानि पहुंची। अब इंग्लैण्ड में प्रोटैस्टेण्ट धर्म सुरक्षित हो गया और कैथोलिक धर्म के पुनरुत्थान की आशा सर्वदा के लिए जाती रही।

भारतवर्ष की वर्तमान दशा से तुलना—शतवर्षीय युद्ध का एक अच्छा प्रभाव हुआ था कि दोनों जगह अर्थात् फ्राँस और इंग्लैण्ड दोनों देशों में जातीयता की भावना सर्व प्रथम जागृत हुई थी जो कि उसके पहले कुछ इने गिने लोगों तक ही सीमिति थी और बाद में सर्व साधारण में फैल गई। इस जातीयता के उत्साह के कारण ही इंग्लैण्ड स्पेन का सामना कर सका।

इस जातीयता अथवा राष्ट्रीयता के उत्साह का अर्थ यह है कि

अब इंग्लैण्ड के लोगों में यह भाव उत्पन्न हो गया था कि हम लोग इंग्लैण्ड में ही उत्पन्न हुए हैं—यहीं अपना जीवन व्यतीत करेंगे और मरने के बाद भी यहीं की धूल मे मिल जायँगे। अतएव रोमन कैथोलिक हों अथवा प्रोटैस्टेण्ट हों, या किसी और मत को मानने वाले हों, लेकिन हम सब लोग एक हैं और हम सब लोग तभी प्रसन्न और सुखी रह सकते हैं, जब कि हमारे ऊपर हमारी जाति का ही शासन हो और कोई अन्य जाति हमारे ऊपर शासन न करने पाये।

अतएव जिस समय स्पेन के आर्मेडा ने इंग्लैण्ड पर आक्रमण किया तो धर्म का विचार लोगों के मन मे नहीं आया, किन्तु उन सबने यह विचार किया कि हम अंग्रेज पहले हैं, रोमन कैथोलिक अथवा प्रोटैस्टेण्ट बाद में, और स्पेन वाले अन्य जाति के लोग हैं, चाहे वे इंग्लैण्ड के एक सम्प्रदाय के सहधर्मी क्यों न हों, तो भी अन्य देशीय होने से उनका इंग्लैण्ड में राज्य नहीं होना चाहिए। इंग्लैण्ड में अंग्रेजों का ही शासन हो तभी हम प्रसन्न और सुखी रह सकते हैं। अतएव सबने मिलकर स्पेन का सामना किया और स्पेन को पराजित कर दिया।

हम भारतवासियों का यह गलत विचार है कि राष्ट्रीयता की भावना (Nationalism) के लिए आवश्यक है कि सब लोग एक ही धर्म को माननेवाले, एक भाषा-भाषी और एक ही जाति के हों। इस विचार से अधिक भ्रमपूर्ण विचार और कोई दूसरा नहीं हो सकता। इस उपरोक्त इंग्लैण्ड के इतिहास की घटना से आपको स्पष्ट विदित हो गया होगा कि राष्ट्रीयता के लिए एक धर्म का होना आवश्यक

नहीं। इंग्लैण्ड में दो मत हैं, फिर भी वहाँ राष्ट्रीयता विद्यमान है। इसी प्रकार से स्वीटजरलैण्ड (Switzerland) में दो मत हैं, तीन भाषायें प्रयोग में लाई जाती हैं, और दो जातियाँ हैं, लेकिन इस पर भी वहाँ के लोगों में राष्ट्रीयता की भावना है। इसी प्रकार संयुक्तराष्ट्र अमेरिका (U. S. A.) पर दृष्टिपात कीजिये। वहाँ पर कई विभिन्न जातियाँ जाकर आबाद हुई है और अब वे लोग अपने नये निवास स्थान को ही अपना देश समझते है। उनमें राष्ट्रीयता का भाव है, और अब वे एक राष्ट्र (Nation) बन गये है।

यह राष्ट्रीयता का भाव भारतवर्ष में अबतक नहीं है जिसका कि आरम्भ इंग्लैण्ड में लगभग तीन सौ वर्ष पहले हुआ था। इसके लिए एक जातीय होना, एक धर्म होना अथवा एक भाषा होना आवश्यक है। केवल यह आवश्यक है कि लोग अपने को हिन्दुस्तानी समझें और हिन्दू, मुसलमान या ईसाई बाद में। देश से सम्बन्ध रखने वाले प्रश्नों पर विचार करते हुए अपने धर्म अथवा भाषा और जाति को भूल जाना चाहिए। किन्तु इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि देश को इससे लाभ होगा अथवा हानि।

राष्ट्रीयता का भाव (Nationalism) कोई स्वाभाविक वस्तु नहीं है किन्तु वह जातियों में इस प्रकार के विचार और इस प्रकार की बातों से उत्पन्न किया जाता है। पहले वह कुछ लोगों तक ही सीमित रहता है और फिर वह जाति के प्रत्येक मनुष्य में फैल जाता है। जिस जाति में राष्ट्रीयता का भाव उत्पन्न हो जाता है, उस

जाति को कोई दूसरी जाति उन्नति करने से रोक नहीं सकती है। पहले लोगों मे राष्ट्रीयता (Nationalism) का भाव उत्पन्न होता है और फिर वह राष्ट्र या एक जाति (Nation) बन जाते हैं और उसके पश्चात् वह एक राज्य (State) अर्थात् स्वतन्त्र राष्ट्र बन जाते है। देश के नवयुकों को चाहिए कि इस राष्ट्रीयता के भाव को उत्पन्न करे और तीव्रगति से उसे बढ़ावें ताकि हमारा भी हमारे देश में वही सन्मान हो जाय जोकि अंग्रेजों का इंग्लैण्ड मे है।

दूसरा अध्याय

महारानी एलिज़ाबेथ का शासन काल (Continued)

नवीन देशों की खोज का युग

समुद्री यात्रा में उन्नति—मध्यकालीन युग में स्पेन और पुर्तगालवाले समुद्री शक्ति में आगे बढ़े हुए थे। अंग्रेज़ लोग व्यापार और समुद्री यात्रा में उन दिनों में उतने चतुर और योग्य नहीं थे, लेकिन जब सन् १४९२ ई० में कोलम्बस (Columbus) ने अमेरिका की खोज की और उस खोज के ६ वर्ष पश्चात् सन् १४९८ ई० में वास्को डि गामा (Vasco De Gama) ने उत्तमाशा अन्तरीप (Cape of Good Hope) का चक्कर लगाकर भारतवर्ष में आने का नवीन मार्ग ढूँढ निकाला, तो अंग्रेज़ों को भी समुद्री यात्रा करने और नवीन मार्गों की खोज करने की अभिलाषा उत्पन्न हुई।

सबसे पहले हेनरी सप्तम (Henry VII) ने जान केबट (John Cabot) नामी एक इटली के नाविक को जो कि ब्रिस्टल (Bristol) में रह रहा था, सन् १४९७ ई० में समुद्री यात्रा में अन्य देशों और नवीन मार्गों की खोज करने के लिए भेजा। उसने दो यात्रायें करके और उसके लड़के सिबेस्टियन (Sebastian) ने दो यात्रायें करके केप ब्रिटन द्वीप (Cape Breton Island) नोवा स्कोटिया (Nova Scottia), न्यू फाउण्ड लैण्ड (New-

found Land) तथा उत्तरी अमेरिका के उत्तरी किनारे का पता लगाया। इन खोजों के कारण से इस काल को नवीन खोजों का युग (Age of Discoveries) कहते हैं।
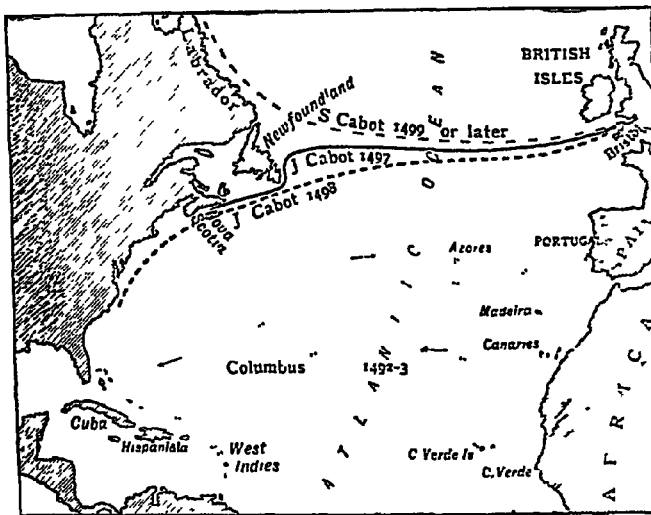
Early voyages of Discovery

हेनरी अष्टम के समय मे भी इनमे उन्नति हुई। उसने एक उत्तम समुद्री सेना रखने का विचार किया और कई जहाज बनवाये और अपनी मृत्यु के बाद सन् १५४८ ई० मे उसने ५३ जहाज छोड़े थे। सन् १५२८ ई० में विलियम हाकिन्स (William Hawkins) ने इंगलैण्ड और दक्षिणी अमेरिका के बीच में व्यापार आरम्भ कराया।

फिर महारानी मेरी के शासनकाल मे अंग्रेजी नाविकों ने उत्तर

AUSTRALIA
AFRICA
ARABIA
INDIA
SOUTH AMERICA
NORTH AMERICA
Drake's Voyage round the World 1577 80
Frobisher North West Passage 1576
Chancellor North East Passage 1553

पूर्व की ओर से भारतवर्ष मे पहुंचने का प्रयत्न किया। उनमे मे एक ह्यू विलोवी (Hugh Willoughby) और दूसरा रिचार्ड चांसलर (Richard Chancellor) था। लेकिन वर्फ के कारण उनकी यात्रा सफल न हो सकी। भारतवर्ष पहुंचने के स्थान मे वे रूस जा पहुंचे और वहाँ उन्होंने श्वेत सागर (White Sea) का पता लगा लिया और इस प्रकार रूस और इंगलैण्ड के मध्य मे व्यापार का मार्ग खुल गया।

एलिजावेथ के समय में समुद्री यात्रा में उन्नति—

एलिजावेथ का शासनकाल समुद्री यात्राओं के लिये सर्व शिरोमणि है। उसका मुख्य कारण यह था कि एलिजावेथ के समय मे स्पेनिश अमेरिका से वलपूर्वक व्यापार करने की इच्छा वहुत वलवती होगई थी। "समुद्री कुत्ते" (Sea Dogs) अर्थात् अंग्रेजी नाविक हाकिन्स (Hawkins) और ड्रेक (Drake) इत्यादि अपने जहाजों पर जाकर उन देशों से व्यापार करते थे और स्पेन के जहाजों को लूटते थे। इससे समुद्री यात्रा मे वहुत उन्नति हुई और महारानी एलिजावेथ की सहायता और परिश्रम से इंगलैण्ड का जहाजी वेड़ा भी वढ़ गया जिससे कि देश का गौरव भी वढ़ा। "अजेय आर्मेडा" की पराजय के पश्चात् तो इंगलैण्ड सबसे अधिक शक्तिशाली गिना जाने लगा।

एलिजावेथ के शासनकाल में कई नाविक ऐसे हुए जिन्होंने भूमंडलकी समुद्री यात्रा की। उनमे से निम्नलिखित वहुत प्रसिद्ध हैं:—

सर वाल्टर रैले—अंग्रेजी नाविकों में सर वाल्टर रैले
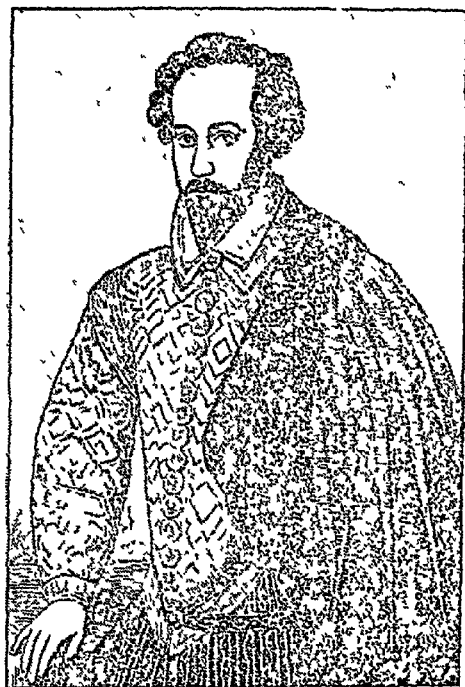
Sir Walter Raleigh

(Sir Walter Raleigh) का नाम सबसे अधिक प्रसिद्ध है। उसकी समस्त आयु आयरलैण्ड और स्पेन वालों के विरुद्ध युद्ध करने में व्यतीत हुई। वह पहला मनुष्य था जिसके हृदय में यह विचार उत्पन्न हुआ कि वह अमेरिका में अंग्रेज़ों का एक उपनिवेश स्थापित करे। अतएव सन १५८५ ई० में वह इस विचार को पूरा करने की इच्छा से अमेरिका की ओर प्रस्थान कर गया। वहाँ पहुँचकर उसने एक उपनिवेश स्थापित किया और उसका नाम इंग्लैण्ड की क्वारी (Virgin) महारानी एलिज़ाबेथ के नाम पर वर्जीनिया (Virginia)

रक्खा, लेकिन कुछ कारणों से वह वहाँ उपनिवेश भले प्रकार से स्थापित करने में असफल रहा। वह अमेरिका से तम्बाकू और आलू लाया और इंग्लैण्डवालों को उनके लाभ व प्रयोग बतलाये। वह महारानी एलिज़ाबेथ की मृत्यु के बाद तक जीवित रहा, मगर सन् १६१६ ई० में जेम्स प्रथम ने स्पेन के बादशाह को प्रसन्न करने के लिए उसका वध करा दिया।

Sir Francis Drake

सन् १४९७ ई० में केबट (Cabot) ने न्यू फाउण्डलैण्ड (New Found Land) की खोज की थी। गिलबर्ट (Gilbert) सन् १५८३ ई० में वहाँ पहुँचा और स्थायी रूप से उसने उस टापू पर अधिकार कर लिया।

सर फ्रांसिस ड्रेक—सर फ्रांसिस ड्रेक (Sir Francis

आयरलैण्ड की विजय—जब रोम के पोप ने इंगलैण्ड की महारानी एलिज़ावेथ को धर्म विरुद्ध काफ़िर प्रसिद्ध कर दिया,
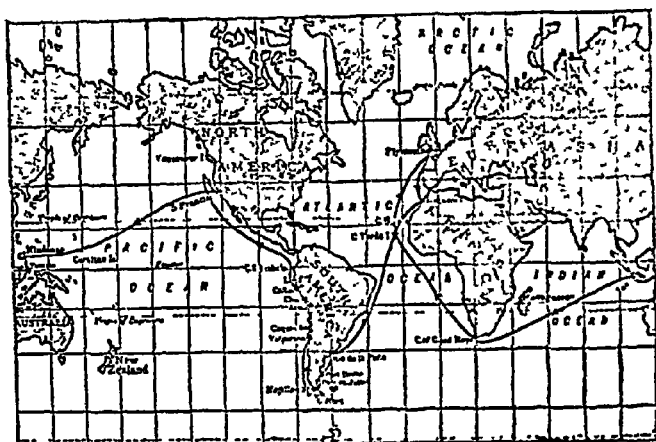
Early Voyages to the North West

उस समय आयरलैण्ड के कैथोलिक निवासियों ने अपने देश से अंग्रेजों को निकालने के लिये प्रयत्न करना अपना धार्मिक कर्त्तव्य समझा। अतएव सन् १५६५ ई० मे शाने ओ नील (Shane O' Neill) ने, जो प्रदेश अलस्टर के एक वंश का सरदार था, एलिज़ावेथ के विरुद्ध विद्रोह किया। एलिज़ावेथ ने अर्ल आफ़ एसैक्स (Earl of Essex) को आयरलैण्ड मे फिर से शान्ति स्थापित करने को प्रेषित किया, लेकिन उसको वहाँ सफलता प्राप्त नहीं हुई। उसके बाद एलिज़ावेथ ने लार्ड माउण्टजौय (Lord Mountjoy) को आयरलैण्ड भेजा। उसने आयरलैण्ड के विद्रोह को अच्छी तरह से दबा दिया, मगर उसको कड़ाई बहुत करनी पड़ी और उसका फल

यह हुआ कि अंग्रेज़ों के प्रति आयरलैण्ड वालों की घृणा और भ
वढ़ गई।

ग़रीबों का क़ानून (Poor Law)—धार्मिक मठों के नष्ट कर दिये जाने से देश में वेकारी वढ़ गई थी और भीख माँगने के क़ानून (Vagrancy Law) के अनुसार जोकि हेनरी अष्टम ने पास किया था, भीख माँगना स्वस्थ मनुष्य के लिये एक अपराध होगया था। अतएव उससे अवस्था और भी बिगड़ गई थी।

एडवर्ड षष्ठ के शासनकाल में एक क़ानून बनाया गया था जिसके अनुसार प्रत्येक गिरजाघर के क्षेत्र (Parish) में दो कलेक्टर नियुक्त हुए थे जिनका कि कर्तव्य यह था कि वे प्रत्येक कुछ हैसियत रखने वाले व्यक्ति से यह मालूम करें कि वह ग़रीबों की सहायता के लिये कितना धन निकाल सकता है, और फिर वे ग़रीब मनुष्यों को किसी काम में लगाते थे और उस एकत्रित किये हुये धन में से उन ग़रीबों को वेतन देते थे ताकि उनका निर्वाह हो सके।

इस क़ानून में यह कमी थी कि कुछ व्यक्ति वादा करके भी रुपया दान में नहीं देते थे। उनसे रुपया वसूल करने का कोई तरीक़ा नहीं था। अतएव सन १५६३ ई० में दूसरा क़ानून बनाया गया जिसके अनुसार उन मनुष्यों पर जोकि वादा करके रुपया नहीं देते थे, एक महसूल लगाकर रुपया वसूल किया जा सकता था, और उस महसूल को न देने की सज़ा जेलखाना थी।

लेकिन ये सब प्रयत्न निष्फल सिद्ध हुए और सन १६०१ ई० में एक दूसरा क़ानून बनाया गया जिसका कि नाम "ग़रीबों का क़ानून",

(Poor Law) था। उसके अनुसार प्रत्येक गिरजाघर के मुहाल (Parish) में एक अफ़सर नियुक्त किया गया जिसका नाम "ग़रीबों के कानून का निरीक्षक" (Overseer of Poor Law) था। उसका कर्तव्य यह था कि प्रत्येक देशवासी पर महसूल लगाकर गरीबों की सहायता के लिये एक रकम इकट्ठा करे, लेकिन उस रुपये से आर्थिक सहायता केवल उनको ही दी जावे जोकि अपाहिज या अंगभंग हों और काम न कर सकते हों। जो लोग काम कर सकते हों उनके लिये काम तलाश किया जावे और उस रुपये से गरीबों के लड़कों को कलाकौशल का काम सिखलाये। और जो लोग कि स्वस्थ होते हुए काम नहीं करते थे, उनको सजा दी जाती थी। यह कानून सन १८३४ ई० तक जारी रहा।

एलिजावेथ के समय में पार्लियामेण्ट के कार्य— सन १५५९ ई० मे पार्लियामेण्ट ने "प्रधानता का कानून" (Act of Supremacy) पास किया और उसी वर्ष पार्लियामेण्ट ने "एकरूपता का कानून" (Act of Uniformity) भी पास किया। सन १५६२ ई० मे पोप ने रोमन कैथोलिक लोगों को उन गिरजाघरों में जाने से रोका। पार्लियामेण्ट ने उसके जवाब मे हाउस आफ कामन्स के मेम्बरों को "प्रधानता की शपथ" (Oath of Supremacy) लेने पर मजबूर किया।

सन १५९३ ई० मे पार्लियामेण्ट ने रोमन कैथोलिक और प्योरीटन दोनों के विरुद्ध सख्त कानून पास कराये। महारानी एलिजावेथ की मृत्यु के दो वर्ष पहले अर्थात् सन् १६०१ ई० मे

से विदा हुई। उसका शासन १५५८ से १६०३ ई० तक रहा। उसका शासन काल अंग्रेजी इतिहास मे "सुवर्ण काल" (Golden Age) के नाम से प्रसिद्ध किया जाता है। जिस समय वह सिंहासन पर आरूढ़ हुई, उस समय उसको बहुत से आन्तरिक झगड़े और विदेशी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन धीरे-धीरे उसने सब कठिनाइयाँ पार कर लीं।

सबसे पहली कठिनाई धार्मिक मतभेद की थी जिससे देश में बहुत सी बेचैनी और अशान्ति फैली हुई थी। उसने इन धार्मिक झगड़ों को सुलझाने के लिये मध्यम मार्ग खोजकर अंग्रेजी गिरजा (Anglican Church) स्थापित किया और इसमें उसको पूरी सफलता प्राप्त हुई।

दूसरे, उसने गरीबों की सहायता के लिए सन् १६०१ ई० में कुए दीन हितकारी क़ानून (Poor Law) जारी किया जिसके अनुसार गरीबों की सहायता की जाती थी। इससे बेकारी कम हुई।

तीसरे, विदेशी नीति मे भी उसको बहुत-कुछ सफलता प्राप्त हुई और देश को किसी शत्रु का भय नहीं रहा। स्काटलैण्ड से प्रत्येक प्रकार का लेनदेन आरम्भ हुआ और आयरलैण्ड पूरे तौर पर अंग्रेजों के अधिकार मे आ गया। फ्रांस और स्पेन इंगलैण्ड का कुछ भी नहीं बिगाड़ सके। स्पेनवालों के "अजेय आर्मेडा" की पराजय से इंगलैण्ड का प्रभाव और गौरव और भी बढ़ गया।

एलिज़ाबेथ के समय में देश की सम्पत्ति और व्यापार मे बहुत-कुछ उन्नति हुई। लोगों को समुद्री यात्रा की रुचि हुई। नाविकों ने

समुद्रों में यात्रायें करके नवीन मार्गों की खोज की और नवीन उपनिवेश स्थापित किये। इनमें विशेष वर्णन योग्य ईस्ट इण्डिया कम्पनी थी।

सर्वत्र शन्ति स्थापित रहने के कारण एलिजावेथ के शासनकाल में विद्या की वहुत उन्नति हुई। जितनी उन्नति अंग्रेज़ी साहित्य की इस काल में हुई, उतनी और कभी नहीं हुई। इंग्लैण्ड का सबसे अधिक प्रसिद्ध नाटककार शेक्सपियर (Shakespeare) इसी काल में हुआ था। दूसरे प्रसिद्ध नाटककार मार्लो और वेनजान्सन इसी शासनकाल में हुये। फ्रांसिस वेकन (Francis Bacon) एक प्रसिद्ध निवन्ध लेखक भी इसी शासन काल में हुआ है। रिचार्ड हुकर (Richard Hooker) धार्मिक साहित्य का बड़ा प्रसिद्ध विद्वान और लेखक हुआ है, वह भी इसी काल में था।
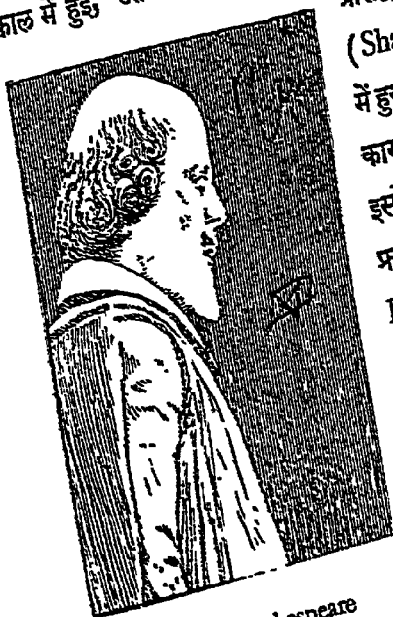
William Shakespeare

साथ ही साथ प्रशंसा की बात यह है कि एलिजावेथ ने इंगलैंड की प्रजा और पार्लियामेंट को कभी अप्रसन्न नहीं किया और अपने शासनकाल के अन्तिम भाग में जबकि झगड़ा आरम्भ हुआ था, उसने बड़ी चतुरता से काम लिया।

सारांश यह है कि उसके समय में शान्ति रहते हुये सब प्रकार की उन्नति हुई और इंगलैण्ड यूरोप मे एक शक्तिशाली देश होकर व्यापार, कलाकौशल और समुद्री शक्ति मे सबसे बड़ा बन गया था। इन सब कारणों से एलिज़ाबेथ का शासनकाल एक "स्वर्ण युग" (Golden Age) कहलाता है।

अकबर और एलिज़ाबेथ की तुलना— यह एक विचित्र दैवयोग की बात है कि जिस समय इंगलैण्ड मे एलिज़ाबेथ शासन कर रही थी, लगभग उसी पूरे काल में अकबर भारतवर्ष मे शासन कर रहा था। उन दोनों मे परस्पर बहुत कुछ समानता पाई जाती है :—

(१) दोनों शक्तिशाली शासक थे जिन्होंने पर्याप्तकाल तक शासन किया।

(२) दोनों स्वतन्त्र विचार के थे और धार्मिक पक्षपात दोनों मे नहीं था। दोनों के समय मे धर्म मे सबको पूरी स्वतन्त्रता थी।

(३) दोनों के समय मे ज्ञान और कला कौशल की बहुत उन्नति हुई।

(४) दोनों की यही इच्छा थी कि आपस के झगड़े दूर हों और सब मतों के लोग मिलजुल कर रहे, ताकि राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न हो। अकबर ने इसका बीज बोया लेकिन बाद के बादशाहों ने उस नीति को बदल दिया जिससे वह जड़ मजबूत न हो सकी। देश के नवयुवकों को चाहिए कि उसी नीति को फिर स्वीकार करें ताकि देश की उन्नति हो।

ग्यारहवां अध्याय

ट्यूडर राजाओं का स्वच्छन्द शासन

(Tudor Despotism)

निम्न लिखित कारणों ने ट्यूडर राजाओं को अपना स्वच्छन्द शासन स्थापित करने में सहायता दी :—

(१) जमींदारों की शक्ति का विनाश—सोलहवीं शताब्दी से पूर्व राजकीय शक्ति को कम करने का काम अधिकतर ज़मींदारों ने किया, लेकिन गुलाबों के युद्ध (War of Roses) में बहुत से जमीदारों के कुल नष्ट होगये, और इसलिए अब राजकीय शक्ति रोकने का कोई साधन नहीं रहा। नये ज़मींदार जो धार्मिक मठों की जायदादों को प्राप्त करके अमीर बने थे, अथवा जो व्यापार में उन्नति करके अमीर हुए थे, वे सब बादशाह के पक्षपाती थे। इसलिए बजाय इसके कि वे बादशाह की शक्ति को कम करते, वे सर्वदा राजकीय शक्ति और अधिकारों के समर्थक रहते थे।

(२) गोला बारूद का आविष्कार—गोला बारूद के आविष्कार से युद्ध की प्रणाली मे बहुत परिवर्तन हो गया। तोपखानों के सामने ज़मीदारों के क़िले व्यर्थ हो गये और बढ़िया बन्दूकों के प्रचलित हो जाने से तलवार और तीरों के युद्ध का अन्त होगया। मध्यकालीन वीरों का युद्ध चातुर्य और रणकौशल अब अधिक उप-

योगी नहीं रहा। इस परिवर्तन से राजकीय शक्ति में वृद्धि हुई, क्योंकि बादशाह के अतिरिक्त और कोई तोपखाना नहीं रख सकता था। इसके अतिरिक्त कोर्ट आफ स्टार चेम्बर (Court of Star Chamber) और वर्दी आदि के कानून (Statute of Livery And Maintenance) के द्वारा भी उन्होंने जमींदारों की शक्ति को कम कर दिया।

(३) गिरजा और पादरियों के प्रभाव का ह्रास—राजकीय शक्ति पर गिरजा और पादरियों का भी बहुत कुछ प्रभाव रहता था लेकिन धार्मिक सुधार की लहर फैलने के कारण से गिरजा की दशा में महान् परिवर्तन उत्पन्न हो गया। इंगलैण्ड का बादशाह स्वयं अंग्रेजी चर्च का प्रधान हो गया और चर्च के अधिकारियों की नियुक्ति भी स्वयं उसी के हाथ में आगई। इस से चर्च का भी अब ट्यूडर बादशाहों पर कुछ दबाव नहीं रहा।

(४) लार्ड सभा के सदस्यों की निर्बलता—हाउस आफ लार्ड्स में अब तक पर्याप्त संख्या धार्मिक मठों के महन्तों (पादरियों) की होती थी। इसलिये मठों के टूटने से बहुत से स्थान लार्ड सभा में रिक्त हो गये। ट्यूडर बादशाहों ने उन स्थानों पर नये जमींदारों को, जो मठों की जायदाद को खरीदने से जमींदार हो गये थे, नियुक्त कर दिया। ये नये मेम्बर हमेशा बादशाह के पक्षपाती रहते थे। इस प्रकार हाउस आफ लार्ड्स में बादशाह के पक्षवाले जमींदारों की पर्याप्त संख्या हो गई थी।

(५) कामन सभा के सदस्यों की निर्बलता—हाउस आफ़ कामन्स (House of Commons) भी निर्बल था - प्रथम

तो इसलिये कि छोटे-छोटे देहातों को भी हाउस आफ़ कामन्स के लिये प्रतिनिधि निर्वाचित करने का अधिकार दे दिया गया था। ऐसे छोटे स्थानों के प्रतिनिधि साधारणतौर से अशिक्षित होते थे और वे प्रत्येक अवसर पर बादशाह के पक्ष में ही सम्मति देते थे।

दूसरे, पार्लियामेंट के अधिवेशन ही बहुत कम होते थे। इसलिये सदस्यों को परस्पर मिलने, बातचीत करने और बादशाह के विरुद्ध षड्यंत्र करने का अवसर बहुत कम मिलता था।

तीसरे, पार्लियामेंट का सबसे बड़ा काम नये महसूलों के लिये स्वीकृति देना था। ट्यूडर बादशाहों ने चर्च आदि की जायदाद बेचकर और ऋण (Loan) तथा दान (Benevolence) के रूप में प्रजा से बहुत सा रुपया लेकर राजकीय कोष में इतना धन एकत्रित कर लिया था कि उन्हें इस प्रयोजन से पार्लियामेण्ट को शीघ्र शीघ्र बुलाने की कोई आवश्यकता ही कभी उपस्थित नहीं हुई थी।

चौथे, इस काल के हाउस आफ़ कामन्स के सभापति को बड़े अधिकार प्राप्त थे। वह जिस प्रस्ताव को चाहे, पास होने से रोक सकता था। बादशाह ही उसको मनोनीत करता था, और इसी के द्वारा बादशाह पार्लियामेण्ट से जो क़ानून भी चाहता था, स्वीकार करा लेता था।

पाँचवें, उस समय में कोई मध्यम श्रेणी (Middle Class) नहीं थी, जो कि हाउस आफ़ कामन्स में बादशाह के विरुद्ध आवाज़ उठाती। हाउस आफ़ कामन्स का इतना निर्बल होना ही एक मुख्य

बात थी, जिसके कारण से ट्यूडर बादशाह अपना स्वच्छन्द शासन स्थापित कर सके।

(६) व्यापारियों का बादशाह को सहायता देना—गुलाबों के युद्ध (War of Roses) में देश की बहुत खराब दशा हो गई थी और कुप्रबन्ध होने के कारण से व्यापार को बहुत हानि उठानी पड़ी थी। व्यापारी लोग इसीलिए वास्तव मे यह चाहते थे कि देश मे एक शक्तिशाली स्वच्छन्द शासन स्थापित हो ताकि देशभर मे शान्ति रहे और व्यापार मे उन्नति हो। इसलिए उन्होंने बादशाह को स्वच्छन्द शासन (Despotic Government) स्थापित करने में सहायता दी।

(७) साधारण जनता की ट्यूडर बादशाहों को सहायता—साधारण लोगों ने लंकास्ट्रियन (Lancastrian) काल मे बहुत कष्ट उठाये थे और इसीलिए अब उनकी यह हार्दिक इच्छा थी कि एक शक्तिशाली स्वच्छन्द शासन स्थापित हो ताकि कोई किसीपर अत्याचार न कर सके। ट्यूडर बादशाहों ने एक शक्तिशाली शासन स्थापित किया था और उसमें अमीर लोगों को भी क़ानून के अनुसार ही चलने पर बाध्य किया था। अतएव साधारण लोग, जो यही चाहते थे बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने भी ट्यूडर बादशाहों को स्वच्छन्द शासन स्थापित करने मे सहायता दी, ताकि उनको अमीरों के अत्याचार रोकने और देश मे सुख-शान्ति स्थापित करने मे सहायता मिले।

(८) ट्यूडर बादशाहों की नीति—ट्यूडर बादशाहों की कार्यनीति बहुत चतुरतापूर्ण थी। वे योग्य शासक थे और कभी भी पार्लियामेण्ट से झगड़ा मोल नहीं लेते थे। शासन के सारे कार्य ट्यूडर बादशाह स्वयं अपने हाथ में रखते थे, मगर यह प्रगट नहीं होने देते थे कि पार्लियामेण्ट के अधिकारों में उनके द्वारा हस्ताक्षेप किया जा रहा है। ट्यूडर बादशाहों ने दानभेंट (Bevevolences) और ऋणों (Loans) के रूप में इतना रुपया एकत्रित कर लिया था कि उन्हें इस धन के प्रयोजन के लिए पार्लियामेण्ट को शीघ्र-शीघ्र बुलाने की अवश्यकता ही न पड़ती थी।

ट्यूडर बादशाहों ने ज़मींदारों की शक्ति कम होने, गिरजा की शक्ति मिट जाने, पार्लियामेण्ट की शक्ति कम हो जाने और व्यापारी वर्ग तथा साधारण जनता की सहायता और अपनी कुशलतापूर्ण कार्य नीति के कारण से अपना स्वच्छन्द शासन स्थापित किया। ट्यूडर बादशाहों के समय में लोग अपने अधिकारों को नहीं समझते थे और यही कारण है कि ट्यूडर बादशाहों और पार्लियामेण्ट में धर्म के सम्बन्ध में कभी कोई झगड़ा नहीं हुआ। धर्म में जो भी परिवर्तन बादशाह ने किया, पार्लियामेण्ट ने उस परिवर्तन के करने में बादशाह को सहायता दी और इसलिए धर्म के विषय में बादशाहों और पार्लियामेण्ट के मध्य कभी कोई झगड़ा नहीं हुआ।

दूसरे, यह कि ट्यूडर बादशाहों ने कभी इस बात का दावा नहीं किया कि वे ईश्वरीयशक्ति या अधिकार (Divine Power or Divine Right) रखते हैं। वे सर्वज्ञ बुद्धिमत्ता

से कार्य करते रहे; लेकिन ट्यूडर बादशाहों के समय में देश में जो सुख-शांति रही उसका परिणाम यह हुआ कि पार्लियामेण्ट के मेम्बर और अन्य लोग भी अपने-अपने अधिकारों को समझने लगे और अपनी शक्ति को प्रकट करने लगे। इस प्रकार शक्ति का प्रदर्शन सन् १६०१ ई० में महारानी एलिज़ाबेथ के शासनकाल के अन्तिम भाग में लोगों द्वारा किया जाने लगा था। महारानी ने अपने खुशामदी लोगों को कई वस्तुओं के व्यापार के ठेके (Monopolies) दे दिये थे। इस प्रकार जब वस्तुओं का मूल्य बढ़ गया, तो पार्लियामेण्ट ने ठेकों का विरोध किया, क्योंकि महारानी एलिज़ाबेथ पार्लियामेण्ट से बिगाड़ना नहीं चाहती थी, इसलिए उसने वह ठेके सब तोड़ दिये।

बारहवां अध्याय

ट्यूडर काल का रहन-सहन और राज्य की दशा

वस्त्रपरिधान—ट्यूडर काल में लोगों के वस्त्र-परिधान (पोशाक) में बहुत परिवर्तन हो रहा था। छोटी कमोज़ और बिना आस्तीनों के लबादे उच्च श्रेणी के लोगों में पहने जाते थे। लोग डाढ़ी रखते थे और तंबाकू पीने की रीति सर्व-साधारण में प्रचलित हो गई थी। एलिजा-बेथ के समय में स्त्रियाँ बड़े-बड़े हलके पहनती थीं, जिनको फारंगील कहते थे। इनके कारण से पोशाक कमर पर से खड़ी रहती थी। यह फ़ैशन तो उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक प्रचलित रहा। बालों की टोपी, दस्ताने और पंखे भी फ़ैशन में

Nobleman & Lady

गिने जाते थे। इस काल में स्त्री-पुरुष दोनों ही लैस के फीते बांधते थे।

रहन-सहन का ढंग—इस काल की रहने की प्रणाली में उन्नति होने पर भी सोलहवी शताब्दी के लोगों के घरों में आराम

Elizebeth's coach

बहुत कम था। यात्रायें भयावह और कष्टदायिनी होती थीं। सड़कें खराब थीं, इसलिए यात्रा मे बहुत कष्ट उठाने पड़ते थे। स्वास्थ्य के नियमों से लोग परिचित नही थे और शहर तथा लोगों के घर स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत ही अनुपयोगी थे।

ट्यूडर काल में स्काटलैन्ड की दशा।

(Scottish Affairs during Tudor Period)

इंगलैण्ड और स्काटलैण्ड में आपस में पहले से ही शत्रुता चली आ रही थी। इन दोनों देशों में शान्ति स्थापित करने के लिये हेनरी सप्तम ने अपनी लड़की मारग्रेट का विवाह स्काटलैण्ड के बादशाह

जेम्स चतुर्थ से कर दिया; लेकिन यह मित्रता केवल दस वर्ष तक ही रह सकी।

हेनरी अष्टम ने सन् १५१० ई० में पवित्र संघ (Holy League) में शामिल होकर स्पेन का साथ दिया इस प्रयोजन से कि वह फ्रांस से अपने खोये हुये प्रदेश छीन सकेगा और जबकि सन् १५१३ ई० में फ्रांस को स्पर्स के युद्ध (Battle of Spurs) में पराजित भी किया, तो फ्रांसीसियों ने स्काटलैण्ड के बादशाह जेम्स चतुर्थ को इंग्लैण्ड पर आक्रमण करने को प्रोत्साहित किया, मगर हेनरी की अनुपस्थिति में भी फ्लाडिन फील्ड (Flodden Field) के स्थान पर स्काटलैण्ड की सेना को अँग्रेजी सेना ने पराजित कर दिया और जेम्स उसी युद्ध में मारा गया। फिर महारानी मारग्रेट के कहने से हेनरी ने स्काटलैंड से सन्धि करली।

इसके बाद फ्रांस और स्काटलैण्ड में परस्पर पर्याप्त समय तक मेल-जोल रहा; लेकिन जब जेम्स पंचम बड़ा हुआ, तो उसने फ्रांस की एक राजकुमारी से विवाह किया और उसके मरने पर फ्रांस की दूसरी राजकुमारी से विवाह कर लिया। इससे फ्रांस से तो स्काटलैंड की मित्रता फिर अधिक होगई; लेकिन इंग्लैण्ड से शत्रुता हो गई। फिर उसने इंग्लैण्ड पर पश्चिम की ओर से सन् १५४२ ई० में आक्रमण कर दिया, लेकिन अंग्रेज़ी सेना ने स्काटलैण्ड की सेना को फिर साल्वे मास (Solway Moss) के स्थान पर पराजित कर दिया। इस पराजय से जेम्स पंचम को इतना शोक हुआ कि वह थोड़े ही दिन बाद संसार से विदा होगया।

सामर्सेट के समय में स्काटलैन्ड से युद्ध—जेम्स पंचम के पश्चात् उसकी नाबालिग लड़की मेरी स्काटलैण्ड की रानी हुई और एडवर्ड के संरक्षक सामर्सेट (Duke of Somerset) की यह इच्छा थी कि स्काटलैण्ड की रानी मेरी का विवाह इंग्लैण्ड के राजा एडवर्ड षष्ठ के साथ हो जावे, ताकि स्काटलैण्ड भी प्रोटैस्टेण्ट हो जावे; लेकिन इस पर स्काटलैण्ड के लोग तैयार नहीं हुए। इसलिए सामर्सेट ने स्काटलैण्ड पर आक्रमण किया, और (Pinkie) के स्थान पर सन् १५४७ ई० में स्काटलैण्ड वालों को पराजित किया, लेकिन उन्होंने मेरी को इसी बीच मे फ्रांस में रहने के लिये भेज दिया था, जहाँ कि उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई और वहीं सन् १५५८ ई० में उसका विवाह राजकुमार फ्रांसिस द्वितीय (Francis II) के साथ हो गया।

एलिजाबेथ के समय में स्काटलैण्ड मे धार्मिक सुधारों का प्रचार कालविन (Calvin) के शिष्य जान नौक्स (John Knox) ने किया था। यह धार्मिक सुधार बादशाह की ओर से नहीं हुआ था, किन्तु लोगों ने स्वयं गिरजा मे दोष देखकर इस धार्मिक सुधार करने का प्रयत्न किया था। महारानी मेरी की माता ने उसको दबाने की पूरी चेष्टा की और फिर मेरी के पति फ्रांस के बादशाह फ्रांसिस द्वितीय ने उस धार्मिक सुधार (Reformation) की लहर को दबाने के लिये फ्रांस से सेना भेजी। एलिजाबेथ ने स्काटलैण्ड के निवासियों के कहने पर एक अंग्रेज़ी सेना उनकी सहायता के लिये भेजी। तब फ्राँसीसी सेना को उससे लीथ (Leith) के युद्ध में पराजित होना पड़ा। फिर सन् १५६० ई० में एडिनबरा (Edinborough) की

सन्धि के अनुसार फ्रांसीसियों को स्काटलैण्ड से वापिस जाना पड़ा। मेरी की माता की इसी बीच में मृत्यु होगई। इस पर अंग्रेजी सेना ने लार्डों की एक कौंसिल नियुक्त करके उसके हाथ में स्काटलैण्ड के शासन को सौंप दिया और सेना वापिस चली आई। इस प्रकार स्काटलैण्ड वाले एलिजाबेथ के मित्र बन गये और अब वहाँ (स्काटलैण्ड में) धार्मिक सुधार के हो जाने से फ्रांस वाले वहाँ के लोगों को भड़का कर इंग्लैण्ड पर आक्रमण नहीं करा सकते थे।

ट्यूडर काल में आयरलैण्ड की दशा।

(Irish Affairs during Tudor Period)

आयरलैण्ड की ओर से सर्वदा इंग्लैण्ड को भय लगा रहता था। अतएव इस भय को दूर करने के लिए ट्यूडर शासकों ने आयरलैण्ड को अपने राज्य में मिलाने की ठानली। सन १४९५ ई० में हेनरी सप्तम ने सर एडवर्डपौयनिंग (Edward Poyning) को आयरलैण्ड की प्रजा को दबाने के लिए भेजा। उन्होंने ड्रौगहेडा (Drogheda) के स्थान पर पार्लियामेण्ट का अधिवेशन करके एक क़ानून पास कराया कि वे समस्त क़ानून, जो इंग्लैण्ड में पास हों, आयरलैण्ड में भी जारी होंगे और आयरिश पार्लियामेण्ट अंग्रेजी सरकार की स्वीकृति के बिना कोई क़ानून तैयार नहीं कर सकती थी। इस क़ानून का नाम "पौयनिंग का क़ानून (Poynings' Law) है। इस प्रकार हेनरी ने वहीं के अमीरों के द्वारा राज्य किया।

हेनरी अष्टम के समय में उन अमीरों की शक्ति बहुत बढ़गई थी।

सन् १५३५ ई० में उन्होंने एक विद्रोह किया और हेनरी ने उनकी शक्ति को नष्ट करना चाहा; लेकिन फिर बाद के सालों मे हेनरी ने उन अमीरों को रिश्वत देकर और उपाधियाँ वितरण करके जमीनों को उनमें विभाजित करके उनको अपनी ओर मिला लिया और जब इस तरह से हेनरी की शक्ति बढ गई, तो उसने लार्ड आफ आयरलैण्ड (Lord of Ireland) के स्थान पर जो अब तक इंग्लैण्ड के समस्त राजाओं की उपाधि थी, अपने लिए आयरलैण्ड का राजा (King of Ireland) का पद धारण कर लिया, जिससे यह प्रकट होता था कि उसका प्रभाव आयरलैण्ड पर अधिक हो गया है।

एडवर्ड षष्ट और मेरी के शासनकाल में भी आयरलैण्डवालों पर सख्ती ही होती रही और देश मे अशान्ति ही रही। सन १५५८ ई० मे महारानी एलिजाबेथ के समय में दो प्रान्तों मे जिनके नाम किंग्स काउंटी (Kings county) और क्वीन्स काउंटी (Queens' County)थे, उपनिवेश बसाने का प्रयत्न किया गया। वहां से आयरलैण्ड वाले निकाल दियेगये और उनके स्थानपर अंग्रेज आबाद किये गये। इससे आयरलैण्ड वालों के हृदयों मे अंग्रेजों के प्रति घृणा के भाव उत्पन्न होगये और सन १५७६ ई० मे मन्स्टर (Munster) के विद्रोह को जिस निर्दयता से दबाया गया, उससे दोनों देशों मे शत्रुता और भी बढ़ गई। अतएव आयरलैण्ड, इंग्लैण्ड के अधिकार में तो आगया, लेकिन आपस में दोनों मे इतना द्वेप हो गया कि प्रजा मे निरन्तर ३०० वर्ष तक जबतक कि आयरलैण्ड को स्वतन्त्रता न मिली, अविश्वास और अशान्ति बनी रही।

ट्यूडर काल में स्पेन की दशा।

(Spanish Affairs during Tudor Period)

मध्य काल में स्पेन एक शक्तिशाली साम्राज्य था। हेनरी सप्तम ने विवाह का सम्बन्ध स्थापित करके राजनैतिक सम्बन्ध को दृढ़ कर दिया। उसने सन् १५०१ ई० में अपने बड़े लड़के आर्थर का विवाह स्पेन के बादशाह फर्डीनैंड (Ferdinand) की लड़की कैथेराइन (Catherine) से जो कि स्पेन की राजकुमारी थी, कर दिया और आर्थर के मरने पर कैथेराइन का दूसरा विवाह अपने दूसरे लड़के हेनरी अष्टम से कर दिया।

हेनरी अष्टम ने अपने शासनकाल के प्रारम्भिक भाग में हेनरी सप्तम की नीति का ही पालन किया और स्पेन का साथ दिया और सन् १५१२ ई० में पवित्र संघ (Holy League) में शामिल हो गया; लेकिन कुछ समय के बाद उससे कुछ लाभ न देखकर उसने पवित्र संघ से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। उसके बाद उसने वूल्ज़े (Wolsey) के कहने से शक्ति संतुलन (Balance of Power) की नीति का समर्थन करना आरम्भ किया।

फर्डीनैण्ड के मरने पर स्पेन का बादशाह चार्ल्स पंचम हो गया और जब उसमें और फ्रांस के बादशाह फ्रांसिस में सन् १५२१ ई० में युद्ध छिड़ गया, तो प्रथम तो हेनरी ने स्पेन के बादशाह चार्ल्स पंचम का साथ दिया, लेकिन जब उसने देखा कि उससे चार्ल्स पंचम की शक्ति बहुत बढ़ गई और फ्रांस की शक्ति कम हो गई, तो उसने

सन १५२७ ई० में चार्ल्स का साथ छोड़कर फ्रांस से सन्धि करली, ताकि चार्ल्स की शक्ति अधिक न बढ़ने पाये।

इसके बाद स्पेन और इंग्लैण्ड मे मतभेद दिन प्रति दिन बढ़ता ही गया, क्योंकि स्पेन पक्का रोमन कैथोलिक था और इंगलैण्ड में दिन प्रति दिन धार्मिक सुधार (Reformation) होता जा रहा था। महारानी मेरी ने, जो कि स्वयं कट्टर रोमन कैथोलिक थी, स्पेन के बादशाह फिलिप द्वितीय से अपना विवाह करके अपनी शक्ति को बढ़ाना चाहा। पार्लियामेण्ट ने उस विवाह की इस शर्त पर आज्ञा दे दी कि कभी भी स्पेन और इंगलैण्ड दोनों का एक ही शासक न हो सकेगा और दूसरे स्पेन की लड़ाइयों में इंगलैण्ड अनुचित रूप में कभी सम्मिलित न होगा; लेकिन यह विवाह सफल सिद्ध नहीं हुआ। न तो फिलिप इंग्लैण्ड मे आकर रहा ही और न उनकी कोई सन्तान ही रही।

उसके पश्चात महारानी एलिजाबेथ और स्पेन के सम्बन्ध के विषय में एलिजाबेथ के वर्णन में पर्याप्त दिया जा चुका है। वहाँ पर स्पेन से युद्ध के कारण, घटनायें, आर्मेडा की पराजय के कारण और परिणाम सब पूर्णरूप से दिये जा चुके है।

ट्यूडर काल में धार्मिक दशा

(Religious Affairs during Tuder Period)

यूरोप मे सोलहवीं शताब्दी में एक बड़ा आन्दोलन आरम्भ होगया जो धार्मिक सुधार (Reformation) के नाम से प्रसिद्ध

है। इससे यूरोप दो पृथक्-पृथक् धार्मिक सम्प्रदायों में विभाजित होगया—एक तो वह जो रोम के पोप का समर्थक था और इसीलिए रोमन कैथोलिक कहलाया; और दूसरा वह जिसने पोप का विरोध (Protest) किया, इसलिये प्रोटैस्टेंट (Protestant) कहलाया इस धार्मिक सुधार के दो पक्ष हैं—प्रथम यह कि रोम के पोप को गिरजा का सर्वोच्च अध्यक्ष न मानना और दूसरे उसके सिद्धान्तों का विरोध करना।

हेनरी अष्टम के समय में आन्तरिक झगड़े और व्यक्तिगत मामले के कारण से केवल पहली प्रकार का धार्मिक सुधार हुआ था, अर्थात् उसने रोम के पोप से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया था और स्वयं गिरजा का अध्यक्ष बन गया था, लेकिन उसने धर्म के सिद्धान्तों में कोई परिवर्तन नहीं किया था।

एडवर्ड षष्ठ के समय में इन सिद्धान्तों में भी परिवर्त्तन आरम्भ हुआ। उसने हेनरी अष्टम के समय का ६ धाराओं का क़ानून (Statute of six Articles) जिसका प्रयोजन प्राचीन धार्मिक सिद्धान्त स्थिर रखना था, रद्द करा दिया। लेटिन भाषा के स्थान में अंग्रेजी भाषा में प्रार्थना होने लगी और प्रार्थना की नवीन पुस्तक जो कि (First Prayer book of Edward VI) एडवर्ड षष्ठम की प्रथम प्रार्थना पुस्तक कहलाई तैयार की गई। और सन १५४९ ई० के समानता के क़ानून (Act of uniformity) के अनुसार यह पुस्तक सब गिरजाघरों में प्रयुक्त होने लगी। इसके बाद फिर ४२ धाराओं का क़ानून (Act of 42 Articles) बनाया गया जिसमें

मार्टिन लूथर के बनाये हुए प्रोटैस्टेण्ट मत के सभी सिद्धान्त सम्मिलित थे और नवीन समानता के कानून (New Act of uniformity) के अनुसार इन्हीं का प्रयोग समस्त गिरजाघरों में होने लगा।

मेरी ने इस धार्मिक सुधार को रोकना चाहा, लेकिन उसको सफलता प्राप्त नहीं हुई क्योंकि हेनरी अष्टम ने धार्मिक मठों को तोड़ कर उनकी जायदादों को नीलाम कर दिया था। अब मेरी इन धार्मिक मठों की जायदादों को नहीं दिला सकी क्योंकि ऐसा करने में राजकीय कोष से बहुत-सा रुपया देने की आवश्यकता पड़ती थी।

एलिजाबेथ ने धार्मिक मामलों मे मध्य का मार्ग ग्रहण किया और अंग्रेजी चर्च स्थापित कर दिया जिसमे कुछ कट्टर लोगों को छोड़ कर सभी सम्प्रदायों के लोग सम्मलित हो सकते थे। सन् १५६१ ई० मे उसने एक प्रधानता का कनून (Act of Suprcmacy) प्रचलित किया और फिर एडवर्ड षष्ट की दूसरी पुस्तक को कुछ परिवर्तनों के साथ प्रचलित कर दिया और समानता के कानून (Act of Uniformity) के अनुसार प्रार्थना की दूसरी पुस्तक का प्रयोग निपिद्ध कर दिया गया। सन् १५४६ ई० के ४२ धाराओं में से तीन धारायें निकल कर ३६ धाराओं के कानून के अनुसार एक पुस्तक प्रचलित हुई और उसका प्रयोग गिरजाघरों मे अनिवार्य कर दिया गया।

यह स्मरण रखना चाहिये कि एलिजावेथ के समय मे रोमन कैथोलिक लोगों को पूरी तौर से स्वतन्त्रता थी कि वे जिस प्रकार चाहे प्रार्थना करें। केवल इतनी सख्ती अवश्य थी कि रविवार को गिरजाघर में जाना सबके लिये आवश्यक था। न जाने पर एक

शिलिंग अर्थ दंड होता था, लेकिन जब प्योरीटन और मुख्य कर रोमन कैथोलिक लोगों ने धर्म की आड़ लेकर राजनैतिक उद्देश्य सिद्ध करने का प्रयत्न किया और देश में विद्रोह किये तो एलिज़ाबेथ ने सख्ती मे काम लिया और एक अदालत स्थापित की जिसका कि नाम कोर्ट आफ़ हाई कमीशन (Court of High Commission) था जिसके द्वारा विरोधियों को कड़ा दण्ड दिया जाता था।

Notes on Period II (1485—1603)

Henry VII (1485-1509), Henry VIII (1509-1547), Edward VI (1547-1553), Mary (1553-1558), Elizabeth (1558—1603).

No. 11 How did Henry VII establish a strong monarchy?

(1) By crushing nobles

(2) By the Statute of Livery and Maintenance

(3) By the Court of Star Chamber

(4) By making them pay fines, benevolences and forced loans

(5) By employing men of humble rank as ministers Hitherto such offices had strengthened the already too strong nobles The new class of officials were entirely dependent on royal favour. and took care to keep it by carrying out the royal will Empson and Dudley are examples

(6) By tactful handling of the House of Commons

(7) The use of gunpowder further weakened the power of nobles.

(8) By matrimonial alliances He himself married Elizabeth, got married his daughter, Margaret, to James VI of Scotland and his eldest son was married to Catherine of Spain and on his death, she was married to his second son.

How did Henry VIII further strengthen the Royal power?

(1) By the dissolution of the monasteries, the power of the House of Lords was curtailed.

(2) By becoming the Head of the Church and the State?

No. 12 Career of Thomas Wolsey (1471—1530)
Parentage— prosperous middle class—like all Tudor ministers. Brilliant student at Oxford. *General Aim as Minister*—To build up the power of monarchy. *Special Interests*— Foreign affairs. *General Aim in Foreign Policy*—To prevent either Charls V of Spain or Francis I of France from becoming all powerful—"The Balance of Power."

Alliance with Charls V (1522-1525). When war broke out, Wolsey arranged alliance with Charles V but England played a very minor part in fighting

Break down in alliance with Charles V. Charles V had upset the "Balance of Power" by a great victory over Francis at Pava (1525) where Francis was taken prisoner.

Fall of Wolsey. Henry was thinking of divorce from Queen Catherine. He instructed Wolsey to obtain special sanction of Pope for remarriage but Wolsey failed to do so He was, therefore deprived of all offices and accused of high treason. Died at Leicester on his way to London from York for his trial

Had I but served God with half the zeal
I served my king, he would not in mine age
Have left me naked to mine enemies

No. 13 **Career of Sir Thomas More (1478—1535)**
Successful lawyer—Entered service of Government. Became a personal friend of Henry VIII Wrote the "Utopia" (1516) Knighted in 1521. Became Lord Chancellor on the fall of Wolsey (1529) but disagreed with Acts destroying papal power and resigned The King insisted on his taking an oath recognizing him as supreme head of the church. He refused and was beheaded in 1535

No. 14 **Career of Thomas Cromwell (1485-1504)**
Merchant-Lawyer in London After Wolsey's fall, he worked himself into favour with King. It was he who suggested to Henry that he should throw off the papal power altogether and take control of the church into his own hands, and it was he who put through the Acts of Parliament by which this Revolution was brought about He advised the King to marry Anne of Cleves, whom the King did not like and so was executed as a traitor (1540).

Both Wolsey and Cromwell belonged to the new middle-class Both were great supporters of Tudor Despotism Both took the blame for unpopular policy from which the King profited Both were neglected when they were no longer useful

No 15. Describe the Progress of Reformation in the Reign of Henry VII

Cause. Private and personal. Pope's refusal to sanction Catherine's divorce led to Reformation. Also discuss the political cause.

1532 Annates Act

1533 Act forbidding appeals to Rome against decisions by English Church Courts.

1534 Act of Succession, making children of Anne Bolyn heirs, in defiance of papal decree.

1535 Act of Supremacy, declaring the King Supreme Head of the Church in England.

1536 Act dissolving smaller monasteries

1539 Statute of Six Articles, containing Catholic doctrines, was issued.

He had written a book in praise of Roman Catholic Church and was given the title of Defender of Faith.

Further Progress in Reformation

Edward VI changed doctrine, Statute of Six Articles was replaced by First Prayer Book of Edward VI, 1549, Act of Uniformity introduced and then statute of 42 Articles, containing all doctrines of Protestant Religion, was introduced.

Elizabeth adopted a middle course in religion and introduced the Anglican Church. After removing three objectionable doctrines from the Statute of 42 Articles, he introduced. in 1549, the Statute of 39 Articles.

Reformation was Personal and Political in England but religious in Europe

There are two causes of Reformation in England, First, personal cause of Henry VIII, and then political cause so far as people are concerned. The growth of the national spirit made the English people resent any form of foreign domination. They resented English livings being given to foreigners, and English revenues going to fill the Papal coffers. It was a political impulse rather than any revolt against the doctrines of Rome. The English people were ready to accept the authority of the English king, but not of Pope, because he was a foreigner In Europe, it was due through the efforts of Martin Luther owing to religious causes

The Navy under the First Two Tudors

Henry VII founded the Royal Navy in the modern sense of the term He (1) built six warships, (2) established a royal dockyard at Portsmouth, (3) made the first dry dock, (4) encouraged the Mercantile Marine by giving a rebate of customs duties on the first long-distance voyage of new ships Henry VIII made the navy one of his chief interests He (1) designed ships himself, and was proud to act as a pilot on them, (2) built the finest ship afloat (the Great Harry), (3) founded the Board of Admiralty and Woolwich Arsenal, (4) left a royal fleet of eighty-five vessels

Career of Thomas Cranmer (1489-1556)

Cambridge don-theologian Henry VII made him

Archbishop of Canterbury, and he pronounced that Henry had never been legally married to Catherine (1433) He became more and more Protestant in his views as time went on, under Henry, he became definitely protestant Compiled and translated the two Prayer Books, under Mary, tried for heresy (along with Latimer and Pidly) at Oxford, and was executed

Relations with Scotland under the First Two Tudors

There was continued hostility between England and Scotland since the time of Edward I Henry VI tried to stop it by the marriage of his daughter, Margaret, to James IV, but when Henry VIII went to war with France early in his reign, the Scots invaded England and were defeated at Flodden (1513) The same thing happened again later in the reign, when Henry was on bad terms with France This time, the Scots were overthrown at Solway Moss (1542). James V died soon, leaving the throne to an infant daughter–"Mary, Queen of Scots" It was then proposed to unite two countries by "marriage of Prince Edward to Queen Mary, but the Scots refused and she was married to Francis II, of France.

Life of Mary, Queen of Scots (1542-1587). In 1559, her husband, Francis II, became king of France, but in 1560, he died and she returned to Scotland in 1561. The revolution of 1559 had made Scotland Protestant and anti-French, so she could not become popular in Scotland Married Darnby (1555), who was murdered

by her new lover, Bothwell, whom she married, The whole of Scotland became against her, and she was compelled to abdicate in favour of her infant son who becomes James VI She fled across the border into England She remained as prisoner in England, where plots were made by Catholics to place her on the theone She was executed in 1587 when she was proved to have hand in Babington conspiracy.

The Dangers at Elizabeth's Accession And How she overcame them

The Dangers	*The Policy*
The dangers from Mary, Queen of Scots. who claimed the English throne, and had the support of Francis II of France in 1559.	Francis II died in 1560 Mary returned to Scotland, which had become anti-Catholic Elizabeth supported the Reformation
The danger from Philip II of Spain, who wanted to win England for the Catholic Church The danger from English Catholics, who believed that Mary, Queen of Scots, was the rightful heir	Elizabeth checked him by the promise of marriage. Elizabeth's Church settlement satisfied them, and Mary's position in Scotland was too weak to be able to take any action which Catholics could support.
The danger from economic troubles The treasury was almost empty, the coinage debased, the country still suffering from the effects of the dissolution of monasterdies	Severe economy, replacement of base coins by good, encouragement of town industries, the Act of Apprentices and the Poor Laws

Career of William Cecil, Lord Burghley (1520-1598)

Middle-class man Attached himself to Princess Eliza-

beth, became her Secretary of State, and remained her trusted minister till his death. More Protestant than the Queen. Much of Elizabeth's economic policy was due to him.

Elizabeth's "Masterly Inactivity".

(1) *Marriage policy*—Do nothing, though made promises to many.

(2) *Foreign policy:*—Do nothing (gave indirect help to Dutch, Huguenots, sea dogs but never committed herself to a definite line of policy as long as she lived)

(3) *Religious policy.*—Do nothing.

(4) *Mary Stuart policy*—Do nothing. Let Catholics look to Mary as successor, but she would not formally recognize Mary as heir.

The Renaissance in England under Elizabeth

Fine Arts began to flourish. The versatility of such men as Spenser and Raleigh was also characteristic of the Renaissance. Many famous schools and colleges were founded A great outburst of literature and music in England Spenser, Marlowe, Chapman, Sidney. Jonson were the chief persons in literature In music, England then led the rest of Europe with Orlando, Gibbons, Tallis, Bryd, Morley. Shakespeare (1564-1616) was the last and greatest figure in the whole of the European Renaissance.

The Privy Council in Tudor Times

In Middle Ages, the Privy Council consisted of great nobles and bishops But now, its members belonged

1539 A D. Dissolution of greater Monasteries. Statute of Six Articles.
1540 „ Fall of Cromwell.
1542 „ Battle of Solway Moss.

Edward VI (1547-1553)

1549 A. D. The first Prayer Book. Fall of Somerset.
1552 „ Second Prayer Book, Execution of Somerset.

Mary (1553-1558)

1555-1558 Marian Persecution.
1556 A. D. Execution of Crammer.
1558 „ Loss of Calais.

Elizabeth (1558-1603)

1559 A D. Acts of Supermacy and Uniformity.
1561 „ Return of Mary, Queen of Scots, to Scotland.
1565 „ Mary's Marriage with Darnley.
1568 „ Mary's Fight to England
1587 „ Execution of Mary, Queen of Scots
1588 „ The Spanish Armada.
1601 „ The Poor Law.

Model Questions

(1) What are the chief characteristics of the Modern Age? How can you prove that Modern Age commences in England with the coming of Tudors.

(2) Briefly narrate how the Tudor rule began in England. What claims had Henry VIII to the English throne ?

Hint—In his claim to the throne, discuss his claim based on birth, on conquest, on the Act of Parliament and marriage

(3) Indicate the difficulties with which Henry VII was confronted, the measures he took to overcome then and the extent to which he was successful

(Hint—Describe, in short, various rebellions and then describe various measures to crush nobles to gather money, his tactful handling of the Parliament, and matrimonial alliances)

(4) Explain the term "Reformation" and point out the causes which led to it Describe the progress of Reformation in the Tudor Period.

(Reformation comprises two things, first, break with Papacy and second, spliting up of Christendon into two parts—Roman Catholic and Protestant).

(5) Henry VIII's break with Papacy was caused by purely personal motives, but it led to results of vast national importance. Explain

(Hint—Discuss Catherine's divorce, and how it led to the separation of the English Church from Popacy.

(6) How did Reformation in England form Restoration in Europe ?

(7) Give a brief sketch of the career of Cardinal Wolsey, and estimate the effects of his foreign policy.

(8) Give an estimate of the home and foreign policv ef Elizabeth, dwelling mainly on

(i) her relations with Parliament.

(ii) her dealings with the Puritans and the Catholics

(iii) her attitude towards Spain and Papacy.

(9) Give a brief sketch of Mary, Queen of Scots, and relations with the Parliament

(10) Describe the religious settlement of Elizabeth, and state the measures taken to maintain it How far did it prove acceptable to the people

(11) Why is Elizabeth's regarded as the "Golden Age" of English History.

(12) Briefly describe the voyages of discovery during the Tudor Period.

(13) What do you mean Tudor despotism ? Account for Tudor despotism.

[Hint—Tudor despotism was government of the people for the people but not by the people.]

14. Who were Elizebeth Sea-Dogs ? Describe their ports in the maritime eaterprises in Elizebeth's time.

[Hint—The Sea-Dogs were sailors who, at their own expense and risk, attacked Spanish ships in the Chan-

nel, on the high seas, and in the West Indies, and raided Spanish ports and settlements in America, long before two countries were officially at war.

Their motives —(1) Trade with Spanish possessions from which Philip II tried to exclude all but his own subjects (2) Booty—taken from Spanish ships and towns, (3) Patriotism—The desire to cripple England's enemy, (4) Pride – contempt for foreigners. In Netherland, encouraged by Elizabeth, they carried on unofficial war with Spain.]

पहला अध्याय

जेम्स प्रथम १६०३ से १६२५ ई० तक

इंगलैण्ड और स्काटलैण्ड की एकता—एलिजावेथ की मृत्यु के बाद स्काटलण्ड का सिंहासन-अधिकारी जेम्स षष्ट इंग्लैण्ड के सिंहासन पर जेम्स प्रथम के नाम से आरूढ़ हुआ। जेम्स स्काटलैण्ड की महारानी मेरी का लड़का था और महारानी मेरी हेनरी सप्तम जो इंगलैण्ड का बादशाह था, की लड़की मारग्रेट की जो स्काटलैण्ड के बादशाह जेम्स चतुर्थ से व्याही गई थी, पोती थी। ट्यूडर (Tudor) वंश का कोई मनुष्य सिंहासन का उत्तराधिकारी न रहने के कारण से स्काटलैण्ड के राजा जेम्स षष्ट को इंगलैण्ड का भी बादशाह स्वीकार कर लिया गया था। इस प्रकार जो काम मारग्रेट के विवाह से पूरा न हो सका, वह जेम्स प्रथम के शासन के साथ पूर्ण रूप से सम्पन्न हो गया और अब इंगलेण्ड तथा स्काटलेण्ड एक ही बादशाह के आधीन होगये।

जेम्स इंगलैण्ड का प्रथम स्टुआर्ट बादशाह हुआ और इंग्लैण्ड के इतिहास में जेम्स प्रथम के नाम से प्रसिद्ध है। अब इंग्लैण्ड और स्काटलैण्ड दोनों के राजसिंहासन एक हो गये। दोनों देशों के राष्ट्रीय झंडे भी मिला दिये गये और उस मिले हुए झंडे का नाम यूनियन जेक (Union Jack) पड़ा; मगर दोनों देशों के चर्च,

पार्लियामेण्ट, क़ानून अभी पृथक-पृथक ही रहे। एलिज़ाबेथ के समय में आयरलैण्ड अंग्रेजों के हाथ में आ चुका था और इस प्रकार जेम्स आयरलैण्ड का भी बादशाह हुआ।

James I

जेम्स का स्वभाव— सिंहासन पर बैठने के समय जेम्स की आयु ३७ वर्ष की थी। वह अपने समय का एक बहुत बड़ा

विद्वान् और शिक्षित मनुष्य था और उसने पवित्र धर्मग्रन्थ, इतिहास तथा ज्योतिष विद्या आदि के ग्रन्थों का खूब अध्ययन किया था। वह उच्च श्रेणी का घुड़-सवार और एक उत्तम शिकारी था। उसके विचार अत्यंत ऊँचे और पवित्र थे। इन अच्छे गुणों के साथ ही उसमें बहुत से दोष भी थे।

वह अत्यन्त सुस्त, डरपोक, निरुद्यमी, अभिमानी और चाटुकारी प्रिय था और शासन का प्रबन्ध भी चाटुकारों (खुशामदियों) के हाथ में छोड़ने के लिए तैयार रहता था और अपने कामों और मनसूबों की समालोचना को तनिक भी सहन नहीं कर सकता था। स्काटलैण्ड में शिक्षा पाने के कारण न तो वह अंग्रेज़ी रीति-रस्म से परिचित था और न उसने अंग्रेज़ों की शासन प्रणाली को समझने की चेष्टा ही की थी। इस कारण से राजा और प्रजा के बीच सहानुभूति अथवा मेल न हो सका। उसके सम्बन्ध मे फ्रांस का प्रधान मन्त्री कारडीनल फ्लूरी तथा फ्रांस का बादशाह लुई चतुर्थ कहा करते थे कि वह ईसाई साम्राज्यों में "विद्वान् मूर्ख" अर्थात् पढ़ा-लिखा बेवकूफ़ (Wise Fool in Christendom) था।

सन् १६०३ में इंग्लैण्ड की दशा—सन १६०३ ई० में इंगलैण्ड की दशा पहले समय की अपेक्षा बहुत अच्छी थी। इसके पहले स्काटलैण्ड हमेशा इंगलैण्ड के विरुद्ध रहता था और जब कभी इंगलैण्ड किसी विदेशी शक्ति से योरोप में लड़ रहा होता था, तो इंगलैण्ड के शत्रु स्काटलैण्ड से मेल करके इंगलैण्ड पर आक्रमण

किया करते थे, जिससे इंग्लैण्ड की कठिनाइयाँ दूनी बढ़ जाती थीं. लेकिन अब उसे इस प्रकार के भय का कोई अन्देशा नहीं रहा था, क्योंकि स्काटलैण्ड और इंग्लैण्ड मिलकर एक हो गये थे।

दूसरे, अब सिंहासन का कोई दूसरा अधिकारी नहीं था, जिसकी सहायता करके अन्य देशों के लोग इंग्लैण्ड में गड़बड़ करायें।

तीसरे, स्पेन की शक्ति बिल्कुल नष्ट हो चुकी थी और उससे अब इंगलैण्ड को किसी प्रकार का भय नहीं था।

जेम्स की विदेशी नीति—सन् १६१३ ई० में जेम्स प्रथम ने अपनी लड़की एलिज़ाबेथ का विवाह फ्रैडरिक (Frederick) अलैक्टर पेलेटीनेट आफ़ रायन (Elector Palatinate of the Rhine) से कर दिया और अपने लड़के चार्ल्स (Charles) का विवाह स्पेन के बादशाह की लड़की से करना चाहता था। इसीलिए सन १६१७ ई० उसने स्पेन से पत्रव्यवहार आरम्भ किया; लेकिन उसमें वह सफल नहीं हुआ और उल्टा बहुत बदनाम होगया। विवाह के लिए उसने पूरा प्रयत्न किया। सन १६२३ ई० में उसने बकिंघाम और चार्ल्स को इसी उद्देश्य से स्पेन भी भेजा और बहुत-से वादे भी किये; लेकिन अन्त में स्पेनवालों ने विवाह की स्वीकारी नहीं दी और इस प्रकार उसको अपने उद्देश्य में निराश और असफल ही रहना पड़ा।

जेम्स के शासन-सम्बन्धी विचार—बादशाहों के अधिकारों के सम्बन्ध में जेम्स बड़े विचित्र विचार रखता था। वह

राजाओं के "दैवी अधिकार" (Divine Right of Kings) में विश्वास रखता था। उसका विश्वास था कि बादशाहों की शक्ति असीमित होती है और यह शक्ति उसको ईश्वर की ओर से प्रदान की जाती है, इसलिये अगर वह किसी को उत्तरदायी है तो केवल ईश्वर के तरफ़, न कि किसी और के प्रति। इस दैवी अधिकार के विचार के अनुसार प्रजा को इस बात का कोई अधिकार नहीं है कि वह बादशाह के कामों की समालोचना अथवा उनका विरोध करे। इस प्रकार जेम्स भी अपनी प्रजा के अधिकारों को स्वीकार करने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। वह यह चाहता था कि एक अनुत्तर-दायी निरंकुश शासक की तरह अपना राज्य करे।

धर्म और जेम्स—धार्मिक मामलों में भी जेम्स के ऐसे ही विचार थे। वह अपने आपको धर्म का भी संरक्षक और शिरमौर्य समझता था। जेम्स के शासन-काल में रोमन कैथोलिक और प्रोटैस्टेन्ट मतों के अतिरिक्त एक और सम्प्रदाय भी मौजूद था, जो प्योरीटन (Puritan) सम्प्रदाय कहलाता था। उस सम्प्रदाय के लोग चाहते थे कि सब बातों में पवित्र बाइबिल (Holy Bible) के अनुसार ही सब काम किये जावें और वे बाइबिल की किसी आज्ञा में किसी प्रकार का भी परिवर्तन करने के सख्त विरोधी थे। उन लोगों की संख्या एलीजाबेथ के शासन-काल से दिन पर दिन अधिकाधिक बढ़ रही थी। हर एक पार्टी यह विचार कर रही थी कि जेम्स उसकी सहायता करेगा। कैथोलिक लोगों का यह विचार इस-लिए था कि जेम्स की माता मेरी कैथोलिक मत को मानने वाली थी।

प्रोटैस्टेन्ट लोग यह सोचते थे कि जेम्स ने सिंहासन पर बठते ही यह घोषणा की थी कि वह एलीज़ाबेथ द्वारा स्थापित किये हुए चर्च को यथापूर्व प्रचलित रक्खेगा। उनका यह भी विचार था कि जेम्स अब इंग्लैण्ड का बादशाह हो गया है, इसलिए वह इंग्लैण्ड के चर्च की रक्षा करना अपना मुख्य कर्तव्य समझेगा। प्योरीटन लोग इसलिए उससे सहायता की आशा रखते थे कि जेम्स स्काटलैण्ड में बादशाह रहा था, जहाँ पर कि प्रैसबिटेरियन चर्च (Presbyterian Church) का अधिक ज़ोर था और इसलिए बादशाह को स्वाभाविक तौर पर ही उस धर्म से सहानुभूति होनी चाहिए थी।

लेकिन इन तीनों सम्प्रदायों में जेम्स की सहानुभूति इंगलिशचर्च पार्टी के साथ रही, क्योंकि कैथोलिक लोग अपने पुराने दकियानूसी विचारों के कारण से देशभर मे बदनाम थे और प्योरीटन सम्प्रदाय के सिद्धान्तों से जेम्स को अत्यन्त घृणा थी। जेम्स का विचार था कि अगर चर्च में बादशाह के नियुक्त किये हुए पादरियों के स्थान पर उनके निर्वाचन का सिलसिला आरम्भ हो गया, तो थोड़े समय के बाद देश के शासन में भी लोग बादशाह के स्थान पर प्रजातंत्र शासन स्थापित करना पसंद करने लगेंगे। इस कारण से जेम्स का यह कहना था कि "पादरी नहीं तो बादशाह नहीं" (No Bishop, No King)।

हैम्पटन कोर्ट कान्फ्रेन्स—सन् १६०३ ई० में उसके सिंहासन पर बैठते ही प्योरीटन लोगों ने एक आवेदन पत्र उपस्थित किया, जिसको कि "लाखों का आवेदन पत्र" अथवा मिलेनरी (

पिटीशन (Millenary Petition) कहते हैं। इस आवेदन पत्र पर विचार करने के लिए उसने सन् १६०४ ई० में हैम्पटन कोर्ट (Hampton Court) के स्थान पर एक सभा बुलाई जिसमें प्योरीटन मत के माननीय नेता और बड़े-बड़े पादरी बुलाये गये, मगर उस सभा मे कोई विशेष निर्णय नहीं हो सका और बादशाह ने प्योरीटन लोगों को यह धमकी दी कि अगर वे उसके विचारों से सहमत नहीं हो सकेंगे, तो देश से निकाल दिये जायेंगे। इसका प्रभाव यह हुआ कि प्योरीटन लोग बादशाह से अत्यन्त रुष्ट हो गये।

कान्फ्रेन्स का परिणाम—इस कान्फ्रेन्स का एक अच्छा परिणाम तो यह हुआ कि जेम्स ने आदेश दिया कि बाइबिल के अनुवाद मे सुधार किया जाय और इस प्रकार नवीन संशोधित अनुवाद सन् १६११ ई० मे प्रकाशित हो गया। दूसरी ओर इस कान्फ्रेन्स का एक बुरा नतीजा यह हुआ कि जेम्स ने प्योरीटन लोगों को जो धमकी दी थी, उसपर कार्य किया। उसने आवेदन पत्र पर हस्ताक्षर कराने वाले प्योरीटन लोगों मे से दस को स्टार चैम्बर की अदालत (Court of Star Chamber) की आज्ञा से कैद कर लिया और तीन सौ प्योरीटन पादरियों को उनके गिरजाघरों से निकाल दिया।

गन पाऊडर प्लौट (सन् १६०५)—रोमन कैथोलिक लोग यह आशा कर रहे थे कि उनके विरुद्ध जो कानून बनाये गये थे, उनको जेम्स हटा देगा, लेकिन जेम्स के समय में वे कानून और

भी अधिक सख्त कर दिये गये। इसपर रोमन कैथोलिक लोग इतने विगड़े कि उन्होंने कई भयानक पड़्यंत्र रचे, जिनमें से बादशाह को बारूद से उड़ा देने का पड्यंत्र वर्णन करने योग्य है। इस पड़्यंत्र का नेता विलियम केटसवी (William Catesby) था। इन लोगों ने हाउस आफ़ लार्ड्स के सभा भवन के तहखानों को किराये पर ले लिया और उनमें बारूद भर दी ताकि पार्लियामेण्ट के अधिवेशन के समय बारूद को आग लगा दी जाय, लेकिन इस पड़्यंत्र का ठीक समय पर भंडाफोड़ हो गया और वह इस तरह कि षड़्यंत्र रचनेवालों में से एक मनुष्य हाउस आफ़ लार्ड्स के मेम्बरों में से एक मेम्बर का रिश्तेदार था। उसने उस अपने रिश्तेदार मेम्बर को एक पत्र लिखकर अधिवेशन मे सम्मिलत होने से निषेध किया मगर वह पत्र पकड़ा गया और शीघ्र ही जांच करने पर फ़ाक्स (Fowkes) नाम का एक मनुष्य तहखाने के नोचे से उसो समय गिरफ्तार किया गया, जबकि वह बारूद में आग लगाने को तैयार खड़ा था। फ़ाकस और अन्य पड़्यंत्रकारियों को फाँसी पर चढ़ा दिया गया और इस सव का फल यह हुआ कि कैथोलिक लोगों के विरुद्ध कानून और सख्त कर दिये गये।

जेम्स के मन्त्री—जेम्स का प्रधान मन्त्री रोवर्ट सेसिल (Robert Cecil) अर्ले आफ़ सैलिसवरी (Earl of Salisbury) था। उसने सन् १६१६ ई० तक वड़ी योग्यता के साथ शासन-प्रबन्ध किया। जब सन् १६१६ ई० मे वह मृत्यु को प्राप्त हो गया, तो उसके बाद बादशाह ने किसी योग्य मनुष्य को प्रधान मन्त्री का काम सुपुर्द

नहीं किया, क्योंकि उसमें अभिमान बहुत था और शासन को अपने हाथ से निकलने नहीं देना चाहता था; लेकिन क्योंकि वह बहुत आराम पसन्द था और परिश्रम बिल्कुल नहीं करना चाहता था, इसलिए उसने ऐसे खुशामदियों को मंत्री का काम दिया, जिनकी कि निज की कोई विशेष नीति निर्धारित नहीं होती थी और इसलिए शासन-प्रबन्ध को ठीक-ठीक चलाने में उनका कोई प्रयोजन नहीं होता था। इन खुशामदियों में से चर्चा करने योग्य स्काटलैण्ड का निवासी रोबर्ट कार (Robert Car) था। बादशाह ने उसको सोमरसेट का लार्ड बना दिया, लेकिन रोबर्टकार एक हत्या के षड्यंत्र में शामिल पाया गया, इसलिए बादशाह ने उससे सन् १६१६ ई० में बिल्कुल सम्बन्ध तोड लिया। इसके बाद जार्ज विलिअर्स (George Villiers) उसका कृपापात्र बना। यह एक खूबसूरत, घमण्डी और चलता पुर्जा मनुष्य था। बादशाह ने उसको एक बडी जागीर दे दी और वह ड्यूक आफ बकिंघाम (Duke of Buckigham) बना दिया गया। उसका बादशाह पर बहुत प्रभाव हो गया और उसने जेम्स और चार्ल्स दोनों को अपने वश में रक्खा। सन् १६२८ ई० में किसी ने उसकी हत्या कर डाली। उसके समय का तीसरा सबसे प्रसिद्ध पुरुष फ्रांसिस बेकन (Francis Bacon) था, जो कि इतिहासकार, ग्रंथकार, निबंध लेखक और फिलासफर भी था। वह एकतंत्र शासन का बहुत पक्षपाती था और वह बादशाह तथा पार्लियामेण्ट के बीच मेल कराना चाहता था। सन् १६१८ से १६२१ ई० तक वह चान्सलर के पद पर सुशोभित रहा।

तीस वर्षीय युद्ध (सन् १६१८ से १६४८ ई० तक)

जर्मनी की दशा—१७वीं शताब्दी में जर्मनी लगभग तीन सौ छोटी-छोटी रियासतों में बँटा हुआ था, जो कि मिल कर "पवित्र साम्राज्य" (Holy Empire) कहलाती थी। उनकी देखभाल आस्ट्रिया का सम्राट करता था, जो कि सबका सम्राट् कहलाता था। यों कहने को तो सम्राट् का निर्वाचन हुआ करता था और यह निर्वाचन जर्मनी के सात निर्वाचक (Electors) अर्थात् साम्राज्य के राजकुमार किया करते थे, लेकिन वास्तव में ऐसा नियम प्रचलित हो गया था कि हैप्स वर्ग के वंश (House of Hapsburg) का राजा जो कि आस्ट्रिया पर राज्य करता था, वही पवित्र रोमन साम्राज्य (Holy Roman Empire) का सम्राट् हो जाता था। सम्राट् फरडीनेण्ड (Ferdinand Emperor) पवित्र रोमन साम्राज्य का महान् सम्राट् था; लेकिन प्रोटैस्टेण्ट लोगों पर अत्याचार पर अत्याचार होने के कारण समस्त प्रोटैस्टेण्ट रियासतें उसके विरुद्ध हो गईं थीं और योरोप में तीस वर्ष तक रोमन कैथोलिक और प्रोटैस्टेण्ट लोगों में युद्ध होता रहा। प्रोटैस्टेण्ट रियासतों ने फ्रेडरिक (Frederick) को, जो कि पैलेटाइन का एलैक्टर (Elector of Palatine) था और जिसको कि इंग्लैण्ड के राजा जेम्स प्रथम की इकलौती लड़की एलिज़ावेथ ब्याही थी, वोहेमिया के सिंहासन पर बिठा दिया और समस्त प्रोटैस्टेण्ट मतवालों ने वोहेमिया का साथ दिया। तब सब कैथोलिक रियासतें आस्ट्रिया की सहायता करने लगीं। आस्ट्रिया की सेना ने वोहेमिया की सेना को पूरी तरह से पराजित

क्रिया और स्पेन की सेना ने नीदरलण्ड से आकर पलेटीनेट (Palatinate) पर अधिकार कर लिया और फ्रेडरिक अब कहीं का भी नहीं रहा।

जेम्स की वैदेशिक नीति---जेम्स हमेशा सर्वत्र शान्ति को ही पसन्द करता था, उसे युद्ध से घृणा थी। जैसे ही वह बादशाह हुआ, उसने स्पेन के साथ युद्ध को समाप्त करके संधि करली और जब कि फ्रेडरिक ने अपने ससुर जेम्स से जो कि इंग्लैण्ड का सम्राट् था अपना सिंहासन पुनः प्राप्त करने के लिए सहायता मांगी, तो इंग्लैण्ड के लोग तो चाहते थे कि बादशाह अपने दामाद की सहायता करे लेकिन बादशाह ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया, क्योंकि उसके दामाद के मुकाबिले मे जो जर्मन राजकुमार फरडीनेण्ड था उसकी पीठ पर स्पेन का बादशाह और दूसरे कैथोलिक देश थे। जेम्स की यह अभिलाषा थी कि कैथोलिक और प्रोटेस्टैण्ट दोनों मतों की रियासतों से मित्रता स्थापित करके योरोप मे शान्ति स्थापित की जाय और इसी उद्देश्य से उसने अपने लड़के चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी इनफेन्टा (Infanta) से करना चाहा, ताकि स्पेन के बादशाह के द्वारा फ्रैडरिक को पैलीटीनेट वापिस दिला दें।

स्पेन से संबन्ध करने का प्रयत्न—इंग्लण्ड के निवासी इस मार्ग को ना पसन्द करते थे और स्पेनवाले भी इस सम्बन्ध को नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने अपनी राजकुमारी का विवाह इंग्लैण्ड के राजकुमार चार्लस के साथ करने मे आनाकानी की। इसपर चार्लस

ड्यूक आफ़ वकिंघम को साथ लेकर स्पेन की राजकुमारी इनफेण्टा के साथ विवाह करने के उद्देश्य से स्पेन गया; लेकिन निराश होकर लौट आया और बाद में यह समाचार पाकर कि स्पेन की राजकुमारी का विवाह एक कैथोलिक राजकुमारी के साथ हो गया है, जेम्स ने अपनी सम्मति बदल दी और अपने दामाद के लिए कुछ सेना भेज दी; लेकिन उसमें उसको सफलता प्राप्त नहीं हुई और सन् १६२५ ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

जेम्स ने इंग्लैण्ड की वैदेशिक नीति को बिल्कुल बदल दिया, उसकी वैदेशिक नीति एलीज़ावेथ की नीति के विरुद्ध थी अर्थात् उसने स्पेन के साथ शत्रुता को छोड़कर उसको ओर मेल का हाथ बढ़ाया और स्पेन निवासियों को प्रसन्न करने के लिए सर वाल्टर रैले का वध करा दिया। वह यह भी चाहता था कि उसके लड़के चार्लस का विवाह स्पेन के वादशाह की लड़की से हो जावे; मगर इसमें वह सफल न हो सका और अन्त में उसने फ्रांस से मेल कर लिया।

जेम्स और पार्लियामेण्ट के बीच झगड़े के कारण— जेम्स के शासनकाल के प्रारम्भ से वादशाह और पार्लियामेण्ट में झगड़ा आरम्भ हुआ, जो कि स्टुआर्ट काल के अन्त तक रहा। झगड़े के कारणों का आधार निम्नलिखित बातों पर था :—

(१) **आन्तरिक शासननीति**—जेम्स को राजाओं के दैवी अधिकार के सिद्धान्त में पूर्ण विश्वास था और उसका कहना था कि वादशाह ईश्वर की ओर से लोगों पर शासन करने के लिए इस धरा धाम पर अवतीर्ण होता है, वह क़ानूनों के बन्धन से पृथक रहकर जो

चाहे कर सकता है और किसी अन्य मनुष्य अथवा दल को यह अधिकार नहीं है कि उसकी वातों और उसके कार्यों की समालोचना करके उससे उत्तर माँग सके।

(२) निरंकुश शासन स्थापित करने की इच्छा—वह अनुत्तर दायित्वपूर्ण स्वेच्छाचारी वादशाह की तरह शासन करना चाहता था और वह भी ट्यूडर वादशाहों की तरह बुद्धिमत्ता और चतुरता से नहीं, किन्तु डंके की चोट घोषणा करके। पार्लियामेण्ट इस कारण से वहुत रुष्ट हो गई।

(३) वाहरी आक्रमणों का भय न रहना—पार्लियामेण्ट और वादशाह के वीच झगड़े का एक मुख्य कारण यह भी था कि अव वाहरी आक्रमणों का भय विल्कुल नहीं रहा था। यह वहुधा कहा जाता है कि अंग्रेज लोग एक समय में एक ही वात सोच सकते हैं। एलिजावेथ के शासनकाल का वहुतसा समय वाहरी आक्रमणों के भय और सामना करने मे ही व्यतीत हुआ और जव कि वाहरी आक्रमणों का भय होता है, तव लोग अपने अधिकारों की रक्षा की ओर ध्यान नहीं दे सकते है। इसके विपरीत उन्हें अपने धन-जन की रक्षा के लिए भी वादशाह का ही साथ देना पड़ता है। अब वह कोई भय नहीं रहा था, इसलिए लोगों ने अपने अधिकारों की रक्षा तथा अपनी राजनीतिक अवस्था के सुधार की ओर विशेष ध्यान दिया।

(४) मध्यम श्रेणी और स्वतन्त्रता के विचारों का फैलना—ट्यूडर काल में व्यापार तथा कलाकौशल की उन्नति के

कारण देश मालामाल हो गया था और प्रजा में एक नवीन मध्यम श्रेणी (Middle Class) उत्पन्न हो गई थी, जो कि देश के मामलों में भाग लेना चाहती थी।

दूसरे, नवीन जागृति (Renaissance) तथा नवीन धार्मिक सुधारों के आन्दोलन (Reformation) के प्रभाव से प्रजा में एक जबर्दस्त चेतना और सुधारों की भावना उत्पन्न हो गई थी। अब लोग स्वयं विचार करने लगे थे। उनमें स्वयं किसी बात के कारणों को मालूम करने की शक्ति उत्पन्न हो गई थी और उनमें अब अपने ऊपर आत्म-विश्वास भी उत्पन्न हो गया था। अतएव लोगों ने अब अपने अधिकारों और अपनी स्वतंत्रता की रक्षा की ओर पूरा ध्यान देना आरम्भ कर दिया।

(५) जेम्स का शान्ति से काम न लेना और उसका अपमान—जेम्स के समय में कई प्रश्न उपस्थित थे—बादशाह को राज्य करने का क्या अधिकार है? क्या बादशाह को पार्लियामेण्ट की स्वीकारी बिना प्रजा पर कर लगाने का अधिकार है? अथवा लोगों को बिना मुकद्मा लगाये गिरफ्तार करने का या पार्लियामेण्ट को बादशाह के मन्त्रियों पर मुकद्मा लगाने का क्या कोई अधिकार है? ऐसे कई प्रश्न उस समय उठ रहे थे। उन प्रश्नों का उत्तर अभीतक निश्चय नहीं हुआ था। बादशाह उन प्रश्नों को अपनी इच्छा के अनुकूल और प्रजा के लोग उनको अपनी इच्छा के अनुसार तय करना चाहते थे। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, इन प्रश्नों के उत्तर राजा और प्रजा के बीच इतने प्रतिकूल हो

गये कि अन्त को तलवार से ही उनका फैसला हो सका। उस समय की अवस्था वहुत कठिन थी और जेम्स ने सरल करने की वजाय उसको और पेचीदा वना दिया। वुद्धिमानों का कथन है कि "सवसे भली चुप" लेकिन जेम्स इस छोटी-सी वात को भी नहीं समझ रहा था। दूसरे, वह घमंडी भी था और वजाय चुप रहने के वह हमेशा यह प्रगट करना चाहता था कि ये सव अधिकार राजा के हैं, प्रजा के नहीं। फल यह हुआ कि उसका विरोध दिन पर दिन अधिकाधिक वढ़ता ही गया।

(६) जेम्स की धार्मिक नीति—एलिजावेथ के समय से प्योरीटन लोगों की संख्या देश मे अधिक हो रही थी और पार्लियामेण्ट में भी ये पर्याप्त संख्या में थे और अव चूंकि देश में जागृति उत्पन्न होगई थी, इसलिए अव ये लोग उस सिद्धान्त को मानने के लिये तैयार नहीं थे कि "यथा राजा तथा प्रजा।" वादशाह की धार्मिक नीति इन लोगों के विल्कुल विरुद्ध थी और चूंकि पार्लियामेण्ट मे इनकी संख्या अधिक थी, इसलिये पार्लियामेण्ट ने वादशाह का तीव्र विरोध किया।

(७) जेम्स को रुपये की आवश्यकता—जेम्स पूर्णरूप से राजाओं के दैवी अधिकार के सिद्धान्त में विश्वास रखता था और इसीलिये वह पार्लियामेण्ट के विना शासन करना पसन्द करता था, लेकिन क्योंकि वह अपव्ययी था और उसे रुपये की वारवार आवश्यकता पड़ती थी, इसलिये उसे वार-वार पार्लियामेण्ट का अधिवेशन वुलाना पड़ता था; इसलिये पार्लियामेण्ट का साहस

और भी बढ़ गया और वह इस सिद्धान्त पर कार्य करने लगी कि "बिना शिकायतों क। किये हुये रुपये की स्वीकृति नहीं दी जा सकती" (No supplies until grievances have been supplied. This is the corner stone of the British constitution.) जेम्स यह मानने को कभी तैयार नहीं था, इसलिये वह पार्लियामेण्ट को स्थगित कर देता था और अपनी आमदनी बढ़ाने के लिये असाधारण कर (Imposition), बलात् ऋण (Benevolences) और व्यापार की वस्तुओं का एकाधिपत्य (Monopolies) देने की चेष्टा किया करता था। इसके अतिरिक्त उसने धनवान लोगों को नये-नये पद और उपाधियाँ देकर भी उनसे रुपया वसूल किया। इस प्रकार की सारी बातों से जेम्स और पार्लियामेण्ट के बीच झगड़ा अधिकाधिक बढ़ता ही गया।

(८) जेम्स का मेम्बरों के निर्वाचन में अनुचित हस्ताक्षेप—जेम्स लोगों के पार्लियामेण्ट में मेम्बर चुनकर भेजने के अधिकार में भी अनुचित हस्ताक्षेप करने लगा था। बकिंघामशायर (Buckinghamshire) के लोगों ने गौडविन (Godwin) को पार्लियामेण्ट के लिये मेम्बर चुनकर भेजा। जेम्स ने इस निर्वाचन को अनियमित ठहरा दिया। जब पार्लियामेण्ट ने इस पर सख्त विरोध किया, तो बादशाह को दबना पड़ाः लेकिन इससे परस्पर मतभेद और विरोध और अधिक बढ़ गया।

(९) अदालत के जजों के साथ अनुचित हस्ताक्षेप—जेम्स ने इसी प्रकार अदालत के जजों पर अनुचित दबाव डाल-

कर अपने पक्ष में कई फैसले कराये और सन १६१६ ई० में उसने लार्ड चीफ जस्टिस कोक (Lord Chief JusticeCoke) को अपने पद से पृथक कर दिया जबकि उसने अपनी इच्छानुसार एक मामले में फ़ैसला दिया था। इससे बादशाह का विरोध और भी बढ़ गया।

पार्लियामेंट की बैठकें—जेम्स के समय में पार्लियामेंट की बैठकें चार बार हुईं :—

(१) प्रथम पार्लियामेंट की बैठक सन् १६०४ से १६११ ई० तक जारी रही।

(२) द्वितीय पार्लियामेंट की बैठक सन १६१४ ई० में हुई। यह बैठक दो महीने तक रही और यह "बांझ पार्लियामेंट" (Addled Parliament) कहलाती है, क्योंकि उसने कोई कानून नहीं बनाये। उसने केवल कुछ विशेष कर (Impositions) हटाने के लिये कहा था लेकिन इसपर बादशाह ने अप्रसन्न होकर उसे बरखास्त कर दिया।

(३) तृतीय पार्लियामेंट सन १६२१ ई० मे बुलाई गई और सन १६२२ ई० मे भंग कर दी गई।

(४) चतुर्थ पार्लियामेंट सन १६२४ ई० में संगठित हुई लेकिन सन् १६२५ ई० में जेम्स स्वयं ही मर गया।

[नोट—ट्यूडर वंश के राजा मितव्ययी थे और क्योंकि उन्होंने राज्यकोष में पर्याप्त धन एकत्रित कर लिया था, इसलिये उनको पार्लियामेंट बुलाने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती थी और इसलिए उनके और पार्लियामेण्ट के बीच में झगड़े की नौबत नहीं आती थी। इसके विपरीत स्टुआर्ट वंश के राजा अपव्ययी थे, इसलिए उन्हे सर्वदा पार्लिया-

मेण्ट से रुपया माँगना पड़ता था। रुपया माँगते समय पार्लियामेण्ट अपने अधिकार माँगती थी। इसी पर झगड़ा होता था।]

ऊपर वर्णित चार पार्लियामेण्टों में से पहली और तीसरी पार्लिया-मेण्टों ने बादशाह का बहुत तीव्र विरोध किया। पहली पार्लियामेण्ट में झगड़े का कारण टनेज और पौंडेज (Tonnage and Poundage) अधिक बढ़ाना और असाधारण अनियमित कर (Imposition) लगाना था।

जेम्स के समय की तीसरी पार्लियामेण्ट सबसे अधिक प्रसिद्ध है। उसने तीन मुख्य बातें की थीं:—

नोट:—टनेज और पौडेज (Tonnage, Poundage) एक प्रकार के महसूल थे। शराब पर प्रति टन के हिसाब से महसूल लगाया जाता था और वह टनेज कहलाता था। अन्य व्यापार की वस्तुओ पर प्रति पौंड के हिसाब से महसूल लगाया जाता था और वह पौडेज कहलाता था। इन दोनो महसूलो से बादशाह का व्यक्तिगत व्यय चलता था और उनसे बादशाह को ५०००० पौड की वार्षिक आमदनी हो जाती थी। सिंहासन पर बैठने के एक दो साल बाद जेम्स को कानूनी तौर पर जितना महसूल लगाना चाहिए था, उससे अधिक महसूल लगाने लगा। एक व्यापारी ने जिसका नाम बूट (Bute) था, यह अधिक महसूल देने से इन्कार किया। उसका मुकद्दमा हुआ और अदालत ने यह फैसला दिया कि अधिक महसूल उसको देना होगा क्योकि बन्दरगाह बादशाह की सम्पत्ति है और उसको यह अधिकार है कि बन्दरगाह पर जो सामान आता है उसपर जी चाहे उतना महसूल लगायें। यह फैसला सन् १६०६ ई० में हुआ। इस फैसले का परिणाम यह हुआ कि उसने दूसरी वस्तुओ पर भी जोकि बन्दरगाह में होकर आती थी, उन सब पर भी अधिक महसूल लगा दिया। इससे बादशाह की आमदनी बहुत अधिक बढ गई। इन अनुचित महसूलो का नाम Imposition (विशेष कर) था।

(१) प्रथम उसने ठेकेदारों पर मुकदमा चलाया और ठेकों को तोड़ दिया।

Sir Francis Bacon

(२) दूसरे, उसने बादशाह के मन्त्रियों पर मुकदमे चलाने के अपने अधिकार को फिर से स्थापित किया। इस अधिकार को सन् १४४९ ई० के बाद से दुबारा प्रयोग में नहीं लाया गया था। उसने बादशाह के लार्ड चान्सलर फ्रांसिस बेकन (Francis Bacon) पर रिश्वत लेने का अपराध लगाकर पार्लियामेण्ट में उस पर मुकदमा चलाया और वह अपने पद से पृथक् कर दिया गया। इस प्रकार पार्लियामेण्ट ने यह प्रकट कर दिया कि देश के शासक देश के प्रतिनिधियों के सम्मुख अपने कार्यों के लिये उत्तरदायी हैं।

(३) तीसरी बात यह हुई कि हाउस आफ कामन्स ने इस बात पर जोर दिया कि पार्लियामेण्ट के सदस्यों को अपने विचारों को प्रकट करने की पूरी स्वतन्त्रता है।

बादशाह अपने लड़के चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी से

करना चाहता था, ताकि स्पेन के बादशाह की सहायता से उसके दामाद फ्रेडरिक (Frederick) को पैलेटीनेट (Palatinate) वापिस मिल जाये, लेकिन पार्लियामेण्ट उसके सख़्त विरोध में थी, क्योंकि स्पेन रोमन कैथोलिक मत का मानने वाला था। पार्लियामेण्ट ने बादशाह से यह प्रार्थना की कि बजाय रोमन कैथोलिक के तुम किसी प्रोटैस्टेण्ट राजकुमारी से अपने लड़के चार्ल्स का विवाह करलो। बादशाह इस पर बहुत अप्रसन्न हुआ और उसने पार्लियामेण्ट को हिदायत की कि गवर्नमेण्ट के आन्तरिक महत्वपूर्ण प्रश्नों में मेम्बरों को हस्ताक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है लेकिन पार्लियामेण्ट ने अपना वही विचार स्थिर रख कर बादशाह के इस कथन का तीव्र विरोध किया और एक प्रस्ताव उपस्थित किया कि देश के प्रतिनिधियों को इस बात की पूरी स्वतन्त्रता है कि वे अपने स्वतन्त्र विचारों को पूरी तौर से प्रकट करें, चाहे वे किसी मामले पर क्यों न हों। इस पर बादशाह ने रुष्ट होकर पार्लियामेण्ट को भंग कर दिया और स्वयं जाकर हाउस आफ़ कामन्स के रजिस्टर में से उन पृष्ठों को फाड़ डाला जिन पर यह प्रस्ताव लिखा गया था।

चौथी पार्लियामेण्ट में बादशाह को किन्हीं विशेष कठिनाइयों का सामना नही करना पड़ा। कारण यह था कि पार्लियामेण्ट की इच्छा के अनुकूल स्पेन से इंग्लैण्ड का युद्ध आरम्भ होगया था। इस पार्लियामेण्ट ने ठेकों को ग़ैरक़ानूनी बतलाया और मिडिलसैक्सन के अर्ल लार्ड ट्रेज़रर आफ़ इंग्लैण्ड (Earl of Middlesex. Lord Treasurer of England) पर मुक़द्दमा चलाया गया।

इस काल में हाउस आफ़ कामन्स ने कई बातों में उन्नति की। प्रथम तो बादशाह के मंत्रियों पर मुक़द्दमा चलाने के अपने अधिकार को फिर दुबारा पूरे तौर से स्थापित कर लिया। दूसरे, अनुचित करों का विरोध किया, जोकि (Impositions) कहलाते थे। तीसरे, ठेके की रीति को गैरक़ानूनी घोषित कर दिया। चौथे, यह निर्णय कर दिया कि राष्ट्र के प्रतिनिधियों को हर प्रकार के मामले पर अपनी सम्मति प्रगट करने का अधिकार है।

सर वाल्टर रैले—सर वाल्टर रैले (Sir Walter Raleigh) महारानी एलिजावेथ के समय के प्रसिद्ध नाविकों मे से थे। जेम्स के सिंहासनारूढ़ होते ही सर वाल्टर रैले ने जेम्स की चचेरी बहन एराबेला स्टुआर्ट (Arabella Stuart) को सिंहासन पर बिठाने का प्रयत्न किया; लेकिन भेद खुल गया और उसको मृत्युपर्यन्त कारावास का दंड दिया गया। वह टावर आफ लन्दन (Tower of London) मे कैद कर दिया गया जहाँ वह लगभग १३ वर्ष तक क़ैद रहा। इस कारावास के काल में उसने संसार का एक इतिहास

नोट—अपने पुत्र चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी से करने की इच्छा जेम्स ने पार्लियामेण्ट के निश्चय के विरुद्ध की थी। उसकी यह नीति ट्यूडर राजाओ की नीति के विपरीत थी। उनकी नीति हमेशा प्रजा की इच्छाओ के अनुकूल रहती थी, लेकिन स्टुआर्ट बादशाह प्रजा का कुछ भी ध्यान नही रखते थे। स्पेन से मित्रता करने तथा इस विवाह के विषय में प्रजा लगातार राजा के विरुद्ध रही, तब भी उसने कुछ पर्वाह नही की। इसलिए झगडा अधिक बढा।

लिखा और सन् १६१४ ई० में बादशाह के सामने यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि वह बादशाह के लिये दक्षिणी अमेरिका में सोने की खाने खोज निकालेगा। अतएव उसको दक्षिणी अमेरिका में जाने को आज्ञा प्रदान की गई लेकिन उसे अच्छी तरह से हिदायत कर दी गई कि उसे स्पेन वालों से किसी प्रकार का झगड़ा नहीं करना चाहिए। परन्तु अमेरिका में पहुँचने पर उसको स्पेनवासियों से झगड़ने की नौबत आ ही पहुंची। इसपर स्पेनवासियों ने जेम्स से उसकी शिकायत की। जेम्स स्पेन के साथ अपने सम्बन्ध खराब नहीं करना चाहता था; इसलिये उसने रैले को इग्लैण्ड वापिस लौटने पर मजबूर किया और जब वह लौट आया, तो सन् १६१८ ई० में उसको मृत्यु का दंड दिया।

आयरलैण्ड और अलस्टर में प्रोटेस्टेंट उपनिवेश—

एलिजाबेथ के समय में आयरलैण्ड अंग्रेजों के अधिकार में आ चुका था, लेकिन आयरलैण्ड के लोग अंग्रेज़ी शासन के अत्यन्त विरोधी थे। कारण यह था कि वे लोग रोमन कैथोलिक थे। सन् १६०७ ई० में अर्ल आफ़ टाइरन (Earl of Tyron) ने अंग्रेजों पर आक्रमण करने का प्रयत्न किया और असफल होने पर वहाँ से भाग गया, मगर उसके मित्रों की जायदादें ज़ब्त कर ली गईं। सन १६१० ई० में जेम्स ने कैथोलिक लोगों की ज़ब्त की हुई ज़मीनें अपने सहधर्मियों को प्रदान कर दीं। यह घटना इतिहास में "अलस्टर का नववृक्षारोपण" (Plantation of Ulster) के नाम से प्रसिद्ध है।

उपनिवेश और पिलग्रिम फादर्स (सन् १६२०-२६ ई० तक)—अमेरिका में वर्जीनिया (Virginia) नाम का एक उपनिवेश स्थापित हो गया था। जेम्स प्रथम् के शासनकाल में सन् १६०७ ई० में उस उपनिवेश में जेम्सटाउन (Jamestown) नाम का एक नगर आवाद किया गया। कुछ समय के पश्चात् वर्जीनिया के उत्तर में और कई उपनिवेश आवाद किये गये जिनको कि "नूतन इंग्लेण्ड" (New England) का नाम दिया गया। ये प्रारम्भ के उपनिवेश उन अँग्रेजों ने जाकर स्थापित किये थे, जोकि इंग्लैण्ड मे जेम्स प्रथम के धार्मिक अत्याचारों से तंग आ चुके थे और जो केवल अपने धार्मिक सिद्धान्तों का पालन करने के लिए इंग्लैण्ड को छोडकर वहाँ अमेरिका मे जाकर आवाद हो गये थे। उन लोगों को कभी प्योरीटन (Puritans) और कभी "पिलग्रिम फादर्स" (Pilgrim Fathers) भी कहते है। ये लोग वड़े परिश्रमी और साहसी थे। उन्होंने वहाँ और भी कई उपनिवेश स्थापित किये थे।

भारतवर्ष से व्यापार—महारानी एलीजावेथ के समय में जो ईस्ट इंडिया कम्पनी (East India Company) स्थापित हुई थी उसकी सहायता और रियायत के लिए जेम्स प्रथम ने सर टामसरो (Sir Thomas Roe) और कप्तान हाकिन्स (Captain-Hawkins) को सम्राट् जहाँगीर के दरबार मे अपना राजदूत बनाकर भेजा। अतएव सन १६१६ ई० में सूरत में अँग्रेजों को अपनी व्यापारिक कोठियाँ खोलने की आज्ञा मिल गई और सन् १६३६ ई० मे मद्रास मे भी एक कोठी खोल दी गई।

जेम्स प्रथम के समय में सामाजिक अवस्था—जेम्स के शासनकाल में स्वास्थ्य के नियमों की ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता था। शहरों की गलियाँ तंग होती थीं और पानी बहाने की प्रणाली (Drainage System) बहुत ख़राब थी। इसलिये महामारी (Plague) बहुत फैली रहती थी। फल यह था कि जेम्स के शासन काल की प्रथम वर्ष में ही लगभग तीस हजार आदमी अकेले लन्दन नगर में ही प्लेग से मृत्यु को प्राप्त हो गये। इसलिये लगभग दस साल के बाद अर्थात् सन १६१३ ई० में लन्दन में पानी का अच्छा प्रबन्ध हुआ, जिससे कुछ दशा सुधरी। जेम्स के मरने के तीन साल पहले इंग्लैण्ड में राजनैतिक मामलों में लोगों को पर्याप्त रुचि उत्पन्न हो गई थी, और इसलिये अब सबसे पहला समाचार पत्र निकला, जिसका कि नाम (Weekly News) "वीकली न्यूज़" था। अमीर लोग गाड़ियों (Coaches) में निकलते थे और Seden Chairs (सीडन कुर्सियों) की प्रणाली अब प्रारंभ हुई।

जेम्स और विक्टोरिया के शासनों में अन्तरः—

जेम्स प्रथमः—	महारानी विक्टोरियाः—
(१) जेम्स अपने मन्त्रियो को सर्वदा इस दृष्टि से नही चुनता था कि वे सबसे योग्य थे।	(१) वास्तव में मन्त्रियो का निर्वाचन कामन-सभा करती है। महारानी उनको केवल "निमन्त्रित" करती थी।
(२) पार्लियामेण्ट का अधिवेशन होना अथवा उसका भग होना पूर्णतः राजा की इच्छा पर था।	(२) पार्लियामेण्ट का अधिवेशन प्रति वर्ष होता है।

(३) जेम्स के मत्री वही करते थे, जो वह कहता था। वे अपने कार्यों के लिये पार्लियामेण्ट के प्रति उत्तरदायी नही थे।

(४) जेम्स की आमदनी जागीरदारी की भूमि से तथा टनेज और पौंडेज आदि से होती थी जो जीवन भर के लिये निश्चित हो जाती थी।

(५) जेम्स किसी बिल को भी वीटो (Veto) की शक्ति से रद्द कर सकता था और वह इस अधिकार का बहुधा प्रयोग किया करता था।

(३) महारानी के मत्री अपने कार्यों के लिये पार्लियामेण्ट के प्रति पूर्णरूप से उत्तरदायी थे।

(४) महारानी की आय सिविल लिस्ट से तथा हाउस आफ कामन्स द्वारा स्वीकृत होकर आती थी, जिसके लिये मांग की जाती थी।

(५) यद्यपि महारानी भी वीटो (Veto) का अधिकार रखती थी, लेकिन उन्होने कभी भी किसी बिल के मामले मे उसका प्रयोग नही किया।

दूसरा अध्याय

चार्ल्स प्रथम

(सन् १६२५ से १६४६ ई० तक)

चार्ल्स प्रथम का चरित्र—चार्ल्स अपने पिता जेम्स प्रथम का द्वितीय पुत्र था। वह एक अति सुन्दर, गम्भीर, न्यायप्रिय और *

Charles I

धार्मिक प्रकृति का मनुष्य था। शरीर स्वास्थ्य, सौन्दर्य तथा विचारों में वह अपने पिता से बहुत बढ़ा चढ़ा था; लेकिन वह जेम्स के समान न तो विद्वान् था और न उसकी तरह संसार के विषयों का उतना ज्ञान ही रखता था। इसके विपरीत उसमे कई बुराइयाँ भी थीं, वह बड़ा दुराग्रही था, निर्बल हृदय और आत्माभिमानी था। इसके वचन का

Heneritte Maria

कोई विश्वास नहीं था। वह कहता कुछ था और करता कुछ था और यही उसकी वैदेशिक नीति की असफलता का मुख्य कारण था

एक ही समय में वह फ्रांस से कहता था कि तुम मुझसे स्पेन के विरुद्ध मित्रता करो और उसी समय स्पेन से कहता था कि तुम मुझसे फ्रांस के विरुद्ध मित्रता करलो। न तो वह स्वयं ही किसी दूसरे की बात अच्छी तरह समझ सकता था और न अपनी ही बात दूसरों को भली प्रकार समझा सकता था। वह अपने पिता की भाँति राजाओं के दैवी अधिकार में विश्वास रखता था, इसलिये वह प्रजा के अधिकारों और भावनाओं की कुछ भी पर्वाह नहीं करता था।

चार्ल्स की वैदेशिक नीति – जिस समय चार्ल्स राज-सिंहासन पर आरूढ़ हुआ, उस समय जर्मनी का तीस वर्षीय युद्ध जारी था। प्रथम तो उसने डेनमार्क के बादशाह को, जो प्रोटैस्टेण्ट लोगों की ओर से उनकी सहायता करने के लिये युद्ध में सम्मिलित हुआ था, रुपये से सहायता देने का वचन दिया; लेकिन पार्लियामेण्ट से रुपये की स्वीकृति न मिलने के कारण वह उतनी सहायता न कर सका, जितनी के लिये उसने वचन दिया था। फिर मन्त्री बकिंघम (Buckingham) और बादशाह ने यह उपाय सोचा कि प्रोटैस्टेण्टों की सहायता के लिये और फ्रेडरिक (Frederick) को स्वतन्त्र करने के लिये स्पेन के बादशाह पर आक्रमण किया जाय, ताकि उसके दबाव से सम्राट् फ्रेडरिक को स्वतन्त्र करदे और इसलिए कैडिज (Cadiz) पर आक्रमण करने के लिये एक सेना भेजी गई; लेकिन सन १६२५ ई० में वह सेना असफल होकर लौट आई।

इसके बाद चार्ल्स और फ्रांस के बीच मन मुटाव होगया। फ्रांस

के वादशाह लुई की यह इच्छा थी कि इंग्लैण्ड में कैथोलिक लोगों को धार्मिक स्वतन्त्रता मिल जाय और हैनरीटा (Henreitta) से विवाह के समय चार्ल्स ने यह वचन भी दिया था; लेकिन चार्ल्स अपने वचन का पक्का नहीं था और वह अब यह चाहता था कि उसके वदले में फ्रांस में प्रोटैस्टेण्ट लोगों को जो कि ह्यूगोनोट्स (Huegonots) कहलाते थे, उतनी ही धार्मिक स्वतन्त्रता मिल जाय; मगर उसकी यह आशा पूरी नहीं हुई। अतएव सन १६२७ ई० मे फ्रांस ने ह्यूगो-नोट्स पर आक्रमण कर दिया, तब चार्ल्स ने उनकी सहायता के लिये वकिंघाम की अध्यक्षता में एक जहाज़ी वेड़ा लाराशिल (Larachille) को भेजा; लेकिन वकिंघाम उसमें असफल रहा और दूसरी वार जब कि वह सेना लेकर जाने वाला था तो सन् १६२८ ई० मे फुल्टन ने उसका वध करके उसे समाप्त कर दिया। तव रुपये की कमी के कारण चार्ल्स ने यूरोप के युद्धों से अपना हाथ खींच लिया।

चार्ल्स और जेम्स की वैदेशिक नीति की असफलता—

इन दोनों राजाओं की वैदेशिक नीति की असफलता के कई कारण है:—

(१) इंग्लैण्ड मे उस समय कोई स्थायी सेना नहीं रहती थी। आवश्यकता के समय एक सेना तैयार कर ली जाती थी; लेकिन युद्ध का अनुभव न होने के कारण से यह सेना वहुत उपयोगी सिद्ध नहीं होती थी।

(२) पार्लियामेण्ट ने कभी भी न तो जेम्स को और न

चार्ल्स को धन से पर्याप्त सहायता दी, यद्यपि पार्लियामेण्ट स्वयं सदा युद्ध के लिये तैयार रहती थी।

(३) असली कारण चार्ल्स और जेम्स के चरित्र में पाया जाता है; जेम्स निर्बल हृदय का था। उसमें किसी बात का इरादा करके उसे अन्त तक पूरा करने की शक्ति नहीं थी और चार्ल्स के मन का भेद ही मालूम नहीं होता था—कहता कुछ था और करता कुछ था।

यही कारण उनकी वैदेशिक नीति की असफलता का है।

चार्ल्स और उसकी पार्लियामेण्ट (१६२५–२६)—

चार्ल्स प्रथम ने अपने शासनकाल के प्रथम चार वर्षों में तीन बार पार्लियामेण्ट का अधिवेशन बुलाया; लेकिन प्रत्येक अधिवेशन में उसका पार्लियामेण्ट के सदस्यों के साथ कुछ-न-कुछ झगड़ा ही हुआ। इस झगड़े के कारण निम्न प्रकार से है :—

(१) सिंहासन पर आरूढ़ होने के दो मास पश्चात् ही उसने फ्रांस के बादशाह हेनरी चतुर्थ की लड़की राजकुमारी हेनरीटा मैरिया (Henreitta Marie) से विवाह कर लिया, जो कि रोमन कैथोलिक थी। उसने अपने पति पर इतना ज़बर्दस्त प्रभाव डाल लिया था कि चार्ल्स की बहुत कुछ सहानुभूति कैथोलिक मतवालों के साथ हो गई थी। इससे इंग्लैण्ड की प्रजा अत्यन्त अप्रसन्न हो गई थी, विशेष कर प्योरीटन लोग जिनका कि पार्लियामेण्ट में प्राबल्य था, इसको बिल्कुल पसन्द नहीं करते थे।

(२) पार्लियामेण्ट के सदस्य बादशाह के कृपापात्र व्यक्तियों पर

विशेषतः ड्यूक आफ़ बकिंघाम पर विश्वास नहीं करते थे। उसके अतिरिक्त स्ट्रैफ़र्ड (Strafford) और लार्ड आदि भी बादशाह के बहुत मुँह लगे हुए थे, जिनको प्रजा पसन्द नहीं करती थी। प्रजा इस बात की इच्छुक थी कि बादशाह उन लोगों को पृथक् करदे, मगर बादशाह ऐसा नहीं करना चाहता था।

(३) चार्ल्स राजाओं के दैवी अधिकार (Divine Right of Kings) में विश्वास रखता था, इसलिए वह एक स्वेच्छाचारी सर्वाधिकारी राजा की भाँति शासन करना और अपनी इच्छा के अनुसार प्रजा पर कर लगाना चाहता था; परन्तु प्रजा प्रजातन्त्र शासन को चाहती थी। उसको अपने अधिकार और अपनी शक्ति का अनुभव हो चुका था, इसलिए बादशाह को स्वेच्छाचारी नहीं बनने देना चाहती थी।

(४) चार्ल्स का विचार था कि पार्लियामेण्ट और प्रजा के लोग उसके पिता की शन्तिमय वैदेशिक नीति को पसन्द नहीं करते थे, इसलिए उसने सिंहासन पर बैठते ही स्पेन के साथ युद्ध आरम्भ कर दिया, लेकिन पार्लियामेण्ट उसकी इस युद्ध की नीति को भी विश्वास के साथ नहीं देखतीं थी, क्योंकि पालियामेण्ट के मेम्बरों का विचार था कि ऐसा करने मे बादशाह का व्यक्तिगत स्वार्थ है और उससे देश को तनिक भी लाभ नहीं है। अतएव जब बादशाह ने युद्ध के लिए धन को माँग की तो पार्लियामेण्ट ने बकिंघाम को अपने पद से हटाने को कहा और उसकी वैदेशिक नीति से तनिक भी सहानुभूति प्रकट नहीं की। चार्ल्स ने क्रोधित होकर सन् १६२५

ई० में पार्लियामेण्ट का अधिवेशन भंग कर दिया। एक बुद्धिमान बादशाह ऐसी दशा में लड़ने से हाथ खींच लेता; लेकिन चार्ल्स ने एक न सुनी और लड़ाई जारी रक्खी और उसके अतिरिक्त एक दूसरी लड़ाई फ्रांस के विरुद्ध भी जारी करदी; लेकिन उन दोनों लड़ाइयों में वह असफल रहा।

चार्ल्स ने कैडिज (Cadiz) पर विजय प्राप्त करने के लिये कुछ सेना भेजी, मगर वह पूर्णतः असफल रही। उसके बाद वह फ्रांस के विरुद्ध भी हो गया और अब जब धन की आवश्यकता हुई, तो चार्ल्स ने फिर पार्लियामेण्ट से प्रार्थना की। उस पार्लियामेण्ट की बैठक सन् १६२६ ई० में हुई थी और यह पार्लियामेण्ट भी लड़ाई के उतनीही विरुद्ध थी, जितनी कि उससे पूर्व की पार्लियामेण्ट थी। इस पार्लियामेण्ट के नेता इलियट (Elliot) ने भी बकिंघाम को पदच्युत करने का आग्रह किया। इसपर चार्ल्स ने इस पार्लियामेण्ट को भी भंग कर दिया।

चार्ल्स की वैदेशिक नीति बिलकुल असफल रही और जबकि फ्रांस के प्रोटैस्टेण्ट लोगों ने अपने बादशाह के विरुद्ध विद्रोह किया तो चार्ल्स ने बकिंघाम को उनकी सहायता के लिये भेजा और चूँकि पार्लियामेण्ट ने धन से सहायता देने को इन्कार कर दिया था, इसलिये चार्ल्स ने लोगों से बल-पूर्वक ऋण (Forced Loan) लेना आरम्भ किया। यह कार्य क़ानून के नितान्त विरुद्ध था और इस कार्य में चार्ल्स के सहायकों ने अत्यन्त सख़्ती का वर्ताव किया। निरपराध व्यक्तियों को क़ैद कर लिया गया और जिन मुंसिफ़ों ने चार्ल्स के

विरुद्ध फ़ैसला दिया, उनको बर्खास्त कर दिया गया। जो लोग ऋण देने से इन्कार करते थे उनको क़ैद कर दिया जाता था। सेना के लिये लोग बलपूर्वक भर्ती किये जाने लगे और चूंकि रसद आदि का कोई अच्छा प्रबन्ध नही था, इसलिये सिपाहियों को शहर के मकानों में ठहरा दिया जाता था। इस कारण प्रायः शहर वालों और सिपाहियों में झगड़े भी हो जाया करते थे जोकि एक विशेष प्रकार की अदालत (Court Martial) में तय हुआ करते थे। इन सब बातों के करने पर भी बादशाह को सफलता प्राप्त नहीं हुई और अब चार्ल्स को यह बात पूरी तौर से विदित हो गई कि ला रौशेल (La Rachelle) को सहायता देने के लिये पार्लियामेण्ट से धन की स्वीकृति लेना आवश्यक है।

चार्ल्स की तीसरी पार्लियामेण्ट सन् १६२८ ई० मे निमंत्रित की गई। इस समय हाउस आफ़ कामन्स के नेता सर टामस वेंटवर्थ (Sir Thomas Wentworth) और सर जान एलियट (Sir John Elliot) थे। इस पार्लियामेण्ट ने प्रथम दो पार्लियामेण्टों की अपेक्षा बादशाह का और अधिक विरोध किया। चार्ल्स ने आज्ञा भेजी कि आप लोग मेरे आदेश के अनुसार धन की ठीक स्वीकृति दें और किसी विषय पर किसी प्रकार का विवाद न करें, लेकिन पार्लियामेण्ट ने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया बल्कि अपने अधिकारों की एक सूची प्रार्थनापत्र के रूप मे तैयार की जो कि "अधिकारों का प्रार्थना पत्र" (Petition of Rights) के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रार्थनापत्र में राष्ट्र के प्रतिनिधियों ने अपने कष्ट और बादशाह के अत्याचारों का वर्णन करते हुए निम्न लिखित अपनी माँगें उपस्थित कीं :-

(१) बादशाह पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के बिना किसी से बल पूर्वक ऋण (Forced Loan) अथवा भट नहीं लेगा और किसी प्रकार का कर नहीं लगायेगा।

(२) वह किसी मनुष्य को जेलख़ाने में बन्द नहीं करेगा। जब तक कि मनुष्य के विरुद्ध कोई कानूनी अपराध सिद्ध न हो जायगा।

(३) सिपाहियों और मल्लाहों को यह अधिकार नहीं होगा कि वे किसी के मकान पर उसकी आज्ञा के बिना डेरा डाल दें।

(४) वह अपनी प्रजा पर फौजी क़ानून (Martial Law) से शासन नहीं करेगा।

कुछ सोच विचार के बाद बादशाह ने इस प्रार्थनापत्र पर अपनी स्वीकृति के हस्ताक्षर कर दिये और तब पार्लियामेण्ट ने अपनी इच्छा से उसके लिये रुपये की स्वीकृति देदी। पार्लियामेंट से रुपये की स्वीकृति मिल जाने से ला रौशेल को सहायता पहुँचाने में सुगमता हो गई और बादशाह ने बकिंघाम को सेना दे कर फ्राँस से युद्ध करने के लिये भेज दिया। इस समय फेल्टन (Felton) ने सन् १६२८ ई० में उसको मार्ग में मार डाला। उसने किसी राजनीतिक मामले के कारण से उसकी हत्या नहीं की थी, बल्कि वह उससे किसी व्यक्तिगत मामले के कारण द्वेष रखता था। इंग्लैण्ड की प्रजा बकिंघाम से बहुत घृणा करती थी और इसी लिए बादशाह चार्ल्स को छोड़ कर उसके मरने का शोक और किसी को नहीं हुआ।

सन् १६२६ ई० में चार्ल्स की तीसरी पार्लियामेण्ट का दूसरा अधिवेशन हुआ। उसमें हाउस आफ़ लार्डस ने बादशाह के कई कामों

पर बहुत आपत्ति उठाई। चार्ल्स एक नया कर जिसको कि टनेज (Tonnage) और पौंडेज (Poundage) कहते थे लगाता रहा था। सदस्यों ने इस पर बड़ी आपत्ति की, और जब कि चार्ल्स ने उन मनुष्यों को क़ैद कर लिया जिन्होंने यह कर देने से इन्कार किया था तो मेम्बरों ने कहा कि इस प्रकार गिरफ्तार कर लेना पार्लियामेण्ट के मेम्बरों को गिरफ्तारी से मुक्त रहने के अधिकार पर आक्रमण है।

इसके अतिरिक्त चार्ल्स ने (Arminian Party) आर्मीनियन दल के कुछ मनुष्यों को विषपों के पदों (Bishoprics) और गिरजाघरों के कुछ दूसरे पदों पर प्रतिष्ठित कर दिया। इस बात को पार्लियामेण्ट के प्योरीटन मेम्बरों ने बहुत नापसन्द किया और एलियट (Elliot) के प्रस्ताव पर यह निर्णय हुआ कि वे सब लोग जिन्होंने कि आर्मीनियनों (Arminians) को पद दिये है, अथवा धर्म के कामों में किसी प्रकार का परिवर्तन उपस्थित किया है अथवा जिन्होंने टनेज और पौंडेज का टैक्स पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के बिना दिया है, वे सब देश के शत्रु है।

इसके बाद पार्लियामेण्ट की बैठक भंग करदी गई। और एलियट को टावर में बन्द कर दिया गया जहाँ वह राजयक्ष्मा के रोग से पीडित होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

ग्यारह वर्ष का स्वेच्छाचारी शासन
(सन् १६२६ से १६४० ई० तक)

पाँच वर्ष की लड़ाई ने यह बात निश्चित कर दी थी कि पार्लिया-

मेण्ट और बादशाह में इस प्रकार परस्पर मेल जोल नहीं रह सकता है। अतएव ग्यारह वर्ष तक वादशाह ने बिना पार्लियामेण्ट के स्वेच्छाचारी शासन किया। इस बीच उसने शासन को संचालित करने के लिए पार्लियामेण्ट से किसी प्रकार रुपया नहीं लिया, बल्कि निम्नलिखित उपायों को वह काम में लाता रहा :—

उसने फ्रांस और स्पेन के साथ सन्धि करली और अपने निजी खर्चों में बड़ी मितव्ययता से चला। इतना सब कुछ करने पर भी उसको धन की आवश्यकता होती थी, इसलिए उसने कर लगाकर लोगों से रुपया वसूल करने की रीति को फिर से प्रचलित कर दिया। उसने चुंगी के महसूल को पहले से कुछ बढ़ा दिया और टनेज और पौंडेज भी वसूल करता रहा। इसके अतिरिक्त उसने जहाज़* चलाने के क़ानून को फिर से प्रचलित किया और जहाज़ी कर वसूल किया।

हैम्पडन के विरुद्ध अभियोग (सन् १६२८ ई०)— वकिंघाम नगर के एक मनुष्य जान हैम्पडन (John Hempden) ने इस प्रकार के क़ानून के विरुद्ध "जहाज़ी कर" (Ship money) देने से इन्कार कर दिया। उसको तुरन्त गिरफ़्तार करके उसपर अभियोग चलाया गया। जजों ने उस महसूल को क़ानून के अनुसार

---

* Ship money या जहाजी कर एक पुराना टैक्स था जो बादशाह युद्ध के समय समुद्री बेडे के व्यय के लिए वन्दरगाहो के लोगो पर लगाया करता था- लेकिन चार्ल्स ने उसको देश के अन्दर के शहरो के लोगो पर भी लगा दिया, और इसके लिए पार्लियामेण्ट से कोई स्वीकृति प्राप्त नही की।

ठहराया। इस फ़ैसले के होने पर भी लोग इस कर का विरोध करते रहे। अदालत के इस फ़ैसले ने पार्लियामेण्ट और बादशाह के बीच के सम्बन्ध को और भी तीखा कर दिया।

चार्ल्स की धार्मिक नीति—चार्ल्स की धार्मिक नीति ने उसको और भी अधिक बदनाम कर दिया। वह प्योरीटन दल का महान् शत्रु था। उसका धार्मिक बातों में सलाह देने वाला लाड (Laud) था जोकि आर्मिनिया (Arminia) का रहनेवाला था। उसको बादशाह ने सन् १६२८ ई० में लन्दन का विशप (Bishop) बना दिया और सन् १६३३ ई० मे कैण्टरवरी का बड़ा पादरी (Arch Bishop of Canterbury) बना दिया। लाड (Laud) विद्वान्, सच्चरित्र और सज्जन मनुष्य था और वह गिरजाघरों की दशा को भी सुधारना चाहता था। लेकिन वह लोगों के स्वभावों को पह-चान नहीं सकता था जो कि उससे भिन्न मत रखते थे, इसलिए उसने प्योरिटन दलवालों (Puritans) पर बहुत सख्तियाँ करनी आरम्भ कर दीं जिससे वे लोग अत्यन्त रुष्ट हो गये। पूर्व से स्थापित इंगलिश चर्च के नियमों को तथा प्रार्थनापुस्तक को न मानने के अपराध में उनको धार्मिक अदालतों (Court of High Communion) तथा कोर्ट आफ स्टार चेम्बर (Court of Star Chamber) द्वारा सख्त सजायें दिलाई गई जिससे ये अदालतें बदनाम हो गईं। लाड ने अपने मित्रों को सरकार में अच्छे ऊँचे पद दिलाने आरम्भ किये, उनमे से वर्णन करने योग्य सर टामस वेंटवर्थ (Sir Thomas Wentworth) है। उसने पहले "अधिकारों के प्रार्थना पत्र"

(Petition of Rights) के पास कराने में बहुत भाग लिया था और बकिंघाम पर बहुत आपत्तियां की थीं। बकिंघाम के मरने के बाद उसने पुराने मित्रों से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया और उस नये दल में शामिल हो गया और लाड का मित्र बन गया। बादशाह ने अब उसको आयरलैण्ड का डिप्टी नियुक्त कर दिया जहाँ कि उसने बहुत कड़ाई के साथ शासन कार्य किया।

विलियम लाड और स्काटलैण्ड—इंगलैण्ड के चर्च में कुछ परिवर्तन करने के बाद लाड ने स्काटलैण्ड की ओर ध्यान दिया। सन १६३३ ई० में चार्ल्स एडिनबरा गया और वहाँ पर वह स्काटलैण्ड का बादशाह स्वीकार कर लिया गया। लाड भी उसके साथ एडिनबरा (स्काटलैण्ड की राजधानी) गया और उसकी सम्मति से स्काटलैण्ड के चर्च में परिवर्तन होने आरम्भ हुए। स्काटलैण्ड के लोग अधिकतर कट्टर प्रोटैस्टेंट (Presbyterians) थे उनकी न कोई प्रार्थना पुस्तक थी और न उनके पादरी होते थे। बादशाह ने उनके लिए भी एक प्रार्थना पुस्तक (Prayer Book) तैयार कराई और यह निश्चय किया कि सन १६३७ ई० से यह पुस्तक स्काटलैंड में प्रयोग में लाई जाय। वह पुस्तक इतनी खराब थी कि न तो स्काटलैंड की पार्लियामेंट ने और न स्काटलैंड के चर्च ने उसके लिए स्वीकृति दी, लेकिन बादशाह ने अपनी आज्ञा से ही उसे प्रचलित करा दिया।

स्काटलैण्ड के निवासियों ने इस पुस्तक का बड़ा तीव्र विरोध किया और मार्च सन् १६३८ ई० में एक राष्ट्रीय प्रतिज्ञापत्र (National

Convention) पर सब ने हस्ताक्षर किये कि देश के प्रेसविटेरियन चर्च (Presbyterian Church) की रक्षा करना वे अपना प्रधान कर्तव्य समझेंगे। इसके बाद गिरिजाघरों के अधिकारियों की एक सभा ग्लासगो (Glasgow) मे बुलाई गई जिसने बादशाह की इस धार्मिक नीति का घोर विरोध किया। इस पर बादशाह ने अप्रसन्न होकर उस सभा को भंग कर दिया।

पादरियों का युद्ध—सन १६३६ ई० में चार्ल्स युद्ध करने के लिए कटिबद्ध हो गया। यह लडाई "पादरियों का युद्ध"(Bishops' war) के नाम से प्रसिद्ध है। इसमे चार्ल्स की पराजय हुई और उसे बर्विक (Berwick) के स्थान पर सन्धि करने के लिए विवश होना पडा। इसके बाद चार्ल्स ने स्ट्रैफोर्ड (Strafford) को आयरलैंड से बुलवाया और सन् १६४० ई० मे "पादरियों का दूसरा युद्ध" (Second Bishops' War) हुआ जिसमें चार्ल्स की फिर पराजय हुई और अब की बार स्काटलैंड वालों ने इंगलैंड के उत्तरी पूर्वी भाग पर आक्रमण करके वहांपर पडाव डाल दिया। फिर निराश होकर चार्ल्स ने सन्धि करली और स्काटलैण्ड वालों को उसने अब पूरी तौर से धार्मिक स्वतन्त्रता दे दी।

अल्पकालीन पार्लियामेंट—(Short Parliament)—पादरियों के द्वितीय युद्ध से पहले चार्ल्स को धन की आवश्यकता हुई और जब कोई दूसरा उपाय लाभदायक सिद्ध न हुआ तो उसने सन् १६४० ई० मे मजबूर होकर पार्लियामेण्ट का अधिवेशन बुलाया लेकिन पार्लियामेण्ट ने उस समय तक उसको कुछ भी धन देने से

इन्कार कर दिया जब तक कि बादशाह लोगों की शिकायतों को दूर न कर दे। बादशाह ने इस पर क्रोधित होकर पार्लियामेण्ट को भंग कर दिया। इस पार्लियामेंट को "अल्पकालीन पार्लियामेण्ट" (Short Parliament) कहते हैं क्योंकि यह केवल तीन सप्ताह तक ही रही थी।

दीर्घ पार्लियामेंट--(Long Parliament)—सन १६४० ई० में ही धन की आवश्यकता के कारण बादशाह को फिर पार्लियामेण्ट का अधिवेशन बुलाना पड़ा। यह पालियामेण्ट "दीर्घ पार्लियामेण्ट" (Long Parliamet) के नाम से प्रसिद्ध है। इस पार्लियामेण्ट के नेता पिम (Pym), हैम्पडन (Hampden), क्रामवैल (Cromwell), फाकलैण्ड (Falkland), और हाइड (Hyde), आदि थे। उन्होंने सब से पहले पादशाह के मंत्रियों की खबर ली। पार्लियामेण्ट ने वैंटवर्थ पर सबसे पहले मुक़द्दमा चलाया जिसको कि बादशाह ने आयरलैण्ड का डिप्टी शासक बनाकर अर्ल आफ़ स्ट्रैफोर्ड (Earl of Strafford) बना दिया था। लेकिन उस अभियोग के लिए पर्याप्त प्रमाण न मिलने के कारण पार्लियामेण्ट ने एक्ट आफ़ अटेण्डर (Act of Attainder) पास किया जिसके अनुसार बिना अपराध किये ही उसको सन् १६४१ ई० में मृत्यु का दण्ड दिया गया। लाड को क़ैद कर लिया गया और चार वर्ष के बाद उसको भी फांसी दे दी गई।

दूसरे, क़ानून के विरुद्ध सब अदालतें जैसे कोर्ट आफ़ हाई कमीशन (Court of High Commission) और कोर्ट आफ़

स्टार चैम्बर (Court of Star Chamber) जो कि लोगों पर अत्याचार करने के लिए बादशाह की बहुत सहायक बनी हुई थीं, वे सब बन्द कर दी गईं और जिन लोगों को उन अदालतों ने सजायें देकर क़ैद कर दिया था, उन सबको मुक्त कर दिया गया।

तीसरे, गैर कानूनी महसूलों को जैसे जहाज़ी कर (Ship money), टनेज (Tonnage), पौंडेज (Poundage) जिन को कई अदालतों ने बादशाह के प्रभाव से कानूनी ठहरा दिया था, उन सबको पार्लियामेण्ट ने गैरकानूनी ठहरा दिया।

चौथे, एक "त्रिवर्षीय एक्ट" (Triennial Act) पास किया गया जिसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि तीन साल के समय में कम-से-कम एक बार पार्लियामेण्ट का अधिवेशन अवश्य बुलाया जाया करेगा। और यह कानून भी पास हुआ कि वर्तमान पार्लियामेण्ट को बिना उसकी इच्छा के बादशाह भंग नहीं कर सकेगा।

इस प्रकार इस दीर्घकालीन पार्लियामेण्ट ने बादशाह के कई अधिकार सीमित करके वास्तविक शक्ति को अपने हाथ में ले लिया।

पार्लियामेण्ट में मतभेद--इन सब कानूनों को स्वीकार कराते समय पार्लियामेण्ट में दो दल नहीं थे। ये सब कानून सब मेम्बरों ने मिलकर एक मत होकर सर्वसम्मति से पास किये थे लेकिन अब एक धार्मिक विषय को लेकर पार्लियामेण्ट के सदस्यों में दो दल होगये। पार्लियमेण्ट में प्योरिटन (Puritans) लोगों की पर्याप्त संख्या थी। उन्होंने एक प्रस्ताव "मूल और शाखा" बिल (Root and Branch Bill) उपस्थित किया, जिसके अनुसार इंगलिश

चर्च से पादरियों को बिल्कुल अलग कर दिया जाता। इंगलिश चर्च के पक्षपातियों ने इस बिल का तीव्र विरोध किया और यह बिल पास नहीं हो सका। इस मतभेद के कारण पार्लियामेण्ट में दो दल स्थापित हो गये और जिस मेल के कारण इनको अब तक सफलता प्राप्त होती रही थी, उसका अब अन्त होगया। इन दलों में से एक दल के नेता पिम (Pym) और हैम्पडन (Hampden) थे, और दूसरे दल के अगुआ (Hyde), फाकलैण्ड (Falkland) कैरी (Cary), और ल्यूक्रीज़ (Lucries) थे।

पार्लियामेण्ट छुट्टी के दिनों में बन्द हो गई। स्काटलैण्ड में चार्ल्स के कुछ मित्रों ने प्रेसबिटेरियन नेताओं को गिरफ्तार करने का जाल रचा था। चार्ल्स भी वहीं गया हुआ था। इससे बादशाह बहुत बद-नाम हो गया। इसी बीच में आयरलैण्ड से एक विद्रोह का समाचार आया जिसमें कि कैथोलिक लोगों ने बहुत-से प्रोटैस्टेण्ट लोगों की हत्या कर डाली। पार्लियामेण्ट के प्योरीटन मेम्बरों का यह विचार हो गया कि इस सब में बादशाह का हाथ है।

महान् विरोधपत्र (सन् १६४१ ई०)—अवकाश के बाद सन् १६४१ ई० में पार्लियामेण्ट की फिर बैठक आरम्भ हुई तो पार्लि-यामेण्ट ने "महान् विरोधपत्र" (Grand Remonstrance) तैयार किया जिसमें बादशाह के कार्यों पर टीका टिप्पणी की गई थी। अब यह प्रस्ताव हुआ कि पहले ऐसे मन्त्री नियुक्त किये जावें जो पार्लिया-मेण्ट के सम्मुख उत्तरदायी हों। दूसरे, चर्च के मामलों का फैसला

धार्मिक विद्वानों की एक सभा किया करे जिसके सदस्यों का निर्वाचन पार्लियामेण्ट की सम्मति से हुआ करे।

इस प्रश्न ने पार्लियाण्ट मे बादशाह के पक्षवालों की संख्या में वृद्धि करदी और अब पार्लियामेण्ट में बराबर के दल हो गये। हाइड (Hyde) और फाकलेण्ड (Falkland) जिन्होंने कि रूट और ब्रांचबिल (Root and Branch Bill) के विरुद्ध वोट दिया था, उन्होंने फिर उन मेम्बरों को वोट देने के लिये एकत्रित किया लेकिन पिम (Pym) और हैम्पडन (Hampden) के प्रयत्न से यह बिल ११ वोटों से पास होगया।

पार्लियामेण्ट के मेम्बर जो आरम्भ मे सब एक मत के थे, अब दो दलों मे विभक्त होगये। "महान् विरोधपत्र" का विरोध करने वाले (Against Grand Remonstrance) वैधानिक शासन के पक्ष में थे, और गिरजाघरों मे बहुत कुछ परिवर्तन नहीं करना चाहते थे। चार्ल्स की बुद्धिमानी इसी मे थी कि वह इस दल को अपनी ओर कर लेता, लेकिन उसमे इतनी बुद्धि नहीं थी कि वह किसी मामले की गहराई तक पहुँच सके। पार्लियामेण्ट मे फूट देखकर उसकी वास्तविक इच्छा यह हुई कि वह सब अपने अधिकार जो उसने अभी तक खो दिये हैं, उनको फिर से प्राप्त करे। इसी उद्देश्य से ३ जनवरी सन १६४२ ई० में उसने एक मूर्खता का कार्य किया कि पार्लियामेण्ट के पाँच सदस्यों को गिरफ्तार करना चाहा। जिनमें पिम और हैम्पडन (Pym and Hampden) भी थे। उनपर विद्रोह का अपराध लगाया। उसके बाद पार्लियामेण्ट भवन में वह स्वयं गया और उनको

गिरफ्तार करना चाहता था, लेकिन वह पहले ही से वहाँ से भाग गये थे। उसके इस मूर्खता के कार्य से लोगों के भाव उसके विरुद्ध भड़क उठे। इस पर बादशाह ने अपने आपको अरक्षित समझा और वह नौटिंघाम (Nottingham) को भाग गया। इसी समय पार्लियामेण्ट ने अच्छा अवसर देखकर युद्ध की घोषणा अपने बादशाह के ही विरुद्ध कर दी। इस प्रकार इंग्लैण्ड में एक महान् गृहयुद्ध (Civil war) आरम्भ हो गया।

गृह युद्ध की घटनायें—सारा देश इस समय दो भागों में विभक्त हो गया था। वे सब लोग जिन्होंने हाइड और फाकलैण्ड (Hyde and Falkland) का साथ दिया था, अब बादशाह के पक्ष में थे और हाउस आफ़ लार्डस का एक तिहाई से अधिक भाग तथा अन्य लार्ड लोगों का आधे से अधिक भाग बादशाह के पक्ष में था। देहातवालों ने भी बादशाह का ही साथ दिया, लेकिन नगरों के निवासी और मध्यम श्रेणी के लोग पार्लियामेण्ट के साथ थे। दोनों दलों में राजनैतिक मामलों के कारण इतना अन्तर नहीं था जितना कि धार्मिक मामलों के कारण से होगया था। एक ओर प्योरीटन दल वाले थे जिन्होंने पार्लियामेण्ट के अधिकारों की रक्षा के लिए बादशाह के विरुद्ध युद्ध किया था। दूसरी ओर हाईचर्च पार्टी और रोमन कैथोलिक लोगों ने बादशाह का साथ दिया था। भौगोलिक दृष्टि से दोनों दलों में अन्तर बतलाना सुगम होगा। देश के उत्तरी और पश्चिमी भाग के लोग बादशाह के पक्ष में थे और दक्षिणी तथा पूर्वी भाग के लोग, जहाँ व्यापार के केन्द्र होने के कारण से देश के

निवासी शिक्षित और देश की स्वतन्त्रता के प्रेमी थे, पार्लियामेण्ट के पक्ष मे थे। बादशाह के पक्ष वाले कैवेलियर (Cavalier) कहलाने लगे क्योंकि इनके पास घुड़सवारों की सेना पर्याप्त थी, और पार्लियामेण्ट के पक्ष वालों का नाम प्योरीटन होने के कारण से "राउण्डहेड" (Roundhead) पड़ गया था।

जहाजी बेड़ा पार्लियामेण्ट की ओर था। और यद्यपि बड़े-बड़े पैदल सिपाही राष्ट्र की सेना के ही साथ थे लेकिन घुड़सवार चार्ल्स के सहायक थे। उस समय मे घुड़सवारों के सामने पैदल सिपाहियों की कुछ भी गिनती नहीं थी। बादशाही पक्षवालों मे प्रिंस रूपर्ट (Prince Rupert) जैसे अनुभवी सैनिक नायक थे। पार्लियामेण्ट की सेना का मुख्य सरदार लार्ड एसेक्स (Lord Essex) था।

प्रारम्भ मे बादशाह की शक्ति प्रबल थी और उसकी इच्छा यह थी कि लन्दन पर जो कि उस समय पार्लियामेण्ट के अधिकार मे था, आक्रमण करके उसपर अपना अधिकार करले। इसी उद्देश्य से उसने प्रिंस रूपर्ट (Rupert) की अध्यक्षता मे मध्यवर्त्ती प्रान्तों से लन्दन की ओर एक सेना प्रेषित की, लेकिन ऐजहिल (Edgehill) के स्थान पर सन् १६४२ ई० मे एसेक्स (Essex) ने उस सेना पर छापा मारा। युद्ध हुआ। दोनों पक्षों की बराबर हानि हुई। एजहिल के युद्ध के समाप्त होने पर चार्ल्स की सेना लन्दन के बहुत निकट थी। अगर उस समय वह सेना लन्दन पर छापा मार देती तो बहुत संभव था कि उसकी विजय हो जाती और लन्दन बादशाह के हाथ मे आ जाता, लेकिन लन्दन के बजाय वह आक्सफोर्ड की ओर बढ़ी

और उसे अपने अधिकार में कर लिया। प्रिंस रूपर्ट दो वर्ष तक आक्सफोर्ड को अपना केन्द्र बनाये पड़ा रहा। सन् १६४३ ई० को न्यूबरी (Newbury) के स्थान पर एसेक्स से फिर युद्ध हुआ। अबकी बार चार्ल्स की सेना की अधिक हानि हुई और उसको भागकर आक्सफोर्ड में शरण लेनी पड़ी।

अब दोनों पक्ष वालों ने बाहर से सहायता माँगी। पार्लियामेण्ट और स्काटलैण्ड में आपस में सन्धि हुई जिसको "गम्भीर संघ और संधिपत्र" (Solemn League and covenant) कहते हैं। उसके अनुसार स्काटलैण्ड निवासियों ने पार्लियामेंट को इस शर्त पर सहायता देने का बचन दिया कि इंग्लैण्ड चर्च का भी सुधार स्काटलैण्ड के चर्च के आदर्श पर ही किया जावे। यह देखकर चार्ल्स ने अपनी सहायता के लिये आयरलैंड से एक सेना मँगाली। सन् १६४३ ई० में पार्लियामेण्ट की सहायता के लिये इंग्लैण्ड के पूर्वी प्रान्तों ने एक दल "पूर्वीय संघ" (Eastern Association) बनाया जिसका उद्देश्य पार्लियामेण्ट के लिये सैनिक पहुँचाना था। इसका सेनापति आलीवर क्रामवैल (Oliver Cromwell) था, जो कि सेनापतित्व के कार्य में अत्यन्त निपुण था।

मार्स्टनमूर (Marstonmoor) के स्थान पर क्रामवैल और रूपर्ट का सामना सन १६४४ ई० में हुआ जिसमें क्रामवैल ने सबसे पहले वीरता के जौहर दिखाये और विजय प्राप्त की। इसी वर्ष पार्लियामेण्ट और चार्ल्स का सामना न्यूबरी (Newbury) पर फिर हुआ और इस युद्ध में भी दोनों पक्षों को लाभ और हानि लगभग बराबर ही हुई।

क्रामवेल ने बहुत जल्द भांप लिया कि सेना में बहुत से दोष हैं और जबतक वे दोष दूर न होंगे, तबतक विजय प्राप्त करना कठिन है। इसलिये उसने एक नई सेना तैयार की जो कि "नवीन आदर्श सेना" (New Model Army) के नाम से प्रसिद्ध हुई। तब क्रामवेल ने पार्लियामेंट से एक कानून स्वीकार कराया जिसके अनुसार यह तय पाया कि पार्लियामेंट के मेम्बर सैनिक अफ़सर नहीं हो सकते क्योंकि उनमे सैनिक योग्यता नहीं थी। इस क़ानून के अनुसार जो मेम्बर अबतक सैनिक पदों पर थे उन सबने त्यागपत्र दे दिये। इस प्रकार नवीन आदर्श सेना मे उत्तम सेनापति और योग्य अफसर नियुक्त किये गये। क्रामवेल को अच्छी सैनिक सेवाओं के बदले उत्तम सैनिक का पद मिल गया। फेयरफैक्स (Fairfax) सेनापति नियुक्त हुआ। और क्रामवेल उसका नायब या उपसेनापति था। इस नयी आदर्श सेना ने नेजबी (Naseby) के स्थान पर सन १६४५ ई० मे बादशाह की सेना को बहुत बुरी तरह से पराजित किया।

इस पराजय के एक वर्ष पश्चात् बादशाह ने निराश होकर अपने आपको स्काटलैण्ड के चर्च के सुपुर्द कर दिया जिसने कि उसको प्रसविटेरियन चर्च को स्वीकार करने को कहा, लेकिन उसके इन्कार करने पर उसको पार्लियामेंट के सुपुर्द कर दिया। अगर चार्ल्स स्काटलैण्ड वालों को अंग्रेजों के विरुद्ध नहीं कर सका था तब भी उसको यह एक अवसर और मिला था कि वह पार्लियामेण्ट के जो इस समय दो दल हो रहे थे उनमें से एक दल को अपनी ओर मिला

कर अपनी शक्ति को बढ़ा लेता लेकिन अपनी योग्यता की कमी के कारण वह यह भी नहीं कर सका।

पार्लियामेण्ट और सेना में झगड़ा—युद्ध समाप्त हो जाने के बाद पार्लियामेण्ट और सेना के बीच दो बातों के कारण से झगड़ा आरम्भ हो गया—(१) धार्मिक मतभेद, और (२) सेना के वेतन के विषय में सबका मतैक्य नहीं हो सका। पार्लियामेण्ट के अधिकतर सदस्य प्रेसबिटेरियन (Presbyterian) चर्च के सिद्धान्तों को मानते थे और स्काटलैण्ड के चर्च के अतिरिक्त शेष सब धार्मिक संस्थाओं को घृणा की दृष्टि से देखते थे।

दूसरा दल "स्वतन्त्र दल" (Independents) था, जो किसी विशेष प्रकार के धार्मिक दल का पक्ष नहीं करता था और जो सबको पूरे तौर से धार्मिक स्वतंत्रता देने के पक्ष में था। इन दूसरे पक्षवालों की संख्या "नवीन आदर्श सेना" में भी पर्याप्त थी।

इस धार्मिक मतभेद के अतिरिक्त पार्लियामेण्ट को यह अंदेशा हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि सेना उसकी अध्यक्षता और प्रभुता को स्वीकार न करे। इस कारण से और दूसरे युद्ध भी समाप्त हो गये थे, इन दोनों कारणों से पालियामेण्ट ने सेना को ६ सप्ताहों का वेतन देकर उसे भंग करना चाहा। सेना ने इस बात को स्वीकार नहीं किया और इस प्रकार आपस में झगड़ा आरम्भ हो गया। क्रामवेल ने दोनों में समझौता कराना चाहा, लेकिन वह असफल रहा।

सेना और बादशाह (जून १६४७ से सितम्बर १६४७ तक)

सेना ने अपनी शक्ति के द्वारा जून सन १६४७ ई० में बादशाह

को अपने अधिकार मे कर लिया और उसके साथ सन्धि की चर्चा आरम्भ करदी। सन्धि की शर्तें खराब नहीं थीं। वे इस प्रकार थीं:—

(१) चर्च प्रथा स्थिर रक्खी जायगी, लेकिन अन्य मतों को सहिष्णुता से देखा जायगा।

(२) कौंसिल आफ़ स्टेट बनाई जायगी, जो बाहरी मामलों का प्रबन्ध किया करेगी।

(३) दस वर्ष तक मंत्रियों की नियुक्ति पार्लियामेण्ट के हाथ में रहेगी।

लेकिन चार्ल्स का विचार था कि सेना और पार्लियामेण्ट का झगड़ा उसके लिये अधिक लाभदायक सिद्ध होगा, इसलिये उसने उपरोक्त सन्धि की शर्तों को स्वीकार नहीं किया और छिपकर के कहीं भाग गया।

स्काटलैंड के हाथ में चार्ल्स (नवम्बर १६४७ से अगस्त १६४८ ई. तक)—चार्ल्स सन् १६४७ ई० मे नवम्बर के महीने में सेना से छिप कर भाग कर वाइट (Isle of Wight) टापू में जा पहुँचा और वहां से उसने स्काटलैण्ड वालों से पत्र-व्यवहार करना आरम्भ कर दिया। उसने उसके प्रेसबिटेरियन सिद्धान्तों को मानने की शर्त भी स्वीकार करली। इसपर स्काटलैण्ड वालों ने इस बार बादशाह के पक्ष मे होकर युद्ध आरम्भ किया और इंग्लैण्ड की हाई चर्च पार्टी ने उसका साथ दिया। इस प्रकार दूसरा गृहयुद्ध (Second Civil War) आरम्भ हुआ। हैमिल्टन (Hamilton)

स्काटलैण्ड की सेना के साथ इंग्लैण्ड में पहुंचा; लेकिन प्रेस्टन (Preston) के स्थान पर नवीन आदर्श सेना ने जुलाई सन १६४८ ई० में उसको पराजित कर दिया और स्काटलैण्ड की सेना का पीछा किया। लगभग १० हज़ार आदमी पकड़ लिये गये। इस पर स्काटलैण्ड वालों ने सन्धि करली।

बादशाह और पार्लियामेंट में संधि-वार्त्ता—इस पराजय से बादशाह की समस्त आशाओं पर तुषारपात हो गया। उसने फिर दुबारा पार्लियामेण्ट से सन्धि की चर्चा आरम्भ की। अब की बार उसने प्रेसविटेरियन चर्च स्थापित करने का वचन दिया; लेकिन अब सेना बादशाह के बिल्कुल विरुद्ध हो गई थी और उसको विश्वास हो गया था कि चार्ल्स के रहते हुए, अब देश में सुख शान्ति कभी स्थापित नहीं हो सकती और जब कि वापिस आने पर सेना ने बादशाह को पार्लियामेण्ट से फिर सन्धि करते हुए देखा, तो उसने बल (Force) से काम लिया और उन समस्त मेम्बरों को, जो कि बादशाह के पक्ष में थे, बलपूर्वक निकाल बाहर किया। इससे बादशाह को जो कुछ दुबारा आशा बँधी थी, उस पर भी पानी फिर गया और अब वह बिल्कुल निराश हो गया।

प्राइड पर्ज (७ दिसम्बर १६४८ ई०)—क्रामवेल ने अपने एक सैनिक कर्नल प्राइड को आज्ञा दी कि वह बादशाह के पक्ष वाले मेम्बरों को पार्लियामेण्ट में न घुसने दे। पार्लियामेण्ट की इमारत को प्राइड ने घेर लिया और लगभग १५० सदस्यों को पार्लियामेण्ट की बैठक से निकाल बाहर किया। यह घटना इतिहास में "प्राइड्स

पर्ज" (Pride's Purge) के नाम से प्रसिद्ध है। इसके वाद पार्लिया-मेण्ट में केवल ५३ मेम्बर शेप बच रहे, जो सेना की सम्मति से सह-मत थे। वे लोग "रम्प पार्लियामेण्ट" (Rump Parliament) कहलाये और सेना की आज्ञा के अनुसार काम करने लगे।

चार्ल्स पर अभियोग--इन शेप मेम्बरों ने चार्ल्स पर देश के विरुद्ध पड्यन्त्र करने के अपराध मे अभियोग चलाने का प्रस्ताव किया, लेकिन हाउस आफ़ लार्ड्स ने उसका विरोध किया। इस पर प्रस्ताव वापिस कर लिया गया और एक "हाई कोर्ट आफ़ जस्टिस" (High Court of Justice) अर्थात् महान् न्यायालय वादशाह के अभियोग का फ़ैसला करने के लिए स्थापित किया। इस न्यायालय का प्रधान ब्रैडशा (Bradshaw) था।

चार्ल्स को मृत्यु दंड--चार्ल्स का अभियोग जजों के सामने २० जनवरी सन १६४९ ई० को वेस्टमिंस्टर एवी के हाल में आरम्भ हुआ। वह अभियोग एक सप्ताह तक जारी रहा। अन्त मे उसे फाँसी के दण्ड की आज्ञा सुनाई गई। ३० जनवरी सन १६४९ ई० को अपने ही राजभवन के सामने चार्ल्स को फाँसी दी गई। मृत्यु के समय चार्ल्स ने वहुत वीरता और धैर्य से काम लिया। देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के नाम पर इंग्लैण्ड मे इतना रक्तपात हुआ और अन्त मे बादशाह का भी वध किया गया।

चार्ल्स के समय की सामाजिक दशा--यद्यपि चार्ल्स सदा अपनी इच्छा के अनुसार ही कार्य किया करता था और

अनुचित कर भी लगाता रहा, तो भी देश की समृद्धि और आर्थिक उन्नति अधिकाधिक होती गई। व्यापार में भी बहुत उन्नति हुई और देश में पत्र एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजने के लिए एक पोस्ट आफिस सन् १६३५ ई० में खुला और सन १६४६ ई० में इंग्लैण्ड और स्काटलैण्ड के मुख्य-मुख्य नगरों में प्रति सप्ताह पत्र पहुँचाने का प्रबन्ध कर दिया गया।
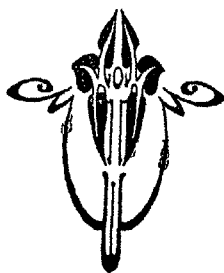
तीसरा अध्याय

रम्प पार्लियामेण्ट का राज्य

(सन् १६४६ से १६५३ ई० तक)

जनवरी सन् १६४६ ई० से अप्रैल सन् १६५३ ई० तक राज्य का प्रबन्ध रम्प पार्लियामेण्ट (Rump Parliament) ने अपने हाथ में लिया। उसने बादशाह और हाउस आफ़ लार्ड्स दोनों को राष्ट्र की स्वतन्त्रता का शत्रु बतलाकर इंग्लैण्ड मे प्रजातन्त्र शासन (Common Wealth) स्थापित किया। उसने शासन का काम चलाने के लिए ४१ सदस्यों की राष्ट्रसभा (Council of State) बनाई। उसके सदस्य अधिकतर रम्प पार्लियामेण्ट के सदस्यों मे से ही थे। प्रसिद्ध कवि जान मिल्टन (John Milton) उसका विदेशी मन्त्री था।

कठिनाइयों का सामना—इस समय इंग्लैण्ड की दशा बहुत गड़बड़ थी। आयरलैण्ड में विद्रोह की अग्नि धधक रही थी। स्काटलैण्ड चार्ल्स की भक्ति का दम भरता था। यूरोप में इंग्लैण्ड अपनी मान-मर्यादा खो बैठा था। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक स्थायी और सुदृढ़ शासन की आवश्यकता थी। प्रजातंत्र शासन की विशेषता यह है कि उसने इंग्लैण्ड को १२ वर्ष तक बाहरी

आक्रमणों से सुरक्षित रखकर फिर नये सिरे से शासन की बुनियाद डाली और नियमपूर्वक शासन-सूत्र का संचालन किया।

रम्प पार्लियामेण्ट देश की पूर्णरूपेण प्रतिनिधि संस्था नहीं रही थी। उसकी शक्ति फेयरफैक्स (Fairfax), क्रामवेल (Cromwell) और नवीन आदर्श सेना (New Model Army) पर आश्रित थी। क्रामवेल ने सबसे पहले "समानवादी" (Levellers) को, मनुष्य जो सबको समान देखना चाहते थे, दण्ड देकर खामोश किया। उसके बाद उसने अपना ध्यान आयरलैण्ड की ओर दिया।

क्रामवेल और आयरलैंड—आयरलैण्ड के कैथोलिक निवासी बादशाह के पक्ष में थे और उन्होंने एक प्रबल विद्रोह खड़ा कर रखा था। कौंसिल ने क्रामवेल को आयरलैण्ड को वश में करने के लिये नियुक्त किया। क्रामवेल ने ड्रौगहेडा (Diogheda) और वैक्सफोर्ड (Waxford) के स्थान पर आयरिश सेना को बहुत बुरी तरह से पराजित किया। आयरलैण्ड वालों की बहुत सी जायदादें ज़ब्त करके, वहाँ पर प्रोटैस्टेण्ट अंग्रेज़ बसा दिये गये। वहाँ पर प्रबन्ध करने के लिये अपने एक नाइब अफसर को छोड़ कर क्रामवेल इंग्लैण्ड वापिस आया। उस अफसर का नाम जनरल आइरटन (General-Ireton) था।

क्रामवेल और स्काटलैंड—दूसरे गृह युद्ध में स्काटलैण्ड वालों ने बादशाह का पक्ष लिया था। अब उन्होंने चार्ल्स प्रथम के लड़के चार्ल्स द्वितीय को बुलाकर उसका राज्याभिषेक भी कर डाला। यह समा-

चार सुनकर इंग्लैण्ड के प्रजातन्त्र राज्य की ओर से क्रामवेल ने स्काटलैण्ड पर चढ़ाई की और ३ सितम्बर सन् १६५० ई० मे डनबार (Danbar) के स्थान पर स्काटलैण्ड की सेना को पराजित किया लेकिन फिर भी स्काटलैण्ड के लोग चार्ल्स द्वितीय को साथ लेकर इंग्लैंड की राजधानी लन्दन की ओर को बढ़े। उन्हे आशा थी कि इंग्लैण्ड से उन्हें पर्याप्त सहायता मिलेगी; मगर वहाँ के निवासियों ने चार्ल्स द्वितीय का साथ न दिया। क्रामवेल ने उसका सामना किया और वौरसेस्टर (Worcester) के स्थान पर उसे आ घेरा। ३ सितम्बर सन् १६५१ ई० को चार्ल्स बहुत बुरी तरह से पराजित हुआ और उसे अपने प्राण बचाकर फ्रांस को भागना पड़ा। अब स्काटलैण्ड में भी एक राष्ट्रीय अफसर जनरल मौंक (General Monck) नियुक्त होगया। इस प्रकार अब तीनों देशों अर्थात् इंग्लैण्ड, स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड मे प्रजातंत्र शासन का प्रभाव होगया।

इस प्रकार प्रजातन्त्र शासन ने जिसकी "नवीन आदर्श सेना" का सेनापति क्रामवेल जैसा वीर सैनिक और जिसके जहाजी बेड़े का अफसर ब्लेक (Blake) जैसा चतुर नाविक था, देश के बाहरी तथा भीतरी शत्रुओं का सफलता के साथ सामना किया।

हालैंड से युद्ध (सन् १६५२–५४)—इसके बाद इंग्लैण्ड ने दूसरे देशों में अपना खोया हुआ मान फिर से प्राप्त करने की चेष्टा की। सन् १६५१ ई० मे पार्लियामेण्ट ने एक कानून बनाया, जो कि "जहाजी कानून" (Navigation Act) के नाम से प्रसिद्ध है। इस कानून के अनुसार यह निश्चय हुआ कि इंग्लैण्ड अथवा उसके

उपनिवेशों में जो पदार्थ व्यापार के लिये बाहर से लाये जावें, वे सब उसी देश के बने हुए जहाजों में आवें या इंग्लैण्ड के बने जहाज़ों में लाये जावें। इस कानून का उद्देश्य हालैण्ड के व्यापार को धक्का पहुँचाना था। साथ ही साथ यह भी निश्चय हुआ कि इंगलिश चैनल (English Channel)में हालैण्ड के जहाज़ों को इंग्लैण्ड के जहाजों के सामने अपना झण्डा झुका कर उनका गौरव स्वीकार करना पड़ेगा।

इस क़ानून का परिणाम यह हुआ कि दोनों देशों में युद्ध आरम्भ हो गया। पहले तो वान ट्राम्प (Von Tromp) ने ब्लेक (Blake) को पराजित किया, लेकिन फिर ब्लेक ने पोर्टलैंड के निकट सन् १६५३ ई० में डच सेना को हरा दिया।

इस युद्ध से डच लोगों को बहुत हानि पहुंची, क्योंकि उनके जहाज़ बाहर से खाने की सामग्री अनाज आदि अपने देश में न ला सके। फल यह हुआ कि वे लोग भूखों मरने लगे। मजबूर होकर उन्होंने सन १६५४ ई० में सन्धि करली, जिसमें उन्होंने अंग्रेज़ों की कुल शर्तों को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार यूरोप में इंग्लैण्ड का प्रभाव फिर जम गया।

रम्प पार्लियामेण्ट का अन्त (२० अप्रैल १६५३ ई०)–

इस रम्प पार्लियामेण्ट के शासन से इंग्लैण्ड के निवासी बहुत थोड़े ही समय में तंग आगये। सेना भी यह चाहती थी कि उस पार्लियामेण्ट का अन्त कर दिया जाय, मगर रम्प पार्लियामेण्ट की यह इच्छा थी कि नवीन निर्वाचन में उसके सदस्य फिर से निर्वाचित

कर लिए जावें और अन्य सदस्यों का निर्वाचन उन्हीं की सम्मति से हो। अतएव रम्प पार्लियामेण्ट की इस इच्छा से सेना के क्रोध की कोई सीमा न रही। ऐसी दशा में क्रामवेल ने कुछ सैनिकों की सहायता से बलपूर्वक रम्प पार्लियामेण्ट के सदस्यों को निकाल बाहर किया और उसके साथ ही कौंसिल आफ़ स्टेट (Council of State), का भी अन्त कर दिया।

चौथा अध्याय

क्रामवेल का शासन

(अप्रैल सन् १६५३ से सितम्बर १६५८ ई० तक)

रम्प पार्लियामेण्ट की समाप्ति के बाद सम्पूर्ण शक्ति क्रामवेल के और सेना के हाथ में आ गई। क्रामवेल की यह अभिलाषा थी कि

Oliver Cromwell

देश में शासन प्रजा की इच्छा के अनुसार ही किया जावे। क्रामवेल ने हाउस आफ़ कामन्स का निर्वाचन उचित नहीं समझा। उसने एक विशेष रीति से निर्वाचन किया। कुछ गिरजाघरों को आज्ञा दी कि वे ऐसे मेम्बरों की एक सूची तैयार करें जो पार्लियामेण्ट के सदस्य बनने के योग्य हों। जब यह सूची तैयार हो गई तो उनमे से १४६ आदमियों को चुनकर उनके हाथ में देश के शासन की बागडोर दे दी। इस सभा को "लघु पार्लियामेण्ट" (Little Parliament) कहते हैं। उसके एक प्रमुख सदस्य का नाम प्रेजगौड बेअरबोन (Praise God Barebone) था, इसलिए उस पार्लियामेण्ट को बेअरबोन पार्लियामेण्ट (Barebone Parliament) भी कहते हैं। यद्यपि उसके सदस्य अच्छे और सज्जन मनुष्य थे, लेकिन वह अनुभवी नहीं थे और अव्यवहार्य प्रस्ताव उपस्थित किया करते थे। यह पार्लियामेण्ट भी इसीलिए सफल न हो सकी, और अन्त में उसने अपने समस्त अधिकार क्रामवेल के हाथ में दिसम्बर सन् १६५३ ई० को देकर उसको समस्त इंगलैण्ड, आयरलैण्ड और स्काटलैण्ड के प्रजातन्त्र का महान् संरक्षक (Lord Protector of the Common wealth of England, Scotland and Ireland) नियुक्त कर दिया और स्वयं शासन कार्य से पृथक् हो गई।

शासन का यंत्र (Instrument of Government)- उस बेअरबोन पार्लियामेण्ट के कार्यभार छोड़ने पर अफ़सरों की एक सभा ने एक "शासन यंत्र" (Instrument of Government) तैयार किया जिसके अनुसार निम्नलिखित निर्णय हुए :—

(१) क्रामवेल को लार्ड प्रोटैक्टर अथवा महान् संरक्षक नियुक्त किया गया और उसको शासन की समस्त शक्तियाँ (Executive Powers) प्रदान की गईं और शासन के व्यय के लिये एक निश्चित धन स्वीकार किया गया।

(२) इंग्लैण्ड, स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड को एक संयुक्त कामनवैल्थ (Common Wealth) के रूप में बना दिया गया और इन तीनों देशों को पार्लियामेण्ट में अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया, जिसमें कि अब केवल हाउस आफ़ कामन्स ही रह गया।

(३) इस हाउस आफ़ कामन्स के ४०० सदस्य थे और उनको क़ानून बनाने का अधिकार था, लेकिन इस पर भी लार्ड प्रोटैक्टर का दबाव था क्योंकि वही पार्लियामेण्ट का अधिवेशन बुला सकता था और उसको इस बात का भी अधिकार था कि वह किसी भी क़ानून को रद करदे, अगर वह क़ानून उसके विचारानुसार कामनवैल्थ के लिये हितकारी नहीं है। पाँच महीने की बैठक के बाद वह पार्लियामेण्ट को भी भंग कर सकता था।

(४) लार्ड प्रोटैक्टर को सम्मति देने के लिये एक राज सभा (Council of State) बनाई गई।

शासन का यह प्रबन्ध "शासनयंत्र" (Instrument of Government) के नाम से पुकारा जाता है।

संरक्षित राज्य (The Protectorate)

प्रथम संरक्षित राज्य पार्लियामेंट (सन् १६५४)—लार्ड प्रोटैक्टरेट की प्रथम पार्लियामेण्ट का अधिवेशन सन १६५४ ई०

मे हुआ लेकिन क्रामवेल और उस पार्लियामेण्ट मे झगड़ा होने लगा, इसलिये बहुत जल्द यह पार्लियामेण्ट भंग करदी गई। अब उसके बाद देश का शासन प्रबन्ध फिर पूर्ण रूप से सेना के हाथ मे आगया।

सैनिक शासन (सन् १६५५ ई०)—इसके बाद क्रामवेल ने समस्त इंग्लैण्ड को ११ प्रान्तों मे विभाजित करके प्रत्येक प्रान्त मे एक मेजर जनरल (Major General) को शासक नियुक्त किया। उस मेजर जनरल को यह अधिकार थे कि वह सेना की देखरेख करे, विद्रोहों को शान्त करे और स्थानीय अफसरों को कानून को काम मे लाने मे सहायता पहुँचाये। इस प्रकार क्रामवेल ने घोषणा करके सेना का शासन देश मे फिर से आरम्भ कर दिया, और जैसा कि इतिहासकारक टाउट (Tout) ने लिखा है—"उसका शासन स्वेच्छाचारी सैनिक शासक का शासन था—वह उसी कोटि मे रखा जा सकता है जिसमे कि जुलियस सीजर और नेपोलियन बोनापार्ट, लेकिन यद्यपि वह अत्यन्त स्वेछाचारी शासकों मे से था, तथापि वह ऐसे हमारे समस्त शासकों मे से अत्यन्त योग्य भी था। उसकी सीमित शक्ति के आधार को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि उसने कई महान कार्य सम्पन्न किये।"

द्वितीय संरक्षित राज्य (Second Protectorate) पार्लियामेण्ट—सन् १६५६ ई० में क्रामवेल ने दूसरी बार पार्लियामेण्ट का अधिवेशन बुलाया और १०० मेम्बरों को जोकि उसके विरुद्ध थे, उनको पहले ही से निकाल दिया। शेष सब मेम्बर "संर-

क्षित राज्य" के पक्षपाती थे और उन्होंने एक नवीन शासन प्रणाली की नींव डाली और "विनम्र सम्मति और प्राथना" (Humble Advice and Petition) के रूप में उसे क्रामवेल की स्वीकृति के लिए उपस्थित किया। उसमें क्रामवेल को बादशाह बनाने और अपने बाद अपने उत्तराधिकारी निर्वाचित करने का अधिकार देने का प्रस्ताव किया गया था। दूसरा प्रस्ताव यह था कि हाउस आफ़ कामन्स के अतिरिक्त हाउस आफ़ लार्डस भी स्थापित किया जाय जिसके सदस्यों को क्रामवेल स्वयं नियुक्त करे। सेना के सिपाही क्रामवेल को बादशाह बनाना पसन्द नहीं करते थे, इसलिए उसने बादशाह के पद को स्वीकार नहीं किया, मगर अन्य प्रस्ताव उसने सब स्वीकार कर लिये और उनके अनुसार सब शासन-कार्य आरम्भ होगये। केवल क्रामवेल के लिए बादशाह का पद नहीं था, वैसे उसे बादशाह के समस्त अधिकार प्राप्त थे। अब उसने बहुत धूम-धाम के साथ २६ जून सन १६५७ ई० को वेस्ट मिनस्टर हौल में "राज्य के संरक्षक" होने का शानदार दरबार किया। पार्लियामेण्ट नये रूप में फिर से संगठित हुई, लेकिन फिर वही कठिनाइयाँ उपस्थिति हुई और इसलिए सन् १६५८ ई० को पार्लियामेण्ट फिर भंग कर दी गई। उसके सात मास के पश्चात् सितम्बर १६५८ ई० में क्रामवेल स्वयं भी मृत्यु को प्राप्त हो गया।

क्रामवेल की वैदेशिक नीति—क्रामवेल की वैदेशिक नीति के मुख्यतः तीन उद्देश्य थे—(१) प्रथम यह कि स्टुआर्ट वंश के बादशाह अन्य देशों की सहायता से इंग्लैण्ड के सिंहासन पर पुनः अधि-

कार न करलें। इसलिए उनको बाहरी सहायता मिलने से रोकना उसका प्रथम कार्य था।

(२) दूसरी इच्छा उसकी यह थी कि सब प्रोटैस्टेण्ट राष्ट्रों को सगठित करके प्रोटेस्टेण्ट धर्म को उन्नति और रक्षा की जावे।

(३) तीसरे यह कि वह इंग्लैण्ड के वैदेशिक व्यापार को उन्नति के शिखर पर पहुंचाना चाहता था।

सन् १६५४ ई० में हालैण्ड के साथ पहली लड़ाई समाप्त हुई और सन्धि की शर्तों के अनुसार हालैण्ड के जहाजों को इंगलिश चैनल से गुजरते समय अंग्रेजी झण्डे को प्रणाम करना आवश्यक हो गया, और इस तरह हालैण्डवालों ने "जहाजी कानून" (Navigation Act) को भी स्वीकार कर लिया। इसलिए अंग्रेजी समुद्री शक्ति का गौरव और भी बढ़ गया और समुद्र पर अब उसका एक छत्र राज्य होगया। इसके बाद क्रामवेल ने डेनमार्क, स्वीडन, और पुर्तगाल से भी सन्धि करली, जिससे इंग्लैण्ड के व्यापार मे अतीव उन्नति हुई। समस्त प्रोटैस्टेण्ट राज्यों को मिलाने और उनका एक सघ बनाने मे वह प्रयत्न करने पर भी असफल रहा।

स्पेन और क्रामवेल—सन १६४८ ई० मे यूरोप का तीस वर्षीय युद्ध समाप्त हो चुका था, लेकिन फ्रास और स्पेन आपस मे अभी तक लड़ रहे थे। दोनों ही अग्रेजों की सहायता के अभिलाषी थे। क्रामवेल ने पहले स्पेन से मित्रता करनी चाही लेकिन उसमे वह असफल रहा। इसपर उसने स्पेन के उपनिवेशों पर आक्रमण किया

और सन् १६५५ ई० में नई दुनिया में सेना भेजकर स्पेन से हिस्पेन्योला (Hispaniola) लेना चाहा, लेकिन इसमें भी वह असफल रहा। हाँ, उसने स्पेन से जमाइका टापू (Jamaica) अवश्य छीन लिया।

सन १६५५ ई० में क्रामवेल ने ब्लेक (Blake) को भूमध्य-सागर (Mediterranean Sea) में ट्यूनिस (Tunis) पर आक्रमण करने को भेजा और उसने उत्तरी अफ्रीका के डाकुओं को वश में किया। यूरोप में उसका प्रभाव इतना बढ़ा कि बहुत से बादशाह उससे भयभीत रहने लगे। इस समय सैवोय (Savoy) का ड्यूक अपने राज्य में प्रोटेस्टेण्ट लोगों पर अत्याचार कर रहा था। क्रामवेल इससे बहुत रुष्ट हुआ और फ्रांस के बादशाह ने क्रामवेल के साथ मित्रता करने के लिए ड्यूक को धमकी देकर और उसपर दबाव डालकर प्रोटेस्टेण्टों पर होने वाले आक्रमणों को बन्द करा दिया। यह सन् १६५६ ई० में हुआ।

स्पेन और क्रामवेल में युद्ध (सन् १६५६-५८ ई०)

स्पेन एक कैथोलिक देश था और महारानी एलिजाबेथ के समय से वह इंग्लैण्ड का एक बड़ा शत्रु बना हुआ था। इसलिए क्रामवेल ने फ्रांस के बादशाह चौदहवें लुई से सन्धि करके स्पेन के विरुद्ध सन १६५७ ई० में लड़ाई आरम्भ कर दी। सन् १५५७ ई० में समुद्री सेनापति ब्लेक (Blake) ने सेण्टा क्रुज़ (Sainta Cruz) में स्पेन के बेड़े को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। सन् १६५८ ई० में अंग्रेज़ी सेना ने स्पेन की सेना को पराजित करके डङ्कर्क (Dunkirk) पर भी अपना

अधिकार कर लिया। इस प्रकार क्रामवेल की प्रसिद्धि समस्त यूरोप में फैल गई।

क्रामवेल की बाहरी नीति का परिणाम—क्रामवेल को अपनी बाहरी नीति में सफलता प्राप्त हुई। समस्त यूरप में उसने इंग्लैण्ड का यश गौरव जो एलिजाबेथ की मृत्यु के बाद कम हो गया था फिर से स्थापित कर दिया, और फिर से इंग्लैण्ड के बाहरी सम्बन्ध सुदृढ़ कर दिये। इसका परिणाम यह हुआ कि स्टुआर्ट राजकुमार को अब कोई बाहरी बादशाह सहायता नहीं दे सकता था और न उसको अब इंग्लैण्ड का सिंहासन छीनने का साहस पड़ता था।

दूसरा परिणाम यह हुआ कि व्यापार में बहुत उन्नति हुई और अब अंग्रेजी नाविक अपनी शक्ति से अन्य देशों में अंग्रेजी उपनिवेश स्थापित करने लगे, लेकिन जैसा कि टाउट (Tout) लिखता है:—

"The fundamental idea of it was mistaken. If a balance of power was to be maintained, Cromwell did a bad service to England and Europe by helping to build up the overwhelming power of Louis XIV"

अर्थात् उसकी बाहरी नीति गलत थी। स्पेन और आस्ट्रिया दोनों तीसवर्षीय युद्ध के बाद शक्तिहीन होगये थे। अब उनसे यूरोप में कोई विशेष अन्देशा नहीं था। इसके विपरीत फ्रांस अब शक्तिशाली होता जा रहा था, लेकिन क्रामवेल ने इसका विचार नहीं किया

और फ्रांस को सहायता देकर स्पेन को अत्यन्त शक्तिहीन कर दिया। फ्रांस अब और भी शक्तिहीन देश होगया जिससे यूरोप मे "शक्ति सन्तुलन" (Balance of power) को बहुत हानि पहुँची। चौदहवे लुई की शक्ति अब इसी कारण से असीमित होगई।

तो भी क्रामवेल की बाहरी नीति के सम्बन्ध मे यह कहना अनुचित न होगा कि अपने देश मे क्रामवेल के गौरव की तुलना मे कुछ भी नहीं था।

"Cromwell's glory at home was but a shadow of his glory abroad."

क्रामवेल की धार्मिक नीति—क्रामवेल ने अपना बहुत सा समय गिर्जा के मामलों को तय करने मे लगाया और यही कारण था कि जितनी स्वतन्त्रता धार्मिक मामलों में क्रामवेल के समय के इंग्लैण्ड मे पाई जाती है, उतनी उससे पहले कभी भी प्रजा को प्राप्त नहीं थी। उसके समय मे स्टेट चर्च का प्रबन्ध प्योरीटन सिद्धान्तों के आधार पर ही होता था, और प्रत्येक प्योरीटन को धार्मिक स्वतन्त्रता थी चाहे वह प्रेसबिटेरियन (Presbyterian) मत का हो, चाहे बैपटिस्ट (Baptist) हो और चाहे स्वतन्त्र दल (Independent party)का हो। उन सबको चर्च में नौकरी मिलती थी और सबको गिर्जा में व्याख्यान देने की स्वतन्त्रता थी। उसके समय में यहाँतक स्वतन्त्रता थी कि उसने पुराने गिर्जा के मनुष्यों को भी गिर्जा से नहीं निकाला इस शर्त पर कि उन्होंने इस बात का वादा कर लिया कि वे पुरानी प्रार्थना की पुस्तक का प्रयोग नहीं करेंगे

और साथ ही यह भी वादा कर लिया कि वे कामनवेल्थ (Commonwealth) के भक्त रहेंगे।

दूसरे उसने अपनी धार्मिक पक्षपातहीन नीति को इस प्रकार भी प्रकट किया कि यहूदी लोगों को जो एडवर्ड प्रथम के समय से इंग्लैण्ड से निर्वासित कर दिये गये थे, उनको दुबारा इंग्लैण्ड में निवास करने की आज्ञा दे दी।

लेकिन उसने एँग्लीकन चर्च (Anglican Church) और कैथोलिक मत के अनुयाइयों को धार्मिक स्वतन्त्रता नहीं दी, कुछ तो इस कारण से कि वे बादशाह के पक्ष में थे और कुछ इस कारण से कि उनके सिद्धान्त उसे पसन्द नहीं थे। इसके अतिरिक्त "मित्र मण्डल" (Society of Friends) अथवा क्वेकर्स (Quakers) एक नया धार्मिक दल उत्पन्न हुआ था और उसके सिद्धान्त बहुत कुछ प्योरीटन दल के सिद्धान्तों पर ही आश्रित थे, लेकिन उसको भी स्वतन्त्रता नहीं दी गई।

लेकिन ये सब धार्मिक स्वतन्त्रतायें क्रामवेल की मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गईं, और चूँकि यह धार्मिक स्वतन्त्रता प्योरीटन सिद्धान्तों पर आश्रित थी, इसलिये लोगों ने उसको पसन्द नहीं किया, क्योंकि प्योरीटन सिद्धान्तों के अनुसार देश में खेल तमाशे, गाना बजाना सब बन्द थे, इसलिये जीवन आनन्दरहित हो गया था जिसको अंग्रेजी प्रजा सहन नहीं कर सकती थी।

क्रामवेल के शासन के दोष—क्रामवेल का शासन इतना

अच्छा नहीं था कि हम उसपर कोई समालोचना ही नहीं कर सकें और कुछ भी दोष न निकाल सकें।

(१) यह कहना बिल्कुल ठीक होगा कि व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और भाषण देने के अधिकार में कामनवेल्थ के समय में चार्ल्स प्रथम के समय की अपेक्षा अधिक हस्तक्षेप होता था।

(२) यद्यपि प्रजा को चार्ल्स प्रथम के समय की अपेक्षा टैक्स तिगुने अधिक देने पड़ते थे, तब भी आश्चर्य की बात यह है कि कामनवेल्थ के समय में आधे करोड़ पौंड सालाना की कमी बजट मे पाई जाती है।

(३) यद्यपि उसने यहूदियों को और प्योरीटन लोगों को धार्मिक स्वतन्त्रता अवश्य दी थी, लेकिन उसका व्यवहार यदि इंगलिश चर्च वालों के साथ नहीं तो रोमन कैथोलिक लोगों के साथ अवश्य कड़ा था।

(४) देश के प्योरीटन सिद्धान्तों के अनुसार खेल तमाशों, और गाने बजाने आदि को बन्द करने का अर्थ यह था कि लोगों के चालचलन को क़ानून के द्वारा सुधारने का प्रयत्न किया गया जो कि एक असम्भव बात थी और कभी प्रकृति के सिद्धान्त के अनुसार नहीं हो सकती।

शासन के गुण—यह सब मानते हुए हमें यह मानना पड़ेगा कि उसमें कई गुण भी विद्यमान थे :—

(१) प्रथम यह कि जितनी धार्मिक स्वतन्त्रता कामनवेल्थ के

समय में पाई गई उतनी स्वतन्त्रता रिफार्मेशन (सुधार युग) के समय से अबतक कभी नही पाई गई थी।

(२) उसके समय में अशान्ति नहीं होने पाई और देश में सर्वत्र शान्ति विराजमान रही। वह कई अनुचित खेलों आदि को रोकने में भी समर्थ रहा।

(३) उसकी वैदेशिक नीति बहुत सफल रही और उसने इंग्लैण्ड के मान गौरव को जो एलिजाबेथ के समय से कम होगया था, फिर से समस्त यूरोप मे स्थापित कर दिया।

रिचार्ड क्रामवेल—३ सितम्बर सन १६५८ से २५ मई सन् १६५६ ई० तक क्रामवेल की मृत्यु के बाद उसका लड़का रिचार्ड क्रामवेल (Richard Cromwell) उसकी जगह पर प्रजातंत्र शासन का अधिनायक नियुक्त हुआ। उसमें शासन की योग्यता बिल्कुल नहीं थी और सेना से भी उसकी बिल्कुल नहीं बनती थी। अतएव केवल ९ महीने ही के बाद उसको अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा और उसके बाद वह फ्रांस को प्रस्थान कर गया।

अशान्ति का वर्ष—राज्य के सर्वाधिकारी या अधिनायक (Dictator) के त्यागपत्र दे जाने पर एक वर्ष तक देश मे बड़ी अशान्ति रही। सेना के सामने इस समय यह बड़ी कठिन समस्या थी कि शासन का कार्य अब किस प्रकार चलाया जाय। बादशाह के समय की दीर्घ (Long) पार्लियामेण्ट को एक बार फिर निमन्त्रित किया गया और उसमें उन मेम्बरों को भी सम्मिलित किया गया

जिनको सैनिक अफ़सर प्राइड (Pride) ने बलपूर्वक निकाल दिया था। मगर पहले की तरह इस पार्लियामेण्ट की सेना से न बनी और देश में अशान्ति बराबर जारी रही। ऐसी अवस्था में देश के निवासियों में यह विचार फैलने लगा कि बादशाह को फिर स्थापित किये बिना देश में सुख शान्ति स्थापित नहीं हो सकती। यही विचार करके जनरल मौंक (General Monck) जो स्काटलैण्ड की सेना का सेनापति था, अपनी सेना को लेकर लन्दन पहुँचा। उसकी प्रेरणा से दीर्घ पार्लियामेण्ट ने अपने आपको भंग करने का प्रस्ताव पास किया, ताकि एक नवीन और स्वतंत्र पार्लियामेण्ट का निर्वाचन हो सके।

राजा का पुनरागमन (Restoration)—अबतक नई पार्लियामेण्ट का निर्वाचन हुआ जिसको कि "प्रतिनिधियों की पार्लियामेण्ट" (Convention Parliament) भी कहते हैं, क्योंकि यह किसी राजकीय आज्ञा से नहीं बुलाई गई थी। इस "प्रतिनिधि पार्लियामेण्ट" के अधिकतर मेंबर प्रेसबिटेरियन (Presbyterian) थे, और कुछ मेम्बर अंग्रेज़ी चर्च के अनुयायी भी थे। ये दोनों दल वैयक्तिक शासन के पक्षपाती थे। इसी समय पर हाउस आफ़ लार्ड्स के मेम्बर भी बिना बुलाये एकत्रित हो गये थे। उस समय तक जनरल मौंक ने व्यक्तिगत रूप में चार्ल्स प्रथम के लड़के चार्ल्स द्वितीय से पत्र-व्यवहार करना आरम्भ कर दिया था। अब चार्ल्स द्वितीय ने एक घोषणा प्रकाशित की। यह घोषणा हालैण्ड के एक शहर ब्रैडा (Breda) से १४ अप्रैल सन् १६६० ई० को प्रकाशित किया गया,

और इसीलिए यह "ब्रडा का घोषणापत्र" के नाम से प्रसिद्ध है।

इस घोषणा पत्र मे चार्ल्स द्वितीय ने सब पिछले अपराधियों को क्षमा प्रदान करने, धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित करने और सेना के सब पिछले वेतन के चुकाने का वायदा किया, और यह भी वचन दिया कि वे सब लोग जिन्होंने कामनवैल्थ के समय में भूमि प्राप्त की थीं, अपनी उन भूमियों के यथापूर्व अधिकारी रहेंगे।

चार्ल्स द्वितीय ने इन सब शर्तों को लिखकर एक राजदूत द्वारा पार्लियामेण्ट के पास पहुंचा दिया, ताकि वह उनपर विचार कर सके। इसपर १ मई सन् १६६० ई० को पार्लियामेण्ट के दोनों हाउसों में यह प्रस्ताव पेश किया गया कि देश का शासन बादशाह, लार्ड्स और जनसाधारण के द्वारा होना चाहिये। फिर ८ मई सन १६६० ई० को चार्ल्स द्वितीय इंग्लैण्ड का बादशाह घोषित कर दिया गया और २४ मई सन् १६६० ई० को चार्ल्स डोवर (Dover) बन्दरगाह पर आकर उतरा। २९ मई सन १६६० को वह लन्दन में पहुंचा। लन्दन के निवासियों ने बड़े उत्साह से उसका वहाँ पर स्वागत किया। यह घटना इतिहास मे "राजा का पुनरावर्तन" (Restoration) के नाम से प्रसिद्ध है।

इस प्रकार लगभग ११ वर्ष के पश्चात् दुबारा देश में राजा का पुनरागमन" (Restoration) हुआ। इस "राजा के पुनरावर्तन" के कई कारण है। उसके पूरे कारण बतलाने के यह अर्थ होंगे कि "कामनवैल्थ" का इतिहास दुबारा लिखा जाय। अतएव संक्षेप में निम्नलिखित कारण थे:—

(१) आलीवर क्रामवैल ने एक स्वेच्छाचारी राजा की भांति शासन किया था जिसमें प्रजा के अधिकारों और स्वतंत्रता का बिल्कुल ध्यान नहीं रखा गया था। इस सबका यह परिणाम हुआ कि लोग व्यक्तिगत शासन के पक्षपाती होगये।

(२) रिचार्ड क्रामवैल नितान्त अयोग्य शासक था।

(३) सेना अधिकार से बिल्कुल बाहर होगई थी, इससे भी "राजपुनरावर्तन" को सहायता मिली।

(४) जनरल मौंक (General Monck) ने बहुत बुद्धिमत्ता से काम करके "राजपुनरावर्तन" में बहुत सहायता दी।

इस "राजपुनरावर्तन" (Restoration) में एक बहुत बड़ी कमी रह गई थी। चार्ल्स द्वितीय से समझौता करते समय जनरल मौंक और पार्लियामेण्ट ने यह नहीं तय किया था कि पार्लियामेण्ट और बादशाह के बीच क्या सम्बन्ध रहेगा। यह उनकी एक कमी थी। अगर उस समय यह बात तय हो जाती, तो भविष्य में अधिक कठिनाइयों का सामना नही करना पड़ता। इसी बात को निर्णय करने के लिये सन् १६८८ ई० में फिर "शानदार विद्रोह" (Glorious Revolution) हुआ था।

लेकिन इससे यह नहीं समझना चाहिए कि राजा के पुनरावर्तन से इंग्लैण्ड में फिर से व्यक्तिगत शासन का आरम्भ होगया। यह तो ठीक है कि बादशाह स्वयं मन्त्रियों का निर्वाचन करता था और बाहरी और भीतरी शासन नीति को स्वयं ही निर्धारित करता था और एक प्रकार से चार्ल्स द्वितीय पहले के बादशाहों से अधिक शक्ति-

शाली था, क्योंकि उसके पास पांच सहस्र सिपाहियों की एक सेना भी थी जो कि पहले बादशाहों के पास नही थी, लेकिन वास्तव में बादशाह की शक्ति इतनी अधिक नही थी जितनी कि पहले बादशाहों की थी, क्योंकि अब कोर्ट आफ़ स्टार चैम्बर (Court of Star Chamber) तथा कोर्ट आफ़ हाई कमीशन (Court of High Commission) जैसी मनमानी अदालतें मौजूद नहीं थीं। और इस बादशाह के पुनरावर्तन ने केवल राजा का ही पुनरावर्तन (Restoration) नहीं किया किन्तु पार्लियामेण्ट का भी पुनरावर्तन होगया। इसीलिए अब पार्लियामेण्ट की इच्छा के बिना कुछ नहीं हो सकता था। इसके अतिरिक्त सन् १६६७ ई० में पार्लियामेण्ट ने एक और उन्नति की। बादशाह को अगर रुपये की स्वीकृति दी जावे तो रुपया केवल उसी काम में व्यय किया जाय जिस काम में व्यय करने की उसकी स्वीकृत मिली हो और इस बाद को देखने के लिए प्रतिवर्ष जाँच की जाया करे।

पांचवां अध्याय

चार्ल्स द्वितीय (१६६०-१६८५ ई० तक)

चार्ल्स द्वितीय सन् १६३० ई० में उत्पन्न हुआ था। सन् १६४६

Chailes II

ई० जबकि उसके पिता को फासी दी गई, उस समय स्काटलण्डवालों ने उसको सिंहासन पर बिठाने का प्रयत्न किया लेकिन उनको सफलता प्राप्त नहीं हुई। सन् १६५१ ई० मे वोरसेस्टर(Worcestor) की पराजय के पश्चात् उसको यूरोप भाग जाना पड़ा और वहाँ पर वह सन् १६६० ई० तक रहा, जबकि "प्रतिनिधि पार्लियामेण्ट" (Convention Parliament) ने वापिस बुलाकर उसको फिर इंग्लैण्ड का बादशाह बना दिया।

जनरल मौंक (General Monck) की गलती के कारण इस बात का अभीतक कोई फैसला नहीं हुआ था कि बादशाह और पार्लियामेण्ट के बीच पारस्परिक सम्बन्ध क्या रहेगा अतएव लोगों को राजनीतिक मामलों मे भाग लेना और अपने अधिकारों की रक्षा करने के लिए लड़ाई को निरन्तर चालू रखना पड़ा।

चार्ल्स द्वितीय का चालचलन और जीवन के उद्देश्य—चार्ल्स द्वितीय चालाक, प्रसन्नचित्त, आरामपसन्द और विलासप्रिय पुरुष था और साथ ही सिद्धान्तविहीन और अपने कर्तव्य को पालन न करने वाला भी था। अन्य देशों में रहने और वहाँ विपत्तियों का सामना करने से वह कुछ समझदार हो गया था और यह तय कर चुका था कि वह कोई ऐसा काम न करेगा जिससे उसे देश छोड़कर फिर मारा-मारा इधर-उधर भटकना पड़े। अतएव बादशाह और पार्लियामेण्ट के बीच जो झगड़ा हुआ उसमें उसने एक ही नीति का पालन नहीं किया, किन्तु कभी-कभी तो वह बहुत प्रभुत्व जमाने की चेष्टा करता और कभी-कभी वह बिलकुल ही दब जाता था। इस

विरुद्ध प्रकार की नीति के कारण कुछ लोग तो उसे वीर और साहसी बतलाते हैं और कुछ लोग निर्बल और कायर कहते हैं। वास्तव में उसका उद्देश्य एकतंत्र शासन स्थापित करना था, लेकिन जब वह देखता कि उससे तीव्र विरोध होगा तो वह तुरन्त दब जाता था। वास्तव में वह किसी विशेष धर्म का अनुयायी न था, लेकिन कैथोलिक धर्म को सबसे अच्छा समझता था।

कन्वेंशन (Convention) पार्लियामेंट का कार्य—चार्ल्स के सिंहासन पर आरूढ़ होने के बाद कन्वेंशन पार्लियामेण्ट ने निम्न-लिखित क़ानून बनायेः—

(१) इस पार्लियामेंट का सबसे पहला काम शान्ति-रक्षा के लिये "क्षमा क़ानून" (Act of Indemnity) को पास करना था जिसके अनुसार सब लोगों को जिन्होंने चार्ल्स प्रथम के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया था, क्षमा कर दिया गया। १३ मनुष्यों को जिन्होंने न्यायाधीश बनकर चार्ल्स प्रथम को मृत्यु का दण्ड दिया था, फांसी देदी गई, कई क़ैद किये गये और कई को देश-निर्वासन का दण्ड मिला। आलीवर क्रामवैल और उसके दो और साथी आयरटन (Ireton) और ब्रैडशा (Bradshaw) मर चुके थे, मगर उनकी लाशों को क़ब्रों से निकाल कर फांसी पर चढ़ा दिया गया।

"नवीन आदर्श सेना" (New Model Army) के तीन दलों को छोड़कर सारी सेना को वेतन चुकाकर उसे भंग कर दिया गया। इन तीन दलों को बादशाह ने अपनी रक्षा के लिये रहने दिया। इस प्रकार चार्ल्स द्वितीय ने इंग्लैण्ड में स्थानीय सेना की नींव डाली।

(३) जागीरदारी प्रथा (Feudal System) के करों और भेंटों के धन से जो आमदनी बादशाह को होती थी, वह बन्द कर दी गई। बेगार की प्रथा मिटा दीगई। बादशाह की आमदनी की कमी पूरी करने के लिये शराब पर एक नया टैक्स लगाया गया और बादशाह के खर्च के लिये १२ लाख पौंड वार्षिक उसके मृत्युपर्यन्त के लिये पेंशन निश्चित की गई।

(४) आलीवर क्रामवैल के समय के जहाजी क़ानूनी (Navigation Act) को पुनर्जीवित किया गया।

(५) आलीवर क्रामवेल ने जो सन्धि आयरलैण्ड और स्काटलैण्ड के साथ की थी, वह तोड़ दी गई और उनको अपनी पृथक् पार्लियामेण्ट बनाने की आज्ञा दे दी गई। लेकिन धार्मिक प्रश्नों का निर्णय यह पार्लियामेण्ट बिल्कुल नहीं कर सकी।

चार्ल्स की वैदेशिक नीति—जबकि चार्ल्स द्वितीय इंग्लैंड में राज्य कर रहा था, उसी समय फ्रांस के सिंहासन पर चौदहवां लुई (Louis XIV) शासन कर रहा था, जो कि १६६१ ई० में गद्दी पर बैठा था। फ्रांस की आन्तरिक कठिनाइयां सब दूर हो गई थीं और वह इस समय उन्नति के राज-पथ पर दौड़ लगा रहा था। यूरोप में इस समय उसका सामना करनेवाली और कोई दूसरी शक्ति नहीं थी। उसका उद्देश्य स्पेन को पराजित करके उसके "स्पेनिश अमेरिका" पर अधिकार करने का था, और उसमें उसको अगर किसी का भय था तो वह इंग्लैण्ड का ही था, लेकिन इंग्लैण्ड में इस

समय चार्ल्स द्वितीय राज्य कर रहा था जोकि उसका सम्बन्धी था और लुई सर्वदा उसे आर्थिक सहायता देता था जिसके कारण चार्ल्स को नवीन कर स्वीकार कराने के लिये पार्लियामेण्ट के अधिवेशन को निमंत्रित करने की अधिक आवश्यकता नहीं होती थी।

चार्ल्स द्वितीय ने फ्रांस के साथ आलीवर क्रामवैल की मित्रता की नीति को जारी रखा। उसकी नीति क्रामवेल की नीति के अनुसार ही थी और प्रजा भी उस नीति को पसन्द करती थी क्योंकि इंग्लैण्ड और स्पेन में वैदेशिक व्यापार और उपनिवेशों का झगड़ा बराबर चला आ रहा था, लेकिन सब बातों को विचार करते हुए यह नीति हानिकारक थी क्यों कि अब स्पेन निर्बल हो गया था और इंग्लैण्ड को अब उससे किसी प्रकार का भय नहीं था। इसके विपरीत फ्रांस में एक नवीन जागृति उत्पन्न हो रही थी और वह समुद्री व्यापार और उपनिवेश स्थापित करने में संलग्न हो रहा था और इंग्लैण्ड का प्रतियोगी (शत्रु) बनने के प्रयत्न करने पर तुला हुआ था। इसलिए अब इंग्लैण्ड का मुख्य शत्रु फ्रांस होगया था। चार्ल्स इस बात को न समझ सका और न प्रजा का ध्यान ही कुछ समय तक इधर आकृष्ट हुआ।

चार्ल्स ने डन्कर्क (Dunkirk) के बन्दरगाह को सन् १६६२ ई० में फ्रांस के बादशाह लुई के हाथ ५०००० पौंड में बेच दिया। यह बन्दरगाह आलीवर क्रामवेल ने सन १६५८ ई० में फ्रांस से प्राप्त किया था। चार्ल्स के इस कृत्य से इंग्लैण्ड की प्रजा उससे अप्रसन्न हो गई।

लुई चौदहवें की सम्मति से ही चार्ल्स ने सन् १६६१ ई० मे पुर्त-गाल की राजकुमारी कैथेराइन (Catherine) के साथ व्याह कर लिया। इस राजकुमारी के दहेज मे उसे हिन्दुस्तान के पश्चिमी किनारे का बन्दरगाह बम्बई प्राप्त हुआ, जिसको कि उसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी (East India Company) को किराये पर दे दिया।

हालैण्ड के साथ द्वितीय युद्ध (सन १६६५-१६६७ ई०)—हालैण्ड के साथ यह युद्ध होने के कारण निम्न लिखित हैः—

(१) कन्वेशन पार्लियामेण्ट ने आलीवर क्रामवेल के समय के जहाजी कानून (Navigation Act) को पुनर्जीवित किया था, इससे हालैण्ड और इंग्लैण्ड के बीच तनातनी और बढ गई।

(२) युद्ध का मुख्य कारण यह था कि दोनों जातियां हिन्दुस्तान और पूर्वी देशों से व्यापार करती थीं और एक दूसरे की प्रतिद्वन्द्वी बनी हुई थी।

घटनायें—सन् १६६५ ई० मे लोयेस्टोफट (Lowestoft) पर और सन् १६६६ ई० मे डोवस (Dowas) पर भयंकर युद्ध हुआ जिसमे अंग्रेजों ने हालैण्डवालों को पराजित किया और उन्होंने हालैण्डवालों की अमेरिका मे स्थित उपनिवेश न्यू एमस्टर्डम (New Amsterdam) पर अधिकार कर लिया। सन् १६६७ ई० मे हालैण्डवाले अपने जहाजों को (Thames) नदी मे घुसा लाये और मैडवे (Medway) नगर तक पहुंच गये। कुछ अंग्रेजी जहाज जला दिये गये और कुछ पकड़ लिये गये।

इस युद्ध का अन्त ब्रेडा की सन्धि के अनुसार हुआ और यह निश्चय हुआ कि जिसने जो कुछ युद्ध के समय में विजय कर लिया हो वह उसी के अधिकार में रहे। इससे अमेरिका में हालैण्ड वालों का उपनिवेश (New Amsterdam) जिस पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया था उन्हीं के पास रहा।

केबिल मन्त्रीमंडल की वैदेशिक नीति क्लेरेंडन की नीति के विरुद्ध थी। उन लोगों ने फ्रांस की बढ़ती हुई शक्ति को रोकना चाहा। सन १६६५ ई० में जबकि अँग्रेज़ों और हालैण्ड वालों के बीच युद्ध हो रहा था, फ्रांस ने एक मामूली से बहाने पर स्पेनिश नीदरलैण्ड पर आक्रमण कर दिया। इससे इंग्लैण्ड वाले बहुत घबड़ाये, क्योंकि स्पेनिश नीदरलैण्ड (Spanish Netherland) ही उनके और फ्रांस के बीच एक रुकावट थी। इंग्लैण्ड में भी मन्त्रिमंडल फ्रांस से मित्रता रखने के विरुद्ध था। इसलिए हालैण्ड, इंग्लैण्ड और स्वीडन ने मिलकर सन १६६७ ई० में एक संघ बनाया जोकि "त्रिगुण-संघ" (Triple Alliance) के नाम से प्रसिद्ध है। उससे उन्होंने फ्रांस की शक्ति को रोकने की प्रतिज्ञा की। फ्रांस के राजा लुई ने यह देखकर स्पेन से लड़ना उचित नहीं समझा और सन १६६८ ई० में एलाशेपिल (Aix-la-chepelle) के स्थान पर सन्धि करली, लेकिन उसने डच प्रजातंत्र को मज़ा चखाने का पूरा इरादा कर लिया, इसलिये उसने इंग्लैण्ड और स्वीडन को अपनी ओर मिला लिया।

डोवर की गुप्तसन्धि (सन् १६७० ई०)—चार्ल्स द्वितीय की पूरी सहानुभूति पहले से ही फ्रांस के बादशाह लुई के साथ

Old St Paul's, London
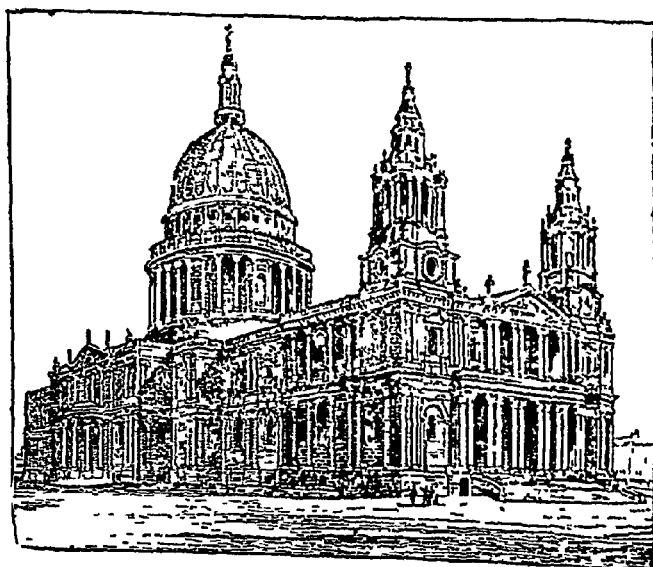
St Paul's Cathedral, London

थी, केवल प्रजा के भय से उसने त्रिगुणसंधि (Triple Alliance) में भाग लिया था। अतएव सन् १६७० ई० में उसने लुई के साथ डोवर के स्थान पर गुप्त संधि (Secret Treaty of Dover) की, जिसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि चार्ल्स त्रिगुणसन्धि में शामिल नहीं रहेगा, बल्कि चार्ल्स फ्रांस को हालैण्ड के विरुद्ध सहायता देगा और लुई उसके बदले में उसको रुपया देगा। फिर चार्ल्स ने वायदा किया कि वह इंग्लैण्ड में कैथोलिकधर्म का प्रचार करेगा और लुई ने उसके बदले में सेना और धन द्वारा सहायता करने का उसे वचन दिया। अन्तिम बात गुप्त रखी गई, जो दो मत्रियों के अतिरिक्त किसी को नहीं मालूम हुई। सन १६७२ ई० में फ्रास ने स्वीडनवालों को रुपया देकर ट्रिपल एलाइंस (Triple Alliance) में सम्मिलित रहने से पृथक् कर दिया और उसके बाद हालैण्ड पर आक्रमण और किया गया।

हालैण्ड से तीसरी लड़ाई (सन् १६७२ ई०)—डोवर की गुप्त संधि के अनुसार कार्य करते हुये चार्ल्स द्वितीय ने फ्रांस के बादशाह को सहायता देने के रूप में हालैण्ड वालों से युद्ध छेड़ दिया और उनके जहाजी बेड़े पर कई बार आक्रमण किया गया; लेकिन इस लड़ाई में फ्रांस और इंग्लैण्ड दोनों को विपत्ति का सामना करना पड़ा। डच लोगों ने असाधारण धैर्य और वीरता से काम लिया और अंग्रेजी जहाजों को कोई विजय प्राप्त नहीं होने दी। इस लड़ाई का प्रभाव इंग्लैण्ड की प्रजा पर बहुत बुरा पड़ा और अंग्रेजों ने यह विचार किया कि चार्ल्स लुई के हाथ का खिलौना बन

गया है। इंग्लैण्ड ने चार्ल्स की नीति को बिल्कुल नापसन्द किया, क्योंकि इससे फ्रांस की शक्ति दूनी बढ़ जाने का अंदेशा था। अन्त में चार्ल्स को हालैण्ड से सन्धि करनी पड़ी। कुछ समय बाद चार्ल्स द्वितीय के भाई ड्यूक आफ यार्क (Duke of york) जो बाद को जेम्स द्वितीय के नाम से सिंहासन पर बैठा, की लड़की मेरी का विवाह हालैण्ड प्रजातन्त्र के सभापति विलियम (William) से कर दिया गया। इस प्रकार हालैण्ड और इंग्लैण्ड में पारस्परिक मित्रता का आरम्भ हुआ।

कैवेलियर पार्लियामेण्ट (सन् १६६१–१६७९ ई०)—मई सन १६६१ ई० में एक नई पार्लियामेण्ट का अधिवेशन बादशाह की आज्ञा से निमंत्रित किया गया। जो कि जनवरी सन १६७९ ई० तक स्थिर रहा। इस पार्लियामेण्ट के अधिकतर प्रतिनिधि प्रजातंत्र शासन की असफलता से उकताकर बादशाह के इतने पक्षपाती थे कि पार्लियामेण्ट "कैवेलियर पार्लियामेण्ट" (Cavalier-Parliament) के नाम से प्रसिद्ध हो गई। इस पार्लियामेण्ट में अधिकतर सदस्य अंग्रेजी गिरजा (Anglican Church) के सहायक थे। यह पार्लियामेण्ट थी तो राजा की सहायक, लेकिन यह समझना ठीक न होगा कि वह स्वतन्त्र पार्लियामेण्ट न थी।

यह पार्लियामेण्ट सुविधा के लिए तीन भागों में विभाजित की गई है :—

(१) सन १६६० से १६६७ ई० तक जबकि क्लेरेंडन प्रधान-मन्त्री था।

(२) सन् १६६७ से १६७३ ई० तक जबकि कैबल (Cabal) के हाथों में शासन की बागडोर थी।

(३) सन १६७३ से १६७८ ई० तक जबकि अर्ल आफ़ डर्बी (Earl of Durby) प्रधानमन्त्री था।

जैसाकि पहले वर्णन किया जा चुका है चार्ल्स का वास्तविक उद्देश्य एकतन्त्र शासन स्थापित करना था, इसलिए कभी-कभी तो वह अपना प्रभाव जमाने की नीति का प्रयोग करता; लेकिन जब वह देखता था कि उससे तीव्र विरोध होगा• तो वह तुरन्त ही दब जाता था और पार्लियामेण्ट के कहने के अनुसार ही करने लगता था।

क्लेरेण्डन का मन्त्रित्व (सन् १६६०-६७)–इन सात वर्षों के लिए क्लेरेण्डन (Clarendon) प्रधान मन्त्री था; लेकिन वह केवल अकेला ही मन्त्री नहीं था, किन्तु बादशाह ने अपने चारों ओर एक छोटा-सा दल एकत्रित कर लिया था, जिसकी कि प्रायः सम्मति लेलिया करता था, क्योंकि प्रिवी कौंसिल (Privy Council) अब बहुत बड़ी और विभिन्न विचारों की हो गई थी; लेकिन अभी तक मन्त्री परस्पर एक सम्मति वाले नहीं थे जैसाकि बाद में कैबिनेट (Cabinet) में हो गया। क्लेरेण्डन चार्ल्स के देशनिर्वासन के दिनों मे उसका साथी था। अब बादशाह ने उसको लार्ड क्लेरेण्डन की उपाधि देकर उसको अपना प्रधान मन्त्री बना लिया था। इस पार्लियामेण्ट में अधिकतर संख्या अंग्रेजी चर्च के हितचिन्तकों की थी। ये लोग प्योरीटन लोगों के अत्याचारों का बदला लेना चाहते थे, इस लिए क्लेरेण्डन के मन्त्रित्व काल में पार्लियामेण्ट ने प्योरीटनों (Puri-

tans) के विरुद्ध निम्नलिखित कानून बनाये जोकि "क्लेरेण्डन कोड" (Clarendon Code) के नाम से प्रसिद्ध हैं :—

(१) सन् १६६१ में एक कानून (Corporation Act) कारपोरेशन एक्ट के नाम से बनाया, जिसके अनुसार केवल वही लोग नगरों की प्रबन्धकारिणी कमेटियों के सदस्य हो सकते थे, जो अँग्रेज़ी चर्च के रीतिरस्मों को मानते थे।

(२) सन् १६६२ ई० मे एक कानून "ऐक्ट आफ यूनीफार्मिटी" (Act of Uniformity) पास किया गया, जिसके अनुसार सब पादरियों को अंग्रेजी चर्च की प्रार्थना पुस्तक का प्रयोग करने पर बाधित किया गया। बहुत से पादरियों ने यह अस्वीकार किया और उनको अपने पद से पृथक् होना पड़ा। सन १६६२ ई० के २४ अगस्त को सेंट बार्थोलोम्यो दिवस (St. Bartholomew's Day) पर लगभग दो हजार पादरी केवल इसी कारण से बरखास्त किये गये।

(३) सन १६६४ ई० में एक कानून "कन्वेन्टिकल ऐक्ट" (Conventicle Act) बनाया गया, जिसके अनुसार अंग्रेजी चर्च वालों के अतिरिक्त पाँच से अधिक मनुष्य मिल कर एक स्थान पर प्रार्थना नहीं कर सकते थे।

(४) सन् १६६५ ई० मे एक और क़ानून "पाँच मील का कानून" (Five Mile Act) बनाया गया, जिसके अनुसार उन पादरियों को जिन्होंने अंग्रेजी चच की प्रार्थना पुस्तक के अनुसार प्रार्थना करने से इन्कार किया था, उन शहरों और कस्बों के पाँच

मील तक रहने के लिये निषेध कर दिया गया, जहाँ उन्होंने पहले प्रार्थना और धर्मोपदेश किया था।

ये सब क़ानून मिल कर क्लेरेन्डन कोड (Clarendon Code) के नाम से प्रसिद्ध होगये, क्योंकि वे क्लेरेन्डन के मन्त्रित्वकाल में निर्माण किये गये थे। इन कानूनों से प्योरीटन दल बिल्कुल कमज़ोर हो गया और कुछ समय बाद स्वयं "प्योरीटन" शब्द का ही लोप होगया और अब उस दल के लोग स्थायीरूप से "पृथक्वादी" (Dissenters Separatists) अथवा (Non-Conformists) आदि के नामों से पुकारे जाने लगे। उनमें से बहुत से लोग अपना देश छोड़ कर अन्य देशों में चले गये। बहुत से लोगों ने अपने अन्तरात्मा के विश्वास के कारण क़ैदख़ानों की कठिनाइयों को सहन किया। उनमें से जौन बनियान (John Bunyan) का नाम जानने योग्य है, जिसने कि प्रसिद्ध ग्रन्थ "पिलग्रिम्सप्रोग्रेस" (Pilgrim's Progress) का निर्माण किया था।

यह धार्मिक अत्याचारों और पक्षपात की नीति, जो इस समय प्रचलित की गई थी, वह वास्तविक रूप में पार्लियामेण्ट के अधिकतर मेम्बरों के विचारों के अनुसार थी, यद्यपि क्लेरेन्डन स्वयं और बादशाह भी इस नीति के विरुद्ध थे। क्लेरेन्डन व्यक्तिगत रूप से ऐसे क़ानून प्योरीटन लोगों के विरुद्ध न बनाता जैसे कि पार्लियामेण्ट ने इस समय बनाये। लेकिन क्योंकि शक्तिशालिनी पार्लियामेण्ट के सामने उसकी कुछ चल नहीं सकती थी, इसलिए उसने पार्लियामेण्ट का विरोध नहीं किया। बादशाह भी इस नीति के विरुद्ध था, क्योंकि

(१) ब्रैडा की सन्धि के अनुसार उसने धार्मिक स्वतन्त्रता देने का वचन दिया था। (२) दूसरे, क्योंकि उसको भीतरी तौर पर रोमन कैथोलिक मत से प्रेम था, इसलिये वह उनके साथ नर्मी का व्यवहार करता; लेकिन जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है, विदेश मे रहने और वहाँ कठिनाइयों का सामना करने से वह कुछ समझदार हो गया था और अब वह पार्लियामेण्ट से झगड़ा मोल लेना नहीं चाहता था, इसलिये उसने भी पार्लियामेण्ट के दबाव के कारण अपनी स्वीकृति दे दी।

अभी तक वैदेशिक नीति में बादशाह और मन्त्रियों की सम्मति से ही कार्य होता था और पार्लियामेण्ट को वैदेशिक कानून में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं था; लेकिन अब पार्लियामेण्ट ने इतना जोर पकड़ लिया था कि वह बाहरी नीति मे भी हस्ताक्षेप करने लगी थी। सन् १६६२ ई० मे जब राजा ने डंकर्क को फ्रांस के हाथ बेच दिया, तो पार्लियामेण्ट ने उसका तीव्र विरोध किया। सन् १६६५ और १६६६ ई० मे भीषण महामारी (Plague) और अग्निकाड की घटनाये हुईं, उनसे जो हानियाँ हुईं वे क्लेरेन्डन के माथे मढ़ी गईं। दुर्भाग्य से सन १६६७ ई० मे डच लोगों ने भी अंग्रेजों को हानि पहुंचाई और लन्दन के निकट आकर अंग्रेजी बेड़े मे आग लगादी। इस पर प्रजा का क्रोध और भी बढ़ गया और प्रजा बिगड़ उठी। पार्लियामेण्ट मे क्लेरेन्डन पर अभियोग चलाया गया और सन् १६६७ ई० मे ही उसे मन्त्रित्व पद को छोड़ कर फ्रांस चला जाना पड़ा।

केबल मंत्रिमण्डल(१६६७-१६७३)—सन् १६६७ ई० में चार्ल्स ने क्लेरेन्डन को मन्त्रि पद से पृथक् कर दिया और उसके

स्थान पर निम्नलिखित पाँच मंत्रियों की एक सभा नियुक्त की। वे मन्त्री क्लिफोर्ड (Clifford) आरलिंगटन (Arlington) बकिंगघाम (Buckingham), ऐशले (Ashley) और लाडरडेल (Lauderdale) थे। इन मन्त्रियों के नामों के प्रथम अक्षरों को मिलाने से शब्द (Cabal) बन जाता है। इसलिये इनकी कमेटी को "केबल" (Cabal) कहते हैं। इन मन्त्रियो में आरलिंगटन (Arlington) और क्लिफोर्ड (Clifford) का पक्ष रोमन कैथोलिक लोगों की ओर था; लेकिन बकिंगघाम (Buckingham) ऐशले (Ashley) और लाडरडेल (Lauderdale) चर्च विरोधी (Dissenters) लोगों से अधिक संबन्ध रखते थे। इस मन्त्रिमण्डल को प्रारम्भ में कुछ प्रसिद्धि प्राप्त हुई; लेकिन बाद में डोवर की गुप्त सन्धि में भाग लेने के कारण और फिर हालैंड के विरुद्ध युद्ध छेड़ने और उसमें विजय प्राप्त न कर सकने के कारण उसकी सब प्रतिष्ठा जाती रही। और नहीं उनको फ्रांस से रुपया मिलने का प्रयोजन ही सिद्ध हुआ। इन सब बातों का प्रभाव यह हुआ कि रुपया न मिलने के कारण चार्ल्स ने लन्दन के साहूकारों को रुपया देना बन्द कर दिया। उससे उन साहूकारों का दिवाला निकल गया और लोगों पर बुरा प्रभाव पड़ा।

सन् १६७२ ई० में बादशाह ने एक घोषणा सर्व साधारण के लिये पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के बिना "सहिष्णुता की घोषणा" (Declaration of Indulgence) के नाम से जारी की और उसके अनुसार कैथोलिकों और डिसेण्टरों (Dissenters) सब को धार्मिक स्वतंत्रता देदी। प्रारम्भ में तो डिसेन्टर्स ने इस घोषणा मे लाभ

उठाया, लेकिन धीरे-धीरे अब यह प्रश्न उत्पन्न होने लगा कि राजा को पार्लियामेंट की बिना सम्मति के इस प्रकार की घोषणा करने का कोई अधिकार भी था या नहीं ? डिसेन्टर लोग भी इस घोषणा से असन्तुष्ट होने लगे थे, क्योंकि वे कैथोलिक लोगों को किसी प्रकार की सुविधायें देने को तैयार नहीं थे। और अब जबकि हालैण्ड से युद्ध करने में अंग्रेजों को सफलता नहीं मिली, तो राजा की आर्थिक दशा और भी ख़राब होगई और अब अन्य कोई उपाय नहीं रहा सिवाय इसके कि पार्लियामेण्ट का अधिवेशन रुपये की स्वीकृति के लिये बुलाया जाय।

इसलिये सन १६७३ ई० मे राजा ने आर्थिक सहायता के लिये पार्लियामेण्ट को बुलाया, लेकिन उसने राजा की बाहरी नीति का तीव्र विरोध किया और उसे धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा को रद्द करने के लिये मजबूर किया और जैसा कि ऊपर वर्णन हो चुका है, इसकी नीति में दो बातें पाई जाती है, एक तो यह कि वह कभी-कभी अपनी शान जमाने की चेष्टा करता है और फिर अवसर न देखकर बिल्कुल ही दब जाता है। इसी प्रकार इस अवसर पर समस्त मेम्बरों के दबाव से राजा ने चुपके से पार्लियामेण्ट की बात मान ली और धार्मिक स्वतन्त्रता का वह घोषणा पत्र वापिस ले लिया। राजा अब इतना दब गया कि पार्लियामेण्ट ने जो "परीक्षा कानून" (Test Act) बनाया, उसपर अपनी स्वीकृति तुरंत दे दी। इस क़ानून का प्रयोजन यह था कि प्रत्येक सरकारी कर्मचारी को नौकरी मिलने से पूर्व इस बात की परीक्षा देनी पड़ेगी कि वह इंगलिश

चर्च के सिद्धान्तों को मानता है और उन्हीं के अनुसार पूजा प्रार्थना करता है। इस क़ानून के अनुसार ड्यूक आफ़ यार्क (जेम्स द्वितीय) ने समुद्री लाट (Lord of Navy) के पद से त्यागपत्र दे दिया और "केबल" मन्त्रिमण्डल के दो मन्त्री भी रोमन कैथोलिक होने के कारण पृथक् कर दिये गये। इसपर बादशाह ने "केबल" के शेष तीन मंत्रियों को भी पृथक् करके "केबल" मत्रिमण्डल का अन्त कर दिया।

डैनबी और पार्लियामेण्ट—अब बादशाह यह बात भली-भाँति समझ गया था कि उसके मन्त्री ऐसे भी होने चाहियें, जो कि पार्लियामेण्ट के मेम्बरों से सहमति रखते हों। इसलिए इसबार अर्ल आफ़ डैन्बी (Earl of Danby) को, जोकि पार्लियामेण्ट का एक जोरदार लीडर था, अपना मन्त्री बनाया। उसकी आन्तरिक नीति यह थी कि वह इंग्लैण्ड के चर्च की रक्षा करे। वह कैथोलिक और डिसेंटर लोगों के साथ किसी प्रकार की सहिष्णुता का व्यवहार करने को तैयार नहीं था।

उसकी बाहरी नीति चार्ल्स के विचारों के बिल्कुल विपरीत थी। वह फ्रांस के बादशाह चौदहवें लुई की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के पक्ष में था; मगर फ्रांस के बादशाह से ऊपरी तौर पर मित्रता का व्यवहार भी रखना चाहता था। अपनी इसी नीति पर अनुगमन करते हुए डेन्बी ने सन् १६७७ ई० में चार्ल्स के भाई जेम्स की बड़ी लड़की मेरी का विवाह विलयम आफ़ औरंज (William of Orange) से करदी, जो उस समय फ्रांस का सबसे बड़ा शत्रु था।

बादशाह यद्यपि हृदय से इस विवाह के पक्ष में नहीं था; लेकिन क्योंकि वह एक समझदार और चतुर पुरुष था और पार्लियामेण्ट से बिगाड़ना नहीं चाहता था, इसलिए वह इस अवसर पर दब गया और उसने उस विवाह के लिए अपनी स्वीकृति दे दी।

अब डेन्बी फ्रांस से बिल्कुल सम्बन्ध विच्छेद करना चाहता था; लेकिन चार्ल्स के इन्कार करने के कारण मजबूर था। सन् १६७५ ई० में उसको चार्ल्स ने फ्रांस के साथ एक नये सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करने को मजबूर किया। डैन्बी को पार्लियामेण्ट का भय था इसलिये उसने हस्ताक्षर करते हुए यह स्पष्ट लिख दिया कि वह बादशाह के कहने से हस्ताक्षर कर रहा है।

डेन्बी ने सबसे प्रथम अपनी अध्यक्षता में बादशाह के सहायकों का एक दल बनाया जो "राजकीय दल" कहलाया। इस दल का उद्देश्य ऐंग्लीकन चर्च को स्थापित रखना और राजा की शक्ति को स्थिर करना था। उसके विरुद्ध शेफ्टसबरी (Shaftesbury) ने पार्लियामेण्ट में एक दूसरा दल तैयार किया, जोकि "राष्ट्रीय दल" कहलाया। उसका उद्देश्य सब बातों से बढ़कर कानून को मानना था। वह दल बादशाह का विशेष मान नहीं करते थे, किन्तु उसको राष्ट्र का प्रथम अफ़सर समझते थे। इन दोनों दलों में दिन-प्रतिदिन विरोध अधिकाधिक होता गया।

रोमन कैथोलिक षड्यन्त्र (सन् १६७८ ई०)—एक पादरी टाइटस ओटस (Titus Oates) ने यह प्रसिद्ध कर दिया और मजिस्ट्रेट के सामने शपथ लेकर यह बयान दिया कि उसको एक षड्यन्त्र का पता लगा है, जिसका उद्देश्य चार्ल्स को

मारने और जेम्स को बादशाह बनाने का है और कैथोलिकों की सहायता के लिये फ्रांस का बादशाह एक बड़ी सेना भेजेगा। लोगों को विश्वास होगया कि यह बात सच होगी और इसलिए बहुत-से निरपराध कैथोलिक लोगों पर अभियोग चलाये गये और अनेकों का वध कर दिया गया।

सन १६७७ ई० में विलियम आफ़ औरेंज (William of Orange) इंग्लैण्ड आया और अब इंग्लैण्ड और हालैण्ड में मित्रता होने की बात हो रही थी। फ्रांस के बादशाह लुई को इससे भय हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि इनमें परस्पर सन्धि होजाय। इसलिये लुई ने उस सन्धिपत्र को जोकि सन् १६७५ ई० में हुई थी और जिसपर डेन्बी के हस्ताक्षर थे, विरोधीदल के नेता शेफ्टसबरी (Shaftesbury) और उसके मित्रों को दे दिया। उसको देखकर विरोधीदल और भी अधिक रुष्ट होगया और पार्लियामेण्ट ने तुरन्त ही डेन्बी पर अभियोग चला दिया और जबकि उसने यह कहकर उससे मुक्त होना चाहा कि उसने सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर अपनी इच्छा से नहीं; किन्तु बादशाह के कहने से किये हैं, तो पार्लियामेण्ट ने उत्तर दिया कि इससे वह अपने उत्तरदायित्व से पृथक् नहीं हो सकता उसके बाद चार्ल्स ने अपनी १७ वर्ष की पार्लियामेण्ट को भंग कर दिया।

तीन ह्विग पार्लियामेण्टों के अधिवेशन और हैबियस कौर्पस ऐक्ट तथा एक्सक्लूजन बिल—इसके बाद राजा ने पार्लियामेण्ट को तीन बार बुलाया और तीनों बार राजा के विरोधी

ह्विग लोगों के सहायकों का जोर रहा। उनका नेता शेफ्टसबरी (Shaftesbury) था। इस दल ने राजा की शक्ति कम करने के लिये एक कानून "हैबियस कोर्पस ऐक्ट" (Habeas-Corpus Act) बनाया। चार्ल्स का अवसर देखकर दब जाने का नमूना सबसेअच्छा सन १६७९ ई० मे इस ऐक्ट का पास होने देना है। इस ऐक्ट का नाम लैटिन भाषा से लिया गया है और उसके अर्थ हैं "तुमको इसे अवश्य करना होगा।" इस क़ानून का मुख्य प्रयोजन यह था कि कोई आदमी बिना मुकद्दमा चलाये यों ही गिरफ्तार करके क़ैद नहीं किया जा सकता। इस क़ानून मे निम्न लिखित शर्ते थीं :—

(१) जो लोग किसी अपराध के कारण फ़ैसला होने से पूर्व क़ैद मे रखे जाते थे, उनके रिश्तेदार इस कानून के अनुसार जेल के दारोग़ा से यह आज्ञा प्रचलित करा सकते थे कि अपराध का फ़ैसला होने के लिये अपराधी को तुरन्त अदालत मे पेश किया जाय। इसका यह प्रयोजन था कि कहीं ऐसा न हो कि अपराध के फ़ैसले के इन्तज़ार में अपराधी को बहुत समय तक हवालात मे ही पड़े रह कर मुसीबत उठानी पड़े।

(२) एक अपराधी जिसपर एक बार एक अभियोग लग चुका हो और उसमें वह निरपराध सिद्ध हुआ हो, उसी मनुष्य पर उसी अपराध को सिद्ध करने के लिये अपनी साक्षियों के आधार पर दुबारा अभियोग न चलाया जावे।

इस क़ानून की भी गिनती इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता के आदेशपत्रों मे की जाती है।

फिर इस विरोधी ह्विगदल ने चार्ल्स के बाद जेम्स को राजसिहांसन से पृथक् रखने के लिये एक "पृथकत्व बिल" (Exclusion Bill) पेश किया। तीनों पार्लियामेण्टों में यह क़ानून उपस्थित हुआ और अन्त में हाउस आफ़ लार्ड्स ने उसे अस्वीकार कर दिया। उसके बाद पार्लियामेण्ट ने राजा के एक हरामी लड़के मन्माउथ (Monmouth) को, जो कि प्रोटैस्टेण्ट था, राजा चार्ल्स के उत्तराधिकारी बनाने का उपाय किया। इस बात से पार्लियामेण्ट ने प्रजा को अपने विरुद्ध कर लिया और राजा ने पार्लियामेण्ट को निर्बल जान कर उसे सन १६८१ ई० में तोड़ दिया और फिर शेष जीवन में बिना पार्लियामेण्ट के ही शासन किया।

राजनीतिक दलों का स्थापित होना—"पृथकत्व बिल" (Exclusion Bill) के अवसर पर इंग्लैण्ड में दो नवीन दलों की सृष्टि हुई। वह दल जो कि उस बिल का विरोधी था, टोरी (Tory) दल कहलाया। दूसरे लोग, जो उस बिल के पक्ष में थे, Whig (ह्विग) कहलाये। राजा द्वारा शासन के पक्षपाती दोनों दल थे; लेकिन टोरी लोग निरंकुश व्यक्तिगत राज शासन के पक्ष में थे और ह्विग लोग बैधानिक शासन चाहते थे। इस समय समस्त देश में एक प्रकार की अशान्ति सी फैली हुई थी। चार्ल्स के शासनकाल में ये सब बातें दबी सी रहीं; लेकिन दशा बहुत ख़राब हो चुकी थी और ज़रा सी चिनगारी से ही आग लग जाने का अन्देशा था।

चार्ल्स का एकतन्त्र शासन स्थापित करने का प्रयत्न—जैसा कि पहले वर्णन किया जा चुका है, चार्ल्स का प्रयोजन देश में

एकतंत्र स्वेच्छाचारी शासन करने का था; लेकिन विदेशों में रहने और वहाँ आपत्तियां सहन करने के कारण से उसको कुछ समझ आगई थी और इसलिये जब वह देखता कि उसकी नीति का विरोध होरहा है, तो तुरन्त दबजाता था। उसका उद्देश्य यह था कि कैथोलिक लोगों को पूरी धार्मिक स्वतंत्रता दी जाय, एक स्थायी सेना रखी जाय और फ्रांस से मित्रता की जाय। कैथोलिक लोगों को वह इसलिये स्वतंत्रता देना चाहता था कि वे बादशाह के पक्ष में होकर उसे एकतंत्र शासन स्थापित करने मे सहायता देंगे। फ्रास से मित्रता करके वह वहाँसे रुपया और सैनिक पाने का इच्छुक था।

सन् १६७० ई० में बादशाह ने फ्रांस के बादशाह लुई के साथ एक गुप्त सन्धि की, ताकि उसे पार्लियामेण्ट के सामने रुपये के लिये हाथ न फैलाने पड़े। और क्लेरेन्डन के मंत्रित्व की समाप्ति के बाद उसने अपनी इच्छा के अनुकूल मन्त्री निर्वाचित करने और सन् १६७२ ई० मे "सहिष्णुता की घोषणा" (Declaration of Indulgence) प्रकाशित करके रोमन कैथोलिक लोगों को स्वतंत्रता देनी चाही, लेकिन इससे पार्लियामेण्ट मे उसका तीव्र विरोध हुआ। इसपर वह एकदम दब गया और सन् १६७३ ई० मे उसने एकदम "परीक्षा क़ानून" (Test Act) पर हस्ताक्षर कर दिये। इससे केवल मंत्रिमंडल (Cabal Ministry) का अन्त होगया। उसके बाद अर्ल आफ़ डैन्बी (Earl of Danby) मंत्री नियुक्त हुआ और इस पर वह इतना दब गया कि उसने अपनी इच्छा के विरुद्ध अपने भाई जेम्स की बड़ी लड़की का विवाह

विलियम आफ़ औरेंज के साथ में करा दिया; लेकिन डैन्बी ने चार्ल्स के कहने पर सन् १६७५ ई० में फ्रांस के गुप्त संधिपत्र पर हस्ताक्षर कर दिये और जबकि लुई ने यह सन्धिपत्र उसके शत्रुओं को दिखा दिया, तो पार्लियामेण्ट ने डैन्बी पर अभियोग चलाया और उसको टावर (Tower) में क़ैद कर दिया।

उसके बाद पार्लियमेण्ट ने "पृथकत्व क़ानून" (Exclusion Bill) पास करके जेम्स को इंग्लैण्ड के सिंहासन से वंचित रखने की चेष्टा की; लेकिन बादशाह ने सन् १६८१ ई० में पार्लियामेण्ट को भंग कर दिया और लगभग ४ वर्ष तक बिना पार्लियामेण्ट के ही शासन करता रहा। अतएव वह धार्मिक स्वतंत्रता देने में तो असफल रहा; लेकिन वह एकतंत्र शासन कुछ सीमा तक अवश्य स्थापित करने में सफल हुआ।

सन् १६८१ ई० में पार्लियामेण्ट को भंग करने के चार वर्ष बाद तक वह पार्लियामेण्ट को बिना बुलाये मनमाना शासन करता रहा, यद्यपि वह ऐसा करने में "त्रिवर्षीय क़ानून" (Triennial Act) के विरुद्ध कर रहा था; लेकिन इस पर भी जनता ने चार्ल्स का विरोध नहीं किया और जबकि चार्ल्स ने ह्विग (Whig) नेताओं से बदला लेना चाहा, तब भी प्रजा ने उसका साथ दिया। मन्माउथ (Monmouth) शेफ्टसबरी (Shaftesbury) और दूसरे ह्विग नेता हालैण्ड भाग गये। कुछ ह्विगदल के लोगों ने बादशाह चार्ल्स और जेम्स को पकड़ने के लिये सन १६८६ ई० में एक षड़यंत्र राईहाउस (Rye-House Plot) प्लाट के नाम से तैयार किया; लेकिन उस सारे

षड्यंत्र का भेद शीघ्र ही खुल गया। फलस्वरूप बहुत से ह्विग नेताओं को मृत्यु का दण्ड मिला और अनेकों का देश से निर्वासन कर दिया गया, लेकिन यह कहना पड़ेगा कि चार्ल्स में इतनी शक्ति होने पर भी उसका इतना साहस न हुआ कि बिना पार्लियामेण्ट की आज्ञा के टैक्स वसूल कर सके। सन् १६८५ ई० में चार्ल्स की मृत्यु हो गई। इस बात के लिये अवश्य चार्ल्स को प्रशंसा करनी पड़ेगी कि उसके समय में, जो कुछ काम पार्लियामेण्ट ने कर दिखाया था, उसने उस सब पर अपनी चतुरता से पानी फेर दिया।

छठा अध्याय

जेम्स द्वितीय (सन् १६८५ से १६८८ तक)

जेम्स के राज्याभिषेक के समय की दशा— चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई ड्यूक आफ़ यार्क (Duke of York), जिसे सिंहासन से वंचित करने का प्रयत्न असफल रहा था, अब जेम्स द्वितीय (James II) के नाम से सिंहासन पर विराजमान हुआ। चूँकि वह रोमन कैथोलिक था, इसलिये पाँच वर्ष पहले इंग्लैण्ड के निवासी उसको सिंहासन पर बिठाने के विरुद्ध थे, लेकिन अब ह्विगदल ने जो कि उसके विरुद्ध था, प्रजा की सहानुभूति बिल्कुल खो दी थी और लोगों के विचार में बादशाह के सम्बन्ध में इतना परिवर्तन उत्पन्न होगया था कि रोमन कैथोलिक होते हुए भी जेम्स द्वितीय को सिंहासन पर बैठते समय कोई आपत्ति नहीं उठानी पड़ी।

पार्लियामेण्ट ने उसको अपने कैथोलिक ढंग पर प्रार्थना करने की आज्ञा देदी और उससे यह गुप्त प्रतिज्ञा कराली कि उसके द्वारा अंग्रेजी चर्च को किसी प्रकार की हाँनि नहीं पहुँचाई जायगी। दूसरे, पार्लियामेण्ट ने जीवन भर के लिए एक उचित धन उसके व्यय के लिये वार्षिक नियत कर दिया और शासन के कार्यों के लिये कुछ नये टैक्स भी प्रजा पर लगाये। इस प्रकार कुछ मास तक शासन का कार्य बड़े सुचारुरूप से चलता रहा।

चार्ल्स द्वितीय और जेम्स द्वितीय—जेम्स द्वितीय और चार्ल्स द्वितीय के चाल-चलन में यह अन्तर था कि :—

(१) जेम्स अतिशयवादी (Extremist) था, लेकिन चार्ल्स इतना कट्टर नहीं था, वह अवसर देखकर काम करनेवाला था और अवसर आने पर दब भी जाता था।

(२) जेम्स कट्टर रोमन कैथोलिक था और जो उससे मतभेद रखते थे, उनको नास्तिक (Heretics) समझता था। चार्ल्स इतना कट्टर नहीं था।

(३) चार्ल्स की तरह जेम्स भी एकतंत्र शासन का पक्षपाती था; लेकिन जो लोग कि राजनीति में उससे मतभेद रखते थे, उनको वह विद्रोही समझता था और (Rebels) कहकर पुकारता था।

यद्यपि चार्ल्स भी रोमन कैथोलिक और एकतंत्र शासन का पक्ष-पाती था, लेकिन उतना कट्टर और अतिशयवादी नहीं था, जितना कि जेम्स था, क्योंकि उसको अनुभव हो गया था और इसलिये वह अवसर देखकर दब जाता था। इसी कारण से वह इतने वर्ष तक शासन कर सका। इसके विपरीत जेम्स को कई कठिनाइयों का भी

"Warner and Martin" page 408

"James succeeded to a more difficult situation, but the difference in their respective characters accounts for the fact that whilst Charles reigned for 25 years and found himself in a stronger position at the end of his rule than he was at its beginning, James reign came to an abrupt conclusion in less than four years"

सामना उसी समय करना पड़ा, जबकि वह सिंहासन पर बैठा और चूँकि उसमें चार्ल्स के समान गुण नहीं थे कि अवसर पर दब कर काम निकाल ले, इसलिये वह शासन को संभाल भी नहीं सका और चार वर्ष के भीतर ही उसे देश से निर्वासित होना पड़ा।

मन्मथ का विद्रोह (सन् १६८५ ई०)—जेम्स द्वितीय के शासन काल के प्रारम्भ में चार्ल्स द्वितीय के हरामी लड़के ड्यूक आफ़ मन्मथ (Duke of Monmouth) ने विद्रोह का झंडा ऊँचा किया। प्रोटेस्टेंट होने के कारण से इंग्लैण्ड में कुछ लोगों की सम्मति थी कि उसको सिंहासन पर बिठाया जावे। सन् १६८१ ई० मे अर्ल आफ़ शेंसवरी के साथ वह हालैण्ड भाग गया था। उसने फिर आकर दक्षिणी-पश्चिमी भाग की प्रौटैस्टेण्ट प्रजा को भड़काया और कुछ ने उसका साथ भी दिया। जेम्स द्वितीय ने इस विद्रोह को दबाने के लिए सेना भेजी, जिसने सैजमूर (Sedgemoor) के स्थान पर विद्रोहियों को पराजित किया। मन्मथ वहाँ से भाग गया; मगर कुछ समय के बाद वह गिरफ्तार हुआ और क़ैद कर लिया गया, फिर विद्रोह करने के अपराध में उसे मौत का दंड दिया गया।

खूनी अदालतें— मन्मथ के बहुत-से सहायक भी क़ैद कर लिए गये और उनपर अभियोग चलाया गया। जेम्स ने जज जैफ्रीज़ (Judge Jaffreys) नियुक्त किया, जिसने बहुत संक्षिप्तरूप में उन अभियोगों की सुनवाई की और अभियुक्तों को बड़ी भीषण सज़ायें दीं। वे अदालतें, जो कि इस जज ने इन अभियोगों की सुनवाई के लिए इंग्लैण्ड के पश्चिमी भाग में बनाईं, अपने भीषण

दण्ड देने के कारण "खूनी अदालत" (Bloody Assizes) कहलाती थीं।

जेम्स की नीति—जेम्स ने इस विद्रोह के पश्चात् अपनी स्थायी सेना की संख्या दस हज़ार से बढ़ाकर तीस हज़ार करदी और उसमें कैथोलिक अफ़सरों को नियुक्त करना आरम्भ किया। उसका असली उद्देश्य इंग्लैण्ड में कैथोलिक मत का प्रचार करना और अपने आपको स्वेच्छाचारी एकतंत्र शासक बनाना था, लेकिन उसके लिए जो उसने काम किये, वे सब हानिकारक और अनुपयोगी सिद्ध हुए और इंग्लैण्ड में एक ऐसे विचार-क्रान्ति के कारण बने, जो कि "गौरवशाली क्रान्ति" (Glorious Revolution) के नाम से प्रसिद्ध है।

"गौरवपूर्ण क्रान्ति" के कारण—इस "गौरवपूर्ण क्राति" (Glorious Revolution) के कारण निम्नलिखित थे :—

(१) जेम्स ने पार्लियामेण्ट के सामने यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि टैस्ट एक्ट (Test Act)को रद्द कर दिया जावे, मगर पार्लियामेंट के मेम्बर उसके लिये तैयार नहीं थे। इसपर जेम्स ने कहा, यद्यपि उसको पार्लियामेण्ट द्वारा पास किये हुए क़ानूनों को रद्द करने का अधिकार नहीं है; लेकिन यह उसके अधिकार मे है कि वह उन कानूनों के प्रयोग मे तीन को स्थगित कर दे। इसको उसने "स्थगित करने और रोकने का अधिकार" (suspending and dispensing power) का नाम दिया।

(२) इसके अनुसार कार्य करते हुए जेम्स ने कैथोलिक और

प्योरीटन मतवालों के विरुद्ध जितने क़ानून थे, वे सब स्थगित कर दिये और रोमन कैथोलिक लोगों को सेना में भर्ती करना आरम्भ कर दिया। उनको प्रीवी कौंसिल में भी स्थान दिया। अभीतक आक्सफ़ोर्ड और कैम्ब्रिज के विश्वविद्यालयों में केवल प्रोटैस्टेंट लोग ही प्रोफ़ेसर नियुक्त हो सकते थे; लेकिन उसने आक्सफ़ोर्ड में मैग्डालन (Magdalen) कालेज के सभापति का स्थान रिक्त होने पर वहाँ के मेम्बरों के अपने प्रधान को चुनने के अधिकार को छीनकर एक कैथोलिक पार्कर (Parker) नामक व्यक्ति को उस प्रधान पद पर नियुक्त किया। ऐसा करने से जेम्स का बहुत तीव्र विरोध हुआ।

(३) उसने स्काटलैंड में भी यही नीति प्रयुक्त की। उसने वहाँ रोमन कैथोलिक लोगों को पूरी-पूरी धार्मिक स्वतन्त्रता दे दी; लेकिन प्रेसविटेरियन लोगों (Presbyterians) पर बहुत सख्तियाँ आरंभ करदीं और वहाँ एक पद पर अपने नियुक्त किये हुए मनुष्य को मुक़र्रर कर दिया।

आयरलैण्ड में भी उसने एक कैथोलिक को लार्ड लैफ्टीनेंट (Lord Lieutenant) नियुक्त किया, जो कि बहुत अत्याचारी और निर्दयी था। उसने प्रोटैस्टेंट लोगों पर बहुत-से अत्याचार किये। इससे समस्त प्रोटैस्टेण्ट जेम्स से अप्रसन्न होगये।

(४) एक अप्रैल सन् १६८८ ई० में जेम्स ने दूसरी बार "सहिष्णुता का घोषणापत्र" (Declaration of Indulgence) जारी किया और यह घोषित कर दिया कि रोमन कैथोलिक और डिसेंटर्स अपने आत्मा के विश्वास के अनुसार पूजा कर सकते हैं,

और विना किसी धार्मिक वन्धन के वे प्रत्येक गवर्नमेंट में नौकरी प्राप्त कर सकते हैं।

(५) बादशाह ने यह आज्ञा दी कि सब गिर्जाघरों में पादरी लोग दो सप्ताह तक रविवार को यह घोषणा जनता को पढ़कर सुनायें। इसपर कैंटरवरी के बड़े पादरी (Arch-Bishop of Canterbury) और ६ अन्य पादरियों ने मिलकर जेम्स से यह प्रार्थना की कि यह घोषणा कम-से-कम गिर्जाघरों मे तो न सुनाई जानी चाहिये। लेकिन बादशाह ने कुछ न सुना और उन पादरियों के *विरुद्ध विद्रोह के अपराध में अभियोग चलाया गया;* मगर अदालत ने पादरियों को निरपराध समझकर छोड़ दिया।

(६) जेम्स के अब तक कोई सन्तान सिंहासन की उत्तराधिकारी बननेवाली नहीं थी। केवल दो लड़कियाँ थीं, जिनमें से एक मेरी (Mary) थी, जो विलियम आफ़ आरेंज (William of Orange) से ब्याही हुई थी और दूसरी ऐन (Anne) थी। ये दोनों की दोनों लड़कियाँ प्रोटैस्टेंट थीं। लोग समझते थे कि जेम्स की मृत्यु के बाद उनका छुटकारा रोमन कैथोलिक बादशाह से हो जायगा, इसलिये वे उसकी तमाम सख्तियाँ धैर्य के साथ सहन करते रहे थे। लेकिन अब दैवी घटना से १० जून सन् १६८८ ई० मे जेम्स के पुत्र उत्पन्न हुआ। अब लोगों ने यह विचार किया कि उसकी शिक्षा-दीक्षा कैथोलिक ढंग से होगी। इसलिये लोग बिगड बैठे, क्योंकि वे यह सहन न कर सके कि इंगलैण्ड के सिंहासन पर हमेशा रोमन कैथोलिक बादशाह रहे।

विलियम का आगमन—ऐसी दशा में देश के सात मुख्य मुख्य नेताओं ने मेरी के पति विलियम आफ़ औरेंज को इंगलैण्ड में आकर राजसिंहासन स्वीकार करने को निमंत्रित किया। विलियम इस समय चौदवें लुई के साथ युद्ध करने में लगा हुआ था; मगर यह विचार करके कि इस युद्ध में इंगलैण्ड की सहायता प्राप्त करने का अच्छा अवसर है, उसने उस राजसिंहासन के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया। इसलिये ५ नवम्बर सन् १६८८ ई० को विलियम कुछ सेना लेकर टौरबे (Torbay) के स्थान पर आपहुँचा। जैसे-ही-जैसे वह लन्दन की ओर बढ़ता था, वैसे-ही-वैसे इंगलण्ड की प्रजा भी उसका साथ देती जाती थी। जेम्स की सेना भी विलियम से जा मिली। तब जेम्स ने अपने को अकेला समझकर सन्धि करनी चाही; लेकिन अब क्या हो सकता था। निराश होकर जेम्स को इंगलैण्ड छोड़कर २३ दिसम्बर सन १६८८ ई० को फ्रांस भाग जाना पड़ा।

सन् १६८९ ई० में विलियम ने कन्वेंशन पार्लियामेंट का अधिवेशन किया, जिसने जेम्स द्वितीय के सिंहासन छोड़कर इंगलैण्ड से भाग जाने को उसका राज्य से त्यागपत्र देना समझा, और विलियम और मेरी को संयुक्त शासक रूप में स्वीकार किया। जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, जनरल मौंक ने ब्रैडा के घोषणापत्र (Declaration of Breda) के समय यह बहुत बड़ी भूल की थी कि यह तय नहीं किया था कि पार्लियामेंट और बादशाह के बीच क्या सम्बन्ध रहना चाहिये था और दोनों में कौन बड़ा है, जिसका

परिणाम यह हुआ था कि बादशाह और पार्लियामेंट के बीच लगातार झगड़ा होता रहा। अब की बार पार्लियामेंट ने यह ग़लती नहीं की। कन्वेंशन पार्लियामेंट (Convention Parliament) ने विलियम और मेरी को सयुक्त शासक बनाने की घोषणा करने से पहले अपने अधिकारों को निश्चित कर दिया और उनकी घोषणा भी करदी, जिसको कि "अधिकारों का घोषणापत्र" (Declaration of Rights) कहते हैं और जबकि विलियम और मेरी उसको स्वीकार करने के लिये तैयार होगये, तो उसके बाद उनके संयुक्त बादशाह होने की घोषणा की गई। अगले वर्ष इन शर्तों को विलियम की पहली पार्लियामेंट ने एक राजकीय क़ानून के रूप में तैयार किया और इस प्रकार यह घोषणापत्र पार्लियामेंट में "अधिकारों का क़ानून" (Bill of Rights) के नाम से पास हुआ। यह बिल स्टुआर्ट बादशाहों के व्यक्तिगत शासन के अधिकार की घोषणाओं का पराजय था। इसमें जेम्स के विरुद्ध क़ानूनी कार्यवाहियों की सूची भी शामिल थी। किसी कानून को जो पार्लियामेंट ने पास कर दिया हो, स्थगित करना अथवा पार्लियामेंट की आज्ञा के बिना टैक्स लगाना क़ानून के विरुद्ध ठहराया गया। पार्लियामेंट की स्वतंत्रता स्वीकार की गई। कोई कैथोलिक भविष्य में इंग्लैण्ड का बादशाह नहीं हो सकता।

इस प्रकार इंग्लैण्ड के बादशाहों के एकतन्त्र शासन का अन्त हो गया और उसकी जगह एक ऐसे शासक ने ली, जो केवल पार्लियामेण्ट की सहायता से अपने अधिकार चला सकता था।

बादशाह और पार्लियामेण्ट के बीच सब पुराना झगड़ा समाप्त होगया और इस समय से किसी शासक ने इंग्लैण्ड के राजमुकुट और सिंहासन पर दैवी अधिकार का दावा नहीं किया और न पार्लियामेंट के बनाये क़ानून ही को स्थगित अथवा उपेक्षित करने का किसी को साहस हुआ। राजनीतिक और धार्मिक स्वतंत्रता का युद्ध लगभग विजय कर लिया गया।

सन १६८९ ई० में एक "सहिष्णुता क़ानून" (Toleration Act) पास किया गया, जिसके अनुसार समस्त प्रोटैस्टेंट और डिसेंटर्स लोगों को धार्मिक स्वतन्त्रता मिल गई और इस प्रकार समस्त इंगलिश चर्च के विरोधी (Non Conformists) को आज्ञा मिल गई कि वे जिस प्रकार चाहें पूजा करें। हाँ, कैथोलिक लोगों के विरुद्ध सख्त क़ानून अब भी प्रचलित रक्खे गये और उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व उनको राजनीतिक अधिकार और धार्मिक स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त होसकी। यह नवीन परिवर्तन बिना किसी रोक-टोक के और बिना रक्त की एक बूँद भी बहाये हुआ था। इसी कारण से इस परिवर्तन का नाम "शानदार क्रान्ति" अथवा "गौरव-पूर्ण क्रान्ति" (Glorious Revolution) रक्खा गया।

शानदार क्रान्ति की महत्ता—यह क्रान्ति इंग्लैण्ड के इतिहास में एक विशेष महत्व रखती है और इसकी गिनती देश की उन शानदार घटनाओं में की जाती है जिन्होंने अंग्रेज जाति को अन्य राष्ट्रों में सर्व शिरोमणि बना दिया है। उसने पार्लियामेण्ट और बादशाह के बीच एक दीर्घकालीन युद्ध का अन्त कर दिया और पार्लिया-

मेण्ट की शक्ति का लोहा वादशाह से मनवा लिया। वादशाह के असाधारण अधिकारों का सर्वदा के लिये अन्त हो गया और सर्व साधारण की स्वतंत्रता की नींव और भी सुदृढ़ होगई। उससे वैदेशिक नीति में भी परिवर्तन उत्पन्न होगया। फ्रांस से मित्रता रखने के स्थान में अब इंग्लैण्ड और फ्रांस मे झगड़ा आरम्भ हुआ, जोकि लगभग १०० वर्ष तक जारी रहा।

शानदार क्रान्ति और गृह-युद्ध की तुलना—स्वभावतः यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि वह काम जो तलवार के वल से नहीं हो सका, शान्ति पूर्वक कैसे पूरा हो गया? इस प्रश्न का उत्तर कठिन नही है। गृह-युद्ध (Civil War) के दिनों मे राष्ट्र के अन्दर मेल न था, इसलिए राष्ट्र पूर्ण रूप से सफल न हो सका। प्रथम तो इंग्लैण्ड के लोग दो दलों में कैवेलियर (Cavaliers) और राउण्डहैड (Roundheads) में वॅटे हुए थे। दूसरे, धार्मिक आधार पर भी अंग्रेज जाति के अन्दर वहुत मतभेद विद्यमान था। जव किसी जाति में फूट होती है, तो विजय सर्वदा शत्रु का साथ देती है।

दूसरी वात यह है कि गृहयुद्ध के समाप्त होने तक राजनीतिक प्रवन्ध वादशाह और प्रजा दोनों के हाथों से निकल कर सैनिक अफ़सरों के हाथों मे आगया था और जव सैनिक अफसर शासक होते है, तो वे प्रजा पर अत्याचार अनाचार करने मे नहीं हिचकिचाते। यही कारण है जो अंग्रेजी जाति क्रामवेल के शासन-प्रवन्ध से भी प्रसन्न न हुई थी, यद्यपि उसने स्वतन्त्र शासन स्थापित करके राज्य किया था।

सातवां अध्याय

विलियम तृतीय (सन् १६८९ से १७०२ ई० तक)

मेरी (सन् १६८६ से १६६४ ई० तक)

विलियम का चालचलन और उसके शासन का महत्व—विलियम एक योग्य, वीर, साहसी और शरीराकृति में सुन्दर पुरुष था; लेकिन वह इंगलेण्ड मे सर्वप्रिय नहीं हो सका। उसकी

Mary II

कार्यनीति का मुख्य उद्देश्य यह था कि फ्रांस के बादशाह चौदहवें लुई की बढ़ती हुई शक्ति को रोका जाय, जिससे यूरोप के राष्ट्रों की शक्ति सब की समान रहे, लेकिन अंग्रेज़ लोग उसकी बाहरी नीति को समझते ही नहीं थे और उससे घृणा करते थे। उसकी स्त्री मेरी अंग्रेज जाति की होने के कारण सर्व प्रिय थी। वह सर्वदा प्रसन्न चित और दयालु रहती थी और इंग्लैण्ड की प्रजा उससे भीतर ही भीतर अत्यन्त प्रेम करती थी, इसीलिए उसके जीवन मे विरोध का अन्देशा कम रहा। लेकिन सनू १६९४ ई० मे वह मर गई और फिर विलियम और उसकी प्रजा में सहानुभूति का कोई विशेष सम्बन्ध नहीं रहा।

विलियम का शासन-काल विशेष महत्व रखता है, क्योंकि उसने फ्रांस की शक्ति को निर्बल करके और पार्लियामेण्ट के द्वारा शासन प्रणाली को प्रोत्साहन देकर भविष्य के लिये इंग्लैण्ड की उन्नति का बीज बोया।

विलियम की कठिनाइयां— इंग्लैण्ड मे विलियम और मेरी को सिहासन प्राप्त करने मे कोई कठिनाई नहीं हुई, लेकिन आयरलैंण्ड आर स्काटलेण्ड वालों ने उसके शासन को सरलता पूर्वक स्वीकार नहीं किया।

स्काटलैण्ट में विद्रोह—स्काटलैण्ड की पार्लियामेण्ट, जो कि सन् १६८९ ई० मे निर्मान्त्रित हुई थी, उसने तो विलियम और मेरी को अपना बादशाह स्वीकार कर लिया और अधिकतर प्रजा ने भी, जो कि जेम्स द्वितीय के अत्याचारों से तंग आई हुई

थी, विलियम और मेरी को अपना बादशाह मान लिया; लेकिन एक अफ़सर विस्काउंटडण्डी (Viscout Dundee) ने स्काटलैण्ड के पहाड़ी इलाकों को अपने साथ मिलाकर जेम्स द्वितीय को पुनः राजा बनाने के उद्देश्य से विलियम तृतीय के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा उठाया। विलियम ने मैके (Mackay) को सेनापति बना कर उसके विद्रोह को दबाने के लिये एक सेना भेजी, जिसको कि जुलाई सन् १६८६ ई० में किलीक्रैन्की (Killiecrankie) के स्थान पर पराजय प्राप्त हुई; लेकिन विजय के समय डण्डी विस्काउन्ट मारा गया। अपने सरदार की मृत्यु के समाचार ने स्काटलैण्ड की सेना में गड़बड़ी उत्पन्न कर दी और सेना तितर-बितर होकर अपने घरों को चली गई।

ग्लैन्को का वध (Massacre of Glancoe) सन् १६६६ ई०—पहाड़ी प्रान्तों में शान्ति स्थापित करने के लिये बादशाह ने यह उपाय सोचा कि जितने विद्रोही १ जनवरी सन १६६७ ई० तक मुझे बादशाह स्वीकार करने की शपथ खालेंगे, उनको क्षमा कर दिया जायगा। ग्लैन्को के मैकडानल्ड परिवार (Macdonald Tribe) के सरदार के अतिरिक्त सबने नियत समय तक क्षमा की प्रार्थना की। विलियम ने स्काटलैण्ड के मन्त्री की सम्मति से मैकडानैल्ड परिवार' के सरदार और उसके समस्त लोगों का वध करवा दिया। यह वध बड़ी निर्दयता से किया गया था, इसलिए विलियम के विरुद्ध स्काटलैण्ड में अप्रसन्नता की भावना और भी फैल गई।

आयरलैण्ड में विद्रोह—आयरलैण्ड में विलियम और मेरी को बादशाह स्वीकार करने मे और भी कठिनाइयाँ उपस्थित हुई। वहां इस सम्बन्ध में तीन वर्ष तक लगातार लड़ाई जारी रही। आयरलैण्ड के निवासी अधिकतर कैथोलिक थे और क्योंकि जेम्स द्वितीय भी कैथोलिक था, इसलिये उसका ही साथ आयरलैण्ड वालों ने दिया और जेम्स द्वितीय के वहा पहुँचने पर उन्होंने विद्रोह आरम्भ कर दिया। प्रोटैस्टेन्ट और कैथोलिक लोगों मे लड़ाई छिड़ने पर प्रोटैस्टेन्ट लोगों ने लन्डनडरी और ऐनिसकिलन (London-derry and Enniskillen) के सुदृढ़ किलों में शरण ली, जिनको कि विद्रोहियों ने घेर लिया, मगर थोड़े समय के बाद विलियम स्वयं सेना लेकर आयरलैण्ड पहुँचा और जेम्स द्वितीय के पक्षवालों को बोयनी के युद्ध (Battle of Boyne) मे पराजित किया। जेम्स फ्रांस भाग गया और उसकी सेना ने लिमरिक (Limerick) के स्थान पर अंग्रेज़ी सेना का एक बार फिर सामना किया; लेकिन पराजित होकर अन्त मे विलियम और मेरी को अपना महाराजा और महारानी स्वीकार करलिया। फिर लगभग १०० वर्ष तक उनपर अत्याचार होते रहे।

राष्ट्रीय ऋण—(National Debt) विलियम के शासन काल मे इंग्लैण्ड बराबर फ्रांस से लड़ाई लडता रहा और उसमें इंग्लैण्ड का बहुत धन व्यय हुआ। अन्त मे सन १६९२ ई० मे सरकारी कोष में रुपया न होने के कारण से, पार्लियामेण्ट ने धनवान लोगों से दस लाख पौंड इस शर्त पर ऋण लिये कि पूरा ऋण चुकाने तक

उनको प्रति वर्ष ब्याज दिया जाया करेगा। यह इंग्लैण्ड में राष्ट्रीय ऋण (National Debt) का आरम्भ था।

बैंक आफ इंग्लैण्ड (सन् १६९४ ई०)—रुपये की और भी अधिक आवश्यकता ने सरकार को मजबूर किया कि वह और भी ऋण ले और ऋणदाताओं को एक अधिकार पत्र (Charter) प्रदान करे, जिसके अनुसार वे एक राष्ट्रीय बैंक (National Bank) स्थापित कर सकें। उसका नाम बैंक आफ़ इंग्लैण्ड (Bank of England) रक्खा गया। यह बैंक बढ़ता गया। प्रजा को ब्याज तो मिल जाया करता था; लेकिन मूलधन मिलने की कोई योजना अथवा उपाय नहीं था। बैंक ब्याज देता जाता था और देश के धन को अपने अधिकार में रखता था।

मेरी की मृत्यु—सन १६९४ ई० में महारानी मेरी का देहावासन हुआ, उसके बाद विलियम अकेला ही शासन करता रहा।

जैकोबाइट षड्यन्त्र—विलियम इंग्लैण्ड में कभी भी सर्वप्रिय नहीं हो पाया, क्योंकि अंग्रेज़ लोग उसे विदेशी समझते थे, इसलिए वे सर्वदा उसके विरुद्ध रहे। जेम्स द्वितीय के सहायक जैकोबाइट लोग (Jacobites) उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचते रहे। सन १६९६ ई० में चालीस मनुष्यों ने बादशाह का बध करने के लिए एक षड्यन्त्र रचा और यह निश्चय किया कि वे टर्नहेम ग्रीन (Turnham Green) के स्थान पर लौटते हुए मार डालेंगे; लेकिन यह

षड्यन्त्र सफल नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त और भी षड्यन्त्र हुए; लेकिन सब निष्फल ही रहे। अन्त में सन् १६६७ ई० में फ्रांस के बादशाह चौदहवें लुई ने भी विलियम को इंग्लैण्ड का बादशाह स्वीकार कर लिया।

विलियम और उसकी आन्तरिक नीति—जैसाकि पहले वर्णन हो चुका है कन्वेशन पार्लियामेण्ट (Convention Parliament) ने विलियम और मेरी को संयुक्त शासक बनाने की घोषणा करने से पहले अपने अधिकारों को निश्चय कर दिया था, जिनको कि "अधिकारों की घोषणा" (Declaration of Rights) कहते हैं और जबकि विलियम और मेरी उनको स्वीकार करने पर तैयार हो गये, तो उनके बादशाह होने की घोषणा की गई। विलियम और मेरी के बादशाह होने के एक वर्ष बाद विलियम की पहली पार्लियामेण्ट ने उन शर्तों को कानून के रूप में परिवर्तित कर दिया और क्योंकि विलियम और मेरी पहले ही से उन्हे स्वीकार कर चुके थे, इसलिये उन्होंने भी उन पर अपनी स्वीकृति तुरन्त दे दी, इसको अधिकारों का मसौदा (Bill of Rights) कहते है। इस मसौदे के अनुसार बादशाही के विशेष अधिकार बादशाह से छीन लिये गये। यह मसौदा अत्यन्त महत्वपूर्ण था। उसने "महान् अधिकार पत्र" (Magna Charta) के काम को पूर्णता की अन्तिम सीमा तक पहुचा दिया। इस "अधिकारों के बिल" (Bill of Rights) की मुख्य-मुख्य धारायें निम्न लिखित थीं :—

(१) पार्लियामेण्ट की इच्छा के बिना बादशाह को किसी कानून

के रद्द करने अथवा उसे स्थगित करने का कोई अधिकार नहीं है।"

(२) पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के बिना किसी प्रकार का टैक्स लगाना या किसी और तरीक़े से रुपया वसूल करना सर्वथा अनुचित है।

(३) शान्ति के समय में स्थायी सेना का रखना बादशाह के लिये निषेध है।

(४) कोर्ट आफ़ हाई कमीशन (Court of High Commission) आदि अदालतें फिर से प्रचलित न की जावें।

(५) कोई कैथोलिक या जिसका विवाह कैथोलिक से हुआ हो, भविष्य में इंग्लैण्ड के सिंहासन पर नहीं बैठ सकेगा।

(६) पार्लियामेण्ट के मेम्बरों के निर्वाचन में बादशाह किसी प्रकार का दबाव नहीं डालेगा और मेम्बरों को पूरी स्वतंत्रता होगी कि वे प्रत्येक विषय में पूर्ण स्वतंत्रता के साथ अपनी सम्मति को प्रकट किया करें।

विलियम के शासन-काल में पार्लियामेण्ट के अधिकारों की भी उन्नति हुई। एक "त्रिवर्षीय क़ानून" (Triennial Act) बनाया गया, जिसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि पार्लियामेण्ट का निर्वाचन हर तीसरे साल हुआ करेगा।

बादशाह की वार्षिक ग्रान्ट—सन् १६८९ ई० से पहले पार्लियामेण्ट बादशाह के व्यक्तिगत व्यय और देश के व्यय के लिए एक विशेष धन नियत कर देती थी। उस धन पर बादशाह को पूरा अधिकार प्राप्त था। वह जिस प्रकार चाहता, उसको व्यय करता था।

सन् १६८६ ई० में पार्लियामेण्ट ने एक कानून पास किया, जिसे "आय व्यय के समीकरण का कानून" (Act of Appropriation of Supplies) कहते हैं। इस क़ानून के अनुसार बादशाह के निजी व्यय के लिये एक विशेष रकम अलग निश्चित कर दी गई, जो उसे प्रतिवर्ष दे दी जाती थी। शेष रुपया बजट के अनुसार जो प्रतिवर्ष के आरम्भ में तैयार हो जाता था, देश के विभिन्न विभागों (Departments) पर व्यय किया जाता था और इसी विभाजन के अनुसार प्रत्येक विभाग अपना व्यय करता था। इस प्रकार इंग्लैण्ड में वार्षिक बजट (Annual Budget) बनाने का नियम प्रचलित होगया।

विद्रोह सम्बन्धी कानून—(Mutiny Act) यह क़ानून सन् १६८६ ई० में बनाया गया। इसके अनुसार बादशाह को अधिकार दिया गया कि वह अकस्मात होनेवाले विद्रोहों को दबाने के लिए एक स्थायी सेना रखे और उसमें अच्छा प्रबन्ध रखने के लिये "सैनिक कानून" (Martial Law) प्रयोग में लावे। चूंकि यह कानून केवल एक वर्ष के लिए बनाया गया था, इसलिए बादशाह को प्रतिवर्ष पार्लियामेण्ट की बैठक करना आवश्यक होगया, क्योंकि पार्लियामेण्ट की आज्ञा प्रतिवर्ष बिना प्राप्त किये बादशाह के लिए स्थायी सेना रखना कानून के विरुद्ध था।

सहिष्णुता कानून(Toleration Act) सन् १६८६ ई०—इस क़ानून के अनुसार प्रोटेस्टेंट तथा डिसेण्टर लोगों को अपने घरों में अपने विश्वास के अनुसार पूजा-पाठ करने की आज्ञा देदी गई;

मगर रोमन कैथोलिक और प्योरीटन लोगों को यह अधिकार प्राप्त नहीं हुआ; लेकिन उनपर भी अब अत्याचार होने बन्द होगये और अब यद्यपि टैस्ट ऐक्ट (Test Act) और कारपोरेशन ऐक्ट (Corporation Act) रद्द नहीं हुए थे; लेकिन वे केवल नाममात्र के लिए ही रह गये थे।

प्रेस की स्वतन्त्रता—लाइसेंस क़ानून (Licencing Act) की अवधि अब समाप्त होने पर वह दुबारा पास नहीं हुआ और इस प्रकार प्रेसों को स्वतन्त्रता मिल गई। इससे पूर्व राज्य सब पुस्तकों के छपने से पहले ही उनकी छानबीन करता था और उसमें बादशाह या धर्म के विरुद्ध कोई बात होती, तो उसे निकाल देते थे; लेकिन अब यह बन्धन नहीं रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि राजनीतिक शिक्षा का दिया जाना सम्भव हो सका। अब विरोधी लोग भी अपने विचारों को प्रगट कर सकते थे।

राज्याधिकार का कानून—(Act of Settlement) विलियम और मेरी के कोई सन्तान नहीं थी और उनके बाद उनकी उत्तराधिकारिणी मेरी की छोटी बहिन ऐन (Anne) के भी कोई सन्तान जीवित नहीं थी। ऐसी दशा में पार्लियामेण्ट ने "राज्याधिकार के क़ानून" के अनुसार सन १७०१ ई० में यह निश्चय किया कि ऐन के बाद इंग्लैण्ड का राजसिंहासन हैनोवर (Hanover) की रानी एलेक्ट्रेस सोफिया (Electress Sophie) और उसकी सन्तान को मिलना चाहिये। सोफिया जेम्स प्रथम की धेवती थी

और ऐसी दशा मे पारिवारिक अधिकार के अनुसार वही स्टुआर्ट वंश के सिंहासन की उत्तराधिकारिणी हो सकती थी।

"राज्याधिकार के क़ानून" (Act of Settlement) मे वधानिक शासन की दृढ़ता के लिये निम्नलिखित शर्तें भी थीं:—

(१) भविष्य मे केवल अँग्रेजी चर्च के अनुयायी ही इंग्लैण्ड के सिंहासन पर सुशोभित हो सकेंगे।

(२) पार्लियामेण्ट की स्वीकारी के बिना इंग्लैण्ड किसी अन्य देश से युद्ध आरम्भ न करेगा।

(३) बादशाह द्वारा प्रदान किया हुआ क्षमापत्र भी मंत्रियों को पार्लियामेण्ट द्वारा चलाये गये अभियोगों से नहीं बचा सकेगा। इसके परिणामस्वरूप मंत्रिमण्डल अपनी नीति के लिये पूरे तौर से देश के प्रतिनिधियों के प्रति उत्तरदायी होगये।

(४)बादशाह उच्च न्यायाधीशों को उस समय तक स्थगित नहीं कर सकता जबतक कि पार्लियामेण्ट उससे ऐसा करने के लिये प्रार्थना न करे। इससे जजों को इस बात का खटका नहीं रहा कि अगर उनका फ़ैसला बादशाह की इच्छा के विरुद्ध हो, तो वे निकाल दिये जायेंगे।

पार्टी गवर्नमेण्ट का प्रारम्भ— विलियम ह्विग और टोरी दोनों दलों की सम्मति से बादशाह बनाया गया था, इसलिये प्रारम्भ मे उसने दोनों दलों को प्रसन्न करने की चेष्टा की और दोनों मे से चुनकर मंत्रियों को नियुक्त किया, लेकिन उसने शीघ्र ही यह अनुभव कर लिया कि यह प्रणाली सफल सिद्ध नहीं हो सकेगी, अतएव उसकी पहली दो पार्लियामेण्टों मे ह्विग अधिक संख्या मे थे, इसलिये उसने

टोरी मंत्रियों को बदलकर ह्विग मंत्री नियुक्त कर दिये और सन १६९६ ई० में ह्विग मंत्रियों की संख्या इस क़दर अधिक हो गई थी कि वे "ह्विग जंटो"(Whig Junto,के नाम से कहलाने लगे; लेकिन १६९८ ई० में जबकि पार्लियामेण्ट में टोरी सदस्यों की अधिक संख्या हो गई, तो विलियम ने ह्विग के स्थान पर टोरी मंत्री नियुक्त कर दिये। यह उसने इस कारण से किया कि ह्विग और टोरी मंत्री परस्पर मतभेद के कारण सर्वदा आपस में झगड़ते रहते थे। इसके अतिरिक्त हाउस आफ़ कामन्स में कभी ह्विग मेम्बर अधिक संख्या में होते थे और कभी टोरी मेम्बर और जिस दल के मेम्बरों की संख्या अधिक होती थी, वे दूसरे दल के मंत्रियों के अपने से विरुद्ध विचारों को पसंद नहीं करते थे और क्योंकि मंत्रियों को राज्य के शासन प्रबन्ध के लिये हरबार हाउस आफ़ कामन्स से ही स्वीकारी प्राप्त करनी होती थी, इसलिये विलियम ने अपने मंत्री उस पार्टी से चुनने आरम्भ किये, जिसकी हाउस आफ़ कामन्स में अधिक संख्या अथवा बहुमत हुआ करता था।

शासन की यह प्रणाली जो कि "पार्टी शासन" (Party Government) के नाम से कहा जाता है, इंग्लैण्ड में आज तक जारी है। इसका आरम्भ अकस्मात् विलियम के शासन-काल में हुआ। इस प्रणाली के अनुसार "मन्त्रिमण्डल" (Cabinet) में मंत्री हाउस आफ़ कामन्स के उस दल में से निर्वाचित होते थे, जिसका कि हाउस आफ़ कामन्स में बहुमत हो और जब तक कि उनकी संख्या अधिक रहे, वे शासन का कार्य करते रहते हैं। इसका परिणाम

यह हुआ कि देश में दो दल स्थायी रूप से स्थापित हो गये—एक वह जिसके हाथ में शासन हो और दूसरा वह, जो इसका विरोध करे और सवदा शासन का काम संभालने को तैयार रहे। शासन की यह प्रणाली "पार्टी शासन" अथवा "कैबिनेट प्रणाली" (Cabinet System) कहलाती है। इसका आरम्भ विलियम के समय में हुआ: लेकिन यह तबतक अपनी पूर्णावस्था को नहीं पहुँची थीं।

विलियम की वैदेशिक नीति—विलियम के समय मे फ्रांस से दो बार लड़ाई हुई। लीग आफ आग्सबर्ग (League of Augsburg) की लड़ाई मे फ्रांस की शक्ति को बढ़ने से रोक दिया गया और स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध (War of Spanish Succession) में फ्रांस की शक्ति का बिल्कुल अन्त हो गया।

फ्रांस से प्रथम युद्ध (१६८९ से १६९७ ई० तक)—इस लड़ाई के दो नाम हैं, एक तो "इंग्लैंड के उत्तराधिकार का युद्ध" (War of English Succession) और दूसरा "आग्सबर्ग संघ का युद्ध" (War of the League of Augsbuig) । इस लड़ाई के निम्नलिखित तीन कारण हैं :—

(१) चौदहवाँ लुई फ्रांस का सम्राट् इस बात को पसन्द नहीं करता था कि विलियम इंग्लैण्ड का राजा हो। वह उसे सिंहासन से हटाकर जेम्स द्वितीय को इंग्लैण्ड का बादशाह बनाने के उपाय कर रहा था। इसलिए इंग्लैण्ड ने भी अपनी रक्षा के लिये फ्रांस से युद्ध छेड़ दिया।

(२) चौदहवाँ लुई स्पेन, नीदरलैण्ड (जिसे बेलजियम भी कहते है) को विजय करना चाहता था, जिससे फ्रांस की सीमा राइन नदी

के मुहाने तक पहुँच जाय। इस भाग में फ्रांस का शासन स्थापित हो जाने से हालैण्ड और इंग्लैण्ड दोनों को भय था, इसलिए लड़ाई आरम्भ हो गई।

(३) मुख्य कारण इस युद्ध के छिड़ने का यह था कि विलियम और लुई चतुर्दश की पारस्परिक कट्टर शत्रुता थी और विलियम ने यूरोप के प्रोटैस्टेण्ट राज्यों का संरक्षक बनकर लुई से युद्ध छेड़ कर उसको बहुत परेशान किया था। विलियम ने यूरोप में कुछ प्रोटैस्टेण्ट देशों का एक संघ स्थापित किया था, जो कि "आगसवर्ग का संघ" (League of Augsburg) कहलाता था। अब क्योंकि वह इंग्लैण्ड का बादशाह हो गया था, इसलिए उसने इंग्लैण्ड को भी इस लीग (संघ) का मेम्बर बनवाया और लुई की शक्ति को कम करने के लिये युद्ध छेड़ दिया।

युद्ध की घटनायें—लुई चतुर्दश ने जेम्स को कुछ सहायता देकर आयरलैण्ड भेजा; लेकिन विलियम ने उसे मार भगाया। फिर विलियम स्वयं नीदरलैण्ड में जाकर युद्ध में सम्मिलित हुआ; लेकिन उसको बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कई वार उसको पराजय प्राप्त हुई; मगर अन्त में सन १६९५ ई० में नामूर (Namur) का प्रसिद्ध क़िला उसके अधिकार में आ गया और इस शानदार विजय ने बेलजियम वाले भाग में फ्रांस का शासन स्थापित नहीं होने दिया।

सामुद्रिक लड़ाई में पहले तो अंग्रेजों को बीची हैड (Beachy Head) के स्थान पर पराजय मिली; लेकिन बाद को लार्ड रसैल

(Lord Russell) ने लाहेग (La Hague) के युद्ध मे एक महान विजय प्राप्त की।

युद्ध का परिणाम—सन् १६९७ ई० मे रिसविक के सन्धि नामे (Peace of Ryswick) के अनुसार एक दूसरे के जीते हुए देश लौटा दिये गये और विलियम को लुई ने इंगलैण्ड का बादशाह स्वीकार कर लिया। लुई को नीचा देखना पड़ा और युद्ध मे अधिक रुपया व्यय हो जाने के कारण से उसकी शक्ति घटनी आरम्भ होगई।

स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध (सन् १७०२-१७१३ ई०)—स्पेन के बादशाह चार्ल्स द्वितीय की कोई सन्तान नहीं थी और स्पेन के साम्राज्य में इस समय स्पेन के अतिरिक्त दक्षिणी अमेरिका के उपनिवेश, नीदरलैण्ड मे बेलजियम वाला भाग और इटली मे मिलन, नेपिल्स और सिसली के प्रान्त भी सम्मिलित थे। चार्ल्स की उत्तराधिकारिणी उसकी दोनों बहनें ही हो सकती थीं। उसकी एक बहन का विवाह फ्रांस के बादशाह लुई चतुर्दश के साथ और दूसरी का विवाह आस्ट्रिया के सम्राट् ल्योपोल्ड (Leopold) के साथ हुआ था। इन दोनों मे से किसी एक को स्पेन का पूरा साम्राज्य मिल जाता, तो यूरोप की विभिन्न रियासतों की शक्ति को समान रखना (Balance of Power in Europe) असम्भव होजाता, इसलिये विलियम तृतीय ने आस्ट्रिया और फ्रांस के सम्राटों से पत्र व्यवहार करके दोबार "विभाजन सन्धि" (Partition

Treaty) कराई, जिसके अनुसार स्पेन के साम्राज्य को इन दोनों के बीच विभाजित करना निश्चय हुआ।

लेकिन सन् १७०० ई० में स्पेन के बादशाह चार्ल्स द्वितीय का देहान्त होगया। मरने से पहले वह स्पेन के पूरे साम्राज्य का उत्तराधिकारी लुई के छोटे पोते फिलिप को बना गया। इस वसीयत का समाचार पाते ही लुई ने "विभाजन सन्धि"(Partition Treaty) की कुछ भी परवाह नहीं की और उसके पोते फिलिप ने तुरन्त जाकर समस्त स्पेन पर अपना अधिकार जमा लिया। केवल इस आधार पर लड़ाई का कोई कारण नहीं था, क्योंकि फिलिप उसका दूसरा पोता था, न कि सबसे बड़ा पोता; लेकिन फिलिप के बड़े भाई का स्वास्थ्य अच्छा नहीं था और ऐसा विचार किया जाता था कि वह अधिक काल तक जीवित नहीं रहेगा और इसलिये फिलिप केवल स्पेन का ही नहीं, किन्तु फ्रांस के सिंहासन का भी उत्तराधिकारी होगा और स्पेन और फ्रांस दोनों का शासक होने पर उसकी शक्ति इतनी अधिक होने का अन्देशा था कि फिर यूरोप की कोई शक्ति उसका सामना नहीं कर सकेगी।

दूसरे, लुई स्पेन के उपनिवेशों से वह व्यापारिक लाभ प्राप्त करना चाहता था, जो कि अंग्रेज़ लोग प्राप्त कर चुके थे।

तीसरे, इंग्लैण्ड और हालैण्ड को अब यह भी भय था कि फ्रांस वाले अब राइन नदी के मुहाने पर अधिकार कर लेंगे और उससे दोनों को बहुत हानि थी।

चौथे, इसी समय जेम्स द्वितीय की मृत्यु होगई और लुई ने

अपनी शक्ति के मद में रिसविक की सन्धि की कोई परवा नहीं की और जेम्स द्वितीय के लड़के ओल्ड प्रीटेन्डर (Old Pretender) को इंग्लैण्ड का बादशाह घोषित कर दिया।

फ्रांस की शक्ति इतनी अधिक बढ़ जाने के कारण से उसके जीवनभर के काम मे हस्ताक्षेप होने के चिन्ह प्रकट होने लगे। इसी बीच में विलियम ने यूरोप की विभिन्न रियासतों की शक्ति को समान रखने के उद्देश्य से हालैण्ड, स्काटलैण्ड, आस्ट्रिया और जर्मनी आदि देशों को मिलाकर फ्रांस के विरुद्ध एक संघ (League) बनाया और इंग्लैण्ड को उस संघ मे सम्मिलित कर दिया। इस संघ का यही उद्देश्य था कि स्पेन साम्राज्य में कुछ विभाजन आदि होजाने के पश्चात् स्पेन का सिंहासन आस्ट्रिया के राजकुमार चार्ल्स (Archduke Charles) को दिलाया जाय।

इस प्रकार "स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध" आरम्भ हुआ; मगर उसी बीच में विलियम तृतीय की मृत्यु हो गई और फिर यह युद्ध महारानी ऐन (Anne) के शासन काल मे, जो विलियम के बाद इंग्लैण्ड की महारानी हुई, लड़ा गया।

इंग्लैण्ड का युद्ध में भाग लेने का कारण— सन १६९८ ई० से सन् १७०१ ई० तक इंग्लैण्ड में टोरी दल की प्रबलता रही और टोरी मंत्रिमंडल ही इंग्लैण्ड मे शासन कर रहा था। इन मंत्रियों ने इंग्लैण्ड को यूरोप के मामलों मे हस्ताक्षेप करने से रोका, लेकिन जब सन् १७०१ ई० मे जेम्स द्वितीय मर गया और लुई ने रिसविक की सन्धि के विरुद्ध जेम्स द्वितीय के लड़के जेम्स

तृतीय को इंग्लैण्ड का बादशाह क़रार दे दिया, तो टोरी दल के मंत्रियों के हृदय में भी देश प्रेम का उत्साह उभर आया और टोरी दल भी फ्रांस के विरुद्ध लडने के लिये कटिबद्ध होगया। इसके बाद पार्लियामेण्ट का नवीन निर्वाचन हुआ। उसमें ह्विगदल के सदस्यों की अधिक संख्या चुनी गई और वे एकदम फ्रांस के साथ युद्ध करने के लिये तैयार होगये।

युद्ध के दो पक्ष—इंग्लैण्ड, हालैण्ड, प्रशिया, आस्ट्रिया, पुर्तगाल और सैवोय एक ओर थे, जो मित्रराष्ट्र (Allies) कहलाते थे। दूसरी ओर उनके विरुद्ध फ्रांस, स्पेन और ववेरिया थे।

युद्ध का मैदान—यह युद्ध चार देशों में अर्थात् इटली, जर्मनी, नीदरलैण्ड और स्पेन में हुआ था। इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का सेनापति जान चर्चिल, ड्यूक आफ़ मार्लबरो (John Churchill, Duke of Marlborough) था। इस युद्ध में मार्लबरो का साथी प्रिंस यूजीन (Prince Eugiene) भी था, जो आस्ट्रिया की सेना का सेनापति था।

युद्ध की घटनायें—ड्यूक आफ़ मार्लबरो ने नीदरलैण्ड पहुँचकर वहाँ से फ्रांसीसियों को निकालने का काम किया; लेकिन जब उसको यह समाचार मिला कि फ्रांस और बवेरिया ने मिलकर आस्ट्रिया की राजधानी वियना (Vienna) पर आक्रमण किया है, तो वह सीधा वेलजियम से वियना की ओर बढ़ा और वहाँ पहुँचकर आस्ट्रिया की सेना की सहायता से फ्रांसीसियों और

बवेरियनों की सेनाओं को सन् १७०४ ई० में ब्लेनहीम (Blenheim) के स्थान पर बहुत बुरी तरह से पराजित किया। इस युद्ध में ड्यूक आफ़ मार्लबरो के साथ प्रिंस यूजीन (Prince Eugiene) भी आस्ट्रिया की सेना के सेनापति के रूप में विद्यमान था।

सन् १७०६ ई० मे मार्लबरो ने नीदरलैण्ड पहुंचकर रेमीलीस (Ramillies) और दूसरे स्थानों पर विजय प्राप्त की और फ्रांसीसी सेना को नीदरलैण्ड से निकालकर बेलजियम वाले भाग मे उनका अधिकार नहीं होने दिया। इन्हीं महान विजयों के कारण से ड्यूक आफ मार्लबरो की गिनती इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध सेनापतियों मे होती है।

स्पेन में युद्ध—एक अंग्रेजी जहाजी बेड़ा पुर्तगाल के समुद्री किनारे पर पहुंचा, लेकिन पुर्तगालवालों ने तुरन्त ही सन १७०५ ई० मे अंग्रेजों से सन्धि करली। उसका यह फल हुआ कि मित्र राष्ट्रों (Allies) को स्पेन पर आक्रमण करने का मार्ग पुर्तगाल मे होकर मिल गया, लेकिन यहां पर मित्र राष्ट्रों को सफलता प्राप्त नहीं हुई क्योंकि (१) प्रथम तो फिलिप जिसको कि वसीयत के अनुसार स्पेन का राजसिंहासन मिला था, उसको स्पेन की प्रजा अपना वास्तविक राजा मानने लगी थी, इसलिए स्पेनवाले उसके पक्ष मे दिल खोल कर लड़े।

(२) भौगोलिक दशा अर्थात् पहाड़ों और नदियों की घाटियों के कारण से स्पेन वालों को बहुत लाभ हुआ और मित्र राष्ट्रों का लड़ने मे बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं।

अन्त में मित्र राष्ट्रों ने अपनी सेनाओं को वहाँ से वापिस बुला लिया; लेकिन इस आक्रमण से इतना लाभ अवश्य हुआ कि फ्रांस के बादशाह लुई चतुर्दश का धन और गौरव बहुत कुछ नष्ट होगया और यह सब कुछ अंग्रेज़ों की समुद्री शक्ति के कारण ही हुआ।

समुद्री युद्ध—समुद्री लड़ाइयों में अंग्रेज़ी सेनाओं ने अच्छा काम कर दिखाया। अबतक इंग्लैण्ड में कोई स्थायी समुद्री सेना नहीं थी। आवश्यकता के समय कुछ अफसर और सिपाही भर्त्ती कर लिए जाते थे और युद्ध समाप्त होने पर उन सबको तुरन्त बर्खास्त कर दिया जाता था। यह कोई अच्छी प्रणाली नहीं थी, इसलिए अब एक स्थायी समुद्री सेना तैयार की गई। इस समुद्री सेना ने सन् १७०४ ई० में जिब्राल्टर (Gibraltar) पर अधिकार प्राप्त किया और इस प्रकार भूमध्यसागर (Mediterranean Sea) का फाटक अंग्रेज़ों के हाथ में आ गया।

सन् १७०८ ई० में माइनोरिका (Minorca) का टापू भी अंग्रेजों ने अपने अधिकार में कर लिया और उसके बाद मैड्रिड (Madrid) भी उनके हाथ में आ गया। अमेरिका में भी अंग्रेजों ने नोवास्कोटिया (Nova Scottia) को शत्रुओं के हाथ से लेकर अपने अधिकार में कर लिया।

इस प्रकार यह युद्ध सन १७१३ ई० तक जारी रहा, जब कि यूट्रैक्ट की संधि के अनुसार समाप्त हुआ।

युद्ध का परिणाम—यूट्रैक्ट की सन्धि (Treaty of Utrecht) के अनुसार यह निश्चय हुआ कि:—

(१) चौदहवें लुई के पोते फिलिप को स्पेन और स्पेन के अमेरिका वाले उपनिवेशों का बादशाह मान लिया गया; लेकिन यह शर्त ठहराई गई कि स्पेन और फ्रांस दोनों देश कभी एक सम्मिलित शासक के आधीन नहीं होंगे।

(२) स्पेन साम्राज्य का इटली वाला भाग अर्थात मिलन (Milan) और नेपल्स (Naples) तथा बेलजियम को आस्ट्रिया के साम्राज्य मे सम्मिलित कर दिया गया। इस प्रकार बीच में बेलजियम के आ जाने से हालैण्ड को भविष्य मे फ्रांस का कोई भय नहीं रहा।

(३) इंग्लैण्ड को भूमध्यसागर में जिब्राल्टर और माइनोरिका मिल गये और इस प्रकार समस्त भूमध्य सागर पर इंग्लैण्ड का अधिकार होगया। अमेरिका मे नोवस्कोटिया और न्यूफाउंडलैण्ड (New Found Land) भी अंग्रेजों के हाथ मे आगये। इसके अतिरिक्त अंग्रेजों को प्रतिवर्ष एक जहाज स्पेनिश अमेरिका मे भेजने और उससे व्यापार करने का भी अधिकार मिल गया।

(४) फ्रांसीसियों ने यह स्वीकार कर लिया कि इंग्लैण्ड के सिंहासन पर हैनोवर वंश का राज्य होगा और अब वे जेम्स तृतीय की इंगलैण्ड मे राज्य प्राप्त करने के लिए कभी सहायता नहीं करेंगे।

अब अंग्रेजों की समुद्री सेना दिन प्रतिदिन उन्नति करने लगी और इसलिये कहा जाता है कि अगर "स्पेनिश आर्मेडा (Spanish-Armada) के पराजय के समय से अंग्रेजों की समुद्री शक्ति, बंद-

शिक व्यापार और उपनिवेशों की स्थापना की उन्नति का आरम्भ समझा जाय, तो यूट्रेक्ट की सन्धि से उस उन्नति का पूरी तौर से द्वार खुल गया।"

यूट्रेक्ट की सन्धि का महत्व—(१) इस सन्धि से चौदहवें लुई की बढ़ती हुई शक्ति को बहुत हानि पहुँची। उसने फ्रांस और स्पेन का मेल होने से रोक दिया और स्पेनिश नीदरलैण्ड को फ्रांस के प्रभाव से बचा लिया। इस प्रकार उसने यूरोप की सब शक्तियों को फिर समान कर दिया। फिर से शक्ति संतुलन(Balance of Power) हो गया।

(२) इससे इंग्लैण्ड को उपनिवेशों और व्यापार में बहुत लाभ पहुँचा। संसार में इंग्लैण्ड की समुद्री शक्ति बहुत बढ़ गई। जिब्राल्टर और माइनोरिका के मिलने से इंग्लैण्ड भूमध्यसागर का स्वामी बन गया। अमेरिका में उपनिवेशों और व्यापार का अधिकार प्राप्त होने से वहाँ के समुद्रों में उसकी शक्ति बहुत बढ़ गई। इस प्रकार अँग्रेजों की उपनिवेशों, व्यापार और समुद्री शक्ति में बहुत उन्नति हुई।

आठवां अध्याय

महारानी ऐन (सन् १७०२ से १७१३ ई० तक)

Queen Anne

विलियम तृतीय की मृत्यु के बाद जेम्स द्वितीय की दूसरी लड़की

महारानी ऐन (Queen Anne) की उपाधि से इंग्लैण्ड के राज-सिंहासन पर विराजमान हुई। इसका पति जार्ज डेनमार्क का राजकुमार था।

इंग्लैंड और स्काटलैंड का एकीकरण (१ मई सन् १७०७ ई०)—महारानी ऐन के शासन-काल में सबसे प्रसिद्ध घटना यह हुई कि इंग्लैण्ड और स्काटलैण्ड में एक सम्मिलित शासन स्थापित होगया। सन् १६०३ ई० में स्काटलैण्ड का बादशाह जेम्स चतुर्थ इंगलैण्ड का भी बादशाह नियुक्त हुआ और इस प्रकार इंग्लैण्ड और स्काटलैण्ड में एक सम्मिलित शासन स्थापित होगया; लेकिन जेम्स के यह प्रयत्न करने पर भी कि इन दोनों की पार्लियामेण्ट भी एक ही होजायें, इंग्लैण्ड और स्काटलैण्ड की पार्लियामेंट और शासन-नीति पृथक्-पृथक् ही रही। फिर क्रामवैल ने दोनों देशों की एक पार्लियामेंट बनादी; लेकिन वह दशा बहुत दिनों तक स्थिर नहीं रह सकी, क्योंकि वह एकीकरण स्काटलैण्ड के निवासियों की इच्छा के अनुसार नहीं किया गया था। इंग्लैण्ड में राजा के पुनरावर्तन के बाद स्काटलैण्ड फिर उससे पृथक् होगया और स्काटलैण्ड और इंग्लेण्ड के बीच में सम्बन्ध निम्नलिखित कारणों से तनातनी के ही रहे :—

(१) उनको व्यापारिक स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं थी। सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में इंगलैण्ड में अपने उपनिवेशों से व्यापार करके बहुत उन्नति हुई, लेकिन अंग्रेजों ने स्काटलैण्ड वालों को उपनिवेशों

से व्यापार करने के लिये किसी प्रकार की सुविधायें नहीं पहुंचाई और उनको "जहाजी कानून" (Navigation Act) से भी लाभ नहीं उठाने दिया गया। इससे स्काटलैण्ड की प्रजा बहुत अप्रसन्न थी और विचार करती थी कि इंगलैण्ड के साथ मिल जाने मे उसे बहुत हानि है, लाभ कुछ नहीं।

(२) दोनों देशों मे धार्मिक मतभेद के कारण से परस्पर तनातनी रहती थी। इन कठिनाइयों से छुटकारा पाने के लिये स्काटलैण्ड वालों ने इंग्लैण्ड से नितान्त सम्बन्ध-विच्छेद कर लेना ही उचित समझा और अन्त मे सन १७०३ ई० मे स्काटलैण्ड की पार्लियामेण्ट ने ऐक्ट आफ सेक्योरिटी (Act of Security) या "रक्षा कानून" पास किया जिसके अनुसार उन्होंने यह घोषणा करदी कि महारानी एेन के मरने के बाद वह अपना बादशाह स्वयं निर्वाचित करेंगे और महारानी ऐन का उत्तराधिकारी स्काटलैण्ड का बादशाह स्वीकार नहीं किया जायगा, जबतक कि दोनों देशों के व्यापारिक अधिकार समान न कर दिये जायें और जबतक कि इस बात का विश्वास न दिला दिया जाय कि उनकी राजनीतिक और धार्मिक स्वतन्त्रता मे किसी प्रकार का हस्ताक्षेप नहीं किया जायगा।

इन बातों से इंग्लैण्ड मे एक बड़ी सनसनी फैली और ऐसा होने से स्काटलैण्ड के साथ फिर एक युद्ध का छिड जाना अनिवार्य था; लेकिन अन्त में दोनों देशों मे फिर समझौता होगया और सन १७०७ ई० मे इंग्लैण्ड की पार्लियामेण्ट ने एक क़ानून बनाया, जिसको "एकता का क़ानून" (Act of Union) कहते है। इस क़ानून के

अनुसार यह निश्चय हुआ कि (१) दोनों देशों की एक संयुक्त पार्लियामेण्ट होगी। इग्लैण्ड के हाउस आफ़ कामन्स में स्काटलैण्ड को ४५ मेम्बर और हाउस आफ़ लार्डस में १६ मेम्बर भेजने का अधिकार दिया गया।

(२) स्काटलैण्ड और इंग्लैण्ड के व्यापारिक अधिकार समान ठहराये गये।

(३) यह निश्चय हुआ कि स्काटलैण्ड के क़ानूनों में और चर्च में कोई परिवर्तन नहीं किया जायगा।

एकीकरण के फल--इस एकीकरण से निम्नलिखित परिणाम हुए:—

(१) दोनों देशों के बीच जो तनातनी रहती थी, वह दूर होगई और वे परस्पर मित्रतापूर्वक रहने लगे। इंगलैण्ड से एक राजनैतिक संकट टल गया।

(२) चूँकि इसके अनुसार दोनों के राजनैतिक अधिकार समान कर दिये गये, इसलिये स्काटलैण्ड के लोगों ने अंग्रेजी उपनिवेशों के साथ व्यापार करना आरम्भ कर दिया और इस प्रकार स्काटलैण्ड एक व्यापारिक देश बन गया।

राजनैतिक दलबन्दी— महारानी ऐन के शासन-काल में राजनैतिक दलबन्दी ने भी एक स्थायी रूप ग्रहण किया और ह्विग और टोरी दोनों ने अपने-अपने दलों को खूब सुदृढ़ बना लिया। दोनों ने अपने राजनैतिक सिद्धान्त भी ठीक-ठीक रूप से निश्चित कर लिये थे। ह्विग दलवाले पार्लियामेण्ट के अधिकारों के पक्षपाती

थे और वे धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित करना चाहते थे। इसके विरुद्ध टोरी दल वाले अभीतक राजप्रिय थे और धार्मिक मामलों मे अंग्रेजी चर्च के मानने वालों के अतिरिक्त दूसरे मत वालों के साथ किसी प्रकार की रियायत करने को तैयार न थे। वैदेशिक मामलों में ह्विग दल वाले फ्रांस के साथ युद्ध करने के पक्ष में थे और शक्ति-सतुलन (Balance of Power) के सिद्धान्त को मानते थे। टोरी दल वाले उसके विरुद्ध थे और शक्ति-संतुलन के सिद्धान्त को मानने के लिये तैयार नहीं थे।

महारानी ऐन के शासन-काल मे कैबिनेट (Cabinet) सरकार ने और उन्नति की। दोनों महारानी ऐन और ड्यूक आफ़ मार्लबरो टोरी सिद्धान्तों के मानने वाले थे, लेकिन उनको ह्विग मंत्री नियुक्त करने पड़े, क्योंकि इस समय के वैदेशिक नीति के पक्षपाती लोग ह्विग थे। टोरी इसके विरुद्ध थे। प्रथम तो चूंकि मार्लबरो स्वयं टोरी था, इसलिये उसने मुख्य-मुख्य स्थानों पर टोरी नियुक्त किये, लेकिन वैदेशिक नीति के लिये उसको ह्विग दल के लोगों की सहायता माँगनी पड़ी। इसलिये बाद मे टोरी दल वालों के स्थान पर उसने ह्विगदल वालों को नियुक्त करना आरम्भ किया। इससे टोरी दल वाले उसके विरुद्ध हो गये। इसपर मार्लबरो स्वयं ह्विगदल में सम्मिलित होगया और उसने नया मंत्रिमंडल स्थापित किया, जिसमे केवल ह्विगदल के लोग ही शामिल थे।

सन् १७१० के निर्वाचन मे टोरी दलवालों की सख्या पार्लिया-मेण्ट मे बढ़ गई। ऐसी दशा मे ह्विग पार्टी के मन्त्रिमण्डल का अन्त हो

गया और उसके स्थान पर टोरी दल के नेता हारले (Harley) और बोलिंग ब्रोक (Bolingbroke) का मन्त्रिमण्डल पर अधिकार हो गया। इस नये मन्त्रिमण्डल ने मार्लब्रो को बरखास्त

A Country Woman

A Gentle Woman

A Gentle Man

A Country Man

करके सन्धिपत्र के अनुसार स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध को समाप्त कर दिया।

राज्य के अधिकार के लिए षडयंत्र—टोरी नेता बोलिंग ब्रोक यह चाहता था कि स्टुआर्ट वंश फिर से इंग्लैण्ड में राज्य करने लगे, इसलिए उसने जेम्स द्वितीय के लड़के से जो इतिहास में ओल्ड प्रीटेन्डर (Old pretender) के नाम से प्रसिद्ध है, पत्र व्यवहार करना आरम्भ किया, लेकिन इसी बीच मे महारानी ऐन की अकस्मात् मृत्यु होगई और उत्तराधिकार के कानून (Act of Settlement) के अनुसार हैनोवर की रानी सोफ़िया का लड़का जार्ज प्रथम के नाम से इंग्लैण्ड का शासक बनाया गया।

ड्यूक आफ मार्लबरो जान चर्चिल—(सन १६५० से १७२२ ई० तक) जान चर्चिल सन १६५० ई० में उत्पन्न हुआ था। वह अपने समय का एक प्रसिद्ध सेनापति हुआ है और प्रत्येक युद्ध में उसने विजय प्राप्त की थी। चार्ल्स द्वितीय के समय में उसकी गिनती मुख्य राज सभासदों में होने लगी थी और जेम्स द्वितीय से उसकी बड़ी मित्रता थी। जेम्स के बादशाह होने पर उसे लार्ड चर्चिल की उपाधि मिली। उसने सैज मूर के स्थान पर ड्यूक औफ़ मनमथ के विद्रोह को शान्त किया था। लेकिन वह बहुत स्वार्थी था और उसकी जेम्स के साथ अधिक काल तक नहीं घटी, इसलिए उसने विलियम तृतीय को निमंत्रित करने और जेम्स द्वितीय को इंगलैण्ड के राज सिंहासन से उतारने मे विशेष भाग लिया। शानदार क्रान्ति के बाद जब विलियम और मेरी का राज्याभिषेक हुआ, तो उस अवसर पर

उसको ड्यूक आफ़ मार्लबरो (Duke of Marlborough) की उपाधि प्रदान की गई और उसी समय से राजदरबार में उसका आदर और बढ़ गया।

मार्लबरो की विलियम से भी अधिक समय तक न बनी और उसने विलियम के विरुद्ध भी एक गुप्त षड्यंत्र रचा और जेम्स द्वितीय से मित्रता का बर्ताव करना आरम्भ कर दिया, इसलिए इस षड्यंत्र का पता लगने पर विलियम ने उसको दरबार से निकाल दिया और टावर में क़ैद कर दिया।

सेनापतित्व की योग्यता—लेकिन विलियम को यह अच्छी तरह मालूम था कि उस समय उसके अतिरिक्त युद्ध के कार्यों के संभालने के योग्य कोई दूसरा सेनापति इंग्लैण्ड में नहीं है। इस लिए स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध के आरम्भ होते ही विलियम ने फिर उसका आदर किया और मरते समय विलियम ने अपने राज्य की उत्तराधिकारी महारानी ऐन को सम्मति दी कि स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध में मार्लबरो को ही सेनापति बनाया जावे; लेकिन मार्लबरो को इस सिफ़ारिश की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि महारानी ऐन मार्लबरो की स्त्री को बहुत मानती थी और उस अपनी स्त्री के प्रभाव से मार्लबरो का महारानी ऐन पर अधिकार था।

जैसाकि ऊपर वर्णन किया जा चुका है, स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध में ड्यूक आफ़ मार्लबरो ने बड़ी योग्यता और वीरता दिखलाई और उसकी ब्लैनहीम (Blenheim) और रेमीलिस (Ramillis) की विजयों ने शत्रुओं के दाँत खट्टे कर दिये। यह उसकी योग्यता

का ही फल था कि इस युद्ध में इंग्लैण्ड के प्रभाव में बढ़ती हुई और १४वें लुई जैसे दुश्मनों का उद्देश्य पूरा न हो सका।

मार्लबरो पहले तो टोरी दल का सहायक था, लेकिन क्योंकि टोरी दल वाले लड़ाई के विरुद्ध थे, इसलिए मार्लबरो ने मन्त्रियों की कमेटी में ह्विग लोगों को ही शामिल किया जो कि लड़ाई के पक्ष में थे और जिनकी पार्लियामेण्ट मे सख्या भी अधिक थी। सन् १७१० ई० मे इंग्लैण्ड में पार्लियामेण्ट में टोरी दल वालों की संख्या अधिक होगई और इसलिए मंत्रियों की कमेटी में भी उन्हीं की संख्या अधिक हो गई। वे लड़ाई के विरुद्ध थे और उन्होंने वह लडाई बन्द करनी चाही। इसी समय मार्लबरो की स्त्री का, जो अभीतक महारानी ऐन की बडी मित्र थी, महारानी से झगड़ा हो गया। इन सब कारणों का फल यह हुआ कि मार्लबरो सबसे बड़े सेनापति के पद से अलग कर दिया गया और अंग्रेजी सेना को भी यूरोप के लड़ाई के मैदान से वापिस बुलाकर लड़ाई का अन्त कर दिया गया।

इंग्लैण्ड वापिस आने पर मार्लबरो पर सरकारी रुपया खा जाने का अपराध लगाया गया, जिसके कारण से उसको देश छोडकर बाहर जाना पड़ा। महारानी ऐन की मृत्यु के बाद उसको फिर वापिस बुला लिया गया, लेकिन उसका स्वास्थ्य अब दिन प्रतिदिन बिगड़ता ही गया और सन १७२२ ई० मे वह परलोक सिधार गया।
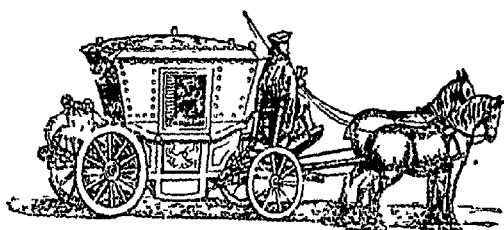
Wagon seventeenth century
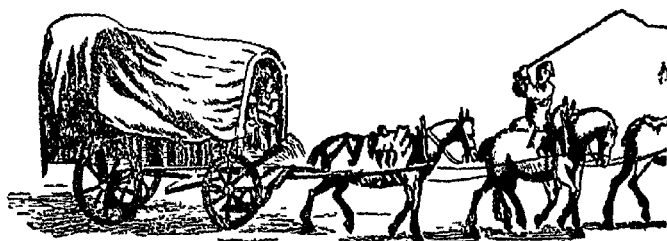
Coach seventeenth century.

नवाँ अध्याय

सिंहावलोकन

स्टुआर्ट काल में पार्लियामेण्ट

ट्यूडर काल में व्यापार तथा कला-कौशल की उन्नति के कारण देश खूब धनी हो गया था और एक नवीन मध्यम श्रेणी उत्पन्न होगई थी, जो कि देश के मामलों मे भाग लेना चाहती थी। दूसरे, जागृति (Renaissance) और धार्मिक सुधार (Reformation) के प्रभाव से प्रजा में एक बलवती चेतना उत्पन्न होगई थी और इसलिए लोगों ने अपने अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा में पूरा-पूरा ध्यान दिया। उसके अतिरिक्त देश को अब किसी विदेशी शत्रु का भय नहीं था, इसलिए लोग अपने अधिकारों की रक्षा पर पूरा ध्यान दे सकते थे। इसलिए ट्यूडर काल और सत्रहवीं शताब्दी की दशाओं मे बहुत अन्तर था।

मतभेद के प्रश्न—स्टुआर्ट काल मे बादशाह और पार्लियामेण्ट मे निम्नलिखित प्रश्नों पर झगड़ा हुआ:—

(१) क्या बादशाह को पार्लियामेण्ट की स्वीकारी के बिना महसूल लगाने का अधिकार है? अथवा नियम पूर्वक अपराध सिद्ध हुए बिना भी बादशाह किसी स्वतन्त्र पुरुष को जेलखाने में भेज सकता है या नहीं?

(२) राज मंत्रियों पर केवल बादशाह का ही अधिकार है या वे अपनी नीति के लिए पार्लियामेण्ट के सम्मुख उत्तरदायी हैं।

(३) धार्मिक मामलों और वैदेशिक नीति का निश्चय करना पार्लियामेण्ट पर आश्रित है या बादशाह पर ?

इन प्रश्नों के हल करने में अत्यंन्त योग्यता और चतुरता की आवश्यकता थी और बुद्धिमानी इसी में थी कि जहाँ दबने की आवश्यकता हो वहाँ अवसर देखकर राजा को दब जाना चाहिए था और कहीं आवश्यकतानुसार अपना प्रभाव भी जमाना चाहिए था, ताकि झगड़ा अधिक न बढ़ने पाये। लेकिन स्टुआर्ट बादशाहों में इतनी योग्यता नहीं थी। जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम दोनों राजाओं के दैवी अधिकार में विश्वास रखते थे और वे स्वेच्छाचारी एकतंत्री राजा की भाँति शासन करना चाहते थे, इसलिए उन लोगों ने कठिनाइयों को हल करने के स्थान पर उन्हे और उलझा दिया। बुद्धिमान का कथन है कि मौन रहना एक अच्छी वस्तु है; लेकिन जेम्स मौन धारण भी नहीं कर सकता था और दूसरे घमंडी भी था। बजाय चुप रहने के वह हमेशा यह प्रगट करना चाहता था कि ये अधिकार मेरे हैं। मैं जो कुछ कहता हूँ, ठीक कहता हूँ। इससे उसका विरोध और भी बढ़ता गया।

जेम्स प्रथम के समय में पार्लियामेण्ट ने कई बातों में उन्नति की। प्रथम, बादशाह के मंत्रियों पर अभियोग चलाने के अधिकार को दुबारा पूर्णरूप से स्थापित किया। अनुचित टैक्स लगाने का विरोध किया। ठेके की प्रणाली को क़ानून के विरुद्ध ठहराया और यह निश्चय

किया कि देश के प्रतिनिधियों को सब प्रकार के मामलों में अपनी सम्मति को प्रकट करने का पूरा अधिकार है।

वह राजनैतिक झगड़ा जोकि जेम्स प्रथम के समय में आरम्भ हुआ था, चार्ल्स प्रथम के समय में भी जारी रहा और इसी राजनैतिक झगड़े के कारण चार्ल्स प्रथम को अपने जीवन से हाथ धोने पड़े। चार्ल्स की तीसरी पार्लियामेण्ट ने सन १६२८ ई० में एक कानून "अधिकारों का प्रार्थनापत्र" (Petition of Rights) के नाम से स्वीकार किया, जिसमें पार्लियामेण्ट ने बादशाह की शक्ति को कम करना चाहा, लेकिन क्योंकि इस कानून के पीछे कोई (Sanction) ताकत नहीं थी, इसलिए बादशाह ने इसके अनुसार कार्य नहीं किया। इसके बाद सन् १६२९ ई. से १६४० ई० तक चार्ल्स ने स्वतंत्र रूप से शासन किया और फिर मजबूर होकर एक अल्पकालीन पार्लियामेण्ट (Short Parliament) और दूसरी दीर्घ पार्लियामेण्ट (Long Parliament) इसे बुलानी पड़ी। दीर्घ पार्लियामेण्ट ने सन् १६४१ ई० में "महान विरोधपत्र" (Grand Remonstrance) पास कराया, लेकिन इस कानून से उस राजनैतिक झगड़े का तय होना कठिन था। अतएव एक गृह-युद्ध हुआ और चार्ल्स प्रथम की जान गई।

इसके बाद देश में सन १६४९ से सन १६६० ई० तक प्रजातंत्र शासन स्थापित रहा, लेकिन सैनिक शासन होने के कारण से लोगों को वे अधिकार प्राप्त न हो सके, जिनके लिए उन्होंने अपने राजा का रक्त बहाया था। उस शासन से उकता कर जेनेरल मौंक ने फिर राजा की स्थापना की, लेकिन ब्रेडा के संधिपत्र में इस बात का फैसला

कराना जनरल मौंक बिल्कुल भूल गया कि बादशाह और पार्लियामें में आपस में क्या सम्बन्ध होगा और उनमें कौन बड़ा है ?

इसलिए चार्ल्स द्वितीय और जेम्स द्वितीय के समय में फिर वही झगड़े और प्रश्न उत्पन्न हो गये। इस झगड़े को जो कि स्टुआर्ट के समय के आरम्भ से जेम्स द्वितीय के समय तक रहा, शानदार क्रान्ति (Glorious Revolution) ने समाप्त किया और यह स्टुआर्ट बादशाहों के व्यक्तिगत शासन के पराजय की घोषणा थी; लेकिन इस क्रान्ति में राजा और पार्लियामेण्ट के बीच युद्ध और रक्तपात नहीं हुआ। किन्तु चुपके से विलियम को बुलाकर वैधानिक शासन की बुनियाद रक्खी गई। अधिकारों का क़ानून (Bill of Rights) उत्तराधिकार का क़ानून (Act of Settlement), त्रिवर्षीय क़ानून (Triennial Act), सभा क़ानून (Meeting Act) और सहिष्णुता क़ानून (Toleration Act) पास करके अधिकार प्राप्त किये गये और सब बातों का फैसला पार्लियामेण्ट ने अपनी इच्छा के अनुसार करा लिया।

वैधानिक शासन या कैबीनेट प्रणाली का प्रारंभ— वैधानिक शासन या क़ानूनी गवर्नमेण्ट (Cabinet System) का आरम्भ चार्ल्स द्वितीय के समय में हुआ, जबकि पार्लियामेण्ट की शक्ति और अधिक होगई। सन् १६६० से १६६७ ई० तक बादशाह का मन्त्री क्लेरेन्डन (Clarendon) था; लेकिन वह केवल एक ही मन्त्री नहीं था। बादशाह ने अपने चारों ओर एक छोटा-सा समूह इकट्ठाकर रक्खा था, जिसकी कि वह प्रायः सम्मति लिया करता था

क्योंकि प्रीवी कौंसिल अब बहुत बड़ी और विभिन्न विचारों के मनुष्यों की एक सभा बन गई थी। लेकिन अभीतक इस मंत्रिमण्डल मे सब मन्त्री आपस मे एक मत वाले नहीं होते थे जैसाकि कैबीनेट मे अब होगया।

चार्ल्स द्वितीय के समय से इस नियम की बुनियाद पड़ी कि मन्त्री लोग अपने कामों के उत्तरदायी पार्लियामेण्ट के प्रति है। अतएव अगर पार्लियामेण्ट उनके सिद्धान्तों को स्वीकार न करे, तो वह उनको उनके पद से तुरन्त हटा सकती है। इस सिद्धान्त के आधार पर बादशाह ने क्लेरेण्डन को "केबल" मत्रिमण्डल के मंत्रियों को और डेनबी को अपने पदों से बरखास्त किया, जबकि पार्लियामेण्ट ने उनकी नीति को पसन्द नहीं किया। डेनबी पर जब पार्लियामेण्ट की ओर से मुकदमा चलाया गया, तो उसने अपनी बचत में यह कहा कि उसने उस नीति का पालन बादशाह के कहने से किया था: लेकिन इस पर भी पार्लियामेण्ट ने उसको नहीं छोड़ा और यह उत्तर दिया कि इस आधार पर वह अपने उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं हो सकता है।

पार्टी गवर्नमेण्ट अथवा कैबीनेट प्रणाली (Cabinet System) का वास्तविक प्रारम्भ अकस्मात रूप से विलियम तृतीय के समय से हुआ। पहले तो विलियम ने ह्विग और टोरी दोनों दलों में से चुनकर मत्री नियुक्त करना आरम्भ किया, लेकिन इसमे उसको सफलता प्राप्त नहीं हुई, अतएव जब कि उसकी पहली दो पार्लियामेण्टों मे ह्विग लोग अधिक संख्या मे थे, तो उसने टोरी मंत्रियों को बदलकर ह्विग मंत्री

नियुक्त कर दिये और सन् १६६८ ई० में जबकि पार्लियामेण्ट म टोरी मेम्बरों की संख्या अधिक होगई, तो विलियम ने ह्विग के बजाय टोरी मंत्री नियुक्त कर दिये। इसका फल यह हुआ कि देश में दो दल स्थाई रूप से हमेशा के लिए बन गये।

महारानो ऐन के शासन-काल में राजनैतिक दलबन्दी के कार्य ने स्थाई रूप ग्रहण किया और ऐन के शासन के आरम्भ में ड्यूक आफ़ मार्लबरो ने एक ऐसा मंत्रिमंडल स्थापित किया, जिसमें ह्विग दल के आदमी ही थे और वह स्वयं भी ह्विग दल में शामिल होगया। सन् १७१० ई० के निर्वाचन में टोरी दलवालों की संख्या पार्लियामेण्ट में बढ़ गई, इसलिए ह्विगदल का अन्त हो गया और टोरी मन्त्रिमंडल स्थापित हो गया।

राजनैतिक दलों का आरम्भ

राजनैतिक दलों का आरम्भ सबसे पहले स्टुआर्ट काल में हुआ। गृह-युद्ध के अवसर पर देश दो दलों में बटा हुआ था। एक तो अंग्रेज़ी चर्च के अनुयायी थे, जो कि बादशाह के पक्ष में थे और वे कैवेलियर (Cavaliers) कहलाते थे, क्योंकि वे घोड़ों पर चढ़े फिरते थे। दूसरे प्यौरटिन मत के लोग थे, जो बादशाह के अधिकारों का अन्त करके वैधानिक शासन स्थापित करना चाहते, वे राउन्ड हैड (Round Heads) कहलाते थे।

चार्ल्स द्वितीय के शासन-काल में डेनबी ने अपनी देख-रेख में पार्लियामेण्ट में बादशाह के सहायकों का एक दल बनाया, जिसका कि उद्देश्य अंग्रेजी चर्च को स्थिर रखना और राजकीय शक्ति सुदृढ़

करना था। यह दल कोर्ट पार्टी (Couit Party) कहलाता था। इसके विरुद्ध शेफ्टसबरी (Shaftesbury) ने पार्लियामेण्ट मे एक दूसरा दल तैयार किया, जिसका उद्देश्य सब बातों से बढ़कर क़ानून को मानना था। इसके बाद सन् १६७९ ई० मे बहिष्कार बिल (Exclusion Bill) के अवसर पर पार्लियामेण्ट मे दो दल हो गये। शेफ्टसबरी का दल, जो बहिष्कार बिल को पास कराना चाहता था प्रार्थी (Petitioners) या ह्विग (Whigs) कहलाने लगे। दूसरी कोर्ट-पार्टी जो उसके विरुद्ध थी, वह घृणा करने वाले (Abhorers अथवा टोरी (Tory) दल के नाम से प्रसिद्ध हुए।

यहां से देश के दोनों दलों का नाम पडा और वे ह्विग और टोरी कहलाने लगे। जबकि विलियम बादशाह बना, तो उस समय पार्लियामेण्ट मे दो दल स्थापित हो चुके थे। विलियम ने उस पार्टी मे से मंत्रिमंडल के सदस्य चुने, जिस पार्टी की संख्या पार्लियमेण्ट मे अधिक थी। इसका प्रभाव यह हुआ कि देश मे दो दल स्थायी रूप से स्थापित हो गये। एक वह जिसके हाथ मे शासन हो और दूसरा वह जो उसका मुख्य विरोध करे और हमेशा शासन का काम संभालने को तैयार रहे। महारानी ऐन के समय मे इस दलबन्दी के कार्य ने और भी स्थायी रूप ग्रहण किया और दोनों ने अपने-अपने दलों को सुदृढ़ बना लिया। इन दोनों दलों के सिद्धान्त महारानी ऐन के शासनकाल के वर्णन मे वर्णन कर दिये गये है।

स्टुअार्ट बादशाह और उनकी धार्मिक नीति—

स्टुआर्ट बादशाहों के शासनकाल में धार्मिक मतभेद ने भी एक

विशेष आन्दोलन उपस्थित कर दिया था। और यह अशुद्ध न होगा कि धार्मिक झगड़ों ने ही राजनैतिक झगड़े उत्पन्न किये थे।

जेम्स प्रथम के शासनकाल में तीन मुख्य धार्मिक दल थे—(१) कैथोलिक मत के लोग। (२) अँग्रेज़ी चर्च जो इंग्लैण्ड का राज-धर्म भी था। (३) प्योरीटन लोग जिनका कि प्रभाव दिन-प्रतिदिन अधिक हो रहा था और पार्लियामेण्ट में जिनका कि ज़ोर दिन प्रतिदिन बढ़ रहा।

जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम दोनों ही अंग्रेज़ी चर्च के अनुयायी थे और जेम्स प्रथम ने हैम्पटन कोर्ट की सभा में प्योरीटन लोगों को साफ़ जवाब दे दिया था कि देश के गिरजा मे कोई परिवर्तन नहीं किया जायगा। चार्ल्स प्रथम के शासनकाल में प्योरीटन दल के लोगों पर हाई कमीशन कोर्ट के द्वारा बड़े अत्याचार किये गये।

जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम दोनों स्काटलैण्ड के चर्च को अंग्रेज़ी चर्च के रंग में रंगना चाहते थे। इसके कारण से वहाँ जो कुछ विरोध हुआ उससे चार्ल्स विपत्ति में पड़ गया और उससे गृह-युद्ध तक की नौबत आई। गृह-युद्ध में सारे प्योरीटन लोग बादशाह के विरुद्ध थे और सबमें उन्हीं की विजय हुई। ११ वर्ष के प्रजातन्त्र शासन के समय में भा प्योरीटनों का ही ज़ोर रहा और अँग्रेज़ी चर्च की अवनति हुई। जब चार्ल्स द्वितीय बादशाह हुआ, तो देश में अँग्रेजी चर्च फिर से स्थापित हुआ और अब प्योरीटनों के विरुद्ध क्लैरेन्डन के मंत्रित्वकाल में कई बड़े सख्त क़ानून बनाये गये, जो

कि क्लरेन्डन कोड (Clarendon Code) के नाम से प्रसिद्ध है।

चार्ल्स द्वितीय हृदय से कैथोलिक मत का हितैषी था, इसलिए कैथोलिकों को आराम पहुँचाने की इच्छा से उसने धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा की। लोग उस समय कैथोलिक लोगों को किसी प्रकार का आराम देना नहीं चाहते थे, इसलिए पार्लियामेण्ट ने उस घोषणा को रद्द करने के लिए बादशाह को मजबूर किया और उसके विरुद्ध टेस्ट ऐक्ट (Test Act) जारी कराया।

विलियम के सिंहासन पर बैठने के समय से एक नवीन युग का आरम्भ हुआ और सन् १६८९ ई० में सहिष्णुता क़ानून (Toleration Act) पास किया गया, जिससे केवल कैथोलिकों को छोड़कर दूसरे सब मत वालों को स्वतन्त्रता मिल गई।

स्टुअर्ट काल में उपनिवेश और व्यापार।

रैले ने अमेरिका में एक उपनिवेश महारानी ऐलीज़ाबेथ के समय में स्थापित किया था; लेकिन वह किसी कारण से वहाँ आबादी बसाने में सफल नहीं हुआ। सन् १६०७ ई० में जेम्स प्रथम के समय में उसी स्थान पर फिर एक उपनिवेश स्थापित किया गया, जिसका नाम वर्जीनिया (Virginia) पड़ा और उसमें जेम्स टाउन (James Town) नगर की बुनियाद पड़ी। वहाँ पर अफ्रीका से हबसी लोगों को लाकर बसाया गया और उन लोगों ने तम्बाकू की खेती करने में बहुत सहायता दी, जिसके व्यापार से लोगों को बहुत लाभ हुआ, जिसका फल यह हुआ कि लोग बहुत धनवान होगये। उनकी देखादेखी १५ वर्ष के अन्दर लगभग ५ हजार मनुष्य वहाँ जाकर

और बस गये। उस समय में उपनिवेश बसाने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। सरकार उसमें कुछ सहायता नहीं देती थी, क्योंकि वह और कामों में लगी थी। इन उपनिवेशों को स्थापित करने का सारा काम प्राईवेट आदमियों ने ही अपनी ओर से किया। उस समय लोग उपनिवेशों में जाकर आबाद होना भी नहीं चाहते थे।

जेम्स प्रथम के समय में प्योरीटन लोगों पर धार्मिक विश्वासों के कारण सरकार की ओर से अनेक अत्याचार होते थे, इसलिए बहुत से प्यौरीटन इंग्लैण्ड छोड़कर हालैण्ड जा बसे और बहुतों ने नई दुनियाँ में जाकर उपनिवेश स्थापित करने की ओर ध्यान दिया। सन १६२० ई० में लगभग दो सौ प्यौरीटन जो इतिहास में तीर्थयात्री पिता (Pilgrim Fathers) के नाम से प्रसिद्ध है; मेफ्लोवर (May Flower) जहाज़ में सवार होकर इंग्लैण्ड से रवाना हुए और अमेरिका में जाकर न्यूप्लाई माऊथ (New Ply Mouth) नाम का एक उपनिवेश स्थापित किया।

इसके बाद सन् १६२५ ई० से १६४० ई० तक अर्थात् चार्ल्स प्रथम के सिंहासन पर बैठने से दीर्घ पार्लियामेण्ट के अधिवेशन होने तक लगभग दो हज़ार प्यौरीटन इंग्लैण्ड छोड़कर अमेरिका में जा बसे और सन १६२६ ई० में मैसेचूसैट्स (Massachusetts) नाम का एक और उपनिवेश तैयार हो गया और दस वर्ष में लगभग बीस हज़ार आदमी वहाँ जाकर बस गये। इस प्रकार अमेरिका में और भी प्योरीटन जाकर आबाद होगये और उनके आबाद किये

हुए उपनिवेश न्यू इंगलण्ड (New England) नाम से प्रसिद्ध हुए, जिनमें न्यू हैम्पशायर (New Hampshire). रोड टापू (Rhode Island), कनेक्टीकट (Connecticut) और मेन (Maine) मुख्य थे।

सन् १६२४ ई० में कैथोलिक मतवालों पर भी बहुत अत्याचार होने लगा और वे लोग भी इंग्लैण्ड छोड़कर अमेरिका में जा बसे और वहाँ पहुँचकर उन्होंने चार्ल्स प्रथम की रानी हैनरीटा मैरिया के नाम पर दक्षिण में मैरी लैण्ड का उपनिवेश स्थापित किया।

उपनिवेशों की स्थापना के विचार से चार्ल्स द्वितीय का शासन-काल बहुत प्रसिद्ध है। प्रथम तो उसके समय में उत्तरी और दक्षिणी कैरोलीना (Carolina) की बुनियाद पड़ी। दूसरे, अंग्रेजों के उत्तर और दक्षिण में तो उपनिवेश थे और बीच के भागों में हालैण्डवालों ने अपने उपनिवेश बसा लिये थे, जबकि चार्ल्स द्वितीय के समय में इंग्लैण्ड और हालैण्ड के बीच सन् १६६५ ई० से सन् १६६७ ई० तक युद्ध हुआ, तो अंग्रेज़ों ने एक जहाजी बेड़ा भेजकर न्यू एमसटर्डम (New Amsterdam) पर अधिकार कर लिया। उसके बाद जब लड़ाई समाप्त हो गई, तो संधि होने के समय यह निश्चय हुआ कि युद्ध होने के समय में जो कुछ जिसने जीता है, वह उसके अधिकार मे रहे और इस प्रकार न्यू एमसटर्डम अंग्रेजों के पास ही रहा और अब वह न्यू यार्क (New York) हो गया और फिर पेन्सिल वेनियाँ (Pennsylvania) डेलावेअर (Delaware) न्यू जर्सी (New Jersey) के उपनिवेश स्थापित हुए। इन उप-

निवेशों के निवासियों को अच्छी तरह जीवन व्यतीत करते देखकर इंग्लैण्ड के अन्य निवासियों का भी सहास बढ़ने लगा। पहले केवल धार्मिक अत्याचारों से बचने के लिए लोग अपना देश छोड़ते थे मगर अब धीरे-धीरे नये देशों की सैर करने और व्यापार आदि करने के उद्देश्य से भी बहुत से अंग्रेज़ प्रतिवर्ष अमेरिका पहुँचने लगे। १७वीं शताब्दी के अन्त समय तक उत्तरी अमेरिका के समस्त पूर्वी किनारे पर अंग्रेज़ी उपनिवेश स्थापित हो चुके थे। उनमें से उत्तर के उपनिवेशों में अधिकतर प्यौरीटन और दूसरे प्रोटैस्टेण्ट और दक्षिण के उपनिवेशों में अधिकतर कैथोलिक लोग आबाद थे और मध्य के भाग में प्रत्येक संप्रदाय और प्रत्येक जाति के मनुष्य आबाद थे।

इसके अतिरिक्त दूसरे भागों में भी उपनिवेश स्थापित हुए। सन् १६२६ ई० में पश्चिमी द्वीप समूह (West Indies) में बारबैडोज (Barbados) में एक उपनिवेश स्थापित हुआ।

सन १६५५ ई० में क्रामवेल ने जमायका (Jamaica) स्पेन वालों से ले लिया। इसके बाद न्यू फाउण्डलैण्ड (New Found-land) और बहामा (Bahama) में उपनिवेश स्थापित हुए और साथ ही पश्चिमी अफ्रीका के तट पर बहुत-से स्थान प्राप्त किये। सन् १६६१ ई० मे ईस्ट इंडिया कम्पनी ने सेन्ट हैलना (St Helena) पर अधिकार कर लिया।

हिन्दुस्तान में व्यापारिक कोठियाँ—सत्रहवीं शताब्दी में अंग्रेज़ हिन्दुस्तान में भी पहुँचने लगे। उनके हिन्दुस्तान पहुँचने का मुख्य प्रयोजन अपने व्यापार को फैलाना था। सन् १६०० ई० में

महारानी एलिज़ाबेथ ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को पूर्वी देशों से व्यापार करने के लिए राजकीय आज्ञापत्र (Charter) प्रदान किया था। सन् १६०८ ई० मे कप्तान हाकिन्स (Captain Hawkins) सूरत के वन्दरगाह मे आया और वहाँ से जहाँगीर बादशाह के दरबार मे उपस्थित हुआ। बादशाह ने उसको सूरत मे व्यापारिक कोठी स्थापित करने की आज्ञा देदी; लेकिन बाद को पुर्तगाल वालों ने अपनी चतुरता से विरोध के कारण यह आज्ञा रद्द करा दी।

फिर सन १६१५ ई० मे सर टामस रो (Sir Thomas Roe) इंग्लैण्ड के बादशाह की ओर से राजदूत बन कर जहाँगीर के दरबार मे आया और अजमेर मे बादशाह से मुलाक़ात हुई। उसने बादशाह को प्रसन्न करके फिर से अंग्रेज़ी कोठी खोलने की आज्ञा प्राप्त करली। इस समय सूरत नगर अंग्रेजों का एक सब से बड़ा उपनिवेश बन रहा था। फिर सन् १६३३ ई० में एक कोठी मछलीपट्टम नगर मे बनी और सन् १६४० ई० मे अंग्रेजों ने मद्रासनगर की नींव डाली और वहाँ सेंट जार्ज का किला (Fort St. George) निर्माण किया।

चार्ल्स द्वितीय ने सिंहासनारूढ़ होकर कम्पनी को एक नया आज्ञापत्र (Charter) प्रदान किया, जिसके अनुसार कम्पनी को अपना सिक्का चलाने, अपनी रक्षा के लिये किले बनवाने और ग़ैर ईसाई मतवाले लोगों से सन्धि और लड़ाई करने के पूरे अधिकार दे दिये। सन १६६८ ई० मे चार्ल्स द्वितीय ने बम्बई का अधिकार कम्पनी को सौंप दिया, जो कि उसको पुर्तगाल की राजकुमारी के साथ विवाह करते समय दहेज़ में मिला था।

नवीन आज्ञापत्र से कम्पनी की दशा में अनेक परिवर्तन उपस्थित हो गये। सन् १६३३ ई० में बालासोर की कोठी बनी। फिर सन् १६५१ ई० में हुगली के पास एक उपनिवेश स्थापित हुआ और सन् १६८६ ई० में जौब चारनौक ने उसी स्थान पर एक कोठी बनाने का प्रयत्न किया।

इस कम्पनी की उन्नति देख कर सन् १६९८ ई० में एक नई कम्पनी भी स्थापित हो गई थी। अब इन दोनों कम्पनियों में आपस में लड़ाई होगई, इसलिए सन् १७०८ ई० में दोनों कम्पनियाँ मिल कर एक होगईं।

हालैण्डवालों का उपनिवेश और व्यापार में भाग

हालैण्ड वाले इस समय जहाज चलाने की विद्या में यूरोप की समस्त जातियों से चढ़े-बढ़े थे और जहाजों की निर्माण कला में भी वे अत्यन्त निपुण थे। सन १६०१ में उन्होंने अपरिमित धन व्यय करके एक कम्पनी स्थापित की और सत्रहवीं शताब्दी में हिन्द महासागर पर उनकी शक्ति का सिक्का जम गया। मसाले की तमाम चीज़ों का व्यापार सारा उन्हीं के हाथ में चला गया और अब हालैण्ड वालों ने जहाँ तक बन पड़ा यह प्रबन्ध किया कि दूसरे लोग उस व्यापार में न घुसने पायें। अतएव सन् १६०५ ई० में उन्होंने अम्बोयना को विजय किया और मसाले के टापुओं से पुर्तगाल वालों को निकाल दिया। फिर सन् १६४१ ई० में मलक्का टापू और सन १६५८ ई० में लंका के द्वीप को भी पुर्तगाल वालों से छीन लिया। जब कि अंग्रेज हिन्दुस्तान में आये, तो उन्होंने अच्छी तरह से समझ लिया था कि

उनको डच जाति से लड़ना पड़ेगा, क्योंकि डच लोग हिन्दुस्तान का व्यापार केवल अपने ही हाथ में रखना चाहते थे, और इस कारण से ही इन दोनों जातियों में लड़ाई आरम्भ हो गई।

सन् १६३३ ई० में अम्बोयना के डच गवर्नर ने अंग्रेजों को क़ैद करके क़त्ल कर डाला। इस पर दोनों जातियों मे शत्रुता और भी बढ़ गई।

हालैण्ड और इंग्लैण्ड में युद्ध—अपने-अपने व्यापार की उन्नति के लिये अँग्रेजों और हालेण्ड वालों में तीन वार युद्ध हुये। प्रथम सन १६५२ ई० से १६५४ ई० तक जो कि जहाज़ी क़ानून (Navigation Act) के पास करने के कारण से हुआ था। यह युद्ध अधिकतर समुद्र पर हुआ था। इस युद्ध मे अँग्रेजों का कमाण्डर जनरल ब्लेक (Blake) और हालैण्ड वालों का वान ट्राम्प (Von Tramp) था। इस लड़ाई मे दोनों पक्ष बरावर रहे और अन्त मे हालैण्ड वालों को अँग्रेजों को इस वात की आज्ञा देनी पड़ी कि अँग्रेज़ भी हिन्दुस्तान और अन्य पूर्वी देशों से व्यापार करें और उन्हे बाल्टिक सागर में भी व्यापार करने की आज्ञा मिल गई।

दूसरी लड़ाई सन् १६६५ ई० से १६६७ ई० तक रही। इस लड़ाई मे अँग्रेजों ने हालैण्ड वालोंसे न्यू एम्सटर्डम (New Amesterdam) ले लिया और सन्धि करते समय भी यही निश्चय रहा कि वह अंग्रेजों के ही अधिकार मे रहे।

तीसरी लड़ाई सन् १६७४ ई० में हुई, जिसमे हालैण्ड वाले वहुत वीरता से लड़े। अन्त मे जवकि चार्ल्स द्वितीय के भाई ड्यूक आफ़

यार्क (जेम्स द्वितीय) की लड़की मेरी का विवाह हालैण्ड के प्रजातंत्र शासन के सर्वाधिकारी विलियम आफ़ औरेंज़ से कर दिया गया, तो हालैण्ड और इंग्लैंड में मित्रता हो गई और आगे हालैण्ड का विलियम ही इंग्लैण्ड का बादशाह बना।

इस प्रकार हालैण्ड और इंग्लैण्ड के मध्य अनेक वर्षों से चली आती हुई शत्रुता और लड़ाई का अन्त हुआ।

उपनिवेश और व्यापार के सम्बन्ध में अँग्रेज और फ्रांसीसियों में युद्ध—इसके बाद व्यापार की उन्नति और उपनिवेश स्थापित करने के काम में अँग्रज़ों की लड़ाई फ्रांसीसियों से हुई। यह लड़ाई विलियम के समय में सन् १६८८ ई० में आरम्भ हुई और पैरिस की संधि के अनुसार सन् १७६३ ई० में समाप्त हुई। इस काल में फ्रांसीसियों की अँग्रेज़ों से चार बड़ी लड़ाइयाँ हुईः—

(१) अँग्रेज़ी उत्तराधिकार का युद्ध (The War of English-Succession) सन १६८६ से १६६७ ई० तक।

(२) स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध (The War of Spanish-Succession) सन् १७०२ से १७१३ ई० तक।

(३) आस्ट्रीया के उत्तराधिकार का युद्ध (The War of-Austrian Succession)।

(४) सप्त वर्षीय युद्ध (Seven years' War) सन १७५६ से १७६३ ई० तक। साधारण तौर पर इन लड़ाइयों के कारण यह थे कि फ्रांस अपनी शक्ति बहुत बढ़ा रहा था और ऐसे देश जीतने का

प्रयत्न कर रहा था, जिससे अंग्रेजों की समुद्री शक्ति को बहुत हानि पहुँचती थी, जैसे १४ वाँ लुई नीदरलैण्ड को जिसे बेलजियम भी कहते है, विजय करना चाहता था, जिससे अंग्रेजों को बहुत नुकसान था।

दूसरे, फ्रांस स्पेन को भी अपने राज्य में मिलाकर दोनों पर शासन करना चाहता था जिससे यह भय था कि फ्रांस की शक्ति इतनी अधिक हो जायगी कि यूरोप की कोई दूसरी शक्ति उसका सामना न कर पायेगी।

तीसरे, दुनिया मे हर जगह अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच व्यापार की उन्नति के लिए और उपनिवेश स्थापित करने के लिए परस्पर विरोध बढ़ रहा था और यह विरोध हिन्दुस्तान मे, पश्चिमी द्वीप समूह मे, उत्तरी अमेरिका में और उत्तरी अफ्रीका मे उग्ररूप धारण करता जा रहा था, और यही उनकी लड़ाई का मुख्य कारण था, यद्यपि प्रकट रूप मे प्रत्येक लड़ाई का कारण कुछ और था। इन लड़ाइयों का फल यह हुआ कि अंग्रेजों की समुद्री शक्ति बहुत अधिक बढ़ गई और फ्रास की शक्ति बहुत कम हो गई। अंग्रेजों को बहुत से स्थान मिल गये और अब वह एक बहुत बड़ा शक्ति-शाली औपनिवेशिक साम्राज्य (Colonial Empire) बन गया।

सत्रहवीं शताब्दी का रहन-सहन

सत्रहवीं शताब्दी धन संपत्ति से भर पूर समृद्धि शालिनी थी. उसका एक मुख्य कारण यह था कि सत्रहवीं शताब्दी मे व्यापार और कलाकौशल खूब उन्नति कर रहा था। व्यापार की उन्नति के

कारण से एक नवीन श्रेणी अस्तित्व में आई, जो कि औसत दर्जे के लोगों की थी। ये वह लोग थे. जिन्होंने स्कूलों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा पाई थी। ये लोग ग्रामों में रहते थे लेकिन साल में कुछ महीनों के लिए वे लन्दन आदि बड़े नगरों में भी आकर बसते थे, क्योंकि ये लोग राजनैतिक मामलों और पार्लियामेण्ट के अधिवेशनों में भी भाग लेते थे। इस मध्यम श्रेणी के उत्पन्न होने ही से पार्लियामेण्ट और बादशाह के बीच झगड़ा आरम्भ हुआ, क्योंकि ये लोग बादशाह की शक्ति को कम करना चाहते थे।

प्रारम्भिक स्टुअार्ट काल में रहन-सहन का ढँग— जेम्स प्रथम के सिंहासन पर बैठने के समय से चार्ल्स द्वितीय के राज्य पाने के समय तक अर्थात् सन १६०३ ई० से सन् १६६० ई० तक प्यौरीटन विचारों ने देश के जीवन और रहन-रहन के ढंग पर बहुत प्रभाव डाला था। उसका यह प्रभाव हुआ था कि वे खराबियाँ जो अंग्रेजों के जीवन में आगई थीं, दूर हो गईं और इंग्लैण्ड के निवासी धार्मिक और पवित्र जीवन व्यतीत करने लगे। बातचीत पहनावा और खेलकूद सबमें लोग सादगी पसंद करनेलगे; लेकिन उन्होंने यह भूल करदी कि वे मध्य का मार्ग स्वीकार न करके सादगी में सीमा अधिक आगे बढ़ गये. प्रजातंत्र शासन के काल में तमाम तमाशे, नाटक, नाचरंग बन्द कर दिये गये। छुट्टियाँ बहुत कम मिलने लगीं। रविवार के दिन जो तमाशे और नाचरंग और खेल-कूद होते थे, वे एक साथ रोक दिये गये। यह लोग गिरजाओं को सादा रखना चाहते थे, इससे वहाँ से मूर्तियाँ चित्र और सब सुख के सामान हटवा दिये

आर अब उनके गिरजाघर सादे, पवित्र पूजा के स्थान बन गये। उन्होंने मूल्यवान वस्त्र और आभूषणों का भी विरोध किया और बड़े-बड़े बाल रखने के भी विरोधी थे। अपने भी सब बाल कटा देते थे। वे हमेशा सादे कपड़े पहनते और सब प्रकार से सादा ही जीवन व्यतीत करते थे।

चार्ल्स द्वितीय की वापिसी और समय का परिवर्तन—यह दशा सन् १६६० ई० तक यथा नियम जारी रही। इस वर्ष प्रजा-तंत्र शासन का अन्त हुआ। उसके साथ २ प्यौरीटन दल का भी जोर हमेशा के लिए कम हो गया। प्यौरीटन के साथ प्यौरीटन का जीवन भी लोगों ने भुला दिया और जब चार्ल्स वापिस आया तो ये सब, बंधन भी टूट गये और फिर से भोग विलास की सभा सोसाइटियाँ और सामग्रियाँ बढ़ने लगीं और लोग खेल तमाशों मे फिर अत्यंत रुचि से भाग लेने लगे। इसका एक मुख्य कारण यह था कि चार्ल्स द्वितीय बहुत समय तक फ्रांस के बादशाह के यहाँ मेहमान रह चुका था। चार्ल्स स्वभाव ही से विलास प्रिय था और फ्रांस में रहकर उसका चाल-चलन और भी बिगड़ गया था। अतएव जब चार्ल्स इंगलैण्ड वापिस आया, तो वह केवल इन खराबियों को ही साथ नहीं लाया; किन्तु अपने साथ फ्रांसीसी अमीर और वेश्याओं का भी एक दल लाया। उसके दरबार से सत् चरित्र दूर भाग गया था। लोगों ने उसका उदाहरण देखकर भोगविलास मे जीवन बिताना आरम्भ कर दिया। इसका प्रभाव उन समस्त के ग्रंथों पर भी पड़ा, जो उस समय लिखे जारहे थे। जितने नाटक और उपन्यास चार्ल्स के बादशाह

बनने के बाद लिखे गये, उन सब में वे ख़राबियाँ मौजूद हैं, जो इस काल में समाज के अन्दर विद्यमान थीं, क्योंकि नाटक और उपन्यास किसी समय के रीतिरस्म के प्रकट करनेवाले होते हैं, जो एक पुस्तक के रूप में लेखबद्ध कर दिये जाते हैं। इस समय के सबसे बड़े कवि जान ड्राइडन (John Dryden) के ग्रन्थों और रचनाओं को देखने से इस बात का ज्ञान बहुत अच्छी तरह से हो जाता है।

नागरिक जीवन—स्टुआर्ट काल में व्यापार की उन्नति होने से देश की सम्पत्ति बढ़ गई थी। प्रजा भी धन सम्पत्ति से भरपूर थी और नगरों की आबादी भी बढ़ गई थी; लेकिन नगरों की संख्या में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ था। लन्दन सबसे बड़ा नगर था और उसकी आबादी लगभग पाँच लाख थी। इसके अतिरिक्त ब्रिस्टल (Bristol) और नारविच (Norwich) दो बड़े नगर थे, लेकिन उनकी जन संख्या बीस हज़ार से अधिक नहीं थी। इन नगरों की बनावट वर्तमान नगरों की सी नही थी। सड़कों की सफ़ाई और रोशनी का समुचित प्रबन्ध नहीं था और रात के समय घर से बाहर जाना भी कठिन था। सड़कों पर दोनों ओर लकड़ी के ऊँचे मकान एक दूसरे से मिले हुये थे और नगर में सफ़ाई का कोई विशेष प्रबन्ध नहीं था, जिससे वे बीमारियों के घर बने हुये थे।

सन् १६६५ ई० में लन्दन नगर महामारी (प्लेग) का शिकार बन गया और सन् १६६६ ई० में एक बड़ी भारी आग लग जाने से आधा लन्दन जलकर बरबाद होगया। बाद में शहर के बहुत से स्थान फिर बनवाये गये। इन नगरों के भवनों की इमारतें बहुत ऊँची

थीं और उनमें सब प्रकार के आराम का सामान मौजूद होता था। नगर के धनहीन पुरुष धनवानों के मुकाबिले में खुश न थे। इसका एक विशेष कारण यह है कि उनको बहुत कम वेतन मिलता था। व्यौपार की वस्तुओं का भाव दिन-प्रति-दिन बढ़ता जाता था, तिस पर भी लोग देहात छोड़कर नगरों में आगये थे, जिसके कारण से नगरों की आबादी बढ़ने लगी थी।

देहाती जीवन—गाँव वाले बहुत सादा जीवन व्यतीत करते थे, जो नगर निवासियों के जीवन से प्रत्येक बात मे भिन्न था। देहाती लोग अधिकतर खेती करते थे और भेड़ें पालते थे। किसान लोग प्रायः अच्छी तरह अपना निर्वाह करते थे; मगर मज़दूरों को बहुत कम मजदूरी मिलती थी, जिसके कारण से उन्हे अलग ज़मीन मे खेती करनी और अपने घरों में ऊन और कपास आदि की बुनाई आदि का काम भी करना पड़ता था। मजदूर लोग तीन-तीन चार-चार गायें भी रखते थे और उनका दूध और मक्खन बेच कर निर्वाह करते थे। गायों का स्वामी एक जमींदार होता था; लेकिन किसानों को कुछ स्वतंत्र अधिकार भी मिले हुए थे। उनको चराई आदि मे पूरी स्वतन्त्रता थी। स्वतन्त्र किसान (Free-Holders) लगान दिया करते थे और उनको ज़मीन पर हमेशा के लिये अधिकार प्राप्त था। इस शताब्दी में खेती की पर्याप्त उन्नति हुई थी और किसानों की दशा कुछ अच्छी थी।

मार्ग और यात्रा—इस काल मे एक नगर से दूसरे नगर तक अच्छी सड़के निर्माण नहीं हुई थीं, बल्कि ऊची-नीची कच्ची सड़कें

थीं और बरसात के दिनों में कीचड़ के कारण से गाड़ियों का चलना कठिन हो जाता था। इस काल में एक स्थान से दूसरे स्थान के लिये बड़ी-बड़ी सवारी गाड़ियाँ (Stage Coaches) चलने लगी थीं; लेकिन वह एक दिन में ५० मील से अधिक नहीं ले जा सकती थीं। मार्ग में डाकुओं का भी डर रहता था और लन्दन के बाहर होते ही बहुत से लोग लूट लिये जाते थे। ये गाड़ियाँ केवल धनवानों के लिये ही थीं, क्योंकि उनका किराया अधिक होता था और गरीब देहाती लोग पैदल ही यात्रा करते थे। सड़कों के किनारे सरायें होती थीं, जहाँ गाड़ी वाले अपने घोड़े बदला करते थे। उस काल में डाक भी इन्हीं गाड़ियों के द्वारा भेजी जाती थी। प्रत्येक चौराहे पर गाड़ी वाला जोर से घंटी बजाता था और उसकी आवाज़ सुनकर आस पास के लोग आकर उसे अपने पत्र दे जाते थे।

साहित्य और विज्ञान—स्टुआर्ट वंश का शासनकाल विज्ञान, ग्रंथ निर्माण और इमारतों के लिये बहुत प्रसिद्ध है। जान मिलटन (John Milton) जो प्यौरीटनों का पक्षपाती था, क्रामवैल का मन्त्री था। उसने प्रेस की स्वतन्त्रता के लिए गद्य में कई छोटे पुस्तक लिखे, मगर जब चार्ल्स द्वितीय वापिस आकर फिर राजा हुआ, तो उसकी बहुत सी पुस्तकें आग की भेंट कर दी गईं। उसके बाद उसने एक बड़ाभारी महाकाव्य पैरा डाइज़(Paradise Lost)और फिर पैरा डाईज़ रीगेण्ड (Paradise Regained) लिखा। बनियान (Bunyan) ने एक उपन्यास पिलग्रिरम्स प्रौग्रेस (Pilgrim's Progress) नाम का लिखा। चार्ल्स द्वितीय के समय का प्रसिद्ध कवि ड्राइडन (Dryden)

हुआ है। उसकी रचना चार्ल्स द्वितीय के समय की सभ्यता मे रँगी हुई हैं। लोक (Lock) नाम एक फिलासफ़र भी इसी समय मे हुआ है, जिसने सिविल गवर्नमेण्ट (Civil Government) पर एक पुस्तक लिखी है। उसके राजनैतिक सिद्धान्तों ने इंग्लैण्ड के शासन और सन् १६८८ ई० की क्रान्ति पर गहरा प्रभाव डाला। ऐडीसन (Addison) नाम का प्रसिद्ध निबंध लेखक और स्पैक्टेटर (Spectator) समाचार पत्र का संपादक भी इसी काल में हुआ।

समाचार पत्र—विलियम और मेरी के शासन-काल मे समाचार पत्रों को स्वतन्त्रता देदी गई। इसी समय से समाचार पत्रों का आरम्भ समझना चाहिये। देश के राजनैतिक दलों ने समाचार-पत्रों के द्वारा अपने सिद्धान्तों का प्रचार करना आरम्भ किया। (Spectator) का सम्पादक एडीसन (Addison) ह्विग विचारों का समर्थक था और जोनाथन स्विफ्ट (Jonathan Swift) ने अपने जोरदार लेखों के द्वारा टोरी दल के सिद्धान्तों का प्रचार करना आरम्भ किया। समाचार पत्र धीरे-धीरे उन्नति करते गये।

विज्ञान—विज्ञान की उन्नति भी सत्रहवीं शताब्दी में खूब हुई और सन १६६० ई० मे प्रसिद्ध रोयल सोसाइटी ऑफ़ लण्डन (Royal Society of London) स्थापित हुई, जिसका आज्ञापत्र (Charter) चार्ल्स द्वितीय ने प्रदान किया था। सत्रहवीं शताब्दी के विज्ञानवेताओं में सबसे प्रसिद्ध नाम सर आइज़क न्यूटन (Sir Issac Newton) का है, जिसने पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का नियम

मालूम किया। वर्तमान विज्ञान का प्रवर्तक-बेकन (Bacon) भी इसी काल में हुआ था।

भवन-निर्माण कला—भवन-निर्माण कला के दो प्रसिद्ध विशारद इनीगो जोन्स (Inigo Jones) और सर क्रिस्टोफर रेन (Sir Christopher Wrenn) भी इसी काल में उत्पन्न हुये थे। स्टुआर्ट बादशाहों के काल में जितनी प्रसिद्ध इमारतें निर्माण की गईं, उन सब में क्रिस्टोफर रैन का हाथ अवश्य था। इन इमारतों में से मुख्य सेंटपाल कैथेड्रल (St. Paul Cathedral) है, जो स्टुआर्ट वंश के शासन काल में बनी थी।

जीवन का ढंग—सत्रहवीं शताब्दी में लोगों के भोजन और वस्त्रों में भी उन्नति हुई। शराब के स्थान पर चाय और कहवा का प्रयोग होने लगा। इस काल की पोशाक, विशेषकर राजा के सन १६६० ई० में पुनरावर्तन के बाद से महारानी ऐलीज़ाबेथ के काल की पोशाक से भी अधिक चटकीली-भड़कीली थी। अमीरों में यह एक फैशन था कि सिर के बाल साफ़ कराके नकली बालों की टोपियाँ पहनते थे, जिनका मूल्य भी अधिक होता था। स्त्रियाँ भी पुरुषों की नक़ल करने के लिये और सजावट के लिये नक़ली घूँघरवाले बाल प्रयोग में लाती थीं। उस काल में शिक्षित व्यक्ति ३ या ४ प्रतिशत से अधिक नहीं थे और अपराधियों के कोड़े लगाने आदि असभ्य दृश्यों को देखने के लिये सैकड़ों मनुष्य एकत्रित हो जाया करते थे।

Summary Notes on Stuart Period

The Importance of the Reign of James I

(a) His policy made Puritans his enemy.

(b) The feeling of the nation was greatly aroused by his policy against Roman Catholics

(c) His claim "Divine Right" meant that Parliament had no power except such as he chose to grant it

(d) His great aim was to bring about religious peace in Europe by marrying (1) his daughter to an important Protestant prince, the Elector Palatine, and (2) his son to the Catholic princess of Spain. He succeeded in first and failed in second, and both involved him in difficulties with his people and Parliament. To enable his son-in-law to regain his territory from where he was driven by the Emperor, he had to join in the Thirty Years' War To meet funds for this, he had to call Parliament, which made the most of this opportunity to criticize his government Hence constant quarrel (Parliament wanted a sea-war against Spain instead of a land war in Germany) The possibility of a Catholic princess becoming Queen of England made the people very much against him James had to execute Raleigh to please Spain, but the marriage never took place, and in the last month of the reign, it led to war against Spain

Robert Cecil, Earl of Salisbury (1563-1612)

Son of Lord Burghley became a member of Council in the latter years of Elizabeth, largely responsible for

James VI's peaceful accession in 1603, created Earl of Salisbury under James I A keen Protestant, he influenced the king against toleration for Catholics and was opposed to Spanish Marriage Project.

Sir Walter Raleigh (1552-1618)

A Devonshire squire. Gained wealth from financing Drake, and spent it on trying to establish a colony in America to be called Virginia The man who first grasped the idea of colonisation. A soldier, courtier, poet, historian. sailor and explorer To carry favour with the king of Spain, he was executed

Francis Bacon, Viscount St Albans (1561—1626)

Son of Sir Nicholas Bacon (Elizabeth's minister) A very able lawyer. In 1618, he became Chancellor, but three years later was accused of taking bribes, was heavily fined and dismissed from office 1621 A strong upholder of royal power and a famous writer on Natural Philosophy.

Thomas Wentworth, Earl of Stratford (1593-1641)

Attacked misgovernment of Buckingham, and was imprisoned, but since he believed in Parliament controlling Government, he was taken into royal service, and became President of the Council of the North In 1632, he became Lord Deputy of Ireland and carried on despotic but efficient government by royal officials. Sent for by the king in the crisis of the "Bishops Wars" created Earl Advised Charles to summon Parliament and Parliament first impeached him, and then passed an Act of Attainder (1641) and he was beheaded before a vast crowd

Causes of the Civil War

Religious (a) A major portion of the members of the Parliament were Puritans, and they were very strong, outside the Parliament, in the country as well Laud, who was his adviser in religious matters, was very much against Puritans and he greatly offended them by his strictness and so Puritans became constant enemy of Charles I

(b) Charles married Henrietta Maria the Roman Catholic princess of France, and though Charles was in favour of National Church, still people thought that he would favour the Catholics, and so they became his enemies

(c) Punishment inflicted through the Star Chamber and the High Commission Court were very severe and made him unpopular

(d) Presbyterians of Scotland were dis-satisfied because Charles wanted to introduce Bishops and the Prayer Book in their Church They fought against the king in the Bishop Wars

King's Principles (a) Believed in Divine Right Theory of Kings His authority over Church and State were given to him by God and so Parliament had no right to interfere.

(b) Charles did many unconstitutional acts, such as taking of ship money, benevolence, forced loan appointing ministers of his own choice, responsible to him, and dissolving the Parliament and ruling without Parliament His point of view was that the Parliament

had never before claimed control over the actual working of government.

(c) The Act of Supremacy (1559) made him the sovereign Head of the Church; Parliament had no right to any control over it.

Parliament's view point (a) The king had disregarded the ancient rights of the people to control taxation and trial by Jury. The Parliament hated Laud, Strafford and Buckingham.

(Parliament had allowed its rights to fall into abeyance under the Tudors, but it had always possessed those rights. They were affirmed by Magna Charta.)

(b) The king was making changes in the Church of England, which tended to Catholicism.

(c) The king had repeatedly shown that his word was not to be trusted (*e.g.*, the imprisonment of Eliot) and that he would act tyrannically again if he got the chance (*e.g.*, the attempted arrest of the five members).

His Foreign Policy. He declared war against Spain, which the people of England had demanded earlier in the reign of James I, but now they opposed his foreign policy as well, because they thought that there was something personal in it. This foreign policy brought him in conflict with the Parliament all the more, because the king was in need of money, which the Parliament refused to pay unless the grievances were removed. The failure of foreign policy made him all the more unpopular

People (a) There was a marked national awakening among the people.

(b) The people were determined to be ruled constitutionally.

Direct Cause (a) The Long Parliament, after abolishing the forced loans, and conducting the trial of favourites of the king, drew up the Grand Remonstrance.

(b) On the occasion of Root and Branch Bill, the Parliament was split up into two parties, and if Charles had been tactful, he would have won over one of the parties to his side, but he was foolish enough to come to the House to arrest the five leaders of the House of Commons, who had been warned and fled but this enraged other members and led to Civil War.

Characteristics of the War

(a) It was not a war between social classes.

Most of the nobles and the gentry were for the king the middle classes for the Paliament· the lower classes neutral, but there were plenty of exceptions

(b) It was not a war between well-defined geographical districts.

(On the whole, north and west were for the king south and east for Parliament, but in every town and district, there was a minority on the side that was locally less popular).

(c) To a large extent, it was a war between Town and Country.

(d) Large armies were seldom used.

(e) It was not a savagely cruel war

The Three Forms of Republican Government

(a) The Common Wealth (1649-53)

(b) The Protectorate (original form) (1653-5)

(c) The Protectorate (revised form) (1657-58)

Cromwell's Foreign Policy

(a) To prevent restoration of Stuarts by foreign powers.

(b) To form a commercial and military alliance of the Protestant Powers of Northern Europe, England, Holland, Sweden, Denmark

(c) To find profitable occupation for his army and navy.

(d) Alliance with France.

The Declaration of Breda (April 1660)

It was the greatest folly of General Monk In this Declaration, he ignored the essential point as to what should be the relation between the King and the Parliament On account of this loophole, troubles continued till Glorious Revolution when this point was decided.

What was restored at the Restoration?

(1) The Monarchy, (2) Parliament, (3) The Church of England The Angelican Clergy all recovered their livings, (4) Merrie England Sports, dance, theatres were again restored

The Three Declaration of Indulgence

Proclamation, giving freedom of worship to Dissentors and Catholics.

No 1. (1672-3) granted by Charles II as part of his "Dover" policy

No 2 (1687) James II's way of winning support of Dissenters for his design of giving freedom of worship to Catholics

No 3. (1688) James II tried again Ordered the Clergy to read it aloud in their Churches on two successive days

What were the effects of Glorious Revolution both in England and Europe?

(a) It completed the work of Long Parliament, by prescribing definite limits to the royal power.

(b) It began an era of religious toleration

(c) The triumph of Whig principles led indirectly to the expansion of commerce

For the backbone of the Whig Party were the commercial and moneyed interests, and these interests had more control over the Government than ever before

(d) There was a change in foreign policy as well, and England now became hostile to France

Character of Charles II

The interesting thing in his character is that there were two tendencies in him, one was to dictate to the Parliament, but when he saw that this policy would lead to harmful results, he would at once yield, and would do as the Parliament desired him to do.

His real aim was to establish absolute monarchy in England. His religious policy was to give freedom to Catholics.

His Relation with the Parliament

There are two things either to dominate over the Parliament, or to yield before it.

His measures indicating how he yielded before Parliament	His measures indicating how he wanted to Dominate.
1. Clarendon Code	1. Declaration of Indulgence
2. Dismissal of Clarendon	2. Secret Treaty of Dower
3. Test Act.	
4. Dismissal of Cabal.	
5. Appointment of Danby as minister.	
6. Marriage of Marry with William of Orange.	
7. Habeas Corpus Act.	

Give an estimate of Charles II. His religious policy to give freedom to Catholics failed, because he had to cancel the Declaration of Indulgence, and had to pass Test Act.

In foreign policy, he wanted to please France, but here also he was not much successful when Danby got married his brother's daughter to William of Orange, who was an enemy of France

CHRONOLOGY OF PRINCIPAL EVENTS IN THE STUART PFRIOD.

Jamous I (1603-1625)

1604 Hampton Court Conference.

1605 Gunpowder Plot
1607 Plantation of Virginia
1610 Plantation of Ulster
1618 Execution of Raleigh.
1620 Pilgrim Fathers sail in "May Flower" to America
1624 War with Spain

Charles I (1625-1649)

1628 Petition of Right
1622-40 Government without Parliament
1633 Land, Archbishop of Canterbury
1634 Ship Money
1637-38 Hampden's Cose.
1640 Long Parliament
1641 Execution of Strafford Irish Rebellion.
1642 The Civil War.
1644 Battle of Morston Moor.
1645 Battle of Naseby, Execution of Land.
1646 Surrender of Charles
1648 Second Civil War
1649 Execution of Charles I.

The Commonwealth (1649-1660)

1649 Conquest of Ireland.
1650 Battle of Dunbar.
1652-54 Dutch War.
1655 Conquest of Jamaica
1657 Humble Petition and Advice.
1658 Death of Oliver Cromwell
1660 Convention Parliament and Declaration of Breda

Charles II (1660-1685)

1661 Corporation Act
1662 Act of Uniformity

1663 Foundation of Caroline.
1664 Conventicle Act.
1665 Five-Mile Act.
1667 Peace of Breda ; Fall of Clarendon.
1668 Triple Alliance.
1670 Treaty of Dover.
1672 Declaration of Indulgence.
1673 Test Act
1678 Impeachment of Danby.
1679 Habeas Corpus Act.
1683 Ry House Plot.

James II

1685 Rebellion of Menmouth, "Bloody Assize."
1688 Second Declaration of Indulgence ; Acquitted of Seven Bishops, The Revolution.

William III (1689-1702) and Mary (1689-1694)

1689 Bill of Rights ; Mutiny Act, Toluation Act.
1690 Battle of Boyne.
1694 Trinnal Act.
1698 First Partition Treaty.
1700 Second Partition Treaty.
1701 Act of Settlement, Grand Alliance,

Anne (1702-1714)

1702 War of Spanish Succession.
1704 Battle of Blenheim.
1706 Batile of Ramilles
1707 Act of Union.
1713 Act of Settlement.

MODEL QUESTIONS

Stuart Period

1. Account for the fact that Tudors had no quarrel with the Parliaments, while James I and Charles I quarreled with the Parliament

2 Describe fully the Civil War.

3. What were the questions at issue between Charles I and his First Three Parliaments? [Hint Question No 1 Has Parliament the right to dictate to the King as to whom he shall appoint as ministers and commanders? Question No. 2 Has the King right to collect taxes that have not been voted by the Parliament Question No 3 Had the King the right to alter the character of the National Church without consulting the Parliament.

4 Write a short sketch of the career of Oliver Cromwell under the following heads —
(a) His position in the Commonwealth
(b) His domestic policy
(c) His foreign policy
(d) An estimate of what he did for England

5 Cromwell's greatness at home was a mere shadow of his greatness abroad.

6 What do you mean by "Restoration"? What were the circumstances, which brought about Restoration in England? What were the effects of Restoration

7. Describe the character and policy of Charles II

आपस में फूट थी इसलिए वे अपने उद्देश्य में सफल न हो सके और व्हिग दलवालों ने उससे लाभ उठाया श्रूसवरी (Shrewsbury) जो कि एक व्हिग था लार्ड ट्रेजरर (Lord Treasurer) के पद पर नियुक्त हो गया और उसी समय महारानी ऐन की मृत्यु हो गई। श्रूसवरी ने उत्तराधिकार के कानून के अनुसार जार्ज प्रथम को वादशाह घोषित कर दिया। फिर सन् १७१४ से १७६० तक शासन की वागडोर व्हिग दल के मन्त्रिमडल के हाथ में रही। उसके कारण निम्न लिखित हैं :—

(१) इस समय टोरी दल वहुत वदनाम था। क्योंकि उसने पदच्युत राजा जेम्स द्वितीय के वंश का पक्ष लिया था। इस कारण से हैनोवर वंश के पहले दोनो राजाओ ने टोरियों पर विश्वास न करके व्हिग दलवालो को ही मन्त्रिमण्डल में स्थान दिया।

(२) व्हिग लोग धनवान थे और इस कारण से हाउस ऑफ़ लार्डस में उनकी पर्याप्त सख्या थी। निर्वाचन में खूब रुपया व्यय करके, उन्होंने हाउस ऑफ कामन्स में भी अपने पक्ष के लोगों की काफ़ी संख्या वढ़ाली और इस आधी शताब्दी तक उनका ही ज़ोर रहा। सन् १७१६ में अपनी शक्ति दृढ़ करने के लिये एक नया कानून वनाया जो कि सप्तवर्षीय कानून (Septennial Act) के नाम से प्रसिद्ध है। उसका उद्देश्य यह था कि पार्लियामेण्ट का चुनाव ३ साल के वजाय ७ साल वाद हुआ करे। इस ह्विग दल के शासन काल में मन्त्रिमण्डल और प्रधान मंत्री की जगह सुदृढ़ हो गई। इसमें प्रथम प्रधान मंत्री वालपोल ने वहुत सहायता दी।

सन् १७१५ का जैकोवाइट विद्रोह—पदच्युत राजा जेम्स द्वितीय के वंश का पक्ष करनेवाले लोग इतिहास में जैकोवाइट (Jacobite) के नाम से प्रसिद्ध हैं। जैकोवाइट दल ने विलियम तृतीय के शासन काल में जेम्स द्वितीय को पुनः राजा वनाने के उद्देश्य से स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड में विद्रोह किये थे। जेम्स द्वितीय के मरने के वाद उन्होने उसके पुत्र को जो इतिहास में "ओल्ड प्रीटेण्डर (Old Pretender) के नाम से प्रसिद्ध

है, राजा बनाना चाहा और महारानी ऐन के शासन काल के अन्तिम दिनो में टोरी दल ने उसको इंग्लैण्ड का राजा बनाना चाहा लेकिन उसको उसमे सफलता प्राप्त नहीं हुई। इंग्लैण्ड में व्हिग दल के मन्त्रियों का जोर था। ये लोग जैकोबाइट लोगो के बहुत विरोधी थे। इसलिए उन्होने पहले ही से प्रबन्ध कर लिया था। एक जहाजीबेडा शत्रुओं को रोकने के लिए हर समय तैयार रहता था। प्लाईमाउथ (Plymouth) के बन्दरगाह पर आरमेडा आया भी लेकिन भयभीत होकर भाग गया। वेल्स मे भी झगडा हुआ लेकिन अपने आप ही ठण्डा हो गया। आयरलैण्ड मे प्रबन्ध अच्छा होने के कारण विद्रोही लोग सर भी न उठा सके। इग्लैण्ड के नारथम्बरलैण्ड प्रान्त मे दो जमीदारो ने विद्रोह किया। वे अपने साथ दक्षिणी स्काटलैण्ड के विद्रोही लोगो को लेकर लकाशायर (Lancashire) के प्रान्त में इस आशा मे पहुँचे कि वहा के कैथॉलिक लोग उनका साथ देगे। लेकिन वहाँ प्रेस्टन (Preston) के स्थान पर तुरन्त ही तितरबितर कर दिये गये। इस बीच मे अर्ल ऑफ मार (Earl of Mar) ने स्काटलैण्ड मे विद्रोह किया और वहा के लगभग १० हज़ार पहाडियो ने उसका साथ दिया लेकिन शैरिफ मूर (Sheriff Moor) के स्थान पर उसका नशा भी ढीला कर दिया गया। थोडे समय के बाद जेम्स द्वितीय का लडका खुद स्काटलैण्ड आया लेकिन उसकी अयोग्यता को देखकर उसके साथियो का साहस टूट गया। पर्थ (Perth) के स्थान पर हार कर उसे भी फ्रास भाग जाना पडा। उसके भागते ही सब विद्रोही ठण्डे पड गये। व्हिग मन्त्रियो ने विद्रोहियो के नेताओ को बडी कडी सजायें दी।

इसका परिणाम यह हुआ कि टोरी दलवाले बदनाम हो गये और व्हिग दलवालो की तूती बोलने लगी। उन्होने अपनी शक्ति बढाने के लिए सन् १७१६ ई० मे एक सप्तवर्षीय कानून (Septennial Act) बनाया।

मंत्रिमण्डल की स्थापना—जार्ज प्रथम इग्लैण्ड मे वास्तव में

एक अजनवी की तरह रहता था। वह न तो अग्रेजी भाषा जानता था न अग्रेजी रीति रस्म और न अग्रेजी कानून से परिचित था इसलिए उसको राज्य का बहुत-सा काम मन्त्रियो को सौप देना पडा। उसने मन्त्रिमण्डल के सभापति पद को भी छोड दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि मन्त्रियो मे जो सबसे अधिक प्रभावशाली और सर्वप्रिय होता वही मन्त्रिमण्डल का प्रधान बन जाता, और ये लोग राज्य का काम सब नियमपूर्वक चलाते थे। मन्त्रिमण्डल के फ़ैसले बादशाह के सम्मुख पेश किये जाते थे। अभी तक मन्त्रिमण्डल की सभा का खुद बादशाह प्रधान होता था और मन्त्रियों की केवल सम्मति लेता था लेकिन सब बातें वह स्वय तै किया करता था। लेकिन अब उसका प्रधान न होने के कारण से सभा खुद एक बात तय करती थी और बादशाह को केवल सूचना दे देती थी कि क्या तय पाया है। रौबर्ट वालपोल (Robert Walpole) इंग्लैण्ड का सबसे पहला प्रधान मन्त्री हुआ है जो कि प्रधान मन्त्री (Prime Minister) के नाम से पुकारा जाने लगा। अतएव यह पार्लियामेण्ट के किसी ऐक्ट के कारण से नही, किन्तु अजनवी बादशाह होने के कारण से इग्लैण्ड में प्रधान मन्त्री के पद की और मन्त्रिमण्डल की सभा की स्थापना हो गई।

व्हिगदल का शासन प्रबन्ध :—व्हिग दल का उद्देश्य यह था कि शक्ति अपने पास रक्खे इसलिये वह अपने शत्रुओ की शक्ति को नष्ट करने पर तुला हुआ था। इसलिये इस दल वालो ने निम्न-लिखित कानून बनाये :—

(१) विद्रोह का कानून (Riot Act) जिसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि मजिस्ट्रेटो को इस बात का अधिकार है कि अगर किसी जगह १२ आदमियो से अधिक सख्या मे जमा हो जाँय तो वे उनको फौज के द्वारा अलग कर सकते हैं।

(२) टोरी दल के नेताओ पर मुकदमे चलाकर उनको कैद कर दिया गया।

(३) सप्त वर्षीय कानून (Septennial Act) पास किया गया जिसका कि वर्णन ऊपर हो चुका है।

(४) व्हिग मन्त्री बादशाह के लार्ड बनाने के अधिकार को सीमित करने और तत्कालीन व्हिग लोगो की शक्ति स्थिर रखने के लिये पीरेज कानून (Peerage Bill) स्वीकार कराना चाहते थे मगर वालपोल के विरोध के कारण वे ऐसा न कर सके।

दक्षिण सागर का बुलबुला :—सन् १७२० ई० मे यह विचित्र घटना हुई जिसे दक्षिणी सागर का बुलबुला (South Sea Bubble) कहते है। सन् १७११ ई० मे बौलिंगब्रोक तथा हार्ले ने दक्षिणी अमेरिका और उसके टापुओ और अन्य देशो से व्यापार करने को एक कम्पनी दक्षिणी सागर कम्पनी (South Sea Company) के नाम से स्थापित की थी। उस कम्पनी ने व्यापार में बहुत उन्नति की यहाँ तक कि उसने सारा राष्ट्रीय ऋण (National Debt) अपने ऊपर ले लिया था। यूट्रेक्ट की संधि से देश मे शान्ति सुख फैला। लोगो की आर्थिक अवस्था बहुत अच्छी थी। सभी ने उपरोक्त कम्पनी के हिस्से खरीदने का प्रयत्न किया इसलिए हिस्सो का मूल्य दिन व दिन बढता ही गया, यहाँतक कि १०० पौण्ड का हिस्सा १००० पौण्ड मे मिलने लगा। साउथसी कम्पनी की देखा-देखी इग्लैण्ड मे और भी बहुत-सी कम्पनिया खुल गई जो धोके की टट्टी होने के अतिरिक्त कुछ अस्तित्व न रखती थीं। इन कम्पनियो के कारण साउथसी कम्पनी का महत्व भी कम हो गया। लोग उसकी आर्थिक दशा पर सन्देह करने लगे। फिर क्या था, उसके हिस्सो का मूल्य एक साथ ही घट गया यहाँतक कि एक हिस्से का मूल्य १०० पौण्ड से भी कम हो गया। इसलिए सैकडो हिस्सेदारो के दिवाले निकल गये।

वालपोल का मन्त्रित्व :—यह अवस्था देखकर दक्षिणी सागर की कम्पनी तुरन्त बन्द करदी गई। उसके बन्द होजाने से इग्लैंड मे बडी अशान्ति फैली। टाउनशेंड और स्टैनहोप पर जिन्होने, कम्पनी पर सरकारी ऋण सोप करके उसका उत्साह बढाया था और उसके संचालको

से घूस भी ली थी, अभियोग चले और वे मन्त्रिमंडल से अलग कर दिये गये। वालपोल को अब जार्ज प्रथम ने प्रधान मन्त्री बनाया उसने दक्षिणी सागर कम्पनी के सचालको (Directors) से रुपये वसूल करके कम्पनी के हिस्सेदारों को दिये। इस प्रकार देश मे सुख शान्ति की स्थापना हुई।

✓ **वैदेशिक नीति :**—स्पेन यूट्रेच्ड की सधि का वह भाग रद करना चाहता था जिससे कि उसका जिब्राल्टर और मिनारका पर से अधिकार उठ गया था। दूसरे स्पेन, फ्रास के सिंहासन पर भी अपना अधिकार मजबूत करना चाहता था। स्पेन को ऐसा करने से रोकने के लिए इग्लैंड, फ्रास, आस्ट्रिया और हालैंड का सघ बनाया गया और स्पेन से युद्ध ठन गया जिसमे अँग्रेजी जहाजी बेडे ने स्पेन के जहाजी बेडे को हरा दिया। इसपर स्पेन ने सधि करली और यूट्रेच्ड की सधि पूरे तौर से मानने का बचन दिया।

परिणाम :—जार्ज प्रथम के राज्य काल मे व्हिगदल के मत्री राज-कार्य करते रहे और उनकी शासननीति शानदार क्राति (Glorious Revolution) से जो अधिकार लोगो को मिले थे, उनके विरुद्ध थी। उन्होने विद्रोह कानून (Riot Act) पास किया, टोरी दल के नेताओ पर अभियोग चलाया, सप्तवर्षीय कानून बनाया और पीरेजबिल को पास कराने की चेष्टा की, लेकिन असफल रहे। इन सब बातो से लोगो की स्वतन्त्रता मे विघ्न पडता था। उनके समय मे दो लडाइयाँ हुई एक जैकोबाइट का विद्रोह और दूसरे स्पेन के साथ युद्ध। दक्षिणी सागर की कम्पनी का दिवाला निकलने से देश की आर्थिक दशा को बहुत बडा धक्का पहुँचा।

वालपोल का मंत्रित्व :—वालपोल ने ईटन कालेज मे शिक्षा पाई थी जहाँ के हौल मे उसका चित्र अबतक मौजूद है। वालपोल सन् १७०२ मे लिनरेगन (Lynn Regin) के गाव से पार्लियामेन्ट का मेम्बर निर्वाचित हुआ। वह एक व्हिग था। जार्ज प्रथम के प्रथम मन्त्रि-मडल मे टाउनशेड (Townshend), सडरलैंड (Sunderland), स्टैनहोप

(Stanhope) के साथ वालपोल भी सम्मिलित था। लेकिन सन् १७१७ में उनमे मतभेद हो जाने के कारण से वालपोल ने त्यागपत्र दे दिया।

अव सन् १७२० ई० मे "दक्षिणी सागर के बुलवुला" के टूटने पर वह मन्त्रिमंडल का प्रधान नियुक्त हुआ और इस पद पर सन् १७४२ ई० तक अर्थात् पूरे २२ वर्षतक सुशोभित रहा।

वालपोल से पहले वादशाह स्वय मन्त्रि-मडल का प्रधान होता था। लेकिन क्योकि जार्ज प्रथम और जार्ज द्वितीय अँगरेजी भाषा से नितान्त अनभिज्ञ थे इसलिए उन्होने धीरे-धीरे मन्त्रि-मडल की वैठको मे सम्मिलित होना बन्द कर दिया। ऐसी दशा मे मन्त्रियो मे से ही एक मनुष्य मन्त्रि-मण्डल का प्रधान होने लगा और उसकी पदवी प्रधान मन्त्री की हो गई। इस पद पर सुशोभित होनेवाला पहला पुरुष वालपोल था। वालपोल यह चाहता था कि उसके सहायक मन्त्री उसकी आज्ञा के विरुद्ध कोई काम न कर सके इसलिए वालपोल ने उन मन्त्रियो को जो उसकी कार्यनीति के विरुद्ध थे, अपने-अपने पद से त्यागपत्र देनेपर मजवूर किया। राज्य का सारा उत्तरदायित्व मन्त्रिमडल (Cabinet , और प्रधान मन्त्री ही पर आ गया। वादशाह का दवाव शासन पर से उठ गया और समस्त मन्त्री केवल प्रधान मत्री के ही प्रभाव मे रहने लगे। इन मन्त्रियो की नियुक्ति भी प्रधान मत्री की सम्मति के आधार पर ही होने लगी।

जार्ज द्वितीय (१७२७–६०)

वालपोल की आन्तरिक नीति—वालपोल की शासन नीति का सार यह है "अन्य देशो से युद्ध न हो और अपने देश मे सुख-शान्ति स्थापित रहे। देश धन धान्य से भरा पूरा रहे।" उसका सिद्धान्त यह था कि सोते हुए कुत्तो को जगाना बुद्धिमानी नहीं है। वह सुधारो को पसन्द करता था लेकिन धीरे-धीरे और विद्रोह की आग विना भडकाए हुए। जनता के विरोध के डर से उसने इगलिश चर्च के विरोधी (Non-conformists) लोगो की भलाई के लिए कोई स्थायी कानून पास नही

किया, लेकिन हर साल उनके लिए क्षमा का कानून (Indemnity Act) पास करा के वह उनको सरकारी नौकरियाँ इत्यादि देता रहा।

वह स्वय बहुत ईमानदार था मगर पार्लियामेन्ट में अपनी शक्ति पैदा करने के लिए उसे मेम्बरो को कभी ऊँचे पद आदि देकर के और कभी-कभी रिश्वत देकर भी प्रसन्न करना पडता था इन उपायो के होते हुए भी वालपोल को बहुत-से विरोधियो का सामना करना पडा। महारानी एन के शासन काल के टोरी मन्त्री बौलिंगब्रोक (Bolingbroke) ने कुछ विरोधी व्हिग दल के सदस्यों को अपनी ओर मिलाकर एक दल वना लिया। उन्होने पार्लियामेन्ट के भीतर और वाहर विरोध करना आरंभ किया। पार्लियामेन्ट में कुछ नवयुवक कम आयुवाले मेम्बर थे जोकि बच्चे (Boys) कहलाते थे और उन्ही मे से एक विलियम पिट (William Pitt) भी था। इन्होने भी सब ने विरोध किया।

आर्थिक नीतिः—वालपोल आर्थिक तथा व्यापारिक मामलों के प्रवन्ध में बहुत निपुण था। "दक्षिणी सागर का वुलवुला" के टूटने के वाद देश की आर्थिक और व्यापारिक अवस्था का सुधार करना इसी का काम था। वह अपनी आर्थिक नीति में स्वतन्त्र व्यापार की नीति का विशेष पक्ष करने वाला था। इसीलिये उसने धीरे धीरे बहुत से व्यापार की वस्तुओ पर वाहर से आने और ले जाने का महसूल कम कर दिया लेकिन फिर भी कुछ वस्तुओ पर महसूल लागू रहा। वहुत से व्यापारी विना महसूल दिये चोरी से अन्य देशो से माल मगा लेते थे। इस सिलसिले को वन्द करने के लिये बालपोल ने सन् १७३३ ई० मे एक चुगी कानून (Excise Bill) वनाना चाहा जिसके अनुसार महसूल का वन्दरगाह पर लिया जाना वन्द करके दूकानो पर लिया जाना था लेकिन व्यापारियो ने इस नीति का सख्त विरोध किया। बालपोल ने यह देख कर अपना प्रस्ताव तुरन्त वापस ले लिया।

वालपोल की वैदेशिक नीतिः—वालपोल युद्ध का सवसे बडा विरोधी था। उसने सर्वदा यही प्रयत्न किया कि इंग्लैंड को किसी युद्ध मे

आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध, सन् १७४० से १७४८ तकः—सन् १७४० मे आस्ट्रिया के सम्राट चार्ल्स षष्ट की मृत्यु होगई। उसके कोई लडका न था। इसलिए उसने यह वसीयत की थी कि मेरे सम्पूर्ण साम्राज्य की उत्तराधिकारिणी मेरी पुत्री मैरिया थैरीसा होगी। यूरोप के बडे बडे राष्ट्रो ने इस वात को मान लिया था लेकिन जैसे ही सन् १७४० मे उसकी मृत्यु हुई, यूरोप के राष्ट्रो ने अपनी प्रतिज्ञाओ को एक साथ भुला दिया। जर्मनी की प्रशिया रियासत ने जिसका शासक इस समय फ्रैडरिक महान था, आस्ट्रिया के एक प्रान्त साइलेशिया पर अधिकार कर लिया। स्पेन को मैरिया थैरीसा के इटली के प्रांतो पर अधिकार करने की चिन्ता हुई। फ्रास नीदरलैंड विजय करने का प्रयत्न करने लगा। ववेरिया का इलेक्टर कहने लगा कि मुझे चार्ल्स षष्ट के वडे भाई की पुत्री व्याही है इसलिए आस्ट्रिया का साम्राज्य मुझे मिलना चाहिए। मैरिया थैरीसा ने अग्रेजो को सहायता के लिए लिखा। उधर स्पेन और फ्रास ने ववेरिया के शासक का पक्ष लेकर आस्ट्रिया को आ घेरा।

अंगरेजों के युद्ध में भाग लेने का कारण.—अगरेजो ने मैरिया थैरीसा की सहायता की, प्रथम इसलिये कि उनको यह भय था कि कहीं फ्रैडरिक हैनोवर पर आक्रमण न करदे। दूसरे अग्रेजो को यह डर था कि कही फ्रास और स्पेन मे आपस मे वैवाहिक सम्बन्ध न होजाय क्योकि इससे उनके व्यापार मे वहुत धक्का पहुँचता था। इसलिये अग्रेजो ने फ्रास के विरुद्ध मैरिया थैरीसा का साथ दिया। इस युद्ध मे हालैंड, इग्लैंड, आस्ट्रिया एक ओर थे और उनके विरोधी फ्रास, स्पेन, प्रशिया, और ववेरिया थे।

जार्ज द्वितीय स्वय सेना लेकर जर्मनी पहुँचा और २७ जून सन् १७४३ को डैटिन्जन (Dettingen) के स्थान पर फ्रास के मुकाविले मे एक ज़बर्दस्त विजय प्राप्त की। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रास और इग्लैंड जो कि अभी तक मैरिया थैरीसा के शत्रु और मित्र वनकर लड रहे थे अव उन्होने आपस मे एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। एलाशापेल

की सधि के सनुसार १७४८ में युद्ध वन्द हुआ और इंग्लैड तथा हालैड ने मैरिया थैरीसा को उसकी इच्छा के विरुद्ध साइलेशिया फ्रैडरिक को देने को मजवूर किया . फ्रैडरिक ने मैरिया थैरीसा का आस्ट्रिया के सिहासन पर अधिकार स्वीकार कर लिया।

यह युद्ध जो कि प्रारभ मे आस्ट्रिया के राज्य के उत्तराधिकार के सम्वन्ध मे हुआ था, अव वह इग्लैड, फ्रास और स्पेन के मध्य व्यापार और उपनिवेशो के विषय में आपस मे छिड गया। अव यह युद्ध यूरोप के महाद्वीप तक ही सीमित न रहा किन्तु हिन्दुस्तान और उत्तरी अमेरिका जैसे दूर स्थित देशो मे भी छिड गया।

यूरोप मे जर्मनी के स्थान पर यह युद्ध अव नीदरलैड में होने लगा और यहाँ से आस्ट्रिया और हालैड को निकालने का फ्रास ने पूरा प्रयत्न किया। सन् १७४५ ई० मे फोन्टिनोय (Fontenoy) के युद्ध मे फ्रासीसियो ने जार्ज द्वितीय के लडके ड्यूक ऑफ कम्वरलैड (Duke of Cumberland) को पराजित किया। इस युद्ध का यह फल हुआ कि हिन्दुस्तान में अग्रेजो और फ्रासीसियो के वीच युद्ध छिड गया जो कि कर्नाटक की पहली लडाई के नाम से प्रसिद्ध है। उत्तरी अमेरिका मे भी दोनो देशो की सेना आपस में लडने लगी और फ्रास की सहायता से छोटे विद्रोही प्रिंस चार्ल्स प्रीटेन्डर (Prince Charles, Young Pretender) ने इसी समय इग्लैड पर आक्रमण कर दिया लेकिन उसे सफलता प्राप्त न हुई। अन्त मे सन् १७४८ ई० में एलाशापेल के स्थान पर इग्लैड और फ्रास के वीच मे भी सधि होगई। दोनो के जीते हुये प्रदेश वापिस कर दिये गये। फ्रास ने प्रोटैस्टैट वश वाले को वादशाह स्वीकार किया और यग प्रीटेन्डर (Young Pretender) को फ्रास से निकाल देने पर राजी होगया।

आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध का प्रभावः—इस युद्ध मे प्रशिया के अतिरिक्त और किसी को कुछ लाभ नही हुआ। मैरियाथैरीसा इस वात के अत्यत विरुद्ध थी कि साइलेशिया फ्रैडरिक को मिले लेकिन उसको वाध्य होकर उसे छोड़ना पड़ा, क्योकि उसके साथी इग्लैंड और

SCOTLAND AND NORTH OF ENGLAND
illustrating the Jacobite risings of 1689, 1715, & 1745-6.
Route of Old Pretender 1715
Route of Young Pretender 1745 6
Peterhead
Culloden Moor
Inverness
Aberdeen
Moidart
Montrose
Killiecrankie
Glencoe
NORTH
Dundee
Perth
Sheriffmuir
Stirling
Firth of Forth
SEA
Falkirk
Prestonpans
Edinburgh
Glasgow
Berwick
Kelso
Philiphaugh
NORTH-UMBERLAND
Carlisle
DURHAM
Kendal
YORKSHIRE
York
LANCASHIRE
Preston
IRISH SEA
R. Mersey
Manchester
Derby

हालैंड इस वात के विरुद्ध सहायता देने को तैयार नही थे और मैरिया-थैरीसा साइलेशिया लेने की चिन्ता मे थी। दूसरे इग्लैंड और फ्रास के बीच वढते हुये उपनिवेशो के झगडो का इस युद्ध मे कोई ठीक-ठीक फैसला न हुआ। तीसरे स्पेन ने अभीतक अग्रेजी जहाजो की तलाशी लेना बन्द न किया था और चौथे फ्रासीसियो को रहाईन नदी की ओर बढने से रोकने का कोई समुचित प्रवन्ध न हुआ था। इसीलिए थोडे ही दिनो वाद इससे भी भयकर और युद्ध आरभ हुआ जो सप्तवर्षीय युद्ध (Seven Years' War) के नाम से विख्यात है। वह इन्ही उपरोक्त वातो के फैसले के लिये किया गया था।

सन् १७४५ का जैकोवाइट विद्रोहः—इस वात को देखकर कि इग्लैंड आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध की उलझन मे फँसा हुआ है, जेम्स द्वितीय का पोता चार्ल्स एडवर्ड (Charles Edward) जो कि इतिहास मे "यग प्रिटेण्डर" (Young Pretender) के नाम से प्रसिद्ध है सन् १७४५ ई० मे कुछ सेना लेकर स्काटलैड के पश्चिमी किनारे पर उतरा ताकि वह अपने वावा के सिहासन को प्राप्त कर सके। इस आक्रमण में फ्रास ने उसकी सहायता की। स्काटलैड के पहाडी प्रात के वहुत से सरदार उसके साथ मिल गये क्योंकि वहाँ के निवासी अभीतक पूरे तौर पर हैनोवर वश से पूर्ण परिचित और मित्र नही हुये थे। राजकुमार चार्ल्स ने एडिनवरो की ओर कूच किया और प्रेस्टनपेस (Preston Pans) के स्थान पर अग्रेजी सेनाओ को परास्त किया। फिर "यग प्रिटेन्डर" (Young Pretender) एडिनवरा से प्रस्थान करके इग्लैंड पहुचा और उसकी सेना डर्बी (Derby) तक जो लदन मे केवल १२५ मील के फासले पर है निहायत आसानी से पहुँच गई। सन् १७४६ ई० मे फालकर्क (Falkirk) के स्थान पर चार्ल्स ने अग्रेजी सेना पर एक और विजय प्राप्त की, लेकिन इसी साल जार्ज द्वितीय के लडके ड्यूक औफ कम्वरलैंड ने उसको कुलोडन मूर (Culloden Moor) के स्थान पर ऐसा पराजित किया कि यग प्रिटेन्डर को भेष वदलकर अपनी जान वचानी पडी।

जैकोबाइट दल की असफलता के कारण:—जैकोबाइट दल ने तीन बार विद्रोह किया। पहली बार विलियम तृतीय के राज्य काल में पदच्युत बादशाह जेम्स द्वितीय का पक्ष लेकर। दूसरी बार जार्ज प्रथम के समय मे जेम्स द्वितीय के पुत्र ओल्ड प्रीटेन्डर का पक्ष लेकर। और तीसरी बार जेम्स द्वितीय के पोते "यग प्रिटेन्डर" का पक्ष लेकर, मगर तीनो बार उनके सारे प्रयत्न असफल रहे। इस असफलता का प्रथम कारण यह था, कि जैकोबाइट दल वाले लोग अधिकतर कैथोलिक थे और इग्लैड मे उस समय कैथोलिक लोगो के विरुद्ध बडी घृणा फैली हुई थी। दूसरे, जैकोबाइट लोगो ने अपना अड्डा फ्रास मे जमाया था और फ्रास की सहायता पर उनको बहुत भरोसा था लेकिन फ्रांस के बादशाह चौदहवे लुई की मृत्यु हो जाने से दूसरे विद्रोह मे उनको कोई सहायता नही मिली, और इसी तरह तीसरी बार भी फ्रास से ठीक समय पर कोई सहायता न मिली। इसका बुरा परिणाम यह हुआ कि फ्रास की सहायता के कारण इग्लैड के निवासी उनसे और भी अधिक घृणा करने लगे और इग्लैड वालो की बिलकुल सहानुभूति नही रही। तीसरे, स्काटलैड की कुछ पहाड़ी सेनाओ के अतिरिक्त ब्रिटानियाँ मे किसी ने भी जैकोबाइट दल का साथ न दिया। उस प्रदेश के लोग वीर तो अवश्य थे लेकिन उनमे अनुशासन (Discipline) बिल्कुल नही था। इन सब बातो का परिणाम यह हुआ कि यह दल बिल्कुल तितर बितर होगया और हैनोवर वश के राजाओ का राज्य पूरी तरह से स्थिर हो गया।

न्यू कैसिल का मंत्रित्व, (सन् १७५४ से १७५६ तक)।—सन् १७५४ मे पैलहाम की मृत्यु हो गई और अब न्यू कैसिल (Duke of Newcastle) प्रधान मत्री नियुक्त हुआ। विलियमपिट जो कि पैलहाम के त्रि-मडल मे सन् १७४७ से १७५४ तक एक साधारण पद पर नियत था, अब वह जोर पकड गया। न्यू कैसिल ने सन् १७५६ में त्यागपत्र दे दिया। तब एक साल तक पिट ने एक और मन्त्री के साथ सयुक्त शासन किया लेकिन वे राज्य का अच्छा प्रबन्ध न कर सके। तब फिर

पिट और न्यूकैसल ने सयुक्त शासन स्थापित किया जो कि सन् १७५७ से १७६१ तक स्थिर रहा। उनके समय मे सप्त वर्षीय युद्ध हुआ। न्यूकैसिल ने देश के आन्तरिक प्रवन्ध की ओर ध्यान दिया और पिट ने सप्त वर्षीय युद्ध के प्रवन्ध मे पूरे तौर से अपना चित्त लगाया।

सप्त वर्षीय युद्ध (१७५६-१७६३):—एलागापेल की सन्धि के अनुसार मैरियार्थरीसा का अधिकार केवल आस्ट्रिया पर ही स्वीकार किया गया था, और फ्रैडरिक को जो प्रशिया का वादशाह था, साइलेशिया का भी वादशाह माना गया था। मैरियार्थरीसा इस वात से सन्तुष्ट नही थी वह साइलेशिया को वापिस लेने पर तुली हुई थी। दूसरे, फ्रैडरिक की शक्ति अव इतनी अधिक हो गई थी कि फ्रान्स और रूस तथा अन्य राष्ट्र अव उससे डरने लगे थे। एतएव साइलेशिया को पुन प्राप्त करने के लिए मैरियार्थरीसा ने फ्रान्स, रूस और सेक्सनी के साथ मेल किया और इन देशो ने फ्रैडरिक की वढती हुई शक्ति को रोकने के लिये प्रशिया के विरुद्ध मैरियार्थरीसा की सहायता करना स्वीकार किया।

तीसरे, इसी समय मे अग्रेज और फ्रासीसी अन्य देशो मे अपनी अपनी वस्तियाँ या उपनिवेश स्थापित करने और व्यापारिक लाभ प्राप्त करने मे लगे हुए थे। दोनो हिन्दुस्तान और अमेरिका मे राज्य स्थापित करने और एक दूसरे को वहाँ से निकालने के प्रयत्न मे लगे थे। चौथे, इग्लैण्ड ने फ्रैडरिक का साथ दिया क्योकि हैनोवर प्रशिया के निकट था उसकी रक्षा के लिये फ्रैडरिक से मित्रता करना आवश्यक जान पडता था। दूसरे चूकि फ्रास प्रशिया के विरुद्ध मैरियार्थरीसा के साथ शामिल हो गया था। इस कारण से भी अँग्रेजो ने प्रशिया के वादशाह फ्रैडरिक के साथ मेल कर लिया।

यह युद्ध दो भागो मे विभाजित है—(१) सन् १७५६ से १७५७ तक जवकि न्यूकैसल प्रधान मत्री था और जव उसकी हार हुई। सन् १७५६ ई० मे फ्रास ने मिनारका के टापू को अँग्रेजो के अधिकार से ले लिया और अँग्रेजी सरकार ने एडमिरल विंग (Admiral Byang)

को मिनारका वापिस लेने के लिए भेजा लेकिन वह उसमे असफल रहा। ड्यूक ऑफ कम्बरलैण्ड भी फ्रासीसी सेना से जर्मनी मे हार कर इग्लैण्ड वापिस लौट आया। हिन्दुस्तान और अमेरिका मे अँग्रेजो की हार हुई।

युद्ध की यह दशा देखकर अब इग्लैण्ड में न्यूकैसिल और पिट का एक सयुक्त मत्रि-मण्डल स्थापित हुआ। विलियम पिट के मत्रि-मण्डल मे सम्मिलित होते ही युद्ध का रुख बदल गया। उसने खुले दिल के साथ रुपये से प्रशिया की सहायता की जिसका परिणाम यह हुआ कि प्रशिया का राजा फ्रैडरिक युद्ध को जारी रखने मे सफल रहा। फ्रैडरिक ने रोजबैक (Rose Back) के स्थान पर सन् १७५७ में फ्रासीसियो को बडी बुरी तरह पराजित किया और पिट ने अँग्रेजी सेना का कमान्डर फर्डीनेन्ड ऑफ ब्रन्सविक (Ferdinand of Brunswick) को नियुक्त किया। इसके बाद सन् १७५९ ई० में इग्लैण्ड और हैनोवर की सम्मिलित सेना ने फ्रासीसियो को मिन्डन (Minden) के युद्ध में हरा दिया। फ्रैडरिक को सहायता भेजने का मुख्य कारण यह था कि फ्रासीसी यूरोप के युद्ध में व्यस्त हो जावे ताकि वे दुसरे युद्ध क्षेत्रो मे अपनी पूरी शक्ति का उपयोग न कर सके। पिट ने अमेरिका मे युद्ध जारी रखने के लिए पूरीतौर से सहायता भेजी और अँग्रेजी सेना ने कनाडा मे लुई वर्ग (Louisburg) और फोर्ट डूकैस्नी (Fort Duquesne) भी सन् १७५८ में विजय कर लिये और सम् १७५९ में जनरल वुल्फ (Woife) ने क्यूबेक (Quebec) पर आक्रमण किया और उसमे सफलता प्राप्त की। सन् १७६० ई० मे मान्ट्रील (Montreal) को भी जीत लिया और इस प्रकार समस्त कनाडा जीत लिया गया। सन् १७६२ मे स्पेन फ्रास की सहायता को आया इस पर अग्रेजो ने हवाना (Havana) को जो कि क्यूबा (Cuba) की राजधानी थी विजय कर लिया फिर मनिल्ला (Manilla) जो कि फिलीपाइन द्वीपो की राजधानी थी विजय कर लिया।

हिन्दुस्तान मे भी अँग्रेजो को प्रारभ मे विजय प्राप्त नही हुई। फ्रांसीसी सेनापति काउन्ट लाली ने फोर्ट सेन्ट डैविड पर अधिकार कर

लिया और फिर मदरास की ओर प्रस्थान किया जहाँ फोर्टसेन्ट जार्ज को उसने चारो ओर से घेर लिया, लेकिन ठीक उसी समय अंग्रेजो के जहाजी बेडे के आ जाने से फ्रासीसी लोग उसे लेने मे सफल न हो सके और अँग्रेज़ी सेना ने कर्नल कूट की अध्यक्षता मे फ्रासीसियो को वान्डीवाश के स्थान पर सन् १७६० ई० में हरा दिया और फिर पान्डूचेरी पर आक्रमण किया जो कि सन् १७६१ मे अँग्रेज़ो के हाथ में आ गई।

पैरिस की सन्धिः—सन् १७६३ ई० में पैरिस मे सन्धि हुई जिसके अनुसार अँग्रेज़ो को मिनारका, कनाडा, नोवास्कोशिया, फ्लोरीडा और मिसीसिपी के पूर्व के न्यूआर्लियन्स को छोडकर सारे स्थान मिले। पान्डूचेरी फ्रासीसियो को वापिस दे दिया गया। साइलेशिया प्रशिया ने ही रक्खा। इस युद्ध का प्रभाव निम्नलिखित हुआ :—

(१) अँग्रेज उत्तरी अमेरिका और हिन्दुस्तान मे शक्तिशाली हो गये।
(२) अँग्रेज़ो की शक्ति पूर्ण रूप से स्थिर और सुदृढ हो गई।
(३) इस युद्ध ने अमेरिका के स्वातन्त्र्य युद्ध के लिए मार्ग साफ कर दिया।
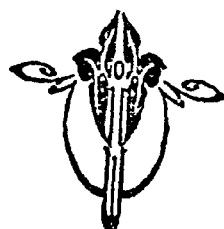
दूसरा अध्याय

जार्ज तृतीय (१७६०-१८२०)

वह सन् १७६० ई० में गद्दी पर बैठा। उसका पिता फ्रैडरिक, वेल्स का राजकुमार सन् १७५१ मे मर चुका था। जार्ज तृतीय सुस्त, गभीर और अच्छे स्वभाव का एक नेक पुरुष था, लेकिन वह अल्प शिक्षित, हठी, पक्षपाती और अनुदार हृदय का मनुष्य था। वह कठोर हृदय, वीर, साहसी और अपने धर्म का पक्का था। वह पहला हैनोवरियन बादशाह था जिसका कि व्यक्तिगत जीवन बहुत पवित्र था। वह इग्लैण्ड में ही उत्पन्न हुआ था और इग्लैण्ड मे ही पालित पोषित हुआ था, इसलिए वह पहले दोनों जार्जो की तरह अँग्रेजी भाषा, अँग्रेज़ी रीति नीति और अँग्रेज़ी शासन के नियमो से अनभिज्ञ नही था। राजनीतिक मामलो मे उसकी कार्य प्रणाली यह थी कि वह स्वयं राज्य करना चाहता था। इसलिए उसने खोये हुए राज्याधिकारो को फिर से प्राप्त करने के लिए उपाय किये। उनको पाने के लिए उसने निम्नलिखित प्रयत्न किये:— प्रथम उसने शीघ्र ही सप्त वर्षीय युद्ध को समाप्त किया और इस प्रकार व्हिगदल की शक्ति का भी अन्त हो गया, क्योकि वह जानता था कि जबतक युद्ध चलेगा तबतक व्हिगदल की शक्ति यथापूर्व स्थिर रहेगी। दूसरे, सप्तवर्षीय युद्ध के समाप्त होते ही पिट और न्यूकैसल ने मन्त्रित्व से त्याग पत्र दे दिया। और उसके बाद जार्ज तृतीय ने इस अधिकार को फिर से संचालित किया कि बादशाह अपनी इच्छा के अनुसार किसी को प्रधान मंत्री नियुक्त करे और जबकि मंत्रिमण्डल बादशाह की इच्छा के विरुद्ध जावे तो वह उस मंत्रिमण्डल को तुरंत बदल कर दूसरा मन्त्रि-मंडल नियुक्त कर दे। एतएव सन् १७६१ से १७७० ई० तक पाँच मंत्रि-

मण्डल नियुक्त हुए लेकिन कोई स्थायी न रहा। वे पाँचो ही बदल दिये गये। सन् १७७० ई० मे लार्ड नार्थ टोरीदल का नेता प्रधान मन्त्री नियुक्त हुआ और सन् १७८२ तक लगातार अपने उस पद पर स्थिर रहा। तीसरे, बादशाह हाउस ऑफ कामन्स को अपने हाथ मे रखता था। इसके लिए उसने कई उपाय किये।

प्रथम तो वह मेम्बरो को रिश्वत देता था, उनको ठेका देता था, अच्छे पदो पर नियुक्त करता था और चुनाव के समय मे अपना प्रभाव डालकर ऐसे मनुष्यो को पार्लियमेंट का मेम्बर बनवाता था जो उनके पक्ष के होते थे। इस तरह पार्लियामेंट मे बादशाह के पक्ष वालों का एक दल स्थापित हो गया जो कि सर्वदा बादशाह के कथनानुसार कार्य करता था।

चौथे, बादशाह मन्त्रियो को उन दलो मे से नहीं चुनता था जिनके कि मेम्बर पार्लियामेंट मे सबसे अधिक सख्या मे पाये जावे। परन्तु अपनी इच्छा के अनुसार ही चाहे जिस दल मे से चुन लेता था जो कि उनके प्रति उत्तरदायी होते थे न कि पार्लियामेंट के प्रति। वे बादशाह के कहने के अनुसार राज्य का प्रबन्ध करते थे।

पाँचवे, जार्ज तृतीय के समय मे टोरी दल ने दुबारा जोर पकडा। व्हिग दल के अनुयायी पार्लियामेंट के अधिकारो के पक्ष मे थे और इसी लिये बादशाह के साथ उनकी सम्मति मिलना असम्भव था। इसलिये बादशाह ने टोरी दल वालो को ही विशेषत. अपना सहायक बनाया और उन्ही को मन्त्रित्व के पद प्रदान किये। पार्लियामेंट मे टोरियो की सख्या बढाने मे कुछ समय अवश्य लगा लेकिन सन् १७७० में हाउस औफ-कामन्स और हाउस औफ लार्डस् दोनो में टोरियो की सख्या बहुत बढ गई और उन्ही मे से मत्री चुने जाने लगे। इस समय से व्हिगदल का प्रभाव कम हो गया और पूरे ५० साल तक देश के शासन की बागडोर टोरी दल के ही हाथ मे रही।

लार्ड नार्थ का मन्त्रित्व—जार्ज तृतीय का प्रधान मत्री लार्ड नार्थ

टोरी दल का था जो कि सन् १७७० से १७८२ तक लगातार अपने पद पर स्थिर रहा। वह जार्ज तृतीय के कहने मे था और जार्ज तृतीय उससे जो चाहता कर लेता था। अमेरिका की स्वतन्त्रता का युद्ध उसी के समय मे हुआ था। जार्ज तृतीय की हठ और लार्ड नार्थ की राजनीतिक अयोग्यता ही के कारण इगलैड को उत्तरी अमेरिका के उपनिवेशो से हाथ धोना पडा।

जार्ज तृतीय को बिल्कुल सर्वप्रिय राज्य स्थापित करने मे सफलता प्राप्त नही हुई, प्रथम तो व्हिग दल के विरोध के कारण और दूसरे अमेरिका के स्वतत्रता के युद्ध मे इगलैड के पराजय के कारण से।

जौन विल्कस का अभियोग—व्हिगदल जार्ज तृतीय की कार्य-नीति का लगातार विरोध करता गया और जब कभी उसे अवसर मिलता तो वह लोगों के अधिकारो के लिये बादशाह से लडने के लिये तैयार हो जाता। जौन विल्क्स (John Wilks) पार्लियामेंट का एक मेम्बर था और एक समाचार पत्र का सपादक भी था। उसने अपने समाचार पत्र मे बादशाह के विरुद्ध कुछ प्रकाशित किया। इस पर ग्रैनविल (Grenville) के मत्रिमडल ने उसके विरुद्ध मुकदमा चलाया और उसको गिरफ्तार किया गया। लेकिन अदालत ने उसको बिल्कुल छोड़ दिया। व्हिग दल ने विल्क्स के साथ बहुत सहानुभूति प्रकट की और १००० पौड उसको मानहानि के बदले मे दिलवाये। लेकिन बादशाह की शक्ति अब इतनी अधिक हो गई थी कि उसने हाउस औफ कामन्स और हाउस औफ लार्डस दोनो से यह तय कराया कि उसने बादशाह के विरुद्ध अशिष्टता और मानहानि की है और इसलिये उसको पार्लियामेट की मेम्बरी से पृथक् करा दिया वह सन् १७६४ ई० मे फ्रास भाग गया। व्हिगदल वाले लगातार उसकी सहायता करते रहे और वह फिर इगलैड वापिस आया और सन् १७६८ ई० मे व्हिगदल की सहायता से मिडिलसेक्स (Middlesex) से मेम्बर निर्वाचित किया गया, लेकिन हाउस औफ कामन्स ने बादशाह के कहने से उसको पार्लियामेंट मे बैठने की आज्ञा नही दी और उसको
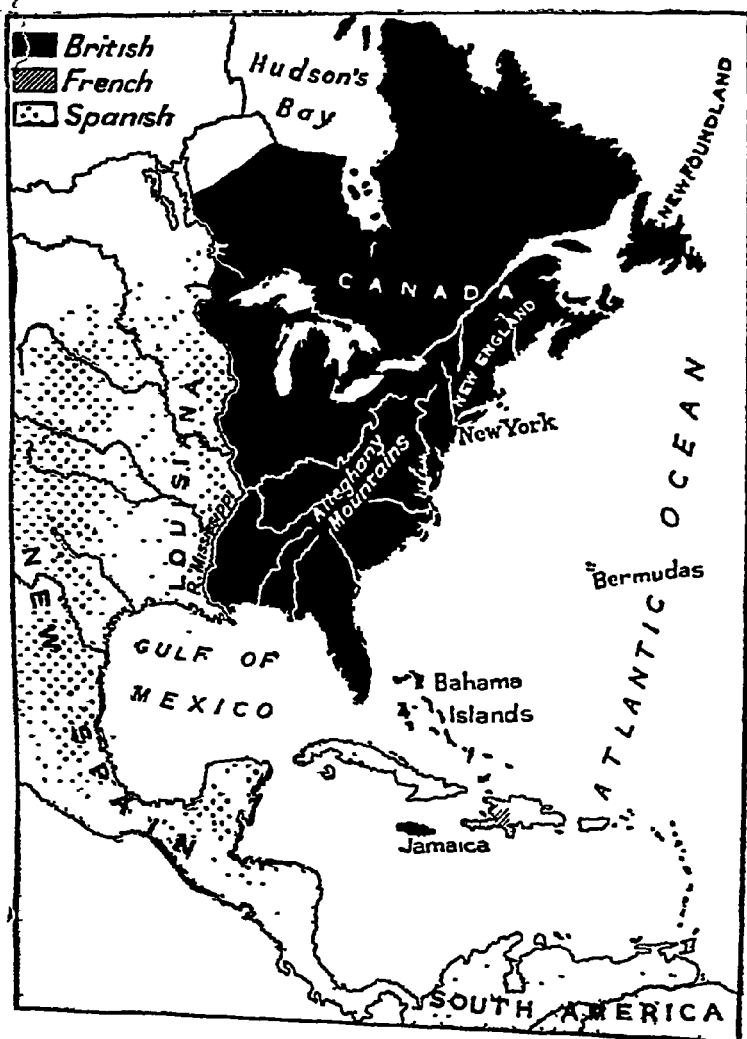
North America in 1763

गिरफ्तार तक कर लिया। लेकिन व्हिगदल ने फिर दो वार उसी को उसी स्थान से मेम्बर निर्वाचित कराके भिजवाया। लेकिन पार्लियामेंट ने उसे तीनो वार प्रवेश न करने दिया। अन्त मे सन् १७७४ मे चौथी वार चुने जाने पर उसको पार्लियामेंट मे बैठने की आज्ञा मिल गई और पहले के प्रस्ताव रद्द कर दिये गये। इससे व्हिगदल को वहुत वड़ी सफलता प्राप्त हुई और वादशाह को अपनी शक्ति वढाने मे वहुत वडा धक्का लगा।

लेकिन विशेष हानि उसको अमेरिका के स्वतन्त्रता युद्ध मे पराजित होने से पहुँची। व्हिगदल वालो ने उस पराजय का जिम्मेवार वादशाह को ठहराया और समस्त देश मे वादशाह को वहुत वदनाम किया। लार्ड नार्थ के त्यागपत्र देने के वाद वादशाह ने अपनी शक्ति को घटने से रोक देने के लिये टोरी और व्हिग दलो का सयुक्त मन्त्रिमडल स्थापित किया और लार्ड नार्थ और फौक्स को मन्त्री नियुक्त किया लेकिन उसको सफलता प्राप्त नही हुई और अन्त मे उसको मजबूर होकर सन् १७८४ ई० मे पिट को प्रधान मन्त्री नियुक्त करना पडा। पिट ने प्रधान मन्त्री के पद पर आते ही उन मन्त्रियो को वर्खास्त कर दिया जो कि उसके विरुद्ध थे और वाल्पोल की तरह अपना शासन प्रवन्ध आरभ किया।

जार्ज तृतीय के समय में आयर्लैंड की दशा—अमेरिका के स्वतन्त्रता के युद्ध के पहले आयर्लैंड मे जार्ज तृतीय के समय मे अँग्रेजी शासन नीति जानने से पहले आयर्लैंड मे सन् १६९० से सन् १७६० तक की दशा पर विचार कर लेना आवश्यक है।

यह पहले वर्णन हो चुका है कि सन् १६९८ ई० मे जेम्स द्वितीय विलियम तृतीय से राजगद्दी वापिस लेने के लिए दावेदार हुआ, लेकिन वह अपने काम मे असफल रहा और सन् १६९० ई० मे पराजित होकर वापिस लौट गया। इसके वाद उसके रोमन कैथोलिक सहायको को भी पराजित होना पडा और १६९१ ई० मे लिमरिक (Limerick) के स्थान पर उन लोगो ने आधीनता स्वीकार करली और लिमरिक के संधि नामा

के अनुसार लोगों को वही धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करने का वादा किया गया जो कि उनको चार्ल्स द्वितीय के समय मे प्राप्त थी लेकिन यह वादा कभी पूरा नही किया गया।

ब्रिटिश पार्लियामेन्ट के एक कानून के अनुसार केवल प्रोटैस्टेन्ट लोगो को ही आयर्लैंड की पार्लियामेन्ट का मेम्बर चुने जाने का अधिकार प्राप्त था और रोमन कैथोलिक लोगो पर जो कि आबादी के ८० प्रति सैकडा से अधिक सख्या मे थे, तरह-तरह के अत्याचार होते थे। उनके विरुद्ध कानून का पैरल लौ (Perel Law) नाम था। पार्लियामेन्ट के चुनाव मे कैथोलिक लोगो को वोट देने का अधिकार नही था। वे कई पदो को प्राप्त करने से वचित रक्खे जाते थे। वे यूनिवर्सिटी की शिक्षा भी प्राप्त नही कर सकते थे। वे लोग भूमि नही खरीद सकते थे और उनपर तरह-तरह के अत्याचार होते थे। अमेरिका के स्वतन्त्रता के युद्ध के पहले इन कानूनो ने आयर्लैंड वालो को उन्नति नही करने दी। आयर्लैंड का उनका व्यापार बिल्कुल चौपट हो गया। जहाजी कानूनो से भी आयर्लैंड के व्यापार को बडी हानि पहुँचती थी। व्यापार मे बहुत हानि पहुँचने के कारण आयर्लैंड मे एक जबर्दस्त आन्दोलन आरम्भ हो गया जिसका उद्देश्य इंगलैंड से आयर्लैंड को अलग करना था। इस आन्दोलन मे प्रौटैस्टेन्ट और दूसरे देशो के आदमी जो वहाँ आकर बस गये थे, वे भी सम्मिलित थे। अमेरिका के स्वतन्त्रता के युद्ध का आयर्लैंड वालो ने पूरे तौर से फायदा उठाया। उन्होने बहुत-सी रुकावटो को जो कि पैरल कानून के नाम से प्रसिद्ध थी हटवा दिया। उस काम मे सफलता प्राप्त करके उन्होने एक राजनैतिक आन्दोलन आरम्भ किया जिसका उद्देश्य आयर्लैंड मे एक स्वतन्त्र पार्लियामेन्ट स्थापित करना और व्यापारिक रुकावटो को दूर कराना था। यह राजनीतिक आन्दोलन हैनरी ग्रेटन (Henry Grattob) की देख-रेख मे चला था। इस आन्दोलन का प्रभाव यह हुआ कि सन् १७८० ई० में आयर्लैंड की व्यापारिक रुकावटे दूर करदी गईं, और सन् १७८२ ई० में पौयनिंग कानून (Poyning Law) के रद्द होने से आयर्लैंड को कानन
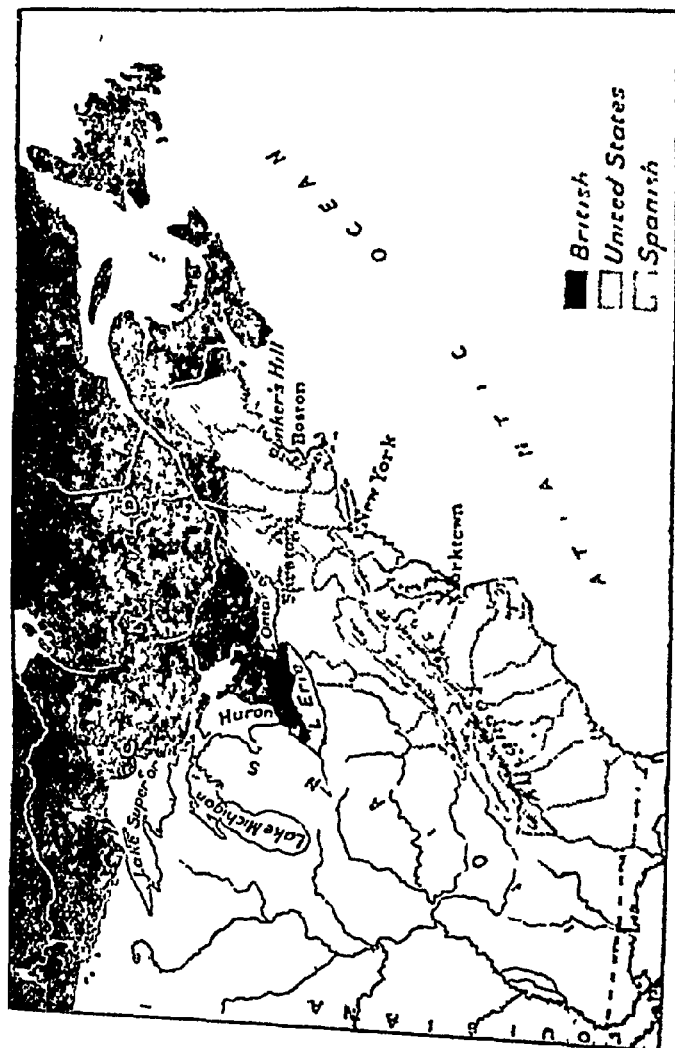
North America in 1783

बनाने में स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई और ब्रिटिश पार्लियामेन्ट ने आयर्लैंड के लिए कानून बनाने के अपने अधिकार को ही छोड दिया। इसके बाद भी हैनरी ग्रेटन राजनैतिक सुधारो के लिए प्रयत्न करता रहा।

सन् १७६८ का विद्रोह—आयरलैन्ड में कैथोलिक लोगों को अधिकार प्राप्त होने से प्रौटैस्टेन्ट ज़मीदार बहुत विरुद्ध होगये और अब आयर्लैंड में दो दल बन गये एक रोमन कैथोलिक लोगो का और दूसरा प्रोटैस्टेन्ट लोगो का। उनमे आपस मे एक दगा होगया जिसको कि अग्रेज़ो ने सन् १७९८ ई० में दबा दिया। पिट ने अब ये प्रस्ताव पेश किया कि आयर्लैंड और इग्लैण्ड को एक कर दिया जाय। इसलिए उसने कैथोलिक लोगो को धार्मिक छुटकारे (Catholic Emancipation) का वादा करके उनको अपनी ओर मिला लिया। कुछ दूसरे लोगो को भी पदवी और सम्मान देकर अपनी तरफ कर लिया और सन् १८०१ ई० मे एकता का कानून (Act of Union) पास हुआ जिसके अनुसार यह तै पाया कि आयर्लैंड की पार्लियामेन्ट की बजाय आयर्लैंड वाले १०० आयर्लैंड के आदमियो को चुनकर ब्रिटिश पार्लियामेन्ट मे भेजा करे। और आयर्लैंड के चार पादरी और २८ लार्ड जिनको कि आयर्लैंड के लार्ड लोग चुनेंगे वे हाउस आफ लार्डस के मेम्बर होगे। आयर्लैंड और इगलैण्ड के मध्य बिल्कुल स्वतन्त्र व्यापार रहेगा और आयर्लैंड अपनी मालगुजारी का $\frac{2}{3}$ इगलैण्ड को दिया करेगा। जार्ज तृतीय के विरोध करने से पिट कैथोलिक लोगो के लिए धार्मिक छुटकारे का कानून पास नही करा सका। इसलिए उसने सन् १८०१ में मत्री पद से त्यागपत्र दे दिया। इस तरह आयर्लैंड की समस्या अधूरी रह गई और आयर्लैंड के निवासी अप्रसन्न ही रहे।

जार्ज तृतीय का शासन काल तीन भागों में बांटना :—पहला काल सन १७६० से १७६३ तक का जिसमे सन् १७६३ मे पैरिस की सधि से सप्त वर्षीय युद्ध का अन्त हुआ और उसके बाद अमेरिका की स्वतत्रता की लडाई की मुख्य घटना जिसका आरम्भ सन् १७६५ मे स्टॉम्प एक्ट (Stamp Act) के पास होने से हुआ। यह युद्ध सन् १७८३

तक जारी रहा । तीसरे फ्रांस की क्राति और नेपोलियन का युद्ध ।

अमेरिका का स्वतन्त्रता युद्धः—इसके कारण तीन प्रकार के थे—पहले धार्मिक, दूसरे आर्थिक दशा से सम्वन्ध रखने वाले और तीसरे राजनैतिक । यह कारण सब निम्न लिखित थे:—

(१) अमेरिका मे जो लोग इग्लैंड से आकर आवाद हुए थे वे वही लोग थे जो जेम्स और चार्ल्स के धार्मिक अत्याचारो से तग आकर इंग्लैंड छोड कर अमेरिका मे आये और इसलिए प्रारम्भ से ही अग्रेजो के विरुद्ध थे ।

(२) इगलैंड की सरकार ने इनके व्यापार की स्वतन्त्रता मे वहुत सी रुकावटे डाल दी थी । वे अपनी पैदावार इग्लैंड के अतिरिक्त और किसी देश को न भेज सकते थे और उनको पक्का माल अर्थात कलाकौशल से वना हुआ सामान भी अधिकतर इंग्लैंड से ही खरीदना पडता था । उपनिवेशो के लोग इन व्यापारिक प्रतिवन्धो से हमेशा दव कर नही रह सकते थे ।

(३) उपनिवेशो के निवासी यह भी पसन्द नही करते थे कि उनके गवर्नर और जज इग्लैंड की सरकार नियुक्त करके भेजे । उनकी इच्छा यह थी कि उनके देश के भीतरी मामलो मे इग्लैंड की सरकार विलकुल हस्ताक्षेप न करे और उनको इग्लैंड की तरह अपने शासन प्रवन्ध मे पूर्ण स्वतन्त्रता रहे ।

(४) प्रारम्भ मे उपनिवेशो को उत्तर और दक्षिण दोनो ओर से फ्रांसीसियो के आक्रमणो का भय था इसी कारण से वे अग्रेजी व्यापारिक और राजनैतिक नीति से अप्रसन्न होने पर भी खुल्लम खुल्ला उसका विरोध नही करते थे । सप्त वर्षीय युद्ध के वाद कनाडा आदि फ्रासीसियो के उपनिवेशो पर इग्लैंड का अधिकार हो जाने के कारण अमेरिका के अग्रेजी उपनिवेशो को किसी प्रकार का डर नही रहा और अव वे इग्लैंड के अनुचित वर्ताव को सहन करने के लिए विलकुल तैयार नही थे । वे अव स्वतन्त्र होने का प्रयत्न करने लगे ।

(५) सप्त वर्षीय युद्ध मे अग्रेजी सरकार का वहुत व्यय हुआ था और इसीलिए अव जातीय ऋण पहले की अपेक्षा दुगुना हो गया था । ये युद्ध

उपनिवेश की रक्षा के लिये हुआ था। अग्रेजी सरकार की आर्थिक दशा खराव होने के कारण अब यह तय हुआ कि उपनिवेशो से भी कुछ रुपया उनकी रक्षा के लिए वसूल किया जाय और ग्रेहामविल ने जोकि उस समय इग्लैंड का प्रधान मन्त्री था पार्लियामैंट से सन् १७६५ ई० मे स्टाम्प एक्ट (Stamp Act) पास कराया ताकि उसकी आमदनी से सेना का खर्च पूरा हो सके जो उपनिवेशो की रक्षा के लिए रक्खी जाती थी। उपनिवेशो को अपनी रक्षा का व्यय सहन करना कोई अनुचित बात नही थी लेकिन उन्होने इस नये महसूल का विरोध इस बुनियाद पर किया कि इग्लैंड की पार्लियामैंट को जिसमे उनका कोई प्रतिनिधि नही बुलाया जाता था उन पर नया महसूल लगाने का अधिकार नही है। (No taxation without 1epresentation) उपनिवेशो का यह विरोध इतना जोर पकड़ गया कि पार्लियामैंट को अपना स्टाम्प एक्ट वापिस लेना पडा लेकिन राकिंघाम के मत्रि-मण्डल मे एक नया कानून "घोषणा कानून" (Declaratory Act) के नाम से वनवाया जिसके अनुसार यह तय पाया कि इग्लैंड की पार्लियामैंट को उपनिवेशो पर महसूल लगाने का पूरा अधिकार है।

(६) सन् १७६७ ई० मे टाउन सैन्ड (Townshend) ने अमेरिका को जानेवाली चाय, शीशा, शक्कर आदि वस्तुओ पर भी महसूल लगा दिया। उपनिवेशो मे इसका वडा सख्त विरोध किया गया। इस सन् १७७० ई० मे लार्ड नार्थ ने जोकि प्रधान मत्री नियुक्त हुए थे सव चीजो पर से तो महसूल उठालिया लेकिन अपने महसूल लगानेवाले अधिकारो को स्थिर रखने के लिए चाय का महसूल बदस्तूर जारी रक्खा। लेकिन उपनिवेशो को इतने से सन्तोष न हुआ और उसका विरोध बराबर जारी रहा। जब ईस्ट इंडिया कम्पनी के जहाज चाय लेकर बोस्टन के वन्दरगाह पर पहुँचे तो कुछ जोशीले नगर के नवयुवक भेष बदलकर उन जहाजो पर चढ गये और उन्होने सारी चाय समुद्र मे फेंककर जहाजो मे आग लगा दी। यह घटना इतिहास मे वोस्टन की चाय पार्टी (Boston Tea Party) के नाम से प्रसिद्ध है।

इस समय इंग्लैंड मे कोई योग्य राजनीतिज्ञ नही था और जार्ज तृतीय और उसका प्रधान मन्त्री लार्ड नार्थ (Lord North) दोनो अपनी हट पर डटे रहे क्योकि वे अनुमान न लगा सके कि उपनिवेशो का विरोध किस सीमा तक पहुँच चुका। उन्होने उस विरोधी आन्दोलन को ज़बर्दस्ती दबाने की चेष्टा की लेकिन उसका प्रभाव उल्टा हुआ। सन् १७७४ ई० मे अमेरिका के अँग्रेज़ निवासियो ने मिलकर फिलाडैलफिया (Philadelphia) के स्थान पर एक वहुत बड़ी सभा की जिसमे यह तय किया गया कि इंग्लैंड के अत्याचारों का सामना हथियारो से किया जाय उन्होने इस प्रस्ताव के अनुसार जार्ज वाशिंगटन (George Washington) की देखरेख में एक सेना भी तैयार कर ली। दूसरे साल इंग्लैंड और उपनिवेशो से भी खुल्लम-खुल्ला लडाई छिड़ गई जो अमेरिका के स्वतंत्रता के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है।

युद्ध की प्रसिद्ध घटनाएँ—सबसे पहले सन् १७७५ ई० मे लैक्सिंगटन (Lexington) के स्थान पर लड़ाई हुई जिसमें उपनिवेशो की जीत हुई। फिर सन् १७७५ ई० में बंकर की पहाड़ी (Bunker's Hill) पर लड़ाई हुई जिसमे उपनिवेशो को हार खानी पड़ी। तो भी उन लोगो ने अपनी वीरता का पूरा प्रमाण दिया। इसके वाद एक सभा बुलाई गई जिसमे १४ जुलाई सन् १७७६ ई० को अमेरिका की स्वतन्त्र की घोषणा कर दी। इस घोषणा में यह कहा गया था कि अमेरिका वाले बिलकुल स्वतन्त्र है और इंग्लैंड के अधीन नही है। इस घोषणा के वाद फ्रास सन् १७७७ ई० मे उपनिवेशो का पक्ष लेकर युद्ध मे शामिल हुआ और सन् १७७९ ई० मे स्पेन भी उन्ही का पक्ष लेकर युद्ध मे कूद पड़ा जिसमे अंग्रेजो को बड़ी आपत्ति का सामना करना पड़ा। सन् १७७७ ई० मे अंग्रेज जनरल बरगोइन (Burgoyne) को साराटोगा (Saratoga) के स्थान पर अपनी हार स्वीकार करके हथियार रख देने पड़े। सन् १७८१ ई० मे लार्ड कार्नवालिस को यार्क टाउन (York Town) की लडाई में वहुत बुरी तरह हार खानी पड़ी।

वारसेल्स की सन्धि—सन् १७८३ ई० मे फ्रांस के प्रसिद्ध नगर वारसेल्स मे सन्धि पत्र लिखा गया जिसके अनुसार इस युद्ध की समाप्ति हुई। इग्लैंड को अमेरिका की स्वतन्त्रता स्वीकार करनी पडी। दूसरे, अमेरिका मे सिर्फ कनाडा, न्यूफाउन्डलैण्ड और नोवास्कोशिया इग्लैंड के आधीन रह गये। तीसरे स्पेन को फ्लोरीडा और मिनारका वापिस मिल गये। चौथे फ्रान्स को चन्द्रनगर वापिस मिला और टोबैगो (Tobago) भी उसे मिला।

अमेरिका के स्वतन्त्रता-युद्ध के प्रभाव :—

(१) इस युद्ध से इग्लैड की शक्ति को बहुत धक्का लगा और ब्रिटेन के व्यापार को बहुत हानि हुई तथा अँग्रेजो की समुद्री शक्ति का गौरव बहुत कुछ नष्ट हो गया।

(२) इस लडाई का फ्रास पर भी बहुत प्रभाव पडा। अमेरिका के स्वतन्त्रता के युद्ध मे भाग लेने से अँग्रेजो को तो जो कि फ्रान्स के दुश्मन थे बहुत नुकसान पहुँचा ही लेकिन फ्रान्स को भी उसमें भाग लेने से पर्याप्त हानि पहुँची। पहले तो यह कि फ्रान्स की आर्थिक दशा खराब हो गई, और उस आर्थिक दशा को सुधारने के लिए फ्रान्स को सन् १७८९ ई० मे स्टेट जनरल (States General) की सभा बुलानी पडी जिसके कारण फ्रान्स की राज्य क्रान्ति प्रारम्भ हुई। दूसरे उन सिपाहियो मे जिन्होने इस अमेरिका के युद्ध मे भाग लिया था, स्वतन्त्रता के भाव उत्पन्न हो गये और उन्होने फिर अपने उन विचारो को अपने देश फ्रान्स मे भी फैलाना आरम्भ कर दिया। इसलिए यह कहना ठीक होगा कि अमेरिका की स्वतत्रता की इस लडाई ने फ्रास में राज्यक्रान्ति उत्पन्न कर दी।

(३) इस लडाई का प्रभाव आयर्लैंड पर भी बहुत गहरा पड़ा। इस लडाई के कारण ही आयर्लैंड मे एक जबर्दस्त आन्दोलन इग्लैंड के विरुद्ध उठ खडा हुआ। उस आन्दोलन का नेता ग्रेटन (Gration) था। उस आन्दोलन का उद्देश्य अपनी पार्लियामेन्ट को स्वतन्त्र करना और व्यापार पर जो रुकावटे थी उनको दूर करना था।

(४) इस युद्ध से इग्लैड पर भी एक गहरा प्रभाव पडा। जार्ज तृतीय मत्री मंण्डल की बढ़ती हुई शक्ति को रोकना चाहता था और वह शासन के कानूनो मे अब दखल देने लगा था। इस युद्ध के बाद उसको अनुभव हो गया कि यह बहुत बड़ी गलती थी और उसने फिर कभी राजनैतिक मामलों में दखल नही दिया। इस प्रकार इंग्लैड मे मन्त्रीमण्डल (Cabinet) की सरकार फिर से स्थाई रूप से स्थापित होगई।

(५) इस युद्ध से अग्रेजो को एक पाठ मिला और उन्होने फिर कभी इन उपनिवेशो पर पुराने ढँग से शासन करने का साहस नही किया।

अँग्रेजों की असफलता के कारण—

(१) इग्लैड मे उस समय कोई ऐसा सुयोग्य राजनीतिज्ञ नही था जो उपनिवेशो की शिकायतो का सन्तोषजनक प्रबन्ध करता। टोरीदल बादशाह के कहने मे था और जार्ज तृतीय हठी होने के कारण उपनिवेशो के साथ किसी प्रकार की रियायत करने को तैयार न था। वह आरम्भ में उस आन्दोलन को समझ ही न सका।

(२) प्रारम्भ मे उपनिवेशों को दबाने के लिए केवल छोटी-छोटी सेनाएँ भेजी गईं। उन सेनाओं को भी रास्ता न मालूम होने के कारण बड़ी कठिनाइयाँ उठानी पड़ी।

(३) स्वतन्त्रता की घोषणा के पश्चात् अमेरिका की ओर फ्रास और स्पेन भी शामिल हो गये जिसके कारण यह विद्रोह जातीय युद्ध के रूप में परिवर्तित हो गया।

(४) अमेरिका के लोग अपनी स्वतन्त्रता के लिए अपना तन, मन, धन, सब कुछ निछावर करने के लिए तैयार थे, इसलिए वे बड़ी वीरता से लडे।

इन सब कारणो से अंग्रेजो को अमेरिका के उपनिवेशो से हमेशा के लिए हाथ धोना पडा।

फ्रांस की राज्यक्रान्ति और नेपोलियन

फ्रांस की राज्यक्रान्ति :—अठारहवी शताब्दी के अन्तिम अर्ध भाग तक फ्रास मे व्यक्तिगति शासन का ढंग चल रहा था। फ्रासीसी पार्लियामैण्ट या स्टेट्स जनरल (Statets General) सन् १६१४ ई० से नही बुलाई गई थी और बादशाह तथा उसके मत्री शासन के सारे अधिकार अपने हाथो मे लिए हुए थे। फ्रासीसी सोसायटी उस समय तीन भागो मे विभक्त थी—पादरी, धनी ज़मीदार और जनसाधारण या थर्ड स्टेट। पहले के दो समुदाय अर्थात् पादरी और ज़मीदार कई प्रकार के करो से मुक्त थे और देश की हरएक नौकरी मे पहले उनका अधिकार था। चर्च (गिरजाघर) बहुत धनवान् था और फ्रास की भूमि के पाँचवे भाग का स्वामी था। थर्ड स्टेट (Third state) मे मध्यम श्रेणी के लोग और अधिकतर किसान शामिल थे। इस श्रेणी मे देश के अधिकतर सख्या के लोग थे और इसी श्रेणी की दशा सबसे अधिक खराब थी। तमाम महसूल इन्ही लोगो को देने पडते थे, देश की नौकरियो मे उनका कोई अधिकार नही था। किसानो की दशा विशेष रूप से खराब थी क्योकि यहाँ फ्यूडलिज्म (Feudalism) अभीतक ज़ोर पकडे हुई थी। उनसे बेगार ली जाती थी। उनको भूमिकर, टैली (Taille), और गेबिल (Gabelle) या नमक का महसूल देना पडता था जो बहुत कष्टप्रद था। इन करो से लोग बहुत अप्रसन्न थे क्योकि अनुमान लगाया गया तो पता चला कि किसानो की आमदनी का ८० प्रति सैकडा भाग महसूलो और मालगुज़ारी आदि मे ही चला जाता था। मध्यम श्रेणी के लोगो की अवस्था भी खराब थी। उनको मन्त्री तथा अन्य सरकारी अफसर बिना अपराध के ही बादशाह की आज्ञा से कैद कर लिया करते थे और उन लोगो के जीवन जेल खाने मे ही समाप्त होजाते थे। इस प्रकार असतोष की आग धीरे-धीरे सुलग रही थी।

इस विरोध की आग को भड़काने में फ्रास के विद्वानो रूसो

(Rousseau) और वालटेअर (voltaire) ने बहुत बड़ा भाग लिया। उन्होने राज्य की खराबियाँ और अन्याय बतलाए और स्वतंत्रता के विचार लोगो के सामने रक्खे और लिख-लिखकर पुस्तक रूप में प्रकाशित किये। इस प्रकार लोगों में जागृति और स्वतत्रता के भाव उत्पन्न हो गये। उन्होने तमाम बुराइयों का जिम्मेदार वादशाह को ठहराया।

चौदहवे लुई वादशाह के युद्धो ने फ्रांस का दिवाला पहले ही निकाल दिया था और अठारहवी शताब्दी के युद्धो मे जो धन व्यय हुआ उसके कारण फ्रास की आर्थिक दशा और भी खराव होगई। सन् १६७५ ई० मे सोलहवाँ लुई फ्रांस की गद्दी पर बैठा। वह बहुत निर्बल और अयोग्य वादशाह था। उसकी रानी मेरिया एन्तोईनेत (Maria Antoinette) बहुत फ़जूल खर्च करती थी और फ्रांस मे वहुत बदनाम थी। वादशाह ने और उसके मन्त्रियों ने वहुत प्रयत्न किया कि किसी प्रकार से आर्थिक दशा सुधर जाय मगर वह उसमें असफल रहे क्योंकि अमीर लोग किसी प्रकार का कर देना पसन्द न करते थे।

वहुत से फ्रांसीसी अमेरिका की लडाई के लिए भर्ती हुए और उपनिवेशो की सफलता देखकर उनको भी अपनी सरकार के अत्याचारो के रोक-थाम करने का साहस उत्पन्न हो गया। ये लोग वहाँ से स्वतन्त्रता के उत्साह में भरे हुए आये और लोगो मे स्वतन्त्रता के लिए उत्साह फैलाना आरम्भ कर दिया। राजकीय अधिकार और अत्याचारो से देश को मुक्त कराने की इच्छा लोगों में फैल गई और सारे देश मे स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृता (Liberty, Equaliy and Fraternity) का शोर मच गया।

धन वसूल करने के लिए वादशाह ने सन् १७८९ ई० में स्टेट्स जनरल (States General) को निमन्त्रित किया जब स्टेट्स जनरल की वैठक प्रारम्भ हुई तो अमीरो तथा पादरी लोगो ने कुछ ऐसे यत्न किये कि साधारण श्रेणी के मेम्वर विवश हो गये। इसपर तुरन्त झगडा आरम्भ हो गया और साधारणदल के मेम्बर एक वड़े टेनिस के मैदान मे इकट्ठे

हुए और वहाँ सभा करके कसम खाई कि वे एक दूसरे का साथ उस समय तक न छोडेंगे जबतक फ्रास मे एक शासन-विधान (Constitution) न बन जावे। इस टेनिस कोर्ट की शपथ (Oath of the Tennis court) के बाद उन्होने अपना नाम राष्ट्रीय महा सभा (National Assembly) रक्खा और कानून बनाना आरम्भ कर दिया।

बादशाह को अमीर लोगो और उसकी अपनी रानी ने समझाया कि वह नेशनल असेम्बली को डराने के लिए सेना भेजे। इसपर पेरिस के लोग इतनें नाराज़ हुए कि उन्होने हथियार जमा करके विद्रोह खडा कर दिया। १४ जुलाई सन् १७८९ को बैस्टील (Bastille) पर जो पैरिस का बहुत बडा जेल खाना था आक्रमण करके अधिकार कर लिया और वहाँ के तमाम कैदी छोडकर स्वतन्त्र कर दिये। बेस्टील बोरबन वश के गौरव की यादगार समझी जाती थी। उसके विजय हो जाने से योरप के लोगो ने यह नतीजा निकाला कि फ्रास के बादशाह के अन्याय और अत्याचारो का अन्त हो गया है और और वहाँ पर अब वैधानिक शासन का आरम्भ होगा। लेकिन इस घटना से समस्त देश में अशान्ति फैल गई। किसानो नें अपने अपने ज़मीदारो के विरुद्ध सिर उठाया। अमीरो के महल और वह कागज़ जिनपर उनका दासत्व का पत्र लिखा हुआ था जला दिये गये। नेशनल असेम्बली (राष्ट्रीय महासभा) जोकि अब वैधानिक महासभा (Constituent Assembly) कहलाने लगी थी, उसने देश के शासन के लिए विधान तैयार किया। अक्तूबर सन् १६८९ मे लोगो का एक बडा झुण्ड वर्सेलीज़ (Versailles) पहुँचा और शाही महल में घुसकर बादशाह और महारानी को ढूँढ निकाला और उनको पैरिस ले आया। बादशाह ने नये शासन विधान पर अपनी स्वीकृति दे दी।

उन फ्रासीसी अमीरो ने जो देश के बाहर भाग गये थे (The Emigres) फ्रास पर आक्रमण करने के लिए बडी कोशिश और तैयारी की ताकि विद्रोह दबा दिया जाय। उन्होने राजा और रानी को भगाये जाने की चेष्टा की मगर वे सीमा पर पकड़ लिए गये और पेरिस वापिस जाना पड़ा।

राजा और रानी के भगाने के प्रयत्न से प्रजा के क्रोध की सीमा न रही और सितम्बर सन् १७९१ ई० मे राजकीय पक्षवालो की एक बहुत बडी संख्या का वध कर दिया गया। दूसरे साल बादशाह पर मुकदमा चलाया गया। फ्रास के साथ देशद्रोह करने के अपराध मे उसे फासी पर चढ़ा दिया गया और उसके कुछ दिनो बाद ही उसकी रानी को भी ससार से विदाकर दिया। फ्रास मे बादशाह के पद को समाप्त करके प्रजातन्त्र (Republic) सरकार स्थापित की गई अब फ्रास मे भय का राज्य (Reign of Terror) सन् १७९३ मे आरम्भ हुआ। इस समय मे सैकडो धनी लोग ग्लोटिन (एक प्रकार की सूली) पर चढा कर मार डाले गये।

फ्राँस की राज्यक्रान्ति का इंगलैण्ड पर प्रभाव—प्रारम्भ में इंगलैण्ड की प्रजा और राज्य के दूसरे कार्यकर्त्ताओ ने यह सोचकर कि फ्रास के निवासी भी इंगलैण्ड के समान अपने देश मे वैधानिक शासन स्थापित करने की चेष्टा कर रहे हैं, उस राज्यक्रान्ति का स्वागत किया ह्विगदल ने अपनी सम्मति उसके पक्ष मे दी। उनके नेता जेम्स फोक्स ने बैस्टील की विजय की खबर सुनकर कहा "यह ससार की सबसे महान् और हितकारक घटनाओ मे से है" मगर फ्रांस के रक्त-रजित हत्याओ के समाचारो को पाकर उनकी सहानुभूति घृणा के रूप मे बदल गई नवम्बर सन् १७९० ई० में ह्विगदल के एक प्रसिद्ध मेम्बर ने जिसका नाम बर्क (Burke) था एक पुस्तक फ्रासीसी राज्यक्रान्ति के सम्बन्ध में प्रकाशित की। उसके अन्दर उसने इस भारी क्रान्ति को एक नये ढग से प्रकट किया। उसे पढकर केवल इगलैण्ड के निवासी ही नही किन्तु अन्य देशो के रहने वाले लोग भी फ्रास के लोगो के दुश्मन होगये। उस समय छोटापिट इंगलैण्ड का प्रधान मत्री था। वह इगलैण्ड मे सुधार करना चाहता था लेकिन फ्रास की यह हालत देखकर उसको भय हुआ कि कही इगलैण्ड मे भी वैसी ही दशा न हो जाय इसलिए उसने सुधार के सिद्धान्त को छोड़कर एक शक्तिशाली शासन आरम्भ किया।

और इगलैण्ड मे राज्यक्रान्ति की भावना को रोकने के लिए उसने पूरा प्रवन्ध किया। देश मे स्वतन्त्रता रक्षा का कानून (Habeas Corpus Act) कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया। जिन लोगो की ओर से तनिक भी सन्देह हुआ कि वे क्रान्तिकारिओ से कुछ भी सहानुभूति रखते हैं, उनको जेल मे डाल दिया गया। अन्य देशो के लोगो को निकाल दिया गया। विद्रोहियो के लिए कानून वनाये गये और सरकार पर आक्षेप करनेवाले क्लव तोड़ दिये गये। इस तरह फ्रास की राज्यक्रान्ति के भय से इगलैण्ड मे कई साल के लिए सुधार वन्द कर दिये गये और लोगो की स्वतन्त्रता भी छीन ली गई।

फ्रांस की राज्यक्रान्ति के युद्ध—फ्रास की नई प्रजातन्त्र सरकार ने अपनी ताकत को वढाने और अपने सिद्धान्तो के प्रचार के उद्देश्य से आसपास के देशो पर आक्रमण किया।

नवम्वर सन् १७९२ ई० में क्रान्तिकारियो ने इस वात की घोपणा कर दी कि वे उन राष्ट्रो की सहायता करने को तैय्यार है जो अपने वादशाह से युद्ध करके उसके पद को विलकुल मिटा देने की इच्छा रखते हैं। इस घोषणा के कारण योरोप का कोई वादशाह निश्चित होकर राज्य नही कर सकता था।

फ्रासीसी सेनाओ ने वेलजियम पर अधिकार कर लिया था और हालैण्ड पर आक्रमण करने का विचार कर रही थी। वेलजियम पर अधिकार करते समय उन्होने यह घोषणा की कि वहा की प्रसिद्ध नदी शैल्ड के मार्ग से प्रत्येक देश के व्यापारी व्यापार कर सकते है। यह वात हालैण्ड और इगलैण्ड के वीच एक सन्धिनामा के द्वारा तय हो चुकी थी कि शैल्ड नदी पर इगलैण्ड, हालैण्ड और वेलजियम के अतिरिक्त और कोई देश व्यापार न करेगा। सन् १७८५ ई० मे फ्रास ने उपरोक्त शर्त स्वीकार कर ली थी। अब जबकि फ्रास की नई सरकार ने योरोप के प्रत्येक देश को शैल्ड पर व्यापार करने की आज्ञा दे दी तो इगलैण्ड के व्यापार को वहुत वडी हानि पहुँची। दूसरे वेलजियम के

निकट होने के कारण अब यह डर था कि कहीं फ्रास इंगलैण्ड पर आक्रमण न कर दे। इन सब बातों के होते हुए भी पिट अपने शान्ति के सिद्धान्त पर डटा रहा लेकिन फ्रास ने उसके जवाब में सन् १७९३ ई० में इगलैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

प्रथम यूरोपीय संघ, सन १७६३-१७६८—युद्ध का प्रारम्भ होने पर पिट ने फ्रांस के विरुद्ध एक सघ स्थापित किया जिसमे आस्ट्रिया-प्रशिया-हालैण्ड-स्पेन और इंग्लैण्ड शामिल थे। उनके विरुद्ध फ्रास अकेला लड़ रहा था। यह लड़ाई स्थल और समुद्र दोनो जगह हुई। स्थल पर तो फ्रास की जीत हुई लेकिन समुद्र पर अंग्रेजो की विजय हुई।

युद्ध के आरम्भ मे तो फ़ास को बहुत हानि हुई लेकिन वाद मे चारो ओर योरोप में फ्रांसीसियो की जीत हुई और वेलजियम फिर उनके अधिकार मे आगया। फिर उन्होने हालैण्ड को जीत कर वहाँ प्रजातत्र शासन स्थापित किया और आपस की फूट के कारण पिट का बनाया सघ जल्दी ही टूट गया। रशिया ने भयभीत होकर फ्रास से सन्धि कर ली और हालैण्ड और स्पेन फ्रांस के सहायक हो गये और फिर नेपोलियन बोनापार्ट ने आस्ट्रिया को हराकर उसे भी सन्धि करने पर मजबूर किया अब सन् १७९६ ई० मे अकेले इंगलैण्ड को फ्रास का सामना करना पडा।

अंग्रेज़ों की सामुद्री विजय—इस विपत्ति के समय इग्लैण्ड का जहाज़ी बेड़ा काम आया। एक अग्रेजी समुद्री सेना ने सन् १७९४ ई० में फ्रास के पश्चिमी किनारे पर ब्रेस्ट (Brest) के निकट फ्रासीसियो को हराया था। सन् १७९७ ई० मे फ्रास ने स्पेन और हालैण्ड के जहाजी बेडे को अपने समुद्री बेडे से मिलाकर इगलैण्ड पर आक्रमण करने की दिल मे ठान ली लेकिन अग्रेज़ी जहाज़ी बेड़े ने सेटविनसेट अन्तरीप (Cape of St Vincent) के निकट स्पेनिश बेड़े को पराजित किया और उसी साल डच बेड़े को भी कैम्पर डाउन (Camper Down) की लडाई मे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। इन समुद्री लडाइयो के बाद इगलैण्ड को फ्रासीसियो के आक्रमण का भय नही रहा और फ्रास ने इंगलैण्ड पर आक्रमण करने का स्वप्न देखना छोड दिया।

अब इँगलैण्ड की शक्ति को नष्ट करने का काम नेपोलियन बोना पार्ट को सौपा गया। इँगलैण्ड पर आक्रमण करना तो सम्भव नही था इसलिए उसने इँगलैण्ड के पूर्वी साम्राज्य को नाश करने का विचार मन मे जमा लिया। इसी उद्देश्य से उसने भूमध्य सागर मे प्रवेश करके पहले तो माल्टा (Malta) पर अधिकार कर लिया, फिर मिश्र देश पर अधिकार जमाया। यहाँ से उसका विचार हिन्दुस्तान की ओर बढने का था। इस बीच मे अँग्रेज़ी सरकार ने नैलसन (Nelson) को नैपोलियन का पीछा करने भेजा। उसने आबूकीर खाडी (Aboukir Bay) मे प्रवेश करके सन् १७९८ ई० मे नील नदी के मुहाने पर नैपोलियन के जहाज़ो को बर्बाद कर दिया मगर हिम्मत न हार कर वीर नैपोलियन स्थल मार्ग से पूर्व की ओर बढा, लेकिन यहाँ भी उसकी हार हुई और तब वह अक्टूबर सन् १७९९ ई० मे वापिस फ्रांस को लौट आया।

फ्रॉस के विरुद्ध दूसरा संघ, सन् १७६६ से १८०२ तक—सन् १७९९ ई० मे इँगलैण्ड, आस्ट्रीया और रूस तीनो ने मिलकर फ्रांस के विरुद्ध फिर एक सघ बनाया। इसका कारण यह था कि योरोप महाद्वीप मे फ्राँसीसियो की शक्ति बराबर बढती जा रही थी लेकिन फ्राँस की आँतरिक अवस्था खराब हो चुकी थी और नील नदी के युद्ध की सफलता से इँगलैण्ड की हिम्मत बढ गई थी। इसलिए अँग्रेज़ो ने इस अवसर को सुयोग समझकर फ्राँस के विरुद्ध एक और सघ स्थापित किया।

अब मित्र राष्ट्रो ने फ्राँसीसियो को हराना आरम्भ किया। इसलिए फ्राँस की पराजय सुनकर नैपोलियन मिश्र छोडकर फ्राँस लौट आया और चूँकि फ्राँस की प्रजा उस समय की सरकार से जो कि डायरेक्टरी सरकार थी खुश न थी, इसलिए इसको अच्छा अवसर समझकर नैपोलियन ने बल पूर्वक उस शासन का अन्त कर दिया और अपने आपको सबसे बड़ा हाकिम बनाकर राज्य का प्रबन्ध अपने हाथ मे ले लिया। सन् १८०० ई० में आल्पस पहाड को पार करके आस्ट्रीया वालो को नैपोलियन ने मेरेंगो (Marengo) के युद्ध मे पराजित किया और उनको अपनी शर्तें

मानने पर मजबूर किया। रूस भी लडाई से अलग हो गया और ब्रिटानियाँ फिर अकेला रह गया। इस पर एक और विपत्ति सामने आई। रूस स्वीडन, डेनमार्क और प्रशिया ने एक और सघ स्थापित किया। जो सशस्त्र उदासीन सघ (Armed Neutrality) के नाम से प्रसिद्ध है। यह सघ अँग्रेजो के विरुद्ध उनके जहाजी वेडो पर आक्रमण करने के लिए वना था लेकिन अँग्रेजो ने डेनमार्क के जहाजी वेड़े कोपिनहेगिन (Copenhagen) के समुद्री युद्ध मे वरवाद करके उसका मतलव पूरा न होने दिया।

आमीन की संधि (सन् १८०२)—इँगलैण्ड और फ्राँस दोनो लडते-लडते तग आ गये थे। सन् १८०२ ई० मे आमीन के स्थान पर सधि हुई जिसके अनुसार इँगलैण्ड को स्पेन ने ट्रिनिदाद (Trinidad) और हालैण्ड ने सीलोन (Ceylon) दिया और फ्रास से यह तय हुआ कि वह यूरोप के मामलो मे आगे दखल न देगा। अँग्रेजो ने माल्टा वापिस करने का वचन दिया। सन् १८०१ ई० मे पिट ने मंत्री पद से त्याग-पत्र देदिया।

नेपोलियन और तीसरा यूरोपीय संघ (सन् १८०५ से १८०७ ई० तक)—आमीन की सधि के थोड़े ही दिन बाद युद्ध फिर आरम्भ हो गया नेपोलियन ने सधि काल के बीच मे ही पीदमोंट (Piedmont) और पारमा (Parma) पर अधिकार करके स्विटज़रलैण्ड पर भी अधिकार कर लिया। इँगलैण्ड ने इस पर ऐतराज किया तो जवाब मे नेपोलियन ने माल्टा का टापू मागा जिसको अँग्रेजो ने देने से इकार कर दिया। इस पर फिर लडाई छिड़ गई। सन् १८०३ ई० के अन्तिम दिनो मे युद्ध फिर आरम्भ हुआ और नेपोलियन ने इँगलैण्ड पर आक्रमण करने की तैयारियाँ आरम्भ कर दी। वोलोन (Boulogne) के स्थान पर एक ज़बर्दस्त सेना तैयार की गई ताकि अवसर मिलते ही उसको इँगलैण्ड पहुँचा दिया जाय। ब्रिटानियाँ के जहाज़ी वेड़ो को मार्ग से हटाने के लिए नेपोलियन ने स्पेनिश और फ्रासीसी जहाजी वेड़ों को पश्चिमी द्वीप समूह

Battle of TRAFALGAR
21st. October, 1805

Based on the Admiralty Committee's Report 1913
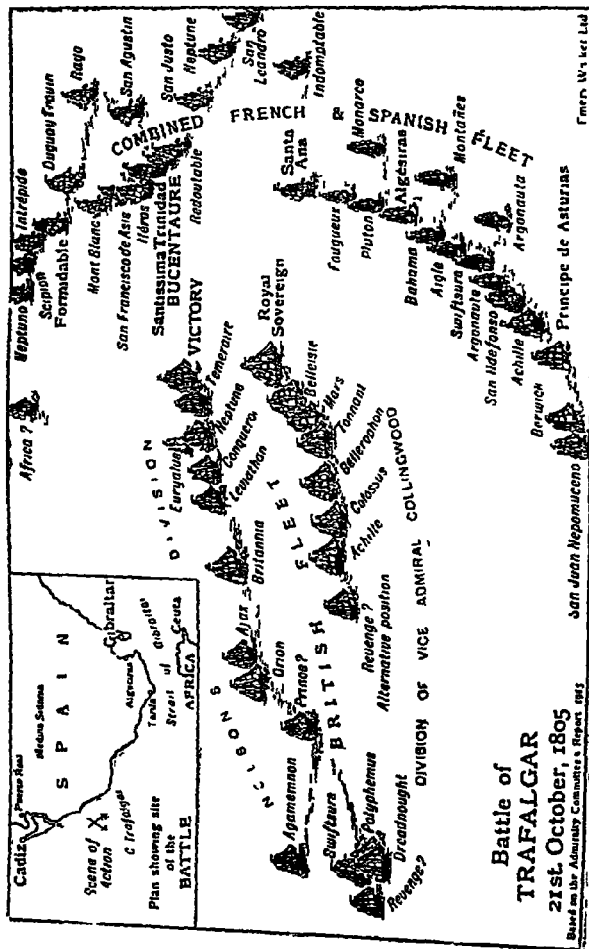
(West Indies) की ओर भेजा ताकि नेल्सन को उनका पीछा करने की इच्छा हो लेकिन इस तरकीब का कुछ फल न हुआ और नेपोलियन को इँगलैण्ड पर आक्रमण करने का विचार ही त्याग देना पडा। जब स्पेन और फ्राँस का सयुक्त जहाजी बेडा कैडिज़ (Cadiz) से बाहर निकला तो उसने सन् १८०५ ई० मे ट्राफालगार (Trafal gar) अन्तरीप के पास ब्रिटानियाँ के बेडे का सामना किया लेकिन उसे मुँह की खानी पडी।

इँगलैण्ड मे छोटा पिट दूसरी बार सन् १८०४ से १८०६ तक प्रधान मत्री हुआ, छोटा पिट नेपोलियन का जानी दुश्मन था। इसलिए सन् १८०५ ई० मे पिट ने आस्ट्रिया रूस और स्वीडन से मिलकर बोनापार्ट से युद्ध ठानने को तीसरा यूरोपीय सघ (Third Coalition) बनाया। नेपोलियन और आस्ट्रीया की सम्मिलित सेनाओ को सन् १८०५ ई० में आस्टर्लिट्ज़ (Austerlitz) के स्थान पर हरा दिया और आस्ट्रीया को सधि करनी पडी। प्रशिया को भी जबर्दस्ती फ्राँस के साथ मेल करना ही पडा अब फ्राँस की लडाई के लिए केवल रूस और इँगलैण्ड ही बाकी रह गये। प्रशिया ने बगावत की मगर सन् १८०६ ई० मे जीना (Zena) के स्थान पर फिर हार खाई। उसकी एक सेना सन् १८०७ ई० मे फ्रीड लैण्ड (Friedland) के स्थान पर नेपोलियन द्वारा फिर छिन्न-भिन्न कर दी गई। रूस के जार ने टिलसिट (Tilsit) के स्थान पर नेपोलियन से सधि करली। इस प्रकार समस्त योरोपीय महाद्वीप मे नेपोलियन का प्रभाव स्थापित हो गया और योरोप मे कोई ऐसी शक्ति नही रही जो कि नेपोलियन का मुकाबिला कर सके।

पिट की मृत्यु—पिट जो कि सन् १८०४ ई० में दुबारा प्रधान मत्री नियुक्त हुआ था सन् १८०६ ई० में मृत्यु को प्राप्त हुआ। बादशाह ने ग्रेनविल (Grenville) को बुला कर एक मत्रिमडल स्थापित करने की आज्ञा दी जिसमें फोक्स (Fox) भी शामिल किया गया। इस मन्त्रि-मडल को (Ministry of all Talents) "सब बुद्धि मानो का मन्त्रि-मडल" कहते है। फौक्स भी पिट की मृत्यु के सात महीने बाद मर गया।

सन् १८०७ में नेपोलियन की दशा—सन् १८०७ में नेपोलियन की प्रसिद्धि का डका चारो ओर सुनाई देता था। वह स्वयं फ्राँस और इटली का बादशाह था। उसका एक भाई हालैण्ड का बादशाह था, दूसरा नेविल्स का और तीसरे को वेस्टफेलिया का बादशाह बना दिया था। जर्मनी मे नेपोलियन का ही हुक्म चलता था। रूस उसका मित्र बन गया था। आस्ट्रीया और प्रशिया के बादशाहो ने उसे अपना महाराजा स्वीकार कर लिया था। स्विटज़रलैण्ड भी नेपोलियन की आधीनता मे था बेलजियम फ्राँस मे शामिल कर दिया था। इस तरह सन् १८०७ ई० मे इँगलैण्ड, डेनमार्क, नार्वे, स्वीडन, टर्की, स्पेन और पुर्तगाल के अतिरिक्त योरोप का प्रत्येक देश या तो उसके आधीन था या लड़ाई में उससे नीचा देख चुका था।

फ्रांस में सुधारः—युद्धो में विजय प्राप्त करने के बाद नेपोलियन ने फ्रास की दशा सुधारना आरम्भ किया। पेरिस मे चौडी-चौड़ी सड़के, सुन्दर पुल और शानदार भवन और द्वार बनाये गये। शिक्षा का नये सिरे से प्रबन्ध किया गया। कानून दुबारा लेख वद्ध किये गये जो कि नेपोलियन के कानून (Napaleonic Code) के नाम से प्रसिद्ध है और वे आज भी फ्रास के अलावा बेलजियम, हालैन्ड, इटली, और जर्मनी के कुछ भागो में प्रयोग मे लाये जाते है।

महाद्वीपीय तरीक़ाः—नेपोलियन के दुश्मनो मे केवल इँग्लैण्ड बचा था जिसका कि वह कुछ नही बिगाड सका था। उसने हर तरह से इग्लैंड को हराने की कोशिश की लेकिन असफल रहा। नेपोलियन खूब जानता था कि इंग्लैंड की शक्ति का सारा आधार व्यापार पर है इसलिए उसने इग्लैंड के व्यापार को हानि पहुँचा कर अपने शत्रु को नीचा दिखाने का पूरा इरादा कर लिया। नेपोलियन ने सन् १८०६ से १८१० ई० के बीच में कई बार इंग्लैण्ड से व्यापार करने की घोषणा की उनमे से तीन घोषणाये बहुत प्रसिद्ध है जो बर्लिन, वारसा और मिलन के नगरो में प्रकाशित की गई थी जिनके अनुसार कोई योरोपियन देश इग्लैण्ड से

EUROPE
in 1810
(At the height of
Napoleon's power)
French Empire
Lands directly ruled by Napoleon
Vassal States
IRELAND
Vinegar Hill
Fishguard
ENGLAND
Spithead
Camperdown
Walcheren
Heligoland
Copenhagen
Tilsit
Friedland
PRUSSIA
Berlin
Grand Duchy of Warsaw
RUSSIA
CONFEDERATION OF THE RHINE
Leipzig
Jena
Austerlitz
AUSTRIAN EMPIRE
Wagram
Pressburg
Vienna
Ulm
Hohenlinden
BAVARIA
Boulogne
Amiens
Brest
Paris
Fontainebleau
Quiberon
Rochefort
Zurich
FRENCH EMPIRE
KINGDOM OF ITALY
Illyrian Provinces
TURKEY
Toulouse
Toulon
Vitoria
Cape Finisterre
Coruna
Saragossa
Salamanca
Ciudad Rodrigo
Busaco
Talavera
Madrid
SPAIN
Vimiero
Cintra
Torres Vedras
Lisbon
PORTUGAL
Albuera
Baylen
C. St Vincent
C Trafalgar
Cadiz
Gibraltar
Corsica
Elba
Ajaccio
Rome
Naples
KINGDOM OF NAPLES
Ionian Islands (French)
Malta

Grenadier in the time of the Peninsular War

George Washington.
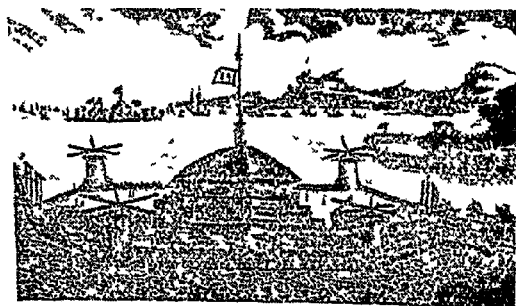
French Raft for the invasion of England

व्यापार नही कर सकता था। योरोप के सारे समुद्री किनारो पर पहरा लगा दिया गया था ताकि इग्लैण्ड का कोई पदार्थ योरोप में न पहुँच सके। इसके अलावा यह भी घोषणा करदी गई कि जो देश उस लड़ाई मे शामिल न थे उनके जहाज अगर इग्लैण्ड के बन्दरगाहो पर जायेगे तो जब्त कर लिए जायेगे। इतिहास मे यह महाद्वीपीय तरीका (Continental System) के नाम से प्रसिद्ध है।

इसके जवाब मे इग्लैण्ड ने "आर्डर्स इन[१] कौंसिल" (Orders in Council) के द्वारा यह घोषणा की कि जो जहाज फ्रास या उसके मित्रो से व्यापार करने जायेंगे वे डुबा दिये जाएँगे। इग्लैण्ड और फ्रास का एक दूसरे के व्यापार को बन्द करने का यह "कोन्टी नेन्टल सिस्टम" था।

कोन्टीनेन्टल सिस्टम की असफलताः—यह व्यापारिक युद्ध बिलकुल असफल रहा। इसका कारण यह था कि चाय रुई-शक्कर आदि ऐसी वस्तुएँ थी जो इग्लैण्ड और उसके उपनिवेशो के अतिरिक्त कही दूसरी जगह से प्राप्त नही हो सकती थी। इन वस्तुओ का मूल्य बढ गया जिसके कारण से लोग उसके विरुद्ध हो गये। नेपोलियन ने व्यापारिक शत्रुता इग्लैण्ड के साथ करके सरासर भूल की थी। उसी कारण से आस्ट्रीया, प्रशिया, रूस और नेपोलियन के अन्य मित्र राष्ट्र जो अभी उसके आगे तैयार थे अपनी व्यापारिक हानि को सहन न करके उसके दुश्मन हो गये। उन देशो के केवल बादशाह ही उसके दुश्मन न हुए किन्तु समस्त प्रजा भी नेपोलियन के विरुद्ध हो गई और इग्लैण्ड से मिल कर उसको नीचा दिखाने की चिन्ता करने लगी।

इस तरीके की सफलता के लिए यह आवश्यक था कि समस्त समुद्र के किनारे के देश उसकी आज्ञा के अनुसार कार्य करे। सन् १८०७ ई० मे बोनापार्ट ने पुर्तगाल के बादशाह से इँग्लैण्ड से व्यापार बन्द करने को

१ मन्त्रि मण्डल के वे आदेश जो विशेष आवश्यकता के समय पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के बिना प्रिवी कौन्सिल के नाम से जारी किये जाते है "आर्डर्स इन कौन्सिल" कहलाते है।

कहा। पुर्तगाल इग्लैण्ड का गहरा मित्र था इसलिए उसने नेपोलियन की आज्ञा को ठुकरा दिया। इस पर नेपोलियन ने अपनी सेनाये भेज कर पुर्तगाल पर अधिकार कर लिया। इसके बाद स्पेन के बादशाह और उसके बेटे मे कुछ झगड़ा हो गया। नेपोलियन ने इससे लाभ उठा कर बादशाह और उसके उत्तराधिकरी दोनो को निकाल कर उनके स्थान पर अपने भाई जोसफ बोनापार्ट को स्पेन का बादशाह नियुक्त कर दिया। स्पेन वालो मे जातीय जागृति उत्पन्न हो गई थी और नेपोलियन के इस काम को देख कर स्पेन के तमाम लोग उसके विरुद्ध होगये। नेपोलियन ने ऐसा करके वास्तव मे बहुत बडी भूल की थी जो कि आगे चल कर उसके पतन का कारण बनी। इसका परिणाम प्रायद्वीपीय युद्ध (Peninsular War) के रूप मे हुआ जो छ: साल तक चलता रहा।

आइबीरियन युद्ध (सन् १८०८ से १८१४ तक):— स्पेन वालो ने इग्लैण्ड से सहायता से मागी। इग्लैण्ड ने सर आर्थर वेलेजली और सर जान मूर दो सैनिक अफसरो को पुर्तगाल भेजा वेलेजली ने आते ही फ्रास की सेना को विमीरो (Vimiero) के स्थान पर पराजित करके पुर्तगाल से निकाल दिया। स्पेनवालो ने जोजफ को स्पेन की राजधानी मेड्रिड से उत्तर की ओर भगा दिया। सन् १८०८ ई० मे नेपोलियन स्वय स्पेन गया लेकिन क्योकि उसको खबर मिली कि आस्ट्रिया उसके विरुद्ध युद्ध करने की तैयारिया कर रहा है इसलिए फ्रांस की सेना एक और अफसर के आधीन स्पेन मे छोड कर आस्ट्रिया के बादशाह से युद्ध करने को मध्य योरोप मे चला गया। वेलेजली को इग्लैण्ड बुला लिया गया था लेकिन जब सरजान मूर कोरूंना (Corunna) के स्थान पर मारा गया तो अग्रेजो ने वेलेजली को फिर भेजा। उसने फ्रांसीसी सेना को अपोर्टो (Oporto) मे हरा कर उसको पुर्तगाल से भगा दिया और फिर आगे बढ कर सन् १८०९ ई० मे उनको स्पेन में तालावेरा (Talavera) के स्थान पर पराजित किया और अन्त में सर आर्थर वेलेस्ली ने सालामन्का (Salamanca) और विटोरिया (Vittoria) की लडाइयो मे पूरी

Map to illustrate the Peninsular War
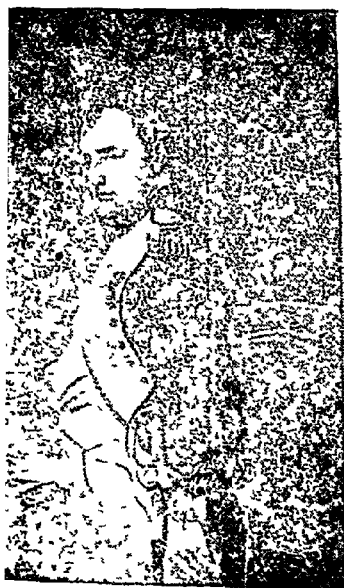
Napoleon Bonaparte

The Duke of Wellington

सफलता प्राप्त की तब फ्रासीसी सेनाये स्पेन छोडने पर मजबूर हुई।

नेपोलियन का पतनः—नेपोलियन ने स्पेन से आकर आस्ट्रीया के बादशाह को वैग्राम (Wagram) के स्थान पर पराजित किया। स्पेन मे फ्रासीसियो की हार का समाचार सुनकर समस्त योरोप नेपोलियन के विरुद्ध होने लगा। रूस ने भी नेपोलियन के व्यापारिक तरीके का विरोध आरम्भ कर दिया। नेपोलियन ने रूस को दबाने के लिये उसकी राजधानी मास्को पर आक्रमण किया लेकिन सख्त जाडा और भोजन समग्री के अभाव के कारण उसको बडी मुसीबते झेल कर वापिस आना पडा। इससे उसकी सैनिक शक्ति को बहुत हानि पहुँची। इस कारण से नेपोलियन के दुश्मनो की हिम्मत और भी बढ गई और ड्यूक ओफ वेलिगटन (सर आर्थर वेलेजली) ने आस्ट्रिया, प्रसिया, और रूस की सहायता से नेपोलियन को लीपजिक Leipzig के स्थान पर सन् १८१३ ई० मे पराजित किया। आखिर यहाँ तक नोबत पहुँची कि नेपोलियन को अपनी गद्दी छोड कर एलबा टापू मे जाकर शरण लेनी पडी।

वाटरलू का युद्धः—समस्त बडे-बडे राष्ट्रो की एक कॉग्रेस वीयना (Vienna) मे योरोप के मामलो को निवटाने के लिए हुई लेकिन मार्च सन् १८१५ ई० मे नेपोलिनन एलबा (Elba) टापू से भाग आया और कॉंग्रेस का काम अधूरा रह गया। फ्राँस मे आकर फिर वह वहाँ का बादशाह वन गया। उसने एक बहुत बड़ी सेना फिर तैयार की और दूसरे देशो को भी लडाई की तैयारियाँ फिर करनी पडी। इग्लैण्ड, आस्ट्रिया, प्रशिया और रूस की सेनाएँ जमा होगई। वेलिंगटन (Wellington) इग्लैण्ड की सेना का सेनापति और ब्ल्यूचर (Blucher) प्रशिया का कमान्डर वना। १८ जून सन् १८१५ ई० को वाटरलू (Waterloo) के मैदान मे दोनो ओर की सेनाओ का सामना हुआ। आखिर को नेपोलियन पराजित हुआ और उसकी सेना बहुत बुरी तरह छिन्न-भिन्न हो गई। नेपोलियन पकड़ लिया गया और अन्त में सेन्ट हैलेना (St Helena) के टापू मे कैद कर दिया गया।

सन १८१५ की संधिः—नैपोलियन की पराजय के बाद यूरोप के राज्यो के प्रतिनिधियो ने एक बहुत बडी कॉंग्रेस करके समस्त राज्यो की सीमाओ का फैसला कर दिया और फ़ास की राज्यक्रान्ति के युद्धो के उनकी पहली जो सीमा थी अधिकतर वही स्थिर रक्खी। नेपोलियन की जगह फ्रांस का पुराना राजवँश फिर शासन करने लगा। इग्लैण्ड को इस सन्धि के अनुसार माल्टा, मारीशस, सीलोन, केप कोलोनी आदि मिले जिनसे इग्लैण्ड को अपनी उन्नति मे बहुत सहायता मिली।

नेपोलियन की पराजय में इंग्लैण्ड का भागः— इग्लैण्ड ने नेपोलियन से लडने के लिये तीन बार योरोपियन सघ बनाये लेकिन सिवाय इग्लैण्ड के शेप समस्त देशो ने नेपोलियन से हार मानकर उसकी आधीनता स्वीकार कर ली। फ्रांस ने भी इग्लैण्ड को हराने की अलग-अलग तरकीबे सोची लेकिन कोई तरकीब भी सफल न हुई। पहले फ्रॉंस ने इग्लैण्ड को हिन्दुस्तान में हराकर उसके व्यापार को हानि पहुँचाने की सोची लेकिन नील नदी के युद्ध के पराजय ने नेपोलियन के पूर्वी उद्देश्यो पर पानी फेर दिया। ट्राफालगार के पराजय ने इग्लैण्ड पर आक्रमण करने के इरादे को खाक मे मिला दिया फिर कोन्टीनेन्टल सिस्टम से अँग्रेज़ो के व्यापार को हानि पहुँचाकर अँग्रेज़ो को नष्ट करना सोचा था लेकिन यह उपाय भी सफल नही हुआ और इससे नेपोलियन का उल्टा अपना ही पतन होगया। वास्तव मे फ्राँस अँग्रेज़ो की सफलता का रहस्य ही न समझ सका। असल मे इग्लैण्ड की व्यापारिक शक्ति उसकी सफलता का रहस्य था। अगर नेपोलियन का इरादा यही था कि इँग्लैण्ड को नीचा दिखाया जाय तो उसका तरीका एक ही था कि आमीन की सधि के बाद वह कुछ समय के लिए शान्त रहता और इस बीच में अपनी [स]मुद्री शक्ति अधिक बढ़ाता और जब समुद्री शक्ति अधिक हो जाती तब अँग्रेजो से लड़ता लेकिन उसमे सन्तोष तो बिल्कुल ही न था। इसलिए आमीन के बाद झगड़ा फ़िर मोल लेलिया और जब अँग्रेजो को न हरा सका तो कोन्टीनेन्टल सिस्टम निकाला जो उसकी बडी

भारी भूल थी और जिससे वह स्वय ही नाश को प्राप्त हो गया।

इँग्लैण्ड पर नेपोलियन के युद्धों का प्रभावः—फ्राँसीसी राज्य क्रान्ति और नेपोलियन के युद्धो का इग्लैण्ड की आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक दशा पर गहरा प्रभाव पडा उनसे लाभ भी हुआ और हानि भी लेकिन हानि अधिक हुई और लाभ कम।

युद्धों से लाभः—हिन्दुस्तान और ससार के बहुत से टापू उनके अधिकार मे आगये थे और उनकी समुद्री शक्ति भी पहले से कहीं अधिक होगई थी। लडाइयो के कारण यूरोप से बाहर के देशो के व्यापार पर भी अँग्रेजो का ही अधिकार रहा। सारे ससार मे उपनिवेशो और व्यापारिक मामलो मे अँग्रेजो की तुलना का और कोई न था।

इन युद्धों से निम्नलिखित हानियाँ हुईः—

व्यापारिक हानिः—लडाई के दिनो मे इग्लैण्ड ने व्यापार मे बहुत उन्नति की क्योकि लडाई के कारण योरोप मे वस्तुऐ तैयार नही हो सकती थी। इसलिए इग्लैण्ड ही से तमाम जरूरत की चीजें यूरोप वाले मँगाते थे। इस कारण से यहाँ विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ तैयार होने लगी लेकिन बाद मे पहले तो कोन्टीनैन्टल सिस्टम ने अँग्रेज व्यापारियो को बहुत हानि पहुँचाई। दूसरे लडाई के बन्द होने से एकदम अँग्रेजी तिजारत को धक्का लगा क्योकि लडाई के कारण योरोप की आर्थिक दशा इस दर्जे तक खराब होगई थी कि इग्लैण्ड में बने हुए माल की कही बिक्री न थी। इसलिए अँग्रेज़ी व्यापारियो के दिवाले निकल गये। कारखाने बन्द होगये और उनमे काम करनेवाले मजदूर भूखो मरने लगे। इन्हीं दिनो मे कारखानो के अन्दर मशीनो का प्रयोग ज़ारी हुआ था जिसके कारण मजदूरो की आवश्यकता बहुत कम होगई थी इसलिए गरीब लोगो का जीवन और भी अधिक कष्ट पूर्ण हो गया।

सरकारी ऋणः—इन युद्धो मे लाखो रुपया सालाना युद्धो के कार्यो मे व्यय होते थे। इग्लैण्ड को स्वय युद्ध करने के अलावा प्रशिया

तीसरा अध्याय

व्यवसायिक क्रान्ति

कला कौशल में क्रान्ति का अर्थ—१८वी शताब्दी के अन्तिम अर्ध भाग ने कलाकौशल मे इतनी क्रान्तियाँ हुई कि उनसे देश की कायापलट गई। अव तक देश के निवासियो का मुख्य व्यवसाय खेती था लेकिन अव वड़ी-वडी फैक्टरियो मे मशीनो के द्वारा कपड़ा वनाया जाने लगा। उत्तरी इंग्लैण्ड में वड़े-वड़े कारखाने स्थापित हो गये और इस प्रकार देश में एक महान् क्रान्ति हुई। इग्लैण्ड में खेती का स्थान कलाकौशल ने ले लिया और यहाँ के कारखानो से वहुत सा माल तैयार होकर दूसरे देशों को जाने लगा। यह क्रान्ति इतिहास में "व्यवसायिक क्रान्ति" (Industrial Revolution) के नाम से प्रसिद्ध है।

सूत कातना और कपड़ा वुनना—१८वी शताव्दी के समाप्त होने तक व्रिटानियाँ ग्रामों का एक देश था और उसकी ⅘ आवादी खेती पर निर्वाह करती थी। खेती के वाद सवसे मुख्य व्यवसाय ऊन वुनने का काम था। गाँवो मे स्त्रियाँ सूत कातती थी और पुरुष अपनी हाथ की मशीनो से वुनते थे। सन् १७३३ ई० मे जौन के (John Key) ने फ्लाइग शटल (Flying Shuttle) वनाया जिससे वुनाने की रफ्तार तेज होगई और कपड़ा पहले की अपेक्षा जल्दी और अधिक चौड़ा वुना जाने लगा। लेकिन जल्दी सूत न कतने के कारण उससे अधिक लाभ न हुआ फिर सन् १७६४ ई० में हारग्रीव्स (Hargreves) नामी एक जुलाहे ने एक नये ढंग का चर्खा तैयार किया जिसे स्पिनिंग जैनी कहते थे। (Spinning Jenny) के द्वारा एक कारीगर मामूली चर्खे की अपेक्षा कई गुना सूत एक ही साथ वहुत ही जल्दी कात लेता था। उसके पांच वर्ष

बाद सन् १७६९ ई० मे आर्क राइट (Ark wright) ने एक सूत कातने की मशीन का आविष्कार किया जो पानी के ज़ोर से चलती थी और जिससे महीन सूत आसानी से निकल आता था। क्रोम्पटन (Crompton) ने सन् १७७५ ई० में एक ऐसी मशीन (Mule) बनाई जिसमे सूत कातने के काम को बहुत ही सरल कर दिया लेकिन बुनने मे उन्नति नही हुई थी। सन् १७८५ ई० मे डा० कार्ट राइट (Dr Cartwright) ने पानी से चलने वाले करघा का आविष्कार किया जिसने बुनने मे सरलता उत्पन्न कर दी। इस प्रकार कपडा बुनना और सूत कातना दोनो काम मशीनो के द्वारा होने लगे।

फैक्टरी सिस्टम का आविष्कार—ये मशीने इतनी बड़ी थी कि घरो मे नही रक्खी जा सकती थी इसलिए उनके लिए विशेपरूप से अलहदा इमारतें बनवानी पड़ी। इस तरह इंगलैण्ड मे फैक्टरी सिस्टम की बुनियाद पड़ी, इन नई मशीनो को चलाने के लिए पानी की बहुत आवश्यकता होती थी इस कारण से पहाड़ी जिलो मे जहाँ पानी खूब मिल सकता था। उनका प्रयोग अधिक आरम्भ हुआ। चूंकि पानी से काम लेने मे रुपया अधिक व्यय होता था इसलिए बडे-बड़े मालदार लोगो ने ही कारखाने खोले। कारीगरो को जो अबतक स्वतन्त्र थे, थोड़ी मजदूरी पर काम करना पड़ा अब कपास का प्रत्येक काम देश का सबसे बडा व्यवसाय बन गया।

लोहे और कोयले का प्रयोग—मशीनें बनाने के लिए कारखाने खुलने लगे और उनके लिए लोहे की आवश्यकता हुई। अबतक लकड़ी के कोयले से लोहा पिघलाया जाता था लेकिन अब उसमें कमी होगई। उसके स्थान पर पत्थर का कोयला काम में आने लगा।

भाप के इंजिन का प्रयोग—अबतक मशीने पानी से चलाई जाती थी लेकिन सन् १७८५ ई० मे जेम्स वाट (James Watt) ने भाप से चलने वाले इजिनो का आविष्कार किया उनके द्वारा मशीने सरलता से चलने लगी और सामान बढिया और जल्दी तैयार होने लगा।

लंकाशायर में केन्द्र बनना :—लकाशायर रुई के काम का सबसे बड़ा केन्द्र बन गया। उसको कोयले और लोहे की खानो के निकट होने के कारण बडी सुविधा प्राप्त थी और वहाँ का आर्द्र और तर जलवायु रुई की बनावट के लिए बहुत अनुकूल था। लंकाशायर की आबादी सन् १७७० ई० में २ लाख थी और सन् १८५० ई० मे बढकर २० लाख हो गई। उत्तरी और मध्य इग्लैंड मे जहाँ कि लोहा और कोयला अधिक मात्रा मे मिलता था वहा पर कारखाने खुलने लगे और बड़े २ व्यवसायिक नगर यार्कशायर लका शायर और दक्षिणी द्वीप में स्थापित हो गये।

खेती के कार्य में क्रान्ति :—१८वी शताब्दी के मध्य तक इग्लैंड मे भूमि खुली हुई रहती थी। ग्रामों के चारो ओर खेत फ्यूडल समय की तरह विभिन्न टुकड़ो में विभाजित होते थे और भूमि का एक तिहाई भाग हर साल खाली छोड़ दिया जाता जा। अब खेती में भी नवीन वैधानिक उपाय काम में लाये जाने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि अनाज की पैदावार बहुत बढ गई और ज़मीदारो को काश्तकारी में बहुत लाभ दिखलाई देने लगा। इसलिए वह भूमि जो ऊसर बंजर पडी थी खेती के लिए काम में लाई गई। जानवरो के पालने के भी नये तरीक़े मालूम हो गये। लोगों ने छोटे-छोटे खेतो को मिलाकर बडे खेत बना लिए और उनके चारों ओर चहार दीवारियाँ उठा दी। मशीनों का भी प्रयोग होने लगा। नये तरीके पर खेती करने का खर्च छोटे किसान सहन नही कर सकते थे और न वे बड़े जमीदारो का मुकाबिला कर सकते थे इसलिए उन्होने अपने खेत ज़मीदारो को बेच दिये, और स्वयं मजदूरी करने लगे इस प्रकार ज़मीदारो ने फायदा उठाया और वह अब धनवान बन गये। दूसरी ओर मध्यम श्रेणी के लोगो की दशा खराब होने से वह अब मज़दूर बन गये लेकिन नये तरीके से खेती करने मे बहुत से मज़दूरो की भी ज़रूरत नही थी और ज़मीदार उनके साथ सहानुभूति भी नही रखते थे। इसलिए बहुत-से किसान अपने ग्रामो को छोड़कर शहरों में जाकर वहाँ के कारखानो में मज़दूरी करने लगे।

सामान के आवागमन के साधनः—व्यापार की उन्नति के साथ यह आवश्यक था कि देश मे सड़के अच्छी हो। अवतक इग्लैंड की सडके वहुत खराब थी। अव देश मे वहुत-सी मजवूत सडके वनाई गई। इस काम में स्काटलैण्ड के इजीनियर मैकडम (Macadam) ने वहुत सहायता की। सडको पर रोशनी का प्रवन्ध किया गया और पुरानी तेल की लालटेनो के स्थान पर अव जगह जगह गैस के हण्डे लगाये गये। जिससे मनष्यो के आने जाने में और व्यापार करने मे अधिक सुविधा हो गई। सडको के साथ नहरे भी निकाली गई जिनके द्वारा नावो मे माल लादकर ले जाने मे धन की वहुत वचत होने लगी। इग्लैंड की सवसे पहली नहर सन् १७६० ई० मे ड्यूक-ऑफ व्रिज वाटर (Duke of Bridge water) ने जेम्स वर्डवे नामी इजीनियर की सहायता से मनचैस्टर और लिवर पूल के बीच कोयला ढोने के उद्देश्य से वनवायी थी।

व्यवसायिक क्रान्ति का प्रभाव

इंग्लैण्ड में धन-वृद्धि—कलो के आविष्कारो और कारखानो के खुलने के कारण देश के रहनसहन के ढग मे वडा परिवर्तन हो गया। खेती की ओर लोगो का ध्यान कम हो गया और लाभ अधिक होने के कारण लोगो का ध्यान कलाकौशल की ओर खिचकर जाने लगा। कलाकौशल के कारण इग्लैण्ड मे सम्पत्ति और धन की वृद्धि हुई और उसकी जनसख्या भी पहले की अपेक्षा अव अधिक हो गई। इग्लैण्ड इस कलाकौशल के कारण ही फ्रास और नेपोलियन की लडाइयो का वोझा उठा सका। लडाइयो के समय में इस उन्नति मे कुछ रुकावटे अवश्य हुई लेकिन उसके वाद कलाकौशल और व्यापार के ही कारण इग्लैण्ड की आर्थिक दशा ठीक हो सकी।

कारखानों के खुलने से जनसंख्या में परिवर्तन—व्यवसायिक क्रान्ति से पहले लोग दक्षिणी और पच्छिमी प्रदेशो मे रहते थे लेकिन नये व्यापार की उन्नति से मनुष्यो की एक वडी सख्या खिचकर उत्तरी

और पच्छिमी प्रदेशो में पहुँच गई जहाँ कोयले और लोहे की खाने थीं और कपडे बुनने के कारखाने थे। वहाँ बड़े-बडे नगर आबाद हुए क्योकि देश के दूसरे भागो के लोग अपनी जीविका के लिए यहाँ आकर आबाद हो गये और इसीलिए वहुत-से पुराने गाँव और क़स्बे बीरान हो गये।

जनसंख्या के परिवर्तन का राजनीति पर प्रभाव—नये नगरो की उन्नति से राजनीति पर बड़ा प्रभाव पड़ा पार्लियामेन्ट मे उनका कोई प्रतिनिधित्व नही था। पुराने क़ानून के अनुसार छोटे-छोटे गाँव जिनकी आबादी अब घट गई थी पार्लियामेन्ट मे दो मैम्बर भेज देते थे। लेकिन नये-नये बडे-बड़े शहरो की कोई सुनवाई न थी। ज़मीदारो ने कारखाने वालो से राजनीतिक अधिकारो के मामलो मे बड़ा सख्त झगड़ा किया जिसमें कि वे सन् १८३२ ई० तक सफल रहे।

कारखानों के मालिकों और मज़दूरों में लड़ाई—इस व्यवसायिक क्रान्ति से इग्लैण्ड की आर्थिक दशा तो ठीक हुई लेकिन रुपया देश के सब लोगो मे समान रूप से विभाजित न हुआ बल्कि अब देश में दो दल उत्पन्न हो गये एक तो उन लोगो का जोकि कलाकौशल में रुपया लगाकर मालदार हो गयें थे। ये कारखानों के मालिक थे, और उनकी आर्थिक दशा बहुत अच्छी थी। दूसरा दल कारखानो मे काम करनेवाले मजदूरो का था। कारखानो के मालिक मज़दूरो पर नाना प्रकार के अत्याचार करते थे। उनको थोड़ी मज़दूरी पर पदरह-पदरह सोलह-सोलह घटे तक काम करना पड़ता था। उस आमदनी से उनकी गुज़र भी न होती थी, और वे काम छोड़ने की धमकी भी न दे सकते थे क्योंकि सैकडो दूसरे बेकार लोग इस मजदूरी पर काम करने को तैयार थे। उनकी रक्षा के लिए सरकार की ओर से कोई प्रबन्ध न था। इन लोगो ने आखिरकार व्यापारिक संघ (Trade Union) स्थापित करके अपनी मज़दूरियाँ बढ़ाने का यत्न किया और अपने मालिको को मजबूर करने के लिए हड़ताल करने का तरीका निकाला। सन् १७९९ ई० मे संघ क़ानून (Combination Act) बनाया गया जिसके अनुसार सब

ट्रेडयूनियन कानून के विरुद्ध ठहरा दिये गये। इन नगरो मे जगह कम और आबादी अधिक होने के कारण तरह-तरह की बीमारियाँ फैलने लगी, और नगर के निवासियो का स्वास्थ्य भी खराब होने लगा। एक-एक घर मे कई-कई खानदान रहते थे। जिसके कारण दुराचार फैलने भी प्रारभ हो गये।

कारखानो के मालिको, और मजदूरो मे तो लडाई हो रही थी उनके साथ कारखाने के मालिको और काश्तकारो अर्थात् जमीदारो मे भी लडाई होने लगी। कारखाने के मालिक अर्थात साहूकार लोग देश के शासन मे हिस्सा माँगते थे लेकिन जमीदार लोग जिनकी कि सख्या पार्लियामेन्ट मे बहुत अधिक थी वह उसका सख्त विरोध करते थे।

जार्ज तृतीय के समय के मंत्रिमंडल

1 Pitt Newcastle Ministry (1757-61)
2 Ministry of Bute (1761-63)
3 The Bedfod Grenville Ministry (1763-65)
4 Rockingham Ministry (1765-66)
5 Chatham Ministry (1766-68)
6 Grafton Ministry (1768-70)
7 North Ministry (1770-82)
8. Rockingham second Ministry (1782)
9 Shelbourne Ministry (1782-83)
10 Coalition Ministry of Fox & North
11. Pitt Ministry (1783-1801)
12 Addington Ministry (1801-1804)
13 Pitt's 2nd Ministry (1804-1806)
14 Ministry of all Talents (1806-07)
George Grenville & Fox were the chief persons
15. Portland Ministry (1807-9)
16 Percival Ministry (1809-12)
17 Liverpool Ministry (1812-27)

चौथा अध्याय

जार्ज चतुर्थ (सन् १८२० से १८३० ई० तक)

जार्ज चतुर्थ का स्वभाव—जार्ज तृतीय की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जार्ज चतुर्थ के नाम से गद्दी पर बैठा। जार्ज चतुर्थ निकम्मा और विलासप्रिय था। उसने राज्य के प्रबन्ध की ओर कुछ भी ध्यान न दिया उसका कुल काम मंत्रियों के हाथ मे रहता था। उसने अपनी रानी कैरोलिन (Caroline) के साथ भी बहुत बुरा बर्ताव किया। मुकुट धारण करने के दिन उसने अपनी धर्मपत्नी को वैस्टमिनिस्टर एबी में प्रवेश करने तक की आज्ञा नही दी और इस अनादर के शोक मे बेचारी कैरोलिन दूसरे ही महीने परलोक को सिधार गई।

नेपोलियन की लड़ाइयों के बाद इँगलैण्ड की व्यापारिक दशा बहुत खराब हो गई थी और इसी कारण से देश में कई विद्रोह और षड्यन्त्र भी हुए जिनमे से मुख्य कैटोस्ट्रीट का षड्यंत्र (Cato Street Conspiracy) था जिसमें थिसल वुड (Thistlewood) के नेत्रत्व में पच्चीस आदमियो ने सारे मन्त्रियो के प्राण लेने का प्रयत्न किया था लेकिन उसका भंडाफोड़ होजाने के कारण वे सब गिरफ्तार कर लिए गये। कुछ को मृत्यु का दण्ड मिला और कुछ को देश निकाला दिया गया था।

जार्ज चतुर्थ के समय के मंत्री—लार्ड लिवरपूल सन् १८२७ ई० तक मत्री रहा उसके बाद कैनिंग (Canning) मंत्री नियुक्त हुआ जो कि सन् १८२७ ई० में ही मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसके बाद गौड्रिच (Goderich) मंत्री हुआ लेकिन उसने सन् १८२७ ई० के दिसम्बर माह में ही त्यागपत्र देदिया। उसके बाद सन् १८२७ से १८३० तक वैलिंगटन (Wellington) प्रधान मंत्री रहा। उसके समय में निम्न

लिखित सुधार हुए जिनपर कि पार्लियामेन्ट का विशेष ध्यान था।—

(१) पार्लियामैण्ट का सुधार।

(२) कैथोलिक लोगो की धार्मिक स्वतन्त्रता।

(३) स्वतत्र व्यापार के सम्बन्ध में सुधार।

पार्लियामैन्ट के सुधार का प्रश्न—इस सबसे बडे सुधार की आवश्यकता पार्लियामैन्ट के चुनाव के ढग में परिवर्तन करने की थी। हाउस औफ कामन्स के चुनाव मे बहुत से उजाड स्थानों को जिनकी मनुष्य सख्या बहुत कम रह गई थी अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार चला आता था और इसके विरुद्ध बहुत-से ऐसे स्थान थे जो अब व्यापारिक उन्नति के कारण बडे नगर बन गये थे उनसे कोई प्रतिनिधि नहीं बुलाया जाता था। पार्लियामैन्ट के सुधार का प्रश्न कई बार पहले भी उठा था और सन् १७८५ ई० मे पिट ने उसके सम्बन्ध में एक योजना भी पेश की थी लेकिन जमीदारो के विरोध और फ्रांस की राज्यक्रान्ति के डर से वह रद्द हो गई। सन् १८३० ई० में लार्ड ग्रे (Grey) के मन्त्रित्व मे लार्ड रसल (Russell) ने पार्लियामैन्ट के सुधार का बीड़ा उठाया लेकिन उसको भी सफलता प्राप्त नही हुई। उसका प्रभाव यह अवश्य हुआ कि उसने सन् १८३२ ई० के सुधार के लिए मार्ग साफ कर दिया।

कैथोलिक दल की स्वतन्त्रता—आयर्लैण्ड की एकता के समय से ही लगातार यही प्रश्न चला आरहा था कि धर्म के बहाने से कैथोलिक दल के लोगो पर अत्याचार करना उचित नहीं है। लिवरपूल के मन्त्रित्व मे कैनिंग ने सन् १८२२ ई० मे कैथोलिक लोगो की धार्मिक रुकावटों को दूर करने के लिये एक प्रस्ताव उपस्थित किया था लेकिन हाऊस औफ लार्डस के विरोध के कारण वह प्रस्ताव पास नही हो सका। कैनिंग ने उस प्रस्ताव को फिर दुबारा अपने मन्त्री काल में पास कराने की चेष्टा की लेकिन सन् १८२७ ई० मे वह स्वय भी अकस्मात मृत्यु को प्राप्त होगया। इसी समय आयर्लैण्ड मे भी धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये एक जबर्दस्त आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। आयर्लैण्ड में कैथोलिक दल

का नेता डेनियल ओ कोनल (Daniel O'connel) नामी एक बैरिस्टर था जिसने प्रजा मे जागृति उत्पन्न करने के उद्देश्य से एक सभा केथोलिक एसोसिएशन के नाम से स्थापित की इस सभा ने इतना जोर पकडा कि पार्लियामेण्ट ने उसके विरोध मे एक बिल पास कराके उसे बन्द करा दिया। इस पर एक नई सभा एक दूसरे नाम से स्थापित हुई और धार्मिक स्वतत्रता प्राप्त करने का आन्दोलन यथापूर्व जारी रहा। डैनियल ओ कोनल के कहने से आयर्लैण्ड के मतदाता जो कि अभी तक बडे-बडे जमीदारो की इच्छा के अनुसार ही अपने वोट देते थे, अब वे अपनी इच्छा के अनुसार अपने विचारो के मनुष्यो को वोट देकर पार्लियामेण्ट का मेम्बर चुनने लगे और सन् १८२८ ई० मे काउन्टी क्लेर (County Clare) से मेम्बर चुनने के समय डैनियल ओ कोनल स्वय वहाँ से पार्लियामेण्ट का मेम्वर बनने के लिये खडा हुआ। उसके विरोध मे आयर्लैण्ड का एक जबर्दस्त जमीदार था जिसका कि नाम फिट्स जिराल्ड (Fitzgerald) था। डैनियल ओ कोनल की शक्ति इतनी होगई थी कि लोगो ने उसी को मैम्बर निर्वाचित किया लेकिन कानून के अनुसार कैथोलिक होने के कारण वह पार्लियामेण्ट मे बैठ नही सकता था। दोनो वैलिंगटन और पील रोमन केथोलिक लोगो को स्वतन्त्रता देने के सख्त विरोधी थे। लेकिन इस चुनाव से उनकी आँखे खुल गई और उनको विश्वास हो गया कि इस सुधार को रोकने का यह अर्थ है कि रोमन केथोलिक और प्रोटेस्टैन्ट दोनो में आपस मे लड़ाई होगी। इसीलिए सन् १८२८ ई० मे पार्लियामेन्ट ने एक बिल पास करके टेस्ट एक्ट (Test Act) और कारपोरेशन एक्ट (Corporation Act) को रद्द कर दियाऔर फिर सन् १८२९ ई० में एक नया बिल पास हुआ। यद्यपि बादशाह इस बिल का सख्त विरोधी था लेकिन उसको मजबूर होकर उसकी स्वीकृति देनी पडी। इस नये कानून के अनुसार कैथौलिक लोगो को समस्त सामाजिक और राजनीतिक अधिकार मिल गये और उनको सरकारी नौकरी मिलने और पार्लियामेण्ट का मेम्बर होने का अधिकार भी प्राप्त हो गया, लेकिन उसके

साथ ही वोट देनेवालो की सख्या जो पहले दो लाख थी अब केवल छब्बीस हजार कर दीगई । क्योकि पहले वह आदमी भी वोट दे सकते थे जिनकी आमदनी चालीस शिलिंग थी लेकिन अब वोट देनेवालो की आमदनी की शर्त १० पौंड करदी गई ।

स्वतन्त्र व्यापार:—इसमे दो बातें हैं प्रथम यह कि देश के अपने जहाजो और अन्य देशो के जहाजो मे कुछ भेद न मानना और दूसरे इससे यह प्रयोजन है कि दूसरे देशो के सामान पर अथवा अपने देश के सामान पर महगा करने के लिए महसूल न लगाना । हस किशन (Huskisson) ने जहाज सचालन एक्ट (Navigation Act) को रद्द कराके इग्लैण्ड के और दूसरे देशो के जहाजो मे कोई भेद नही रक्खा । दूसरे उसने चुगी का महसूल कई सामानो पर से कम करा दिया और कई कच्चे मालो (Raw Material) पर से महसूल बिल्कुल हटा दिया । उसने सन् १८२४ ई० के सघ कानून (Combination Act) को भी रद्द कर दिया जिससे अब कानूनी तौर पर ट्रेड यूनियनो का स्थापित होना उचित ठहराया जाने लगा ।

फ़ौजदारी के कानून में सुधार—इस समय रोबर्ट पील (Robert Peel) गृह मत्री था । अभी तक कानून फौजदारी बहुत सख्त था और बहुत साधारण से अपराधो पर भी फासी की सजा मिलती थी । पील ने कानून फौजदारी के सुधार के लिए एक कानून बनाया जिसके अनुसार सौ से अधिक छोटे अपराधो पर सजा कम करदी गई । और केवल कुछ मुख्य-मुख्य अपराधो पर ही मौत की सजा रह गई । सन् १८२९ ई० मे एक और बिल के अनुसार पुलिस के प्रबन्ध मे भी सुधार किया गया । पुराने नाकारा और अनपढ चौकीदारो के स्थान पर बा कायदा पुलिस नियुक्त की गई जिससे देश मे शान्ति स्थापित करने मे बडी सहायता मिली और वर्तमान पुलिस विभाग की बुनियाद पडी ।

वैदेशिक नीति

पवित्र संघ (Holy Alliance)—नेपोलियन की लडाइयो

के वाद रूस, प्रसिया और आस्ट्रिया ने एक संघ स्थापित किया जिसके कि (Holy Alliance) कहते हैं । इस सघ से प्रकट रूप में तो मतलव यह था कि योरोप मे ईसाई धर्म के अनुसार सुख शाति स्थिर रहे लेकिन असली मतलव यह था कि कानूनी शासन अथवा प्रजातन्त्र शासन स्थापित करने के लिए जितने आन्दोलन हो उनको दवाया जाय ताकि राज्यतन्त्र शासन ही सव जगह स्थिर रहे और प्रजातन्त्र शासन की नीव न पड सके । कैंसलरे (Castlereagh) जो कि इग्लैंड का वैदेशिक मन्त्री सन् १८२२ ई० तक रहा उसने कुछ हद तक उस सघ की सहायता की । लेकिन केनिंग जो कि सन् १८२२ ई० में मन्त्री नियुक्त हुआ, इस संघ का सख्त विरोधी था उसकी नीति यह थी कि कोई दूसरा देश किसी देश के आत-रिक मामलो मे दखल न दे । किसी देश मे राज्यतन्त्र शासन रहे, अथवा प्रजातन्त्र शासन, इस वात को उसी देश के निवासी ही निश्चित करें। दूसरे देशवालो को उस देश के आन्दोलन को रोक कर वहाँ पर राजतन्त्र शासन स्थापित करना अनुचित वात है। कैंनिग स्वतत्रता और राजनीतिक अधिकारो का पक्षपाती था । इसीलिए वह दूसरे देशो मे प्रजातन्त्र शासन और स्वतत्रता स्थापित करने के लिए लड़ा उसने फ्रास और स्पेन को पुर्तगाल में जो नया प्रजातन्त्र शासन स्थापित हुआ था उसमे दखल देने से रोका । दूसरे जव कि मैक्सिको, पेरू और चिली ने जो कि दक्षिणी अमेरिका मे स्पेन के उपनिवेश थे स्पेन से अलग होकर अपने स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लिये तो कैंनिग ने तुरन्त उनकी स्वतंत्र सरकारो को स्वीकार कर लिया ।

यूनान का स्वतन्त्रता युद्ध :—सन् १८२१ में यूनान की ईसाई प्रजा ने मुसलमान तुर्कों के शासन के विरुद्ध विद्रोह किया । होली एला-यंस के सिद्धान्तो के अनुसार तो इसके सदस्यो को तुर्की के सुल्तान की सहायता प्रजा के विरुद्ध करनी चाहिए थी, लेकिन अव प्रजा ईसाई थी और सुल्तान मुसलमान । इसलिये (Holy Alliance) के सदस्य वहुत सोच विचार में पड गये, लेकिन केनिंग ने जो कि सर्वदा स्वतत्रता और

प्रजातन्त्र शासन का पक्षपाती थी, यूनान की ईसाई प्रजा की सहायता की उसके प्रयत्न से फ्रास और रूस ने भी स्वतत्रता के युद्ध मे यूनानियो की सहायता की। सन् १८२८ ई० मे नैवारिनो (Navarino) के स्थान पर तुर्को की हार हुई और सन १८२९ ई० मे तुर्की सुल्तान को यूनान की स्वतत्रता स्वीकार करनी पडी। इसके बाद "पवित्र सघ" (Holy Alliance) बिल्कुल नष्ट होगया।
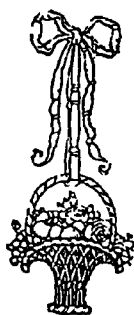
पांचवां अध्याय

विलियम चतुर्थ (१८३०—१८३७)

सन् १८३० मे जार्ज चतुर्थ की मृत्यु के वाद उसका भाई विलियम चतुर्थ वादशाह वना। उसने वहुत काल तक समुद्री सेना मे नौकरी की थी और इसलिए वह नाविक राजा (Sailor King) कहलाता है। जिस वर्ष वह गद्दी पर वैठा उसी वर्ष योरोप के कई भागो में एक क्रान्ति हुई और इँगलैण्ड में भी पार्लियामैन्ट के सुधार के लिए एक आन्दोलन आरम्भ हुआ।

तत्कालीन मंत्रिमंडल—जार्ज चतुर्थ की मृत्यु के कुछ समय वाद वैलिंगटन के मत्रीमंडल का भी अन्त हो गया और सन् १७८२ ई० के वाद अव लगभग पचास वर्ष के वाद व्हिग दल ने लार्ड ग्रे (Grey) की अध्यक्षता में अपना मंत्रीमंडल स्थापित किया। इस मन्त्रिमंडल में रसल, मैलवोर्न और पामर्स्टन जैसे सुयोग्य व्यक्ति मौजूद थे। यह मंत्रिमडल सन् १८३० से १८३४ तक स्थिर रहा। उसके वाद सन् १८३४ ई० में मैलवोर्न के मन्त्रिमडल की स्थापना हुई लेकिन उसी साल वादशाह ने उस मंत्रिमंडल को भग कर दिया। यह अन्तिम अवसर था जव कि वादशाह ने स्वयं अपनी इच्छा के अनुसार कार्य किया। इसके वाद लार्ड पील ने मंत्रिमंडल स्थापित करने का प्रयत्न किया लेकिन वह सफल न हो सका, और इसलिए लार्ड मैलवोर्न फिर वापिस वुलाया गया और सन् १८४१ ई० तक वह व्रिटेन का प्रधान मत्री रहा।

पार्लियामैन्ट के सुधार का पहला बिल
(First Reform Bill)

पार्लियामैन्ट की निर्वाचन-प्रणाली में दोष :—

(१) वहुत से पुराने स्थान जिनको अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार था अव विल्कुल उजाड़ (Rotten Boroughs) हो गये थे।

और उनकी जन सख्या इतनी कम हो गई थी कि वहाँ से प्रतिनिधि वुलाना विल्कुल व्यर्थ था। इसके विपरीत वहुत-से स्थानो से जो अव व्यापार की उन्नति के कारण वडे नगर वन गये थे, कोई प्रतिनिधि नहीं वुलाया जाता था।

(२) दूसरा दोप यह भी था कि एक जगह से कितने प्रतिनिधि जाने चाहिए और किस हिसाव से, यह ठीक प्रकार से निश्चित नहीं था। वडे और आवाद नगरो से उतने ही प्रतिनिधि आते थे जितने कि छोटे और कम आवाद स्थानो से। निर्वाचन जन सख्या के आधार पर नही होता था।

(३) तीसरा दोप यह था कि वोट देने के अधिकार की शर्तें सवके लिए एक-सी नही थी। अलग-अलग स्थानो के अलग-अलग मनुष्यो को अलग-अलग शर्तो पर वोट देने का अधिकार मिला हुआ था।

(४) चौथा दोप यह था कि वडे जमीदारो ने अपनी शक्ति वढाने के लिए वहुत-से उजाड स्थान खरीद लिए थे और अपने ही किसी खुशामदी आदमी को इन स्थानो से प्रतिनिधि वनाकर हाउस ऑफ कामन्स मे भेज देते थे।

प्रथम सुधार विल के लिए प्रयत्न—लार्ड जान रसल ने जो कि ग्रे मन्त्रिमडल मे एक मत्री था सन् १८३१ ई० मे पार्लियामैन्ट मे सुधार के प्रथम विल के प्रस्ताव को पेश किया। लेकिन वह विल पार्लियामैन्ट मे पास न हो सका और पार्लियामैन्ट भग कर दी गई। नई पार्लियामैन्ट में विल फिर पेश हुआ और अवकी वार उसको कामन सभा ने तो स्वीकार कर लिया लेकिन लार्ड सभा ने उसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। तीसरी वार फिर यह विल पेश हुआ और पहले की तरह कामन सभा ने तो उसे स्वीकार कर लिया लेकिन लार्ड सभा ने फिर भी उसे अपनी स्वीकृति प्रदान नहीं की। इस पर तत्कालीन प्रधान मत्री ग्रे ने त्यागपत्र दे दिया। तव ड्यूक ऑफ वैलिंगटन को अपना मन्त्रिमडल स्थापित करने के लिए वुलाया गया लेकिन वह उसमे सफल नहीं हो सका। इसपर ग्रे को फिर प्रधान मन्त्री वनाया गया लेकिन उसने इस शर्त

यह पद स्वीकार किया कि बादशाह अपने नये लार्ड इतनें बना देगा कि इस बिल को लार्ड सभा की बैठक में पास कराने के लिए जितनों की आवश्यकता हो। इस पर अन्त में लार्ड लोग भी राज़ी हो गये और १८३२ ई० मे उनकी सभा ने भी उसको ज्यों-का-त्यों स्वीकार कर लिया।

सुधार बिल में क्या-क्या बातें थीं ?

(१) उन ५६ स्थानो से जिनकी आबादी दो हज़ार से कम थी कामन सभा के लिए प्रतिनिधि भेजने का अधिकार छीन लिया गया और वे तीस स्थान जिनकी कि आबादी दो हज़ार और चार हज़ार के बीच में थी उनको एक प्रतिनिधि और जिनकी आबादी चार हज़ार से अधिक थी उनको दो प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया।

(२) इस प्रकार जो १४३ जगह खाली हुईं वे बड़े-बड़े स्थानों और नगरो में विभाजित कर दी गईं। ६५ स्थान इँगलैण्ड और वेल्स को दे दिये गये। २२ जगहो को दो मेम्बर भेजने का और २१ जगहो को एक मेम्बर भेजने का अधिकार दिया गया। ८ जगह स्काटलैन्ड को और पांच जगह आयर्लैण्ड को प्रदान की गईं।

(३) वोट देने के नियमो में भी सुधार किया गया। शहरों में उन लोगो को जो दस पौंड सालाना किराया देते थे वोट देने का अधिकार दे दिया गया और ग्रामो में उन लोगों को जो कि पचास पौंड सालाना कर देते थे वोट देने का अधिकार प्रदान किया गया।

सुधार बिल का प्रभाव और महत्व :—शासन की बागडोर अब बड़े जमीदारो से छिपकर मध्यमश्रेणी के आदमियो के हाथ मे आगई। दूसरे अब ग्रामो में वोट देने की शर्तें सब के लिए एक जैसी हो गई थी। तीसरे इससे इग्लैंड मे स्वतत्र-शासन नही स्थापित हुआ क्योकि मज़दूर लोगों की अभीतक कोई आवाज नही थी लेकिन उसने आगामी स्वतंत्र शासन के लिए रास्ता साफ़ कर दिया। चौथे टोरी और ह्विग दलों ने अपने नाम बदल लिए और अपने सिद्धान्त भी बदल दिये। टोरी दल ने अपना नाम अनुदार दल (Conservatives) रख लिया और वे पुराने सिद्धान्तो को ही मानते

रहे लेकिन उन्होने राजनैतिक परिवर्तनो के अनुसार कार्य करने का निश्चय किया। व्हिगदल के लोग उदार दली (Liberals) कहलाने लगे, और वे सुधार और उन्नति के सहायक बने। लेकिन पहले की अच्छी बातो को स्थिर रखने का उन्होने भी वादा किया।

प्रथम सुधार पार्लियामेन्ट :—सन् १८३२ ई० के सुधारो के बाद जो पार्लियामेन्ट सगठित हुई उसको "प्रथम सुधार पार्लियामेन्ट" कहते है। इस पार्लियामेन्ट ने कई विभागो मे अनेक सुधार किये। सब सुधार लार्ड ग्रे के मन्त्रित्व काल में हुए और जब उसने त्याग पत्र दे दिया तो मैलबोर्न के समय मे हुए।

सामाजिक सुधार :—इन सुधारो मे सबसे पहली बात गुलामो की स्वतत्रता है। क्लार्कसन (Clarkson) और विलबरफोर्स (Wilber-force) ने गुलामो की स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन आरम्भ किया और उसका प्रभाव यह हुआ था कि सन् १८०७ ई० मे ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर गुलामो का व्यापार बन्द हो गया और अब सन् १८३३ ई० मे पार्लियामेण्टने अँग्रेज़ी उपनिवेशो मे भी गुलामो का रखना बिलकुल बन्द कर दिया और सन् १८३४ ई० मे गुलाम बिलकुल स्वतन्त्र कर दिये गये।

दीनों की रक्षा का कानून :—ऐलीजाबेथ रानी के समय मे गरीबो और अपाहिजो की उचित देखरेख करने का प्रबन्ध किया गया और उसी समय से सरकार उनकी रक्षा मे विशेष रुचि रखती रही। फ्रास की राज्य-क्रान्ति और नेपोलियन की लड़ाइयो के बाद गरीबो की सख्या अधिक हो जाने के कारण सरकार ने यह कानून बना दिया कि मुहताजखाने मे बुलाने के बजाय उनकी सहायता घरो पर ही की जाय लेकिन इससे बहुत खराबी पैदा हुई और बहुत तन्दुरुस्त आदमी भी मेहनत से जी चुराकर सरकारी सहायता पर ही निर्वाह करने लगे। इसको रोकने के लिये एक नया कानून सन् १८३४ ई० मे बनाया गया जो कि गरीबो का कानून (Poor Law) कहलाता है। उसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि बूढो और अग हीनो को छोडकर किसी और आदमी की घर बैठे

सहायता नही की जायगी । इनके अतिरिक्त और जो लोग सहायता चाहेंगे उनको दीन गृहो (Poor Houses) में जाकर सख्त परिश्रम और मेहनत के बाद केवल पेट भर खाना मिला करेगा । इस कानून का उद्देश्य यह था कि अत्यन्त आवश्यकता के अतिरिक्त कोई मनुष्य सरकारी दान (Dole) का सहारा न ले । इसी कानून के अनुसार मुहताजखाने का महसूल (Poor Rate) बढ़ा दिया गया जिससे मुहताजखानो की आमदनी अधिक हो गई और इसी के साथ-साथ उनका प्रबन्ध भी अब साधारण जनता की ओर से चुनी हुई कमेटियों के हाथ में छोड़ दिया गया ।

स्थानीय स्वतन्त्रता :—स्टुआर्ट बादशाहो के समय में बहुत से शहरो ने स्वतन्त्रता के प्रमाण पत्र (Charter) प्राप्त कर लिए थे जिनके अनुसार वे अपनी सफाई सड़को और रोशनी आदि का प्रबन्ध स्वयं करते थे लेकिन यह प्रबन्ध सन्तोषजनक न था इसलिए सन् १८३५ ई० में स्थानीय शासन (Local Government) के सुधार के लिए एक नया कानून बनाया । इस कानून के अनुसार स्थानीय शासन में सुधार किया गया और म्युनिसिपैलिटी के चुनाव में वोट देने का अधिकार उन लोगो को दिया गया जो उनके नियमो का पालन करते थे । स्थानीय म्यूनिसिपल कमेटी के मेम्बरो और उनके सभापति का चुनाव नगर के निवासियो के द्वारा होने लगा और उन कमेटियो के अधिकार भी पहले की अपेक्षा बढ़ा दिये गये । इस प्रकार के स्थानीय शासनो को "स्थानीय स्वराज्य" (Local Self Government) कहते है और देश के राजनैतिक जीवन का यह भी एक विशेष अग समझा जाता है ।

अदालती सुधार :— १८०३ ई० में पार्लियामेन्ट ने प्रीवीकौंसिल (Privy Council) की जुडीशल कमैटी (Judicial Committee) स्थापित की जो कि बाद में समस्त ब्रिटिश साम्राज्य की सबसे ऊँची अदालत होगई ।

शिक्षा में सुधार—सन् १८३३ ई० में सरकार ने उन सोसाइटियो को रुपयो से सहायता देना आरम्भ किया जिनकी देख रेख में स्कूल

जारी थे और सन् १८३९ ई० मे यह आर्थिक सहायता बढा दी गई और प्रीवी कौंसिल की एक कमेटी स्थापित हुई जो उनका प्रवन्ध किया करे। उनके निरीक्षण के लिए स्कूल इसपेक्टर लोग भी नियक्त किये गये

फैक्टरी सुधार के कानून—सन् १८३७ ई० मे लार्ड ऐस्ले के कथन के अनुसार फैक्टरी कानून (Factory Act) पास हुआ जिसके अनुसार नौ वरस से छोटे लड़के फैक्टरियो मे नौकरी नही कर सकते थे और नौ घटे से अधिक कोई काम फैक्टरियो मे नही कर सकता था। उनके लिए इसपेक्टर नियत किये गये थे जिनका कि यह कर्तव्य था कि वे फैक्टरियो मे जाकर देखे कि इस कानून के अनुसार कार्यवाही होती है या नही। ये लोग हर साल अपनी रिपोर्ट पेश करते थे जिससे लोगो का ध्यान सुधारो की ओर हो जाता था। फिर धीरे-धीरे कई और कानून वनाये गये जिन्होने इन वुराइयो को दूर कर दिया।

छठा अध्याय

महारानी विक्टोरिया का शासनकाल

(सन् १८३७ से १९०१)

विलियम चतुर्थ के कोई सन्तान न थी इसलिए सन् १८३७ ई० में इसकी मृत्यु के बाद उसके छोटे भाई एडवर्ड, ड्यूक ऑफ़ केंट (Edward, Duke of Kent) की लड़की विक्टोरिया गद्दी पर बैठी। उसके गद्दी पर बैठने के समय से ब्रिटेन का सम्बन्ध हैनोवर प्रदेश से बिल्कुल टूट गया। इसका कारण यह था कि वहाँ के कानून के अनुसार कोई स्त्री उस देश में शासन नही कर सकती थी इसलिए हैनोवर का राज्य ,विक्टोरिया के चचा ड्यूक आफ कम्बरलैण्ड को मिला। सन् १८४० ई० में विक्टोरिया का विवाह उसके ममेरे भाई एलवर्ट ऑफ़ कोबर्ग (Albert of Coburg) के साथ हो गया। उसका पति बहुत ही बुद्धिमान था उसे अपने पति से साम्राज्य के शासन प्रबन्ध मे बहुत सहायता मिली। वह हमेशा विक्टोरिया को मध्यम ठीक मार्ग अनुसरण करने की सम्मति दिया करता था। जबतक वह जीवित रहा, विक्टोरिया हमेशा उसी के कहने पर चलती रही लेकिन सन् १८६१ ई० मे राजकुमार एलवर्ट परलोक को सिधार गये।

देश की दशा—जिस समय महारानी विक्टोरिया ब्रिटिश द्वीप समूह के सिंहासन पर सुशोभित हुई, इंगलैण्ड के ऊपर उस समय कई विपत्तियाँ थी। सन् १८३२ ई० के सुधार बिल के पास हो जाने से औसत दर्जे के लोगों को पार्लियामेण्ट के मेम्बर निर्वाचित करने का अधिकार प्राप्त हो गया था लेकिन काश्तकार मजदूर और दूसरे गरीब आदमी पार्लियामेण्ट में अपने मेम्बर नही भेज सकते थे। स्थान-स्थान पर दगे और

झगडे हो रहे थे जिनका रोकना देश मे सुख और शान्ति स्थापित रखने
के लिए अत्यन्त आवश्यक था। कनाडा और आयर्लैण्ड मे भी विद्रोह
चिन्ह दृष्टिगोचर हो रहे थे। हिन्दुस्तान के निवासी अंग्रेजो के वर्ताव से
तुष्ट न थे। अनाज का भाव अभी तक तेज था कारखानों मे स्त्रियो
र मजदूरो पर सख्ती की जाती थी। शिक्षा प्रचार देश मे वहुत
न था।

विक्टोरिया के शासन काल का महत्व—महारानी विक्टोरिया
ऊपर वर्णित विपत्तियो का सामना वडी योग्यता से किया और इसी
ए उसका शासन काल इग्लैण्ड के इतिहास मे वहुत प्रसिद्ध है क्योंकि—
१) इस काल मे प्रजातन्त्र की उन्नति हुई। शासन की वागडोर धीरे-
रे अमीरो के हाथो से निकलकर गरीबो और जन साधारण के अधि-
ार मे आगई। यह सब कुछ उन सुधार कानूनो के कारण हुआ जो
ार्लियामेण्ट ने सन् १८३२, सन् १८६७ और सन् १८८४-८७ ई० मे
ास किए।

(२) इस काल मे कनाडा, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका ने वहुत
उन्नति की और उन्हे ब्रिटानियाँ की पार्लियामेण्ट ने स्वायत्त शासन अर्थात्
स्वराज्य दे दिया। अफ्रीका के कुछ और प्रदेश भी ब्रिटिश साम्राज्य मे
शामिल हुए।

(३) देश मे आवागमन के साधनो की खूब उन्नति और विस्तार
हुआ। पेनी पोस्ट, रेल, तार, जहाज, टेलीफोन आदि के कारण से
ब्रिटेन के वाहरी और भीतरी व्यापार की अति अधिक उन्नति हुई।

(४) इसके अतिरिक्त महारानी विक्टोरिया के शासन काल मे
वहुत-से काम मनुष्य जाति के हित के लिए किये गये। वहुत से
आविष्कार हुए। कला कौशल शिक्षा साहित्य आदि की वहुत उन्नति
हुई। यद्यपि इस काल मे कई एक भयकर लडाइयाँ भी लडी गई,
लेकिन कुल वातो पर विचार करने से महारानी विक्टोरिया का शासन
काल सुख-शान्ति का युग था।

कैसरे हिन्द विक्टोरिया (सन् १८७७) :—हिन्दुस्तान का बहुत कुछ भाग तो अँग्रेजो के आधीन पहले ही से हो चुका था और ईस्ट इडिया कम्पनी जो पहले केवल व्यौपारियो की एक कम्पनी थी, इस समय एक बड़े राज्य की शासन की अधिकारिणी बनी हुई थी। सन् १८५७ ई० मे एक जबर्दस्त गदर हुआ उस गदर के बाद हिन्दुस्तान मे जब शान्ति स्थापित हुई, उस समय ईस्ट इडिया कम्पनी के शासन का अन्त हुआ और महारानी विक्टोरिया ने हिन्दुस्तान के शासन की बागडोर स्वय अपने हाथो मे ले लेली। उस समय से हिन्दुस्तान का गवर्नर जनरल वाइसराय कहलाने लगा। फिर सन् १८७७ ई० में विक्टोरिया ने 'कैसरे हिन्द" की पदवी धारण की और उसके हर्ष मे हिन्दुस्तान मे बड़े-बडे शानदार उत्सव किये गये।

अपने ६३ वर्ष के शासन काल के बाद सन् १९०१ ई० मे महारानी विक्टोरिया इस असार ससार को छोड़कर स्वर्गधाम को सिधार गई। उस समय देश धनधान्य से भरा हुआ था और उसमे जातीय, और राष्ट्रीय सब प्रकार की उन्नति हुई थी इग्लैंड का राज्य दूर-दूर के देशो तक मे फैला हुआ था और योरप के राजनीतिक मैदान मे सबसे ऊँचा दर्जा इग्लैंड को ही मिला हुआ था। महारानी विक्टोरिया के शासन काल की यही शान है और इसी कारण से उसको समस्त सस्सार के शासको में एक बहुत ऊँचा दर्जा प्राप्त हुआ।

मैलबोर्न का मंत्रि-मण्डल :—विक्टोरिया के गद्दी पर बैठने के ससय मैलबोर्न प्रधान मत्री था वह व्हिगदल का एक सदस्य था और उसने बहुत योग्यता के साथ अपने कर्तव्य को पूरा किया वह विक्टोरिया को सुधारो के करने की सलाह दिया करता था उसीने वैधानिक शासन करने का तरीका बतलाया। सन् १८३७ ई० में उसे कनाडा मे एक बडे विद्रोह का सामना करना पडा और उसने उस समय बडी बुद्धिमत्ता और चतुरता से काम लिया। सन् १८३९ ई० मे एक बिल के मामले मे जो कि जमैका का बिल (Jamaica Bill) के नाम से प्रसिद्ध है, सरकार की

हार होने के कारण मैलवोर्न के व्हिग मत्री मडल को त्यागपत्र देना पडा और तव महारानी विक्टोरिया ने सर रोवर्ट पील (Peel) को मत्री मण्डल स्थापित करने के लिए वुलाया । पील ने महारानी के सामने यह शर्त पेश की कि वह अपने घर मे से उन स्त्रियो को निकाल देवे जिनका कि सवन्ध मैलव्रोर्न मन्त्रि मण्डल के कई सदस्यो से था । महारानी द्वारा उनके निकाले जाने के वाद ही वह मत्री मण्डल स्थापित करेगा । यह इतिहास मे "अन्तर्गृह का प्रश्न" (Bed chamber Question) के नाम से प्रसिद्ध है महारानी ने उन स्त्रियो को अपने पास से अलग करने से इन्कार कर दिया । इस पर पील ने टोरी मत्रि मण्डल स्थापित नही किया और व्हिग मत्रि मण्डल ही सन् १८४१ ई० तक स्थिर रहा ।

डाकखानों का सुधार (सन् १८३९) :—लार्ड मैलवोर्न ने डाकखाने के विभाग मे एक आवश्यक सुधार किया । अभी तक चिट्ठियो पर फासले के हिसाव से महसूल लगता था लेकिन पत्र पर एक सिलिग से कम महसूल कभी नही होता था । महसूल उस मनुष्य को देना पडता था जिसके नाम पत्र आता था । लार्ड मैलबोर्न ने यह कानून वना दिया कि पत्रो पर महसूल एक पेन्स से कभी अधिक न लगेगा चाहे वे कितने ही फासले से क्यो न आये हो । पत्र भेजनेवाले को उसपर एक पेन्स का टिकट लगाना पडता था ।

चार्टिस्टों का पहला आन्दोलन सन् १८३९ :—मज़दूरो का विचार था कि जिस प्रकार १८३२ के सुधार विल ने सौदागरो दूकानदारो इत्यादि की दशा को सुधार दिया है उसी प्रकार अगर उनको भी पार्लियामेन्ट के लिए मेम्वर निर्वाचित करने की आज्ञा मिल जायगी तो उनकी भी खराव हालत सुधर जायगी । इस समय गरीवो की हालत वहुत खराव थी । कलो और मशीनो के प्रयोग मे आने के कारण लाखो मज़दूर वेकार हो गये थे । मजदूरी वहुत कम थी और अनाज का भाव वहुत तेज़ हो रहा था अनेक लोगो को भूखे रहने तक की नौवत आ जाती थी । अन्त मे गरीव और निम्न श्रेणी के लोगो ने मुसीवतो से तग आकर

एक आन्दोलन आरम्भ किया जिसे चार्टिस्ट आन्दोलन (Chartist Movement) कहा जाता है। इस आन्दोलन के नेताओं की मुख्यतः छः मागें थी :—

(१) पालियामेन्ट की वैठक प्रतिवर्ष होनी चाहिए।

(२) प्रत्येक मनुष्य को जो १८ साल की आयु से अधिक है पालियामेन्ट के लिए मैम्वर निर्वाचित करने का अधिकार होना चाहिए।

(३) मेम्वरो का निर्वाचन गुप्त रूप से परची डालकर होना चाहिए।

(४) पालियामेन्ट का मैम्वर वनने के लिए जायदाद रखने की शर्त न होनी चाहिए।

(५) मैम्वरों के चुनाव के लिए देश को वरावर भागों में विभाजित करना आवश्यक है।

(६) हाऊस ऑफ़ कामन्स के मैम्वरों को वेतन मिलना चाहिए।

ये सव राजनैतिक माँगे थी। यद्यपि उनकी मुख्य शिकायत आर्थिक दशा को सुधारने की थी लेकिन मजदूरो को इस वात का पूरा विश्वास था कि अगर उनको राजनैनिक मामलो मे पूरा-पूरा हिस्सा मिल गया तो ऐसे क़ानून वनवा लेंगे जिनसे उनकी दशा भी सुधर जायगी। वस इसी विचार से उन्होने सन् १८३९ ई० में ओकोनर (O'connor) की सम्मति से पालियामेन्ट में एक प्रार्थना पत्र भेजा। लेकिन पालियामेन्ट ने उसपर विचार करने से इन्कार कर दिया इस पर देश के वहुत से भागो में विद्रोह की आग धधक उठी और लोगो ने झगड़े और विद्रोह करके देश के धन जन को वहुत हानि पहुँचाई। सन् १८४२ ई० में फिर लोगों ने दुवारा पालियामेन्ट के पास प्रार्थना पत्र भेजा कि उनकी उन छः माँगों पर विचार किया जाय लेकिन पहले की तरह इसका भी कोई फल न निकला। इसके वाद यह आन्दोलन दव गया। जव कि पील ने अनाज के कानून (Corn-Law) को तोड़ दिया और दूसरे कई सुधार किये जिनसे कि मजदूरों की अवस्था सुधर गई, सन् १८४८ ई० में यह आन्दोलन फिर नये सिरे से आरम्भ हुआ लेकिन वैलिंगटन के अच्छे प्रवन्ध के कारण

किसी प्रकार का विद्रोह नही हुआ। आन्दोलन के नेताओ ने अपना प्रार्थना पत्र वडी शान्ति से पार्लियामेन्ट मे पेश कर दिया जहाँ कि अनुसंधान करने से यह सिद्ध हुआ कि प्रार्थना पत्र पर अनेको जाली हस्ताक्षर किये गये थे। इस कपट के प्रकट हो जाने पर किसी ने भी उस प्रार्थना पत्र पर ध्यान न दिया और फिर यह आन्दोलन हमेशा के लिए दब गया।

रावर्ट पील का अनुदार मंत्रिमंडल—रावर्ट पील सन् १७८८ ई० मे उत्पन्न हुआ था। लकाशायर मे उसके पिता का एक वहुत वडा कारखाना था उसके पिता ने उसको वहुत ऊँची शिक्षा दिलवाई और सन् १८०८ ई० मे उसने ओक्सफोर्ड से वी० ए० पास किया। सन् १८०९ ई० मे टोरी दल की ओर से वह पार्लियामेन्ट का मेम्वर वना। लिवरपूल के मन्त्रिमडल के समय मे वह सन् १८१२ ई० मे सन् १८१८ ई० तक आयर्लैण्ड के मुख्य मत्री के पद पर विराजमान रहा और उसके वाद सन् १८२२ ई० मे होम सेक्रेटरी के पद पर नियुक्त हुआ। पील के प्रयत्न से फौजदारी के कानून मे सुधार किया गया जिसके अनुसार वहुत-से अपराधो की सजा कम करदी गई। लन्दन की पुलिस का सुधार भी उसी ने किया जिससे देश के वर्तमान पुलिस प्रवन्ध की नीव पडी। रावर्ट पील प्राचीनता-प्रिय पार्टी टोरी (Tory) दल से सम्वन्ध रखता था और उसने टोरी-दल को छिन्न-भिन्न होने से वचाये रक्खा और सन् १८४१ ई० मे लार्ड मैलवोर्न का मन्त्रित्व समाप्त होने पर रावर्ट पील ने अनुदार मन्त्रिमडल (Conservative Ministry) स्थापित किया।

आयर्लैण्ड की शासन नीति—सन् १८४१ ई० मे पील प्रधान मत्री हुआ और पील के सामने एक वडा टेढा प्रश्न उपस्थित था। आयर्लैण्ड निवासियो की वेचैनी इस सीमा तक पहुँच गई थी कि समस्त आयर्लैण्ड के निवासी व्रिटानिया से सवध तोडकर स्वराज्य प्राप्त करने के लिए शोर मचा रहे थे। पील ने प्रारम्भ मे वल-प्रयोग से काम लेना चाहा लेकिन फिर शीघ्र ही उसने यह अनुभव कर लिया कि इस ढग से आयर्लैण्ड को शान्त करना कठिन है। फिर उसने उनकी शिकायतो को

दूर करने के और उपाय किये। उसने आयर्लैण्ड की जाँच करने के लिए एक कमीशन भेजा जिसने यह बताया कि आयर्लैण्ड के किसानो में गरीबी फैली हुई है और वही व्याकुलता और अशान्ति का मुख्य कारण है। गरीबी के अलावा अशान्ति का दूसरा कारण यह भी था कि देश के कुल निवासी कैथोलिक मत के थे और उनको यह शिकायत थी कि ब्रिटिश सरकार उनके लाभ के लिए कुछ नही करती। इस शिकायत को दूर करने के उद्देश्य से पील ने कैथोलिक पादरियो की सस्था बेनूथ सेमीनरी (Baynooth Seminary) को सरकारी सहायता देना आरम्भ किया। इसके अतिरिक्त उसने कैथोलिक मतवालो की शिक्षा के लिए तीन कालेज खोल दिये लेकिन फिर भी आयर्लैण्ड निवासियो को इन अधूरे सुधारों से कुछ सतोष न हुआ और उनके आन्दोलन मे किसी प्रकार की कमी न आई।

आर्थिक सुधार—प्रारम्भ मे पील स्वतत्र व्यापार के सिद्धान्तो का विरोधी और रक्षित व्यापार का पक्षपाती था लेकिन देश की व्यापारिक दशा को देखकर उसको अपने विचारो मे परिवर्तन करना पडा और उसने स्वतत्र व्यापार (Free Trade) के सिद्धान्तो को मजबूर होकर स्वीकार कर लिया। पील ने लगभग १००० कर जो व्यापार की वस्तुओ पर लिए जाते थे कम कर दिये और लगभग ६०० कर बिल्कुल बन्द कर दिये। सरकार की जो आर्थिक हानि हुई उसको पील ने प्रति पौड सात पेन्स इनकमटैक्स लगाकर पूरा कर दिया।

पील ने देश की बैंको मे भी कुछ सुधार किये। सन् १८४४ ई० में उनके सुधार के लिए एक कानून बैंक चार्टर एक्ट (Bank Charter Act) बनाया गया जिसके अनुसार बैंक उतने ही नोट निकाल सकते थे जितना कि नकद रुपया उनके पास मौजूद हो। उनका उद्देश्य यह था कि कोई बैंक अपनी पूजी से अधिक नोट निकालकर देश के व्यापार को हानि न पहुँचा सके।

इसके अतिरिक्त पील ने कारखानो की दशा को भी उन्नत बनाने का प्रयत्न किया। सन् १८४२ ई० में पार्लियामेन्ट ने ये कानून पास

किया कि कोई औरत अथवा दस बरस से कम आयु का लडका खानो मे काम नही कर सकता। जिस लडके की आयु १३ वर्ष से कम है वह सप्ताह मे तीस घटे से अधिक काम करने के लिए मजबूर नही किया जा सकता। इसके दो वर्ष बाद पार्लियामैन्ट ने यह कानून बनाया कि नौ वर्ष से कम आयु के बच्चे रुई और रेशम की फैक्टरियो मे काम नही कर सकते।

अनाज का क़ानून :—नेपोलियन की लडाइयो के बाद इग्लैण्ड मे खेती की दशा अस्त-व्यस्त हो गई थी इसलिए जमीदारो को लाभ पहुँचाने के लिए पार्लियामेण्ट ने सन् १८१५ ई० मे अनाज रक्षा का कानून (Corn Law) बनाया जिसके अनुसार अनाज का आना बन्द हो गया। इस कानून से जमीदारो को तो लाभ हुआ लेकिन अनाज मँहगा हो जाने के कारण दीन प्रजा के लोग बडी मुसीबत मे पड गये। इस कानून के विरोध का आदोलन तो पहले ही दिन से आरम्भ हो गया था लेकिन सन् १८३८ ई० मे उसके विरुद्ध सख्त विरोधी आन्दोलन बढा। दैव वशात् सन् १८४५ ई० मे आयर्लैण्ड मे जहाँ कि गरीब किसान अनाज के बदले आलू खाकर ही पेट भरते थे, आलू की फसल भी नष्ट हो गई जिसका फल यह हुआ कि लाखो आदमी भूखो मरने लगे और बहुत से अपना देश छोडकर अमेरिका चले गये।

पील पहले तो अनाज के कानून (Corn Law) का पक्षपाती था लेकिन आलू के उस अकाल से उसके हृदय को बडा दु ख हुआ जिसका फल यह हुआ कि उसने सन् १८४६ ई० मे उस कानून को रद्द कर दिया। टोरी पार्टी मे अधिकतर जमीदार ही शामिल थे जो अपने स्वार्थ के कारण अनाज के कानून को कभी भी हटाना नही चाहते थे इसलिए वे पील के दुश्मन बन गये। अब कामन सभा मे उसके सहायको की सख्या कम होने लगी। प्रधान मन्त्री अपनेपद पर उसी समय तक स्थिर रह सकता है जबतक कि हाउस आफ कॉमन्स मे उसके सहायको की सख्या अधिक हो। फल यह हुआ कि सन् १८५० मे वह घोडे से गिरकर मर गया।

विदेशी नीति :—पील के मन्त्रित्वकाल मे इग्लैण्ड की वैदेशिक

नीति एवरडीन (Aberdeen) के हाथ मे थी। वह शातिप्रिय था और पामर्स्टन की तरह झगडे मोल लेने को तैयार न था। उसने फ्रान्स के साथ मित्रता करली और कनाडा तथा सयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य जो सीमा सम्वन्धी झगडा वहुत दिनो से चल रहा था वह भी समाप्त कर दिया और दोनो देशो की सीमा निश्चित हो गई।

पील की योग्यता:—१९वीं शताव्दी के प्रधान-मन्त्रियो मे पील को वहुत ऊँचा दर्जा प्राप्त है। ड्यूक आफ वैलिंगटन उसके विपय मे लिखता है कि पील के हृदय मे सत्य और न्याय को विशेप स्थान था। पील के विपय मे यह प्रसिद्ध है कि वह दल वन्दी के वखेडे पसन्द नही करता था। उसकी मुख्य विशेपता यह थी कि आवश्यकता पडने पर वह अपने विचारो को वदलने के लिए हमेशा तैयार रहता था। जिस वात को वह उचित समझता था उसे वह अपने दलवालो की परवाह न करके तुरन्त कर डालता था। आरम्भ मे वह कैथोलिक लोगो की स्वतन्त्रता का विरोधी था लेकिन वाद मे वह उसका समर्थक वन गया। इसी प्रकार से अनाज के कानून के आन्दोलन का पहले उसने विरोध किया लेकिन वाद में समर्थक वनकर उस कानून को रद्द कर दिया। अव पील ने अपने दल के राजनैतिक सिद्धान्तो मे वहुत कुछ सुधार किया। टोरी दल तवतक लकीर का फकीर और पार्लियामेण्ट का विरोधी समझा जाता था। पील ने अव उसका नाम वदलकर अपने को अनुदार दल (Conservative party) के नाम से पुकारा जाना आरम्भ किया और टैम्वर्थ के घोपणा पत्र (Tamworth Manifesto) मे उसने अपने दल के सिद्धान्त इस प्रकार रक्खे कि (१) अन्य देशो के साथ सधि करना (२) तत्कालीन शासन प्रणाली का समर्थन करना और वहुत ध्यान तथा गवेपण के वाद आवश्य-कता अनुसार उसमे सुधार करना (३) देश की आर्थिक दशा को सुधारा। उसी समय मे ह्विगदल ने भी अपना नाम वदल दिया। वे अपने दल को उदार दल (Liberal Party) अर्थात् सुधार पसन्द करने वाले दल के नाम से पुकारने लगे।

सातवाँ अध्याय

लार्ड पामर्स्टन (Palmerston)

प्रारम्भिक जीवन :- पील के बाद विक्टोरिया के शासनकाल का दूसरा प्रसिद्ध प्रधान मन्त्री लार्ड पामर्स्टन हुआ है। सन् १८०४ ई० में वह पार्लियामेण्ट का मैम्बर हुआ और अपनी योग्यता के कारण केवल २५ साल की आयु मे वह युद्ध मंत्री के पद पर नियुक्त किया गया फिर पर्याप्त समय तक वह पर राष्ट्रसचिव और गृहमंत्री रहा और सन् १८५५ ई० में वह प्रधान-मंत्री नियुक्त हुआ और लगभग डेढ़ वर्ष अर्थात् सन् १८५८ से १८५६ तक के सिवाय वह सन् १८६५ ई० तक जबकि उसकी मृत्यु हुई तबतक उसी प्रधान-मंत्रीपद पर सुशोभित रहा।

आन्तरिक नीति :— अपनी आन्तरिक नीति मे पामर्स्टन प्राचीन प्रथा को पसन्द करने वाला था और सुधारों का सख्त विरोधी था। इसके शासन काल मे पार्लियामेण्ट का दूसरा सुधार बिल पास नहीं हो सका, वह पील के सिद्धान्तों का अनुगामी था और उसका कहना था कि प्रजा को जो अधिकार मिल चुके है वे पर्याप्त है। इसके समय में ग्लैडस्टन अर्थ विभाग का मंत्री था। उसने कागज इत्यादि बहुत सी वस्तुओं पर से महसूल हटाकर स्वतन्त्र व्यापार स्थापित कर दिया जिससे इंग्लैण्ड के व्यापार का बहुत विस्तार हुआ।

वैदेशिक नीति :— इसकी वैदेशिक नीति में दो बात विशेष

रूप से पाई जाती हैं—प्रथम यह कि वह इंग्लैण्ड का प्रभाव और दबदबा दूसरे देशों में अधिक बढ़ाना चाहता था और सारे देशों में अपने देश का सिक्का जमाना चाहता था। दूसरे यह कि वह योरप के उन राष्ट्रों को जो अपने देशों में प्रजातन्त्र शासन स्थापित करना चाहते थे, उनको वह हमेशा सहायता देने को तैयार रहता था। उसने फ्राँस की सहायता लेकर वेलजियम को हालैण्ड से स्वतंत्र कराया और वेलजियम को स्वतंत्र शासन दृढ़ करने में सहायता दी। स्पेन और पोर्तुगाल में भी उसने वैधानिक शासन स्थापित करने में सहायता दी। उसने इटली के संगठन में पूरी सहायता की और वहाँ बाहरी देशों के हस्ताक्षेप को रोक दिया। उन दिनों इटली वहुत से छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था लेकिन इटली के निवासियों में जातीयता की लहर चल पड़ी और उन्होंने अब शक्तिशाली राज्य स्थापित करने के उद्देश्य से हथियार उठा लिए। उन्होंने पहले तो फ्राँस के बादशाह नेपोलियन तृतीय की सहायता से उत्तरी प्रान्तों से आस्ट्रीया के शासन को मार भगाया और फिर १८७० ई० तक सारी रियासतों ने मिलकर एक शक्तिशाली राज्य स्थापित कर लिया। इटली के निवासियों के साथ पामर्स्टन की पूरी सहानुभूति थी उसने सेना भेजकर तो उनकी सहायता न की लेकिन यूरोप के और किसी देश को भी इटली में हाथ न डालने दिया।

"पूर्वी प्रश्न" में इंग्लैण्ड का भाग:—इंगलैण्ड की नीति पूर्वी प्रश्न (Eastern Question) के सम्बन्ध में पामर्स्टन ने निश्चित की। उस समय टर्की साम्राज्य के विभिन्न ईसाई प्रान्त टर्की

मुसलमानों के शासन से प्रथक होने का आन्दोलन कर रहे थे। धार्मिक दृष्टिकोण से इन प्रान्तों का पक्ष समर्थन करना इंगलैण्ड का कर्तव्य था लेकिन पामर्स्टन की यह सम्मति थी कि इंग्लैण्ड का इसी मे लाभ है कि टर्की का राज्य नष्ट न होने पाये। अगर टर्की की शक्ति वर्बाद हो गई तो रूस वालों को एशियाई कोचाक की ओर फैलने के लिए खुला मैदान मिल जायगा। इससे एशिया मे रूस की शक्ति वहुत अधिक हो जायगी और ऐसी दशा मे इंग्लैण्ड को अपने एशिया स्थित साम्राज्य की रक्षा करने मे वड़ी कठिनता होगी। इस उद्देश्य से धार्मिक सहानुभूति को तिलाजलि देकर पामर्स्टन के कहने से अग्रेजों और फ्रांसीसियों ने क्रीमिया के युद्ध मे (Crimean War) टर्की का पक्ष लेकर रूस के विरुद्ध युद्ध किया। फ्रांसीसी और अंग्रेजी सेनाओं ने मिलकर रूस के प्रसिद्ध किलेसीवेस्टोपोल (Sebastopol) का घेरा आरम्भ किया लेकिन इसी वीच मे क्रीमिया के अत्यन्त भयानक शीतकाल आरम्भ हो जाने के कारण उनका यह प्रयत्न सफल न हो सका और उनको वह घेरा कुछ दिनों के लिए स्थगित करना पड़ा। थोड़े ही समय के वाद रूसी सेना ने वेलाक्लावा (Bala clava) और इन्करमैन (Inkermann) के युद्धों मे वुरी तरह पराजय पाई और अन्त में सीवेस्टोपोल का किला भी रूसियों के हाथ से निकल गया। तव ऐसी दशा मे रूसियों को पैरिस की संधि करनी पडी जहाँ वे इंग्लैण्ड के मन्त्री पामर्स्टन की शर्तें मानने के लिए मजवूर हुए। यह तय किया गया कि तुर्कों के साम्राज्य को किसी प्रकार हानि न पहुँचने पावे। काले सागर (Black Sea) से रूसियों को अपना

जहाजी बेड़ा हटाना पड़ा और उनके लिए सीवेस्टोपोल का किला मरम्मत कराने की भी मनाही करदी गई। इन शर्तों से रूस की समुद्री शक्ति को भारी हानि पहुँची और तुर्कों का साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने से बच गया।

चीन और हिन्दुस्तानः—पामर्स्टन के मंत्रित्व काल में अंग्रेज़ों को एशिया में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। चीन के पूर्वी तट पर अंग्रेज़ों ने हाँगकाँग टापू को अपने अधिकार में लिया लेकिन चीनी लोग अपने किनारे पर इस प्रकार के हस्ताक्षेप को सहन नहीं कर सकते थे इसलिए अंग्रेज़ों को चीन से लड़ना पड़ा जिसमें चीनवालों को मुँह की खानी पड़ी। और उनको अपने देश का व्यापारिक द्वार योरोप की अन्य जातियों के लिए खोलना पड़ा।

पामर्स्टन के मन्त्रित्व काल में ही हिन्दुस्तान में भी विद्रोह हुआ लेकिन इस योग्य राजनीतिज्ञ ने हिन्दुस्तान में पर्याप्त अंग्रेजी सेना भेज कर ब्रिटिश साम्राज्य के इस बहु मूल्य भाग को अंग्रेज़ों के हाथों से निकल जाने से बचा दिया।

पामर्स्टन के कार्य पर एक दृष्टिः—दस साल प्रधान मंत्री रहने के बाद सन् १८६५ ई० में लार्ड पामर्स्टन परलोक को सिधारा उसने आन्तरिक प्रबन्ध में सुधारों का सख्त विरोध किया लेकिन दूसरे देशों के जातीय आन्दोलनों की वह सर्वदा सहायता करता था इस लिए हम कह सकते हैं कि वह स्वदेश में अनुदार था और विदेशों में क्रान्तिकारी (A conservative at home and Revolution-

any abroad) इसका फल यह हुआ कि इंग्लैण्ड का गौरव विदे-शियों की दृष्टि में बहुत बढ़ गया और अंग्रेज़ राष्ट्रीयता के समर्थक समझे जाने लगे। पामर्स्टन एक शक्तिशाली प्रधान मन्त्री था और राज्य प्रबन्ध में वह अपने साथियों की सम्मति की बहुत कम परवाह करता था। कभी कभी तो वह महारानी विक्टोरिया तक को भी अपने कार्यों का पता न लगने देता था इसी कारण से एक बार सन् १८५१ ई० में महारानी ने उसे वैदेशिक मन्त्री के पद से अलग कर दिया था लेकिन ऐसे योग्य राजनीतिज्ञ के बिना राज्य का काम ही न चल सका इसलिए वह जल्दी ही फिर अपने पद पर नियुक्त कर दिया गया।

डिसरैली और ग्लैडस्टन

(Disraeli and Gladstone)

पामर्स्टन की मृत्यु के बाद ब्रिटेन में दो योग्य राजनीतिज्ञों का नाम प्रसिद्ध होना आरम्भ हुआ, एक डिसरैली और दूसरा ग्लैडस्टन। इन दोनों के राजनैतिक सिद्धान्त एक दूसरे के विरुद्ध थे और इन दोनों में मन्त्री मण्डल का नेता अर्थात प्रधान मन्त्री बनने के लिए खूब मुकाबला रहा। कभी इसकी और कभी उसकी विजय हुई। इस प्रकार वर्षों तक यही दोनों राजनैतिक जगत् में मुकाबले के लीडर रहे।

डिसरैली का प्रारम्भिक जीवन :—डिसरैली जाति का यहूदी था और उसने उपन्यासों के द्वारा अपने राजनैतिक विचारों

को प्रकाशित करके पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त करली थी। सन् १८३७ ई० में वह पार्लियामैण्ट का मेम्बर होगया और थोड़े ही समय में प्राचीनता प्रिय अनुदार दल का नेता बन गया। इसके नेतृत्व में उस पार्टी ने अपने सिद्धान्तों में बहुत से परिवर्तन किए और सुधारक दल की प्रणाली को अपनाना आरम्भ किया। डिसरैली ने मज़दूरों की सहायता करना अपना मुख्य उद्देश्य बनाया। उसका विचार था कि मजदूर पार्लियामेण्ट में जगह पाने के अधिकारी हैं इसलिए उसने सन १८६७ ई० में पार्लियामैण्ट के सुधार का दूसरा क़ानून पास कराया।

सन १८६५ ई० में पामर्स्टन की मृत्यु के बाद रसेल दूसरी बार प्रधान मन्त्री बना और उसके आठ महीने बाद कंजर्वेटिव अर्थात अनुदार दल का नेता डर्बी तीसरी बार प्रधान मन्त्री बना। इन दिनों मज़दूर पार्लियामैण्ट में जगह पाने के प्रयत्न में थे। हाउस औफ़ कामन्स के मेम्बर इस ओर बहुत कम ध्यान देते थे मगर उनका नेता डिसरैली इस बात को उचित समझता था कि मजदूर पार्लिया-मैण्ट के अन्दर जगह पाने के अधिकारी हों और इसलिए उसने दूसरा बिल पेश किया।

दूसरा सुधार बिल (सन् १८६७ ई०):—रसैल के समय में जो कि एक ह्विग था सुधार बिल पेश हो चुका था लेकिन वह पास नहीं हुआ था। डिसरैली ने दूसरा सुधार बिल पार्लियामेण्ट में पेश किया मगर पार्लियामेण्ट ने उससे मतभेद प्रकट किया अतएव डिसरैली का सुधार बिल भी पास न हो सका। कुछ समय के बाद उसने फिर उसे पार्लियामेन्ट में पेश किया मगर इस बार भी बहुत

से मैम्बरों ने उसके विरुद्ध आवाज उठाई। मन्त्री मण्डल के तीन मैम्बरों ने त्यागपत्र दे दिया। डर्बी स्वयं अनुदार दल का नेता था। लेकिन उसने डिसरैली का मुक़ाबिला अधिक न करके सुधार बिल को पास होने का अवसर दिया। अतएव सुधार बिल दोनों हाउसों में पास हो गया। इससे निम्न लिखित प्रकार से लोगों को वोट देने का अधिकार मिला:—

(१) कस्बों और शहरों मे उन लोगों को वोट देने का अधिकार मिला जो या तो किसी मकान के मालिक थे और सरकार को हाऊस टैक्ट देते थे या दस पौन्ड सालाना मकान का किराया देते थे।

(२) प्रान्तों मे उन लोगों को वोट देने का अधिकार मिला जो १२ पौन्ड सालाना मकान का किराया या खेत का लगान देते थे।

इस दूसरे सुधार बिल (Second Reform Bill) से वोट देने वालों की संख्या पहले की अपेक्षा बहुत कम होगई। अब शहर के मामूली कारीगरों, मजदूरों को भी वोट देने का अधिकार प्राप्त हो गया। लेकिन ग्रामों में मजदूरों को अभी तक वोट देने का अधिकार नहीं मिला था। सभी ने डिसरैली के इस साहसी कार्य (Leap in the Dark) की प्रशंसा की। सन् १८६८ ई० मे इसी प्रकार के सुधार बिल स्कोटलैण्ड और आयर्लैण्ड के लिए भी पास हुए जिनके द्वारा वहाँ भी वही परिवर्तन हुए जो इंग्लैंड में हुए थे।

सन् १८६८ ई० में लार्ड डर्बी के त्यागपत्र देने पर डिसरैली प्रधान मंत्री नियुक्त हुआ लेकिन उसी साल पार्लियामेण्ट का नया चुनाव हुआ और उसमें अनुदारदल की हार हुई और लिबरल पार्टी

या उदार दल की विजय हुई इसलिए इसी साल के अन्त में डिसरैली ने त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद सन १८७४ ई० में डिसरैली फिर प्रधान मंत्री नियुक्त हुआ और सन् १८८० ई० तक इस पद पर सुशोभित रहा।

डिसरैली एक ज़बर्दस्त साम्राज्यवादी (Imperialist) था और महारानी विक्टोरिया उसके पक्ष में थी। वह इस कन्जरवेटिव प्रधानमन्त्री को बहुत पसंद करती थी।

बालकन युद्ध :—तुर्कों ने अपनी तमाम प्रतिज्ञाओं के विरुद्ध अपनी ईसाई प्रजा के साथ अनुचित व्यवहार जारी रक्खा इसलिए सन् १८७५ ई० में बोसानियाँ और हरजीगोविना के प्रान्तों ने विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह सर्वीया और बलगेरिया तक फैल गया। सन १८७६ ई० में बलगेरिया की प्रजा के ऊपर तुर्कों के भयंकर अत्याचारों के समाचार प्रकाशित हुए। इन बातों से ग्लेडस्टन आग बबूला हो गया और उसने अपने लेखों और व्याख्यानों से अंग्रेज़ों को तुर्कों के विरुद्ध उभारना आरम्भ किया। उसने कहा कि यूरोप के तमाम राष्ट्रों को मिलकर तुर्कों को इस बात पर मजबूर कर देना चाहिए कि वह अपना बोरिया बिस्तरा बांधकर योरप से निकल जाय। इन व्याख्यानों से इंग्लैंड में तुर्कों के विरुद्ध घृणा और द्वेष के भाव भड़क उठे। अन्त में सन १८७७ ई० में रूस के जार ने जो तुर्कों का प्राचीन शत्रु था उनके विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और रूसी सेनाओं ने टर्की पर आक्रमण कर दिया। तुर्कों ने बड़ी वीरता से उनका सामना किया लेकिन रूसी सेनाओं के सामने उनका कुछ बस न चला। तब तुर्कों ने रूस से संधि करली लेकिन अँग्रेज़ उस

संधि से अप्रसन्न हो गये। उनका विचार था कि उस संधि से रूसियों का प्रभाव टर्की साम्राज्य में बहुत बढ़ जायगा जो संभव है कि किसी समय मिश्र और भारत के लिए भय का कारण बन जाय। इसपर डिसरैली ने रूस के जार से साफ़ तौर पर कह दिया कि टर्की के भविष्य का मामला यूरोप के बड़े-बड़े राष्ट्रों के पारस्परिक परामर्श से तय होना चाहिए। युद्ध के भय से जार ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। बर्लिन में एक सभा बुलाई गई जिसमें डिसरैली स्वयं उपस्थित हुआ। उसके प्रयत्नों से सन् १८७८ ई० मे बर्लिन के संधि पत्र पर सबके हस्ताक्षर होगये। इस बर्लिन की कांग्रेस के मुख्य निश्चय निम्न प्रकार थे:—

(१) बोसानियाँ और हरजीगोबीना आस्ट्रिया के राज्य में सम्मिलित करदिये जांय।

(२) सरबिया, रूमानियाँ और मान्टीनीग्रों बिलकुल स्वतंत्र राज्य रहे। इस प्रकार टर्की के कई प्रान्तों के स्वतन्त्र हो जाने के कारण टर्की की शक्ति अवश्य कम हो गई लेकिन रूस उससे कोई अनुचित लाभ नहीं उठा सका।

(३) ब्रिटेन को सायप्रस का टापू मिला जिससे ब्रिटिश सामाज्य के एशिया स्थित भागों की रक्षा मे बडी सुगमता हो गई।

स्वेज नहर:—सन् १८७५ ई० में मिश्र में एक महत्वपूर्ण घटना उपस्थित हुई। मिश्र का खदीव बहुत विलास प्रिय था व्यय बहुत किया करता था। इस लिए उसका ख़जाना खाली हो गया तब उसने स्वेज नहर कम्पनी के पौने दो लाख हिस्से जो उसके अधिकार

में थे वेचने का इरादा किया। डिसरैली को इस बात का पता लग गया। अतएव उसने कई करोड़ रुपये देकर ये तमाम हिस्से ख़रीद लिए। इस समय से नहर स्वेज़ अँग्रेजों के हाथ में आ गई जिससे उनको बहुत लाभ हुआ और उसीके द्वारा धीरे-धीरे सम्पूर्ण मिश्र और सूडान भी उनके अधिकार में आ गये।

सन १८७७ ई० में डिसरली के कहने पर पार्लियामेन्ट ने महारानी विक्टोरिया को "क़ैसर-हिन्द" पदवी दी। डिसरैली के रूस के विरुद्ध टर्की को सहायता देने की नीति का ग्लैडस्टन ने बहुत विरोध किया। उस समय ईसाई प्रान्तों के ऊपर अत्याचार करने के कारण इंग्लैंड के निवासियों की सहानुभूति मुसलमान तुर्कों के साथ बिलकुल नहीं थी इसलिए सन १८८० ई० के चुनाव में डिसरैली की अनुदार पार्टी की संख्या बहुत कम रही, और उस सूरत में डिसरैली को त्याग पत्र देना पड़ा। उसके एक साल बाद ही वह परलोक गामी हुआ। डिसरैली को लार्ड वेकन्स फील्ड (Lord Beacons field) भी कहते हैं क्योंकि मृत्यु से कुछ साल पहले वह लार्ड सभा का मैम्बर बन गया था।

ग्लैडस्टन सन् १८३२ से १८६३ तकः—सन् १८०६ ई० में ग्लैडस्टन लिवरपूल नगर में उत्पन्न हुआ था। उसका बाप बहुत धनी व्यापारी था उसने अपने बेटे को बहुत अच्छी शिक्षा दिलवाई। वह केवल २२ वर्ष की अवस्था में सन् १८३२ ई० में पार्लियामैन्ट का मेम्बर चुना गया और दो अवसरों के अतिरिक्त हर बार सन् १८६५ ई० तक मेम्बर चुना जाता रहा, प्रारम्भ में वह प्राचीनता

प्रिय अनुदार दल (Conservative Party) में था लेकिन धीरे धीरे उसके विचारों में परिवर्तन होने के कारण वह पक्का उदारदली (Liberal) होगया। पील ने उसे योग्य समझकर अपने मंत्रियों के मण्डल में जगह दी और व्यापार विभाग का काम उसके सुपुर्द किया सन् १८५२ ई० में वह अर्थ विभाग का मंत्री नियुक्त किया गया तब उसने बहुत सी व्यापार की वस्तुओं से चुंगी उठा दी। सन् १८५६ ई० मे वह लार्ड पामर्स्टन के मंत्री मंडल मे अर्थ विभाग का मन्त्री नियुक्त हुआ। दो साल बाद उसने कागज आदि बहुत सी वस्तुओं पर से चुँगी हटाकर देश में पूरे तौर से स्वतंत्र व्यापार को प्रचलित कर दिया। उसका यश गौरव बढ़ता ही गया। यहांतक कि वह लिब-रल पार्टी का लीडर होकर सन १८६८ ई० मे पार्लियामेण्ट के निर्वाचन मे प्रधान मन्त्री हो गया और सन् १८७४ ई० तक उस पद पर सुशोभित रहा उसके बाद वह तीन बार फिर प्रधान मन्त्री बना, दूसरी बार सन् १८८० से सन् १८८५ तक। तीसरी बार १८८६ मे और चौथी बार १८६२ से १८६४ तक। सन १८६५ ई० मे वह वृद्धा वस्था के कारण राजनैतिक मामलों से बिल्कुल अलग हो गया और सन् १८६७ ई० में वह इस संसार से चल बसा।

ग्लैडस्टन बहुत परिश्रमी था और दिन रात देश की उन्नति और संमृद्धि के लिए प्रयत्नवान था। उसे अपने उत्तरदायित्व का बहुत खयाल रहता था और कर्तव्यों के पालन मे वह कभी किसी प्रकार की कमी नहीं करता था। सारे जीवन में चार बातें उसकी दृष्टि के सम्मुख रहीं :—

(१) वह इंगलैण्ड के गौरव का सर्वदा समर्थक था। और उसकी उन्नति के लिए हमेशा प्रयत्न करता था।

(२) देश के खर्चों में कमी करने का विचार हमेशा रखता था।

(३) वह शान्ति प्रिय और बुद्धिमान मन्त्री था और हमेशा युद्धों और झगड़ों से बचना चाहता था।

(४) उसे आयरलैण्ड से बहुत सहानुभूति थी और वह हमेशा उसे स्वतंत्रता दिलाने का प्रयत्न करता था।

ग्लैडस्टन का प्रथम मंत्रित्व (सन् १८६८ से १८७४):—आयरलैन्ड के विषय में दो ख़ास शिकायतें थीं। प्रथम भूमि के विषय में और दूसरी धर्म के विषय में। भूमि के विषय में शिकायत यह थी कि आयरलैण्ड के कुल क्षेत्रफल का तीन चौथाई वहाँ के असली निवासियों से छीन लिया गया था। और अंग्रेज ज़मीदार जो प्रोटैस्टेन्ट थे वहाँ बुलाकर बसा दिये गये थे और अब ज़मीदारों की नसल (जाति) और धर्म दोनों उनके आसामियों के विरुद्ध थे। आयरलैण्ड के निवासियों को जो भूमि खेती करने के लिए दी जाती थी उसके बहुत से टुकड़े कर दिये जाते थे और उनपर अधिक-से-अधिक लगान लिया जाता था। जो आसामी अपनी ज़मीन को अच्छी बना लेता था उसका लगान तुरन्त बढ़ा दिया जाता था और अगर वह चुकाने के लिए तैयार न हो तो फिर वह उससे लेकर किसी और को जो अधिक लगान देने पर तैयार हो दे दी जाती थी। इस दुरवस्था को सुधारने और उसमें

उन्नति करने के लिए जो प्रयत्न किये गये उनका लार्ड सभा में ऐसा विरोध हुआ कि मजबूर होकर उनको छोड़ना पड़ा। ग्लैडस्टन सबसे पहला राजनीतिज्ञ था जिसने आयरलैण्ड के मामलों को अपने हाथ में लिया। उसने सन् १८७० ई० मे जो भूमि का कानून (Land Act) पास कराया वह कुछ अधिक लाभकारी न था मगर आयरलैन्ड के सुधार की यह पहली सीढ़ी थी। ११ वर्ष के बाद एक दूसरा कानून पास हुआ जिससे किसानों का अधिकार अपने खेतों के ऊपर अधिक मजबूत हो गया और लगान का रुपया उचित मात्रा मे लिया जाने लगा।

ग्लैडस्टन के सुधारों में मुख्यतम सन १८७० ई० का मिस्टर डबल्यू फौरेस्टर का शिक्षाबिल है जिसके अनुसार हर जिले को अधिकार दिया गया था कि स्कूल बोर्ड स्थापित करे जो शिक्षा प्रचार के लिए लोगों से एक कर वसूल करे और बोर्ड स्कूल बनाये। इन स्कूलों के चलाने के लिए कुछ रुपया विद्यार्थियों के माता पिताओं से लिया गया कुछ सरकार ने दिया और कुछ करों द्वारा प्राप्त हुआ। वालण्टरी स्कूलों को उन करों मे से कुछ न मिलता था लेकिन सरकार अपने पास से उनको अधिक रकमे देती थी। कुछ साल बाद माता पिताओं को मजबूर किया गया कि वे अपने बच्चों को इन स्कूलों में अवश्य भेजें अर्थात् बालकों की शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। सन १८६१ ई० मे बोर्ड स्कूलों मे शिक्षा मुफ्त दी जाने लगी और १८६१ ई० में शिक्षा बोर्ड (Board of Education) स्थापित हुआ। शिक्षा के अतिरिक्त दीन बालकों को खाना भी मुफ्त दिया जाता था।

दूसरा, शिक्षा सम्बन्धी सुधार यह हुआ कि औक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज के विश्वविद्यालयों में धार्मिक शिक्षा का होना बन्द कर दिया गया जिसके कारण से डिसेण्टर (Dissenter) और रोमन कैथोलिक लोग भी बिना किसी रुकावट के अब शिक्षा पाने लगे।

तीसरे, सन् १८७० ई० में सिविल सर्विस में जगह पाने के लिए योग्यता की परीक्षा आवश्यक बना दी गई। सन् १८७१ ई० एक कानून बना दिया गया कि लोग छः वर्ष तक सेना में नौकरी करके घर वापिस आ सकते हैं और निजी काम कर सकते हैं मगर आवश्यकता पड़ने पर देश की रक्षा के लिए उन्हे फिर सेना में काम करना पड़ेगा। उसी साल एक यह भी बिल पास हुआ जिससे सेना में रुपया देकर ऊँचा पद पाने की रीति तोड़ दी गई। सैनिक पद पहले पहल अब केवल उन्हीं लोगों को प्राप्त हो सकते थे जो कि उनके योग्य थे, न कि उनको जो प्रभावशाली और धनी थे।

सन् १८७२ ई० में बेलट एक्ट (Ballot Act) पास हुआ जिसके अनुसार लोगों को गुप्त रूप से वोट देने का अधिकार प्राप्त हो गया। उससे किसी को मालूम नहीं होने पाता था कि वोट देने वाले ने किसके पक्ष में अपना वोट दिया है।

आयर्लैण्ड में भी ग्लैडस्टन ने बहुत-से लाभदायक सुधार किये। आयर्लैण्ड में स्वतंत्रता के लिए फिर झगड़ा खड़ा हो गया। बहुत-से सताये हुए आयरिश लोगों ने जो अमेरिका में जा बसे थे फीनियन (Fenian) नामी एक दल स्थापित किया जिसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन को हटाकर आयर्लैण्ड को स्वतंत्र करा देना था। ग्लैडस्टन ने

प्रधान मंत्री होते ही आयर्लैण्ड की समस्या को हल करने का यत्न किया। उसने आयरिस लोगों की अशान्ति के तीन मुख्य कारण मालूम किये :—

एक धार्मिक, दूसरा किसानों की आर्थिक दशा का खराब होना और तीसरा राजनैतिक था।

प्रथम धार्मिक शिकायत यह थी कि आयर्लैण्ड में सरकार की ओर से गिरजा स्थापित था जिसके खर्च के लिए सरकार वहां के कैथोलिक निवासियों से धार्मिक कर वसूल करती थी कैथोलिक प्रजा इससे बहुत अप्रसन्न थी। ग्लैडस्टन ने आयर्लैण्ड के अंग्रेजी गिरजा (Anglican Church) को सन् १८६९ ई० में सरकारी सहायता देना बन्द कर दिया और इस प्रकार अब प्रोटैस्टैण्ट और कैथोलिक गिरजों में कोई अन्तर न रहा।

आयर्लैण्ड के किसानों की आर्थिक दशा खराब होने का मुख्य कारण यह था कि आयर्लैण्ड के कुल क्षेत्रफल का तीन चौथाई वहां के असली निवासियों से छीन लिया गया था और अंग्रेजी जमींदार जो प्रोटैस्टेण्ट थे वहां लाकर बसा दिये गये थे और अब जमीदारों की जात और धर्म दोनों इनके आसामियों से भिन्न थे। आयर्लैण्ड के निवासियों को जो भूमि खेती करने के लिए दी जाती थी उसके विभिन्न टुकड़े कर दिये जाते थे और उन पर अधिक-से-अधिक लगान लिया जाता था। जो आसामी अपनी भूमि को अच्छा बना लेता था उसका लगान तुरन्त बढ़ा दिया जाता था और अगर वह उसको देने पर तैयार न हों तो फिर वह उससे लेकर किसी और

को दे दी जाती थी जो अधिक लगान देने पर तैयार होता था। इस शिकायत को दूर करने के लिए ग्लैडस्टन ने सन १८७० ई० पहला कृषि कानून (First Irish Land Act) बनाया जिसके अनुसार जब तक किसान लगान देता रहे जमीन से बेदखल नहीं कराया जायगा, और अगर जमीदार किसानों को जमीन से बेदखल कराना चाहे तो उसे उस उन्नति का बदला देना पड़ेगा जो किसान ने उस भूमि में की हो। लेकिन इससे आयर्लैण्ड के लोग प्रसन्न न हुए क्योंकि लगान बहुत अधिक था और उसको कम करने के लिए कुछ नहीं किया गया था। इन सुधारों से आयरिश प्रजा सन्तुष्ट न हुई और झगड़ा बराबर जारी रहा जिसमें बहुत से प्रोटैस्टेण्ट जमीदार मार डाले गये। इस पर ग्लैडस्टन को भी दमन कारी कानून से काम लेना पड़ा।

वैदेशिक नीति :—ग्लैडस्टन का विचार था कि अन्य देशों के झगड़ों को युद्ध और लड़ाई के बजाय यथाशक्ति आपसी समझौते ही से शान्त करा दियां जाय इस कारण से उसकी गिनती इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध शान्तिप्रिय मंत्रियों में की जाती है। सन् १८७० ई० में प्रशिया और फ्रांस के बीच एक बड़ा युद्ध छिड़ गया जिसमें प्रशिया की विजय हुई। इस पराजय के कारण फ्रांस के बादशाह नेपोलियन तृतीय के शासन का अन्त हो गया और वहाँ प्रजातन्त्र शासन स्थापित हो गया। ग्लैडस्टन ने किसी की भी सहायना नहीं की लेकिन इतना अवश्य किया कि बेलजियम में किसी को प्रवेश न करने दिया। फिर भी बहुत-से अंग्रेज़ी राजनीतिज्ञों का यह विचार था कि इस नीति से योरप के राजनैतिक क्षेत्र में इंग्लैण्ड का कुछ आदर

न रहेगा। इसी समय इटली के बादशाह ने पोप से रोम छीनकर उसे अपनी राजधानी बनाया। इसी प्रकार योरप में कई और घटनाएं हुईं लेकिन ग्लैडस्टन ने इंग्लैण्ड को इन सब झगड़ों से दूर रक्खा।

रूस बराबर मध्यएशिया में शक्ति बढ़ाता हुआ अफग़ानिस्तान की सीमा तक पहुंच गया। ग्लैडस्टन ने युद्ध के बजाय उसके साथ संधि की जिसके अनुसार दोनों देशों ने अफग़ानिस्तान की स्वतंत्रता की रक्षा का वचन दिया। रूस ने पेरिस के संधि नामे को तोड़कर काले सागर पर अपना अधिकार जमा लिया। ग्लैडस्टन ने उसपर भी कुछ न किया। इसपर अंगरेजी प्रजा उससे बहुत अप्रसन्न होगई।

इसी प्रकार जब संयुक्त राज्य अमेरिका की उत्तरी और दक्षिणी रियासतों में परस्पर युद्ध आरम्भ हुआ तो उस समय भी ग्लैडस्टन अपनी शान्ति प्रिय नीति पर अटल रहा और उसने किसी ओर का भी पक्ष न लिया मगर सरकारी आज्ञा न होने पर भी इंग्लैन्ड में अलबामा (Albama) नाम एक जहाज दक्षिणी रियासतों की सहायता के लिए बनाया गया जिसने अमेरिका पहुचकर उत्तरी रियासतों को बहुत हानि पहुचाई। इस समाचार के मिलने ही ग्लैडस्टन ने संयुक्त राज्य अमेरिका से समझौता कर लिया और अलबामा जहाज से जिन रियासतों को हानि पहुँची थी उनको उतना धन देकर उन्हे सन्तुष्ट कर दिया। उसकी इस शान्ति प्रिय नीति पर डिसरैली ने उसको बहुत बदनाम किया और सन् १८७४ के निर्वाचन में ग्लैडस्टन के समर्थकों की संख्या बहुत कम रह गई इसलिए उसको अपने प्रधान मन्त्री के पद से त्याग पत्र देना पड़ा।

ग्लैस्टन फिर दूसरी बार सन् १८८० ई० में प्रधान मन्त्री के पद पर नियुक्त हुआ और सन १८८५ ई० तक यह काम करता रहा। दूसरे मन्त्रित्व में सब से श्रेष्ठ सुधार सन १८८४ ई० का पार्लियामैन्ट का तीसरा सुधार क़ानून था जिसके अनुसार ग्रामों और शहरों के मकानदार को वोट देने का अधिकार हो गया। अब पार्लियामेन्ट में प्रत्येक श्रेणी के प्रतिनिधि पहुँचने लगे और हाउस औफ़ कामन्स जल्दी असली जातीय सभा बन गई। इस क़ानून के साथ-साथ एक क़ानून "पुनः बटवारे का क़ानून" (Redistribution Act) और बना जिसके अनुसार वोट देनेवालों की संख्या के हिसाब से देश बराबर के भागों में बाँट दिया गया। इसके अतिरिक्त सन १८८० ई० में एक क़ानून और बना जिसके अनुसार कारखानों के स्वामी उन हानियों के लिये जिम्मेदार बने जो मज़दूरों को कारख़ानों में काम करते समय पहुँचती थी। सन १८८२ ई० में एक क़ानून और बना जिसके अनुसार विवाहित स्त्रियों को अपने खुद के कमाये हुए धन सम्पत्ति पर पूरा अधिकार होगया। अब तक इसपर उनके खानदान वालों का अधिकार रहता था। सन् १८८३ ई० में ग्लैडस्टन ने किसानों के लिए एक और क़ानून बनाया जिससे यह हुआ कि अगर कोई ज़मीदार किसी किसान को बेदख़ल करदे तो उसको जो कुछ किसान ने भूमि में उन्नति की है उस उन्नति का बदला देना पड़ेगा।

ग्लैडस्टन को दूसरे मंत्रित्व में आयरलैन्ड के कारण कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं, आयरलैन्ड की तीन मुख्य शिकायतें थीं:—पहले धार्मिक, दूसरे किसानों

की आर्थिक दशा का खराब होना, और तीसरे राजनैतिक।

ग्लैडस्टन ने अपने पहले मन्त्रित्व में पहली दो शिकायतों को दूर करने का यत्न किया लेकिन उसको दूसरी शिकायत दूर करने में सफलता प्राप्त नहीं हुई। आयरलैन्ड की तीसरी शिकायत राजनैतिक थी। वह यह थी कि एकता के कानून के स्वीकार होते ही आयरलैन्ड की जातीय पार्लियामेन्ट तोडदी गई थी और आयरलैंड के प्रोटेस्टेन्टों के लिए इंगलैन्ड की पार्लियामेन्ट मे जगह नियत कर दी गई थीं। लेकिन आयरलैंड के लोग इससे सन्तुष्ट न थे। वे चाहते थे कि इंगलैन्ड और आयरलैंड की एकता का कानून तोड दिया जाय और आयरलैंड मे नये सिरे से एक पार्लियामेन्ट स्थापित कर दी जाय। ग्लैडस्टन ने अपने पहले मन्त्रित्व मे आयरलैन्ड वालो की धार्मिक शिकायत दूर करने का यत्न किया और आयरलैन्ड के किसानों की आर्थिक दशा सुधारने का यत्न किया लेकिन वह उसमे सफल न हो सका। और तीसरी शिकायत यथा पूर्व वैसी ही रही इसलिए १८७९ ई० मे आयरलैंड वालों ने अपनी शिकायतों को सरकार के कानों तक पहुँचाने के लिए एक सभा स्थापित की जिसे लैन्ड लीग (Land League) कहते हैं उसकी शाखाएं धीरे-धीरे समस्त देश मे फैल गई और इस संस्था ने देश मे बड़ी हलचल मचा दी। आयरलैन्ड वालों ने जमीदारों को तंग किया और कही-कहीं उनका वध भी कर डाला गया।

सन् १८७० ई० मे आयरलैन्ड मे एक होमरूल पार्टी (Home Rule Party) स्थापित हुई और बहुत जल्द उस पार्टी के लोगों

ने पार्लियामेन्ट में आयरलैन्ड के मेम्बरों की बहुत सी जगहें प्राप्त कर लीं। सन् १८७७ ई० में चार्ल्स पार्नेल (Parnell) होमरूल पार्टी का लीडर होगया और उसने और दूसरे आयरिश मेम्बरों ने पार्लिया-मेन्ट में भी गड़बड़ी मचा दी। वे सरकारी कामों में जानबूझकर यथा शक्ति रुकावटें डालते थे और लम्बे-लम्बे व्याख्यान देकर कभी-कभी सारी रात पार्लियामेन्ट को बिठाए रखते थे ताकि आयरलैंड के मामलों की ओर उनका ध्यान खिंच जाय। सन् १८७० ई० के लैंड एक्ट के होते हुए भी आसामी अपनी जमीनों से निकाल दिये जाते थे इस लिए सन् १८८० ई० की एक सभा में पार्नेल ने कहा कि अगर कोई आयरलैण्ड का रहनेवाला उस भूमि को लगान पर लेने के लिए तैयार हो जो कि आसामी से छीनली गई हैं तो उसको तुरन्त सोसाइटी से अलग कर देना चाहिए। इस नियम का सबसे पहला शिकार कैप्टन बायकाट नामी पुरुष हुआ। उसी के नाम से शब्द "बायकाट" निकला है।

सन् १८८१ ई० में ग्लैडस्टन ने आयरलैण्ड वालों को प्रसन्न करने के लिए दूसरा लैन्ड एक्ट बनाया इसके अनुसार एक लैन्ड कोर्ट नियुक्त किया गया जिसमें कि यह तय किया जाता था कि किसान क्या लगान देगा और एक बार जो लगान तय हो जाय उसमें १५ साल तक अधिकता नहीं की जा सकती थी। और इन १५ सालों में जमींदार किसान को लगान न देने पर ही बेदखल कर सकता था लेकिन झगड़ा इस सुधार से भी दूर न हुआ और सन् १८८१ ई० के लैन्ड एक्ट के पास होने से हलचल और भी बढ़ गई।

तब सरकार ने भी दमनकारी कानून से काम लिया। पार्नल और बहुत से लोग कैद किये गये और लैन्ड लीग को गैर कानूनी ठहराया गया। सन् १८८२ ई० मे डबलिन शहर के विद्रोहियों ने आयरलैण्ड के चीफ़ सेक्रेटरी की हत्या कर डाली। अब सरकार ने और सख्त कानून बनाए।

वैदेशिक नीति—दूसरी बार के मन्त्रित्व के समय मे उसने दक्षिणी अफ्रीका की बोअर जाति (Boer) से जो ब्रिटेन के शासन से स्वतंत्र होने के लिए युद्ध कर रही थी, संधि कर ली और उनको स्थापित ट्रांसवाल की प्रजातंत्र रियासत की स्वतंत्रता को स्वीकार कर लिया, मिश्र मे अरबी पाशा के अंग्रेजों के विरुद्ध आन्दोलन को दबाने मे ग्लैडस्टन सफल रहा और मिश्र का शासन ब्रिटेन की संरक्षकता मे आ गया मगर ग्लैडस्टन सूडान के विद्रोह को नहीं दबा सका और उसकी भेजी हुई अंग्रेजी सेना का कमान्डर जनरल गार्डन (Gordon) स्वयं सूडान मे मारा गया।

ग्लैडस्टन की इस शान्ति प्रिय नीति को लोगों ने पसंद नहीं किया और इस कारण से उसे अपने दूसरे मन्त्रित्व से त्याग पत्र देना पड़ा।

ग्लैडस्टन तीसरी बार सन् १८८६ ई० में फिर प्रधान मंत्री हुआ अबके उसने मंत्री मंडल बनाकर आयरिश लोगों के झगड़ों के सम्बन्ध मे यह निश्चय किया कि बिना उनको स्वराज्य दिये आयरलैन्ड मे शान्ति स्थापित नही हो सकती। इसी उद्देश्य से उसने होम रूल बिल पेश किया। उसका प्रस्ताव यह था कि डबलिन मे एक अलग पार्लियामेन्ट केवल आयरलैन्ड के मामलों पर विचार करने

के लिए स्थापित की जाय। इस होमरूल बिल का पार्लियामेन्ट में और समस्त देश में सख्त विरोध हुआ और लिबरल पार्टी के दो दल हो गये:—एक दल एकता वादी उदार दल (Liberal Unionist) कहलाया जिसका कि नेता जोजफ चैम्बरलैन था जो बाद में कंजरवेटिव पार्टी में शामिल हो गया। आपस के इस मतभेद के कारण वह बिल पास नहीं हो सका और इसी बात पर ग्लैडस्टन को त्याग पत्र देना पड़ा।

चौथीबार वह फिर सन् १८९२ ई० से १८९४ तक प्रधानमंत्री के पदपर रहा और सन १८९२ ई० में उसने फिर होमरूल बिल पेश किया। इस बार भी लार्ड सभा ने उसको अस्वीकृत कर दिया। और तब ग्लैडस्टन को फिर अपना पद त्याग करना पड़ा इसके बाद सन् १८९७ ई० में वह परलोकवासी हो गया। लार्ड सेलिसबरी ने सन १८९५ ई० में दूसरा कंजरवेटिव मन्त्रि मडण्ल तैयार किया और सन १९०२ तक वह प्रधान मन्त्री रहा। इस बीच में होमरूल का प्रश्न सन् १९१२ तक के लिये स्थगित हो गया।

आठवाँ अध्याय

एडवर्ड सप्तम

(सन् १६०१ से १६१० तक)

सन १६०१ ई० मे महारानी विक्टोरिया के मरने पर उसका सबसे बड़ा पुत्र एडवर्ड सप्तम ६० साल की अवस्था मे गद्दी पर बैठा यह शान्ति प्रिय बादशाह था और उसने अपने व्यक्तिगत प्रभाव से योरोप को कई बार युद्धों से बचाया इसलिए यह इतिहास मे शान्ति कर्त्ता (Peace-Maker) के नाम से प्रसिद्ध है।

प्रधान मन्त्री और उनके कारनामे :— जिस समय एडवर्ड सप्तम बादशाह बने इंग्लैंड मे लार्ड साल्जबरी का मन्त्रि मंडल शासन कर रहा था सन १६०२ मे उसका अन्त हुआ और साल्जबरी के भतीजे बैलफोर ने यूनियनिस्ट (Unionist) सरकार स्थापित की जो कि सन् १६०५ तक रही। बैलफोर के शासन काल में अफ्रीका के बोर युद्ध की समाप्ति हुई, ट्रान्सवाल तथा ऑरेंज फ्री स्टेट अंग्रेजी राज्य मे सम्मिलित कर लिए गये।

सन् १६०२ ई० मे एक शिक्षा का क़ानून पास किया गया जिसके द्वारा स्कूलों का सुधार किया गया। सन् १६०३ ई० मे लैण्ड एक्ट बनाया गया। उसकी कैबीनट के मन्त्री जौसफ चैम्बरलैन ने व्यापारिक स्वतं-

न्त्रता में यह सुधार पेश किया कि साम्राज्य के विभिन्न देशों की वस्तुओं पर भी महसूल कम कर दिया जाय। इसका विरोध हुआ और फल यह हुआ कि मंत्रि मंडल छिन्न-भिन्न हो गया।

सन १९०६ से १९१४ ई० तक फिर लिवरल सरकार स्थापित हुई। प्रथम लिवरल मन्त्री सर हैनरी कैम्पवैल वैनरमैन ने नया मन्त्रि मण्डल स्थापित किया लेकिन स्वास्थ खराव हो जाने के कारण उसने जल्दी ही सन १९०८ ई० में त्याग पत्र दे दिया। उसकी जगह लिव-रल पार्टी का दूसरा लीडर एसक्विथ प्रधान मन्त्री वनाया गया। एसक्विथ लगभग दस वर्ष तक प्रधान मन्त्री रहा। उसने अपने मन्त्रित्व काल में बहुत से सुधार सम्पन्न कराये।

सामाजिक सुधार:—इस काल में एक राजनैतिक दल प्रगट हुआ जो कि मजदूर दल (Labour Party) के नाम से प्रसिद्ध है। इस काल में कई सामाजिक सुधार भी किये गये। सन १९०१ ई० में व्यापारिक विवाद क़ानून (Trade Disputes Act) पास किया गया। दूसरा शान्ति पूर्वक धरना (Peaceful Picketing) के द्वारा लोगों को हड़ताल के अवसरों पर काम पर जाने से रोकना उचित ठहराया गया। सन १९०८ ई० में वृद्ध लोगों की सहायता के लिए पेन्सन एक्ट (Old Age Pension Act) पास किया गया।

कामन और लार्ड सभा में मत-भेद (सन् १९०९):—उपरोक्त क़ानूनों के वनाते समय हाउस आफ कामन्स और हाउस आफ़ लार्डस के वीच झगड़ा कभी नहीं हुआ मगर उनके वाद

दोनों मे झगड़ा आरम्भ हुआ। मिस्टर लाइड जार्ज अर्थ मन्त्री ने एक प्रस्ताव पेश किया था जिसमें आमदनियों पर एक और महसूल (Super Income Tax) और मुख्य-मुख्य जायदादों पर (Land Tax) लगाया गया था जिनका भार अधिकतर मालदार लोगों पर पड़ता था। कामन सभा ने इन बिलों को पास कर दिया लेकिन लार्ड सभाने उनको स्वीकार नहीं किया इस प्रकार लग-भग ६ साल तक झगड़ा जारी रहा और उसके फैसले के लिये एडवर्ड सप्तम् की मृत्यु के कुछ मास पश्चात सन १९११ ई० का पर्लियामेन्ट एक्ट बनाया गया जिसने कामन सभा और लार्ड सभा के इन पारस्परिक झगड़ों को शान्त कर दिया। इस विल के अनुसार लार्ड सभा को अर्थ सम्बन्धी विलों (Money Bills) के अस्वीकार करने अथवा उनमें कुछ काट-छांट करने का अधिकार नहीं रहा।

दूसरे अगर किसी प्रस्ताव को कामन सभा दो वार पास कर दें और लार्ड सभा दोनों वार उसे अस्वीकार करदे और दो साल बाद उसी प्रस्ताव को अगर कामन सभा तीसरी वार स्वीकार करे तो लार्ड सभा की बिना स्वीकारी के ही वादशाह के हस्ताक्षर होने के बाद वह प्रस्ताव देश का कानून हो जायगा। तीसरे, पर्लियामेन्ट का निर्वाचन हर तीन साल के वजाय हर साल हुआ करेगा।

लार्ड सभाने इस प्रस्ताव का सख्त विरोध किया लेकिन जब जार्ज पंचम ने लार्ड बनाने को धमकी दी तो विरोध समाप्त हो गया और बिल पास कर दिया गया।

नौवां अध्याय

जार्ज पंचम

(१६१० से १६३६ तक)

एडवर्ड सप्तम् की मृत्यु के बाद जार्ज पंचम गद्दी पर विराजमान हुए। राज्याभिषेक के समय जार्ज पंचम की आयु ४५ वर्ष की थी। गद्दी पर बैठने के बाद दूसरे साल जार्ज पंचम महारानी मेरी के साथ हिन्दुस्तान में पधारे और दिल्ली में शान और समारोह के साथ दरबार हुआ। सन १६३५ ई० में जार्ज पंचम के शासन काल के पचीस वर्ष समाप्त हुए जिसके हर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य के विभिन्न भागों में रजत जयन्ती (Silver Jubilee) मनाई गई सन् १६३६ ई० में जार्ज पंचम परलोक वासी हुए।

जार्ज पंचम की मृत्यु के बाद राज्य के उत्तराधिकारी एडवर्ड अष्टम गद्दी पर बैठे लेकिन ऊनको कुछ समय बाद ही राजगद्दी और राजमुकट को त्यागना पड़ा। नये बादशाह ने उनको विन्डसर के ड्यूक (Duke of Windsor) की पदवी प्रदान की।

एडवर्ड अष्टम् के राजगद्दी छोड़ने के पश्चात् उनके छोटे भाई यार्कके ड्यूक (Duke of York) गद्दी पर बैठे और उन्होंने जार्ज षष्ट की पदवी स्वीकार की।

जार्ज पंचम के समय में निम्नलिखित प्रसिद्ध घटनायें हुईं :—

King George V.

Queen Alexandra

William Ewart Gladstone.

चौथा सुधार बिल (सन् १९१८):—सन् १९१८ ई० में चौथा सुधार क़ानून (Representation of Peoples Act) बना जिसके अनुसार वे मनुष्य जिनकी आयु कम-से-कम २१ वर्ष थी और जो ६ महीने या उससे अधिक से या तो किसी व्यापारिक संस्था के स्वामी थे या व्यापारिक जगह में रहते थे, पार्लियामेन्ट के लिए मेम्बरों का निर्वाचन कर सकते थे। दूसरे अब उन स्त्रियों को जिनकी आयु तीस वर्ष से अधिक हो और जिनका कि अपना मकान हो या उनके पति का हो, वोट देने का अधिकार मिल गया। सन् १९२८ ई० मे २१ वर्ष वाली स्त्रियों तक को वोट देने का अधिकार देदिया।

शिक्षा विभाग में सुधार (सन् १९१७):—नये क़ानून से यह बात निश्चित हुई कि १४ वर्ष तक के लड़कों का शिक्षा पाना अनिवार्य है। लड़कों के स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए सब प्रकार का बन्दोबस्त हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा पाने वाले बालकों को शिक्षा मुफ्त दी जाने लगी।

गवर्नमेन्ट ऑफ इंडिया एक्ट सन् १९१९:—हिन्दुस्तान ने भी योरोपीय महायुद्ध में दिल खोलकर भाग लिया और इसीलिए यह एक्ट बनाया गया इसके अनुसार लोगों को प्रांतीय शासन मे कुछ अधिकार दिये गये।

आयरलैंन्ड की समस्या का अन्त:—सन् १९१७ ई० में लाइड जार्ज ने आयरलैन्ड से समझौता करना चाहा लेकिन उसका

उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। लड़ाई के बाद सन् १९१९ ई० में सिनफीन दलने प्रजा तंत्र शासन स्थापित करने का प्रस्ताव किया लेकिन ब्रिटिश सरकार ने उस प्रयत्न को दबा दिया। लेकिन अगले वर्ष सन् १९२० ई० में उन्होंने होमरूल बिल पास किया जिसके अनुसार आयरलैन्ड में दो बार पार्लियामेन्ट हुईं। एक अलसटर के लिए और दूसरी शेष देश के लिए लेकिन उसमें ब्रिटिश सरकार के लाभों का विचार रक्खा गया। इसलिए डी वैलेरा (De Valera) के दल ने उसका विरोध किया और नई सरकार का काम असम्भव कर दिया। आख़िरकार सन् १९२२ ई० में लन्दन में एक सभा हुई जिसके प्रस्ताव के अनुसार स्वतंत्र आइरिश राज्य (Irish Free State) बना दिया गया और उसका शासन पार्लियामेन्ट के आधीन कर दिया गया। अलसटर का प्रान्त अब भी प्रथक रहा। अब आयरलैन्ड आस्ट्रेलिया कनाडा आदि अन्य डोमीनियनों (Dominions) की तरह स्वतंत्र है।
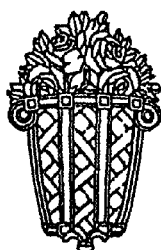
दसवाँ अध्याय

योरोपियन महायुद्ध (१९१४ से १९१८ तक)

युद्ध की तैयारीः—१९वीं शताब्दी के अन्तिम अर्ध भाग में प्रशिया की शक्ति असाधारण तौर पर बहुत बढ़ गई थी। सन् १८७१ ई० में फ्रांस से इसका युद्ध हुआ जिसमे फ्रांस को एल्सास (Alsace) और लारेन (Lorraine) के प्रान्त प्रशिया को देने पड़े। इस विजय के पश्चात् समस्त जर्मन रियासतों ने प्रशिया के बादशाह कैसर विलियम की अध्यक्षता मे एक नवीन जर्मन राष्ट्र स्थापित किया। प्रिंस बिस्मार्क और कैसर विलियम दोनों के प्रयत्नों से जर्मनी ने खेती व्यापार और कला कौशल में अत्यन्त उन्नति की। अपना माल बेचने के लिए और सामान प्राप्त करने के लिए उसको उपनिवेशों की आवश्यकता थी लेकिन उपनिवेशों में वह बहुत पिछड़ा हुआ था। इसके लिए इंगलैन्ड और फ्रांस से युद्ध करना आवश्यक प्रतीत होता था। अपने व्यापार की रक्षा के लिए जर्मनी ने एक जबर्दस्त समुद्री सेना भी तैयार करली। इस प्रकार ब्रिटेन और जर्मनी व्यापार और समुद्री शक्ति में एक दूसरे से होड़ करने लगे और संसार के विभिन्न भागों मे इनके लाभ हानि मे संघर्ष होने लगा। उधर जर्मन इतिहासकारों और तत्व वेत्ताओं ने व्याख्यान देना आरम्भ किया कि जर्मन सभ्यता सबसे बढ़-चढ़ कर है। जर्मनी का

कर्तव्य है कि दूसरी जातियों को भी अपनी सभ्यता सीखने पर मजबूर करे। इसका फल यह हुआ कि समस्त जर्मनी के निवासियों में युद्ध का उत्साह उत्पन्न हो गया और वे लड़ाई के लिए तैयार हो गये। तीसरे जर्मनी ने पूर्व में व्यापार करने के उद्देश्य से टर्की से मित्रता आरम्भ की और टर्की के सुल्तान से कुस्तुनतुनियां से लेकर बसरे तक रेल बनाने की आज्ञा लेली और इंगलैन्ड तथा फ्रांस के विरोध करते हुए भी उसने रेल का बहुत-सा भाग बना लिया। यह देखकर इंगलैन्ड को बहुत सी आशंकाएँ उत्पन्न हो गईं और दोनों में शत्रुता बढ़ने लगी।

फ्राँस और जर्मनी के बीच झगड़े के कई कारण थे। फ्राँस के हाथ से एलसास और लोरेन के प्रान्त सन १८७१ ई० में निकल गये थे जिसको वह कभी नहीं भूला। उधर मरक्को (Morocco) भी एक झगड़े की जड़ था। कैसर विलियम द्वितीय ने टेनजियर के स्थान पर सन् १६०५ ई० में फ्राँसीसियों के विरुद्ध भाषण दिये थे इस प्रकार झगड़ा बढ़ रहा था। बर्लिन की कांग्रेस में रूस और जर्मनी के बीच असन्तोषजनक संबन्ध उत्पन्न हो गया था। और रूस जर्मनी के विरुद्ध पड़ गया था। आस्ट्रीया और रूस के बीच में भी बालकन प्रायद्वीप के मामले में बराबर झगड़ा चला आता था। पिछले कुछ वर्ष पूर्व आस्ट्रीया ने टर्की के आधीन प्रान्त बोसनियाँ और हरजोगोविना पर अधिकार कर लिया था उनमें स्लैव (Slav) जाति के जो लोग आबाद थे वे अपने जाति वालों के साथ रहना चाहते थे रूस में भी स्लैव निवासियों के साथ सहानुभूति थी। इन

प्रान्तों में बहुधा आस्ट्रीया के विरुद्ध विद्रोह होता रहता था आस्ट्रीया सम्राट् समझता था कि इन विद्रोहों का मूल कारंण सरविया है। इस प्रकार अस्ट्रिया की शत्रुता रूस और सरविया से बढ़ गई और रूस और सरविया में मित्रता होगई।

जब बीसवीं शताब्दी का प्रारम्भ हुआ तो यूरोप दो दलों में विभाजित था:—एक ओर जर्मनी, आस्ट्रिया और इटली का त्रिगुट (Triple Alliance) था और दूसरी ओर फ्रांस और रूस का डबल गुट (Double Allaince) था। ब्रिटेन प्रारम्भ मे दोनों गुटों से अलग था लेकिन धीरे-धीरे उसके सम्बन्ध जर्मनी से खराब होते गये। सन् १९०४ ई० मे फ्रांस और ब्रिटेन मे एक सन्धि हुई और सन १९०७ ई० में ब्रिटेन ने फ्रास और रूस से मिलकर एक त्रिगुट (Triple Alliance) स्थापित किया। दोनों दल युद्ध के लिए तैयारियाँ कर रहे थे। सन् १९१४ ई० में एक चिनगारी उठी और उसने हर तरफ़ युद्ध की आग भड़का दी।

२८ जून सन १९१४ ई० को बोसनियाँ के एक निवासी ने आस्ट्रिया के राजकुमार (Ferdinand) को बोसनियाँ की राजधानी में बध कर दिया। आस्ट्रिया ने सरविया की सरकार को इस अपराध का दोषी ठहराया और उसके प्रतिशोध में इतनी सख्त शर्तें लिखकर भेजीं कि जिनको कोई स्वतन्त्र देश स्वीकार नहीं कर सकता था। सरविया ने रूस के आश्रय के कारण उन शर्तों को मानने से इन्कार किया। जर्मनी ने आस्ट्रीया का साथ दिया और फ्रास ने रूस और सरविया का पक्ष लिया। फिर क्या था? जुलाई

सन् १९१४ ई० में योरोप का महायुद्ध छिड़ गया। इंग्लैण्ड प्रारम्भ में तटस्थ रहा। लेकिन जब जर्मनी ने फ्रांस पर हमला करने के लिए अपनी सेना बेलजियम में होकर भेजी तो चूँकि इंगलैण्ड ने बेल-जियम की रक्षा का वादा किया था इसलिए इंगलैण्ढ ने जर्मनी के उस कार्य का विरोध किया और जब जर्मनी ने कुछ परवाह नहीं की तो अन्त में मजबूर होकर चार अगस्त सन् १९१४ ई० को इंगलैण्ड ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

युद्ध चार साल तक जारी रहा उसमें एक ओर इंगलैण्ड, फ्रांस, रूस, इटली, बेलजियम, सरविया और यूनान थे और दूसरी ओर जर्मनी, आस्ट्रीया बलगेरिया और टर्की थे। यूरोप के बाहर जापान ने भी इंग्लैण्ड की मदद की।

सन् १९१७ ई० में जर्मनी के अत्याचारों से अप्रसन्न होकर अमे-रिका के संयुक्त राज्यों के प्रेसीडेण्ड विलसन ने जर्मनी के विरुद्ध घोषणा कर दी। जिस समय यह युद्ध आरम्भ हुआ था उस समय लार्ड एसक्विथ प्रधान मन्त्री थे लेकिन देश को विपत्ति में देखकर एक दल के बजाय समस्त दलों के प्रतिनिधियों को मन्त्रि मण्डल में शामिल किया गया और संयुक्त मन्त्रिमण्डल (Coalition Ministry) स्थापित होगया जिसका प्रधानमन्त्री लाइड जार्ज (Lloyd George) बना।

ग्यारह नवम्बर सन् १९१८ ई० को यह महायुद्ध समाप्त हुआ। जर्मनी की पराजय हुई। लोग कैसर के विरुद्ध होगये और उसने भागकर हालैण्ड की शरण ली। इससे पहले रूस में क्रान्ति होगई। रूसियों ने जार का वध करके जर्मनी से सन्धि कर ली थी। वर-

सैलीज (Versailles) के स्थान पर सन १९१८ ई० मे सन्धि की शर्तें तय करने के लिये एक सभा हुई जिसमें इंग्लैण्ड से लाइड जार्ज, अमेरिका से प्रेसीडेण्ट विलसन और फ्रांस से वहाँ के प्रधान मन्त्री क्लीमैन्सो (Clemenceau) और दूसरे देशों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। उस सन्धि में निम्नलिखित शर्तें तय हुई :—

(१) जर्मनी के नवीन प्रजातन्त्र को अन्य यूरोपीय राज्यों ने स्वीकार कर लिया।

(२) जर्मनी के उपनिवेश इंगलैण्ड, फ्रांस और बेलजियम ने बाँट लिए।

(३) एलसास तथा लोरन के प्रान्त जो सन १८७१ से पहले फ्रांस मे शामिल थे फिर फ्रांस को ही वापिस दिला दिये गये।

(४) जर्मनी को लड़ाई का बहुत बड़ा हरजाना देना पड़ा जिसको वसूल करने के लिए सार की घाटी जमानत के रूप मे मित्र राष्ट्रों के सुपुर्द कर दी गई। इस घाटी मे लोहे, और कोयले की बड़ी खानें है और यह अभी पिछले दिनों मे हरजाना वसूल करने के बाद जर्मनी को वापिस दे दी गई है।

(५) आस्ट्रीया और हंगरी के राज्यों को छिन्न-भिन्न करके विभिन्न भागों मे बाँट दिया गया है। आस्ट्रीया और हंगरी अब दो छोटे-छोटे प्रजातन्त्र राज्य रह गये। और उनके अतिरिक्त योरोप मे जैकोस्लोवाकिया (Czecho-Slovakia) और यूगोस्लेविया(Yugo-Slavia) नामी दो राज्य स्थापित होगये।

(६) पौलैण्ड का प्राचीन राज्य फिर स्थापित किया गया और

ग्यारहवां अध्याय

हैनोवर काल में पार्लियामेण्ट

१८ वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक बादशाह की शक्ति सीमित हो चुकी थी। लेकिन पार्लियामेण्ट अभीतक देश के प्रत्येक दल और प्रत्येक श्रेणी की एक प्रतिनिधि सभा नहीं कही जा सकती थी। अब कई सुधार हुए जिनके कारण से भिन्न-भिन्न श्रेणी के लोगों को पार्लियामेण्ट में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार प्राप्त होगया। सन् १८३२ ई० में सुधार के पहले बिल के स्वीकार होने से शासन की बागडोर अब बड़े ज़मींदारों से छिनकर मध्यम श्रेणी के मनुष्यों के हाथ में आगई। सन् १८६७ ई० में दूसरे सुधार बिल के पास होने से क़स्बों और शहरों में मकान मालिकों को वोट देने का अधिकार मिल गया। सन् १८८४ ई० में तीसरे सुधार बिल के पास होने से ग्रामों और शहरों के प्रत्येक मकानदार को वोट देने का अधिकार मिल गया। सन् १९१८ ई० में चौथे सुधार बिल के पास होने से २१ साल से अधिक आयुवाले पुरुषों को और ३० से अधिक आयु वाली स्त्रियों को वोट देने का अधिकार मिल गया, और सन् १९२८ ई० में २१ साल आयु वाली स्त्री तथा पुरुष सबको वोट देने का अधिकार दे दिया गया है। इस प्रकार अब पार्लियामेण्ट में प्रत्येक श्रेणी के प्रतिनिधि पहुंचने लगे हैं और कामन सभा वास्तविक जातीय प्रतिनिधि
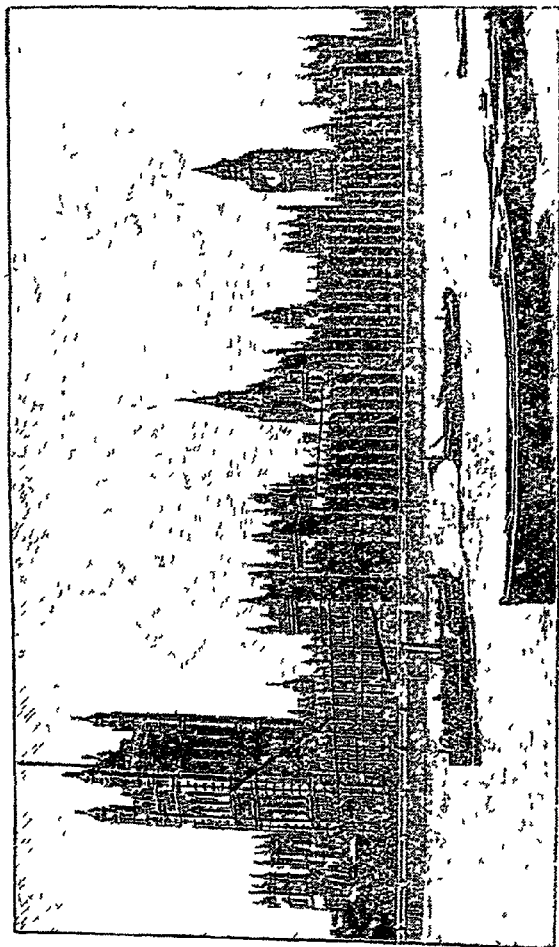
The new House of Parliament, opened 1852.

सभा बन गई है। इन कानूनों के द्वारा पार्लियामेण्ट के हाथ में शासन पूर्णरूप से आगया है और बादशाह केवल नाममात्र को रह गया है। बिना पार्लियामेण्ट की आज्ञा के वह कुछ नहीं कर सकता है। इस प्रकार के प्रबन्ध के शासन को अंग्रेजी मे Crown Republic (राजकीय प्रजातन्त्र) अथवा Limited Monarchy (सीमित राजतन्त्र) कहते हैं।

इंगलैण्ड का शासन तीन शक्तियों पर आश्रित है :—

(१) राजा, (२) कामन सभा, (३) लार्ड सभा।

राजा :—बादशाह का पद वंशानुगत है। आजकल बादशाह प्रोटैस्टेन्ट मत का होना आवश्यक है। वह किसी अन्य धर्म वाली स्त्री से विवाह नहीं कर सकता। यद्यपि शासन मन्त्रिमण्डल और पार्लिया-मेण्ट के अधिकार मे है लेकिन नाम बादशाह का होता है। वर्तमान राज्य प्रबन्ध मे बादशाह के अधिकार इस प्रकार के हैं :—

(१) पार्लियामेन्ट की दोनों सभाओं के पास किये हुए कानून और साम्राज्य के दूसरे भागों की सभाओं के पास किये हुए कानून, दोनों बादशाह के हस्ताक्षरों के लिए भेजे जाते हैं उसे अधिकार है कि हस्ताक्षर करे या न करे। लेकिन रीति ऐसी पड गई है कि वह उनपर हस्ताक्षर कर ही देता है।

(२) अन्य देशों से युद्ध अथवा संधि करना भी बादशाह के अधिकार मे ही है।

(३) बादशाह धार्मिक विभाग (Church) का प्रबंधकर्ता होने

के कारण आर्चबिशप (Arch-Bishop) और दूसरे बड़े पादरियों को नियुक्त करता है।

(४) जजों को नियुक्त करना, लार्ड बनाना और पदवियों का प्रदान करना बादशाह के अधिकार में है।

(५) नई पार्लियामेन्ट में से प्रधान मंत्री वही नियुक्त करता है। उसे मंत्रि मंडल बनाने की आज्ञा देता है। पार्लियामेन्ट भी उसी की आज्ञा से बर्खास्त होती है। वास्तव में यह सब काम मंत्रियों की सम्मति से होते हैं लेकिन उन सब पर बादशाह का व्यक्तिगत प्रभाव भी पड़ता है और उसकी योग्यता और अनुभव से मंत्रिमंडल के सदस्य सर्वदा सहायता लेते हैं और लाभ उठाते हैं। बादशाह समस्त शासन का केन्द्र है। अगर ब्रिटेन के शासन विधान में बादशाह न होता तो उसकी पारस्पारिक एकता में बड़ी कठिनाइयाँ पड़तीं। महारानी विक्टोरिया, एडवर्ड सप्तम और जार्ज पंचम ऐसे योग्य हुए हैं कि उनका व्यक्तिगत प्रभाव देश, मंत्रिमंडल और अन्य देशों पर भी बहुत पड़ा है।

लार्ड सभा:—लार्ड सभा के प्रतिनिधि देश के लार्ड होते हैं जिनको ड्यूक, मार्क्विस, अर्ल आदि के पद अथवा उपाधियाँ प्राप्त होती हैं। इंगलैन्ड तथा आयरलैन्ड के बड़े-बड़े पादरी भी लार्ड सभा के सदस्य होते हैं। इसमें बहुत से लार्ड उस सभा के सदस्य होने का मौरूसी अधिकार रखते हैं और बहुत से लार्ड किसी विशेष देश सेवा के कारण केवल अपने जीवन भर के लिए लार्ड बनाए जाते हैं वे भी इस सभा के सदस्य होते हैं।

कामन सभाः—कामन सभा के प्रतिनिधि निर्वाचित किये जाते है। प्रतिनिधियों की संख्या ६१५ है इनमें से ४६१ इंगलैन्ड के, ३६ वेल्स के, १७४ स्काटलैन्ड के और १३ उत्तरी आयरलैन्ड के प्रतिनिधि होते हैं। इनको ४०० पौंड सालाना वेतन मिलता है। इस सभा का कार्यकाल ५ वर्ष का है लेकिन वादशाह प्रधान-मंत्री की सलाह से विशेष-विशेष अवसरों पर मतभेद होने के कारण अथवा साधारण प्रजा की इच्छा ज्ञात करने के लिए पार्लियामेन्ट को वरखास्त करके नया निर्वाचन करा सकता है। कामन सभा के अधिकार असीमित है।

मंत्रि-मंडल (Cabinet) जैसा कि पहले कहा जा चुका है मंत्रि मंडल की जड़ स्टुआर्ट काल मे पड़ी लेकिन उसकी असली उन्नति हैनोवर काल मे हुई। स्टुआर्ट काल के अन्त तक मंत्रि मंडल की सभा का सभापति वादशाह होता था। वह मंत्रियों की सम्मति ले लेता था लेकिन कार्य नीति वह स्वयं निश्चय करता था। जार्ज प्रथम और जार्ज द्वितीय अंग्रेजी भाषा विलकुल नहीं जानते थे इस लिए उन्होंने धीरे-धीरे मंत्रि मंडल की सभाओं मे भाग लेना वन्द कर दिया। ऐसी दशा मे मंत्रि मंडल मे से ही एक सदस्य मंत्रि मंडल का सभापति होने लगा और उसका पद प्रधान मंत्री का हो गया। अव मंत्रियों की सभा स्वयं मिलकर नीति निश्चित करने लगी। केवल उसकी सूचना वादशाह को देदी जाती थी। इस प्रकार से शासन का समस्त उत्तरदायित्व मंत्रि मंडल और प्रधान मंत्री पर आगया। वादशाह का दवाव शासन पर से उठ गया और कुल मंत्री केवल प्रधान मंत्री के ही प्रभाव

में रह गये और उन मंत्रियों की नियुक्ति भी प्रधान मन्त्री की सम्मति के आधार पर होने लगी।

जार्ज तृतीय फिर एक तंत्र शासन, दुबारा स्थापित करना चाहता था और इस लिए उसने खोये हुए राज्याधिकारों को पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न किया। लेकिन उसमें उसको सफलता प्राप्त नहीं हुई। सप्तवर्षीय युद्ध समाप्त होते ही जब पिट और न्यू कैसिल ने मन्त्रि मन्डल से त्याग पत्र देदिया तो बादशाह ने इस अधिकार को फिर से प्रचलित करने का प्रयत्न किया कि वह अपनी इच्छा के अनुकूल किसी मनुष्य को प्रधान मन्त्री नियुक्त करे और जबकि मन्त्रि मन्डल बादशाह की इच्छा के विरुद्ध जाय तो बादशाह ही उस मन्त्रि मन्डल को बदलकर दूसरा मंत्रि मंडल नियुक्त करे। वह मंत्री भी उन दलों में से नहीं चुनता था जिसके कि सदस्य पार्लियामेन्ट में सबसे अधिक पाए जायँ किन्तु अपनी इच्छा के अनुसार जी चाहे जिस दल में से चुन लेता था जो कि उसके प्रति उत्तरदायी होते थे न कि पार्लियामेन्ट के प्रति। टोरी दल के लोग बादशाह के अधिक कहने में थे, इसलिए उसने उन्हीं लोगों को पद प्रदान किये। सन् १७६१ ई० से १७७० ई० तक पाँच मंत्रिमंडल स्थापित हुए। क्योंकि ज्यों ही एक मंत्रिमंडल उसके विरुद्ध गया त्यों ही उसने तुरन्त ही उस मन्त्रि मण्डल को बदल कर दूसरा मंत्रि मंडल स्थापित कर दिया। सन् १७७० ई० में लार्ड नार्थ जोकि टोरी दल का था प्रधान मंत्री नियुक्त हुआ और वह सन् १७७६ ई० तक लगातार अपने पद पर स्थिर रहा क्योंकि वह जार्ज तृतीय के कहने में था और जार्ज तृतीय उससे जो चाहता

था करा लेता था। जार्ज तृतीय को एक तंत्र शासन स्थापित करने मे कुछ भी सफलता प्राप्त नहीं हुई। प्रथम तो ह्विग दल के विरोध के कारण, दूसरे अमेरिका के स्वतन्त्रता के युद्ध मे पराजय होने के कारण। ह्विग दल वालों ने इस पराजय का उत्तरदायी बादशाह को ठहराया और समस्त देश मे बादशाह को बदनाम किया। लार्ड नोर्थ के त्यागपत्र देने के कारण बादशाह ने अपनी शक्ति को घटने से रोकने के लिए टोरी और ह्विग दलों का संयुक्त मंत्रि मंडल स्थापित किया और नोर्थ और फोकस को मंत्री नियुक्त किया लेकिन इसमें उसको सफलता नहीं हुई और मजबूर होकर उसको सन १७८४ ई० मे पिट को प्रधान मंत्री नियुक्त करना पड़ा। पिट ने आते ही उन मंत्रियों को पदच्युत कर दिया जो उसके विरुद्ध थे और वालपोल की तरह शासन की नीति आरम्भ की। इस प्रकार मंत्रि मंडल की प्रथा (Cabinet System) फिर से इंगलैन्ड मे प्रचलित हुई जो कि अब तक जारी है। महारानी विक्टोरिया के गद्दी पर बैठने के समय मेलबोर्न प्रधान मंत्री था और जबकि सन १८३६ ई० मे जमैका बिल (Jamaica Bill) पर गवर्नमेंट की हार हुई, और यह बिल पास न हो सका तो ह्विग मंत्री मंडल को त्याग पत्र देना पड़ा और महारानी ने सर राबर्ट पील को मंत्रि मंडल स्थापित करने को बुलाया। पील ने महारानी के सामने यह शर्त पेश की कि वह अपने घर मे से उन सब स्त्रियों को निकाल दे जिनका कि संबंध मेलबोर्न के मंत्रि मन्डल के कई आदमियों से था। उनके निकालने के बाद वह मन्त्रि मन्डल स्थापित करेगा। विक्टोरिया के ऐसा करने से इन्कार करने पर

ह्विग मन्त्रि मन्डल सन् १८४१ ई० तक स्थिर रहा जब कि टोरी दल के मेम्बरों की संख्या बहुत अधिक होने पर टोरी मन्त्रि मन्डल स्थापित हुआ। इस घटना ने अवश्य कुछ भ्रम उत्पन्न किया था। लेकिन इसके अतिरिक्त अभी तक राज्य करने की इस प्रणाली में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है (कभी-कभी विपत्ति के समय में मन्त्रि मन्डल के सदस्य सब दलों में से निर्वाचित किये जाते हैं और उसको संयुक्त मन्त्रि मन्डल (Coalition Ministry) कहते हैं। मंत्रि मण्डल या कैबीनेट सिस्टम की निम्नलिखित विशेषताऐं हैं:—

(१) जिस समय पार्लियामेन्ट का निर्वाचन होता है उस समय बादशाह पार्लियामेन्ट में अधिक संख्या रखनेवाले नेता को बुलाकर शासन प्रबंध उसके सुपुर्द कर देता है। इस नियुक्त किये हुए मनुष्य को प्रधान मंत्री कहते हैं और प्रधान मंत्री अपने दल में से ही स्वयं मंत्रियों का निर्वाचन करता है। मंत्रियों को नियुक्त करने और काम बांटने में प्रधान मंत्री स्वतंत्र होता है और नाम मात्र को बादशाह से स्वीकृति लेता है।

(२) ये मंत्री लोग उसी समय तक अपने पद पर रह सकते हैं जब तक कि कामन सभा में उनके दल के लोगों की अधिक संख्या रहे। अगर उनका दल कामन सभा में न्यून संख्या में हो जाता है तो उनको त्याग पत्र देना पड़ता है।

(३) समस्त मन्त्रियों की नीति एक ही होनी आवश्यक है और मन्त्री लोग संयुक्त रूप से उत्तरदायी होते हैं। अगर उनकी नीति कामनसभा को पसन्द न हो तो सब को त्याग पत्र देना पड़ता है।

(४) बादशाह उनके परामर्शों में बिल्कुल भाग नहीं लेता बल्कि ये स्वतन्त्र रूप से सब मामलों पर विचार करते है।

(५) इनका प्रधान मन्त्री ही सब कार्य नीति निश्चित करता है।

मन्त्रिमण्डल साम्राज्य की सब से बड़ी कार्यकारिणी सभा है। उसके मेम्बरों की संख्या निश्चित नहीं है। प्रधान मन्त्री अपनी सुविधा के लिए जितने मन्त्री चाहता है चुन लेता है। प्रत्येक मन्त्री शासन के विभिन्न विभागों का अध्यक्ष होता है और अपने विभाग के संबन्ध की समस्त बातों का वही उत्तरदायी होता है। लेकिन क्योंकि सिद्धान्त या नीति कैबीनैट निश्चित करती है इसलिए सारी कैबीनैट भी जिम्मेदार मानी जाती है। प्रधान मन्त्री के अधिकार बहुत विस्तृत होते हैं। वास्तव में देश का शासन उसी की इच्छानुसार होता है मगर इतना होने पर भी वह एकतन्त्र शासक नहीं हो सकता क्योंकि उस को कामनसभा मे प्रत्येक बात का उत्तर देना पड़ता है और कामनसभा के अप्रसन्न होने पर उस को अपने पद से त्याग पत्र देना पड़ता है इस प्रकार देश का शासन प्रबन्ध कामनसभा के हाथ में है।

समस्त शासन का उत्तरदायित्व प्रधान मन्त्री पर है लेकिन सारे कार्य बादशाह के नाम पर किये जाते है, मगर बादशाह पर किसी बात का उत्तरदायित्व नहीं है।

बारहवाँ अध्याय

हैनोवर काल में विभिन्न दलों का शासन

(Party Government in Hanoverian Period)

सन् १७१५ ई० से १७६० ई० तक अर्थात् जार्ज प्रथम और जार्ज द्वितीय के समय में ह्विग दल अधिक संख्या में था और उन्हींके हाथ में शासन था। उनके शासन काल में कैबीनेट और प्रधान मंत्री की जगह मज़बूत हो गई। हैनोवर वंश के पहले दोनों बादशाहों के समय में टोरी दल देश में बदनाम था क्योंकि उन्होंने पदच्युत बादशाह जेम्स द्वितीय के वंश का पक्ष लिया था। इसलिए पहले दोनों बादशाहों ने टोरियों पर विश्वास नहीं किया। जार्ज तृतीय सन् १७६० ई० में गद्दी पर बैठा उस समय ह्विग दल का प्रभाव कम हो गया और पूरे पचास वर्ष तक शासन की बागडोर टोरियों के हाथ में रही (इसका कारण उस जगह वर्णित है जहाँ कि जार्ज तृतीय के समय की घटनाओं का उल्लेख किया गया है)। सन् १८३२ ई० के सुधार बिल का टोरी दल ने बहुत विरोध किया लेकिन उसके पास हो जाने के कारण उन्होंने अपना ढंग बदल दिया और दोनों दलों ने अपने सिद्धान्त बदल लिए। टोरी दल के नेता पील ने टोरी नाम बदल करके अपने को अनुदार दल (Conservatives) के नाम से प्रसिद्ध किया और टैम्वर्थ के घोषणा पत्र

(Tamworth Manifesto) मे उसने अपने दल के सिद्धान्त यह रक्खे कि दूसरे देशों से संधि करना, वर्तमान काल की शासन नीति का समर्थन करना, और बहुत सोच विचार के बाद आवश्यकतानुसार उसमें कुछ सुधार करना तथा देश की आर्थिक दशा को सुधारना। इसी समय में ह्विग दल ने भी अपना नाम बदल कर उदार दल (Liberal Party) रक्खा।

इन दोनों दलों में अब केवल इतना अन्तर रह गया कि ह्विग दल अब बहुत अधिक स्वतंत्र विचार का है और टोरी दल कम। इसके बाद डिसरैली के नेतृत्व मे अनुदार दल ने और भी अधिक परिर्तन किये और सुधार दल की नीति को अपनाना आरम्भ किया। डिसरैली ने मज़दूरों की सहायता करना अपना मुख्य उद्देश्य ठहराया। उसका विचार था कि मजदूर पार्लियामेण्ट मे जगह पाने के अधिकारी है। उसने सन् १८६७ ई० में पार्लियामेण्ट मे दूसरा सुधार बिल पास कराया।

१९वीं शताब्दी के अन्त तक देश मे ये दोनों दल रहे। अगली सदी के आरम्भ में मज़दूरों का पक्ष लेने के लिए नया दल तैयार हुआ जो मज़दूर दल (Labour Party) कहलाने लगा और इस प्रकार आजकल तीन दल बन गये है और पार्लियामेण्ट मे इन्हीं तीनों दलों के प्रतिनिधि रहते है। जो दल अधिक संख्या के होते है उन्हीं के हाथ मे शासन की बागडोर आजाती है। इस शासन करने वाले दल को शक्ति वाला दल (Party in power) या शासक दल कहते है और दूसरे दल को जो उससे कम अधिक संख्या मे

होता है वह विरोधी दल (Party in opposition) कहा जाता है। नये क़ानून के अनुसार उस दल के नेता को वेतन मिलने लगा है और वह अब राज विरोधी (His Majesty's opposition) कहलाता है। यह विरोधी दल शासक दल पर टीका टिप्पणी करता रहता है और शासन पर अपना प्रभाव जमाने का प्रयत्न करता रहता है। अगर किसी प्रस्ताव पर शासक दल (Party in power) की हार हो जाती है तो वह त्यागपत्र दे देता है और तब विरोधी दल शासन प्रबन्ध को अपने हाथ में ले लेता है।
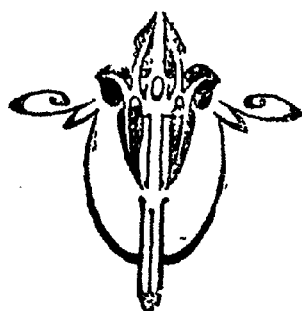
ब्रिटिश साम्राज्य के स्वाधीन देश

महारानी एलिज़ाबेथ के शासनकाल से अंग्रेजों ने भूमण्डल के अन्य भागों में जाना आना आरम्भ कर दिया था। सन १६०० ई० में स्पेन की पराजय के कारण अंग्रेजों की समुद्री शक्ति मे उन्नति हो गई। सन १६०७ ई० में अल्स्टर, नोवास्काटिया और वर्जीनिया के उपनिवेश स्थापित हुये जिनका विशेष वृतान्त महारानी एलिज़ाबेथ के वर्णन में दिया गया है। सन १६२० ई० में "पिलग्रिमफादर्स" (Pilgrim Fathers) ने एक जहाज में जिसका कि नाम "मे फ्लावर" (May Flower) था, प्रस्थान किया और उन्होंने अमेरिका मे जाकर "नवीन इंग्लैण्ड" (New England) नाम का एक उपनिवेश स्थापित किया। इस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्य की नींव पड़ी।

ब्रिटिश साम्राज्य के देशों की विजय का वृतान्त चार विभिन्न भागों में विभाजित है :—

(१) इंग्लैण्ड और स्पेन का युद्ध जो ट्यूडर वंश के शासनकाल मे हुआ और जिस मे कि एलिजाबेथ को स्पेन के विरुद्ध युद्ध करना पड़ा जिस मे कि स्पेन का पराजय हुआ।

(२) अंग्रेज़ों और डच (Dutch) लोगों में शत्रुता, जो कि स्टुआर्ट काल में हुई। इसमें क्रामवैल और चार्ल्स द्वितीय के समय में डच लोगों से युद्ध हुआ जिस मे अंग्रेज विजयी हुये।

(३) अँग्रेजों और फ्रांसीसियों के मध्य युद्ध जोकि सन १६८८ से १८१५ ई० तक जारी रहा।

(४) अँग्रेज़ों और जर्मनी के बीच युद्ध जो कि आजकल हो रहा है। यह युद्ध भी उपनिवेशों से सम्बन्ध रखता है।

(१) कनाडा और न्यूफाउन्डलैण्ड

कनाडा प्रारम्भ में फ्रांसीसियों का एक उपनिवेश था। सप्त वर्षीय युद्ध के बाद यह उपनिवेश अँग्रेज़ों के अधिकार में आ गया। अमेरिका में संयुक्त राज्य (United States) स्थापित होने के बाद बहुत से अँग्रेज़ दक्षिणी राज्यों से निकल कर कनाडा में जाकर आबाद हो गये। कनाडा में आबाद होने वाले अँग्रेज़ों में अधिकतर प्रोटेस्टेन्ट (Protestants) थे मगर वहाँ के फ्रांसीसी कैथोलिक मत के अनुयायी थे, इसलिये धार्मिक मत भेद के कारण उनमें परस्पर झगड़ा रहने लगा। ऐसी दशा में विलियम पिट ने सन १७८१ ई० में कनाडा को दो भागों में विभाजित कर दिया। एक उत्तरी पश्चिमी कनाडा (Ontario or Upper Canada) जिस में अधिकतर प्रोटेस्टेन्ट अँग्रेज़ आबाद थे और दूसरे दक्षिणी पूर्वी कनाडा (Quebic or Lower Canada) जिसके अधिकतर निवासी कैथोलिक फ्रांसीसी थे। इन दोनों भागों के लिये ब्रिटिश सम्राट् की ओर से पृथक् पृथक् गवर्नर नियुक्त हुआ करते थे और दोनों में दो पृथक् पृथक् कौंसिलें थीं। एक सभा का नाम विधान परिषद् (Legislative Council) था जिस में कि नामज़द मेम्बर हुआ करते थे और दूसरी निर्वाचित

सदस्यों की एक परिषद् थी। यह शासन प्रणाली बहुत उपयोगी सिद्ध नहीं हुई और दक्षिणी पूर्वी कनाडा मे अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच पारस्परिक सहानुभूति स्थापित न हो सकी; जिस प्रकार कि भारतवर्ष में हिन्दू और मुसलमानों के बीच प्रातों मे सहानुभूति नहीं हो सकी और मुसलमानों का यह कहना है कि हम लोगों की संख्या मे पर्याप्त होने पर भी हमारे अधिकारों को छीना जाता है, इसी प्रकार दक्षिणी पूर्वी कनाडा में फ्रांसीसी लोगों ने यह कहा कि इस भाग मे हमारी अधिक संख्या होने पर भी अंग्रेज लोग हमारे अधिकारों को कुचलते हैं, इसलिये झगड़ा दिन प्रति दिन अधिकाधिक होता गया। उत्तरी कनाडा मे भी शान्ति स्थापित न हो सकी, क्योंकि लोगों का यह कहना था कि विधान परिषद् (Legislative Council) में भी नामजद सभासदों के स्थान पर निर्वाचित सदस्य ही होने चाहिये।

कनाडा की स्वाधीनता—इसके कुछ वर्ष के पश्चात् कनाडा के दोनों भागों के निवासियों की यह इच्छा होने लगी कि हम को अपना शासन स्वयं करने का अधिकार मिल जाना चाहिये। सन १८३७ ई० मे महारानी विक्टोरिया के काल मे प्रधान मंत्री राबर्ट पील ने लार्ड डरहम (Lord Durham) को कनाडा की दशा मे सुधार करने के लिये भेजा। उसकी रिपोर्ट के अनुसार सन् १८४० ई० में कनाडा के उत्तरी और दक्षिणी दोनों भाग मिला दिये गये। और शासन प्रवन्ध मंत्रियों के द्वारा किया जाने लगा। ये मंत्री अपनी शासन नीति के लिये निर्वाचित कौंसिल के सम्मुख उत्तरदायी होते

थे। सन् १८५८ ई० में ओटावा (Ottawa) में कुल कनाडा की राजधानी स्थापित की गई।

कनाडा का संयुक्त स्वाधीन राज्य – धीरे धीरे कैथोलिक फ्रांसीसी और प्रोटेस्टेन्ट अँग्रेज़ों में परस्पर सहानुभूति बढ़ती गई और वे मित्रतापूर्ण जीवन व्यतीत करने लगे। सन १८६७ ई० में उत्तरी अमेरिका के अन्य उपनिवेश भी कनाडा के साथ सम्मिलित कर दिये गये। सन १८१७ ई० में ब्रिटिश कोलम्बिया (British Columbia) सम्मिलित किया गया। सन १८७३ ई० में प्रिंस एडवर्ड द्वीप (Prince Edward Island) सम्मिलित हुआ और सन् १६०५ ई० में एलबर्टा (Alberta) और सस्केच्वान (Suskach wan) के प्रान्त सम्मिलित हुये। इस प्रकार संयुक्त कनाडा में संघ (Federation) स्थापित है जिस का कि नाम हम भारतवासियों के सुनने में आजकल बहुत अधिक आ रहा है। इसका यह अर्थ है कि यह संयुक्त राष्ट्र पृथक् पृथक् प्रान्तों से मिलकर बना है जिस प्रकार कि हमारा भारतवर्ष पृथक् पृथक् प्रान्तों से मिलकर बना है। प्रान्तों का शासन प्रान्तों के लोगों के अधिकार में है। प्रत्येक प्रान्त में एक परिषद् स्थापित है जिसके कि सदस्य प्रान्त के प्रत्येक युवक पुरुष और स्त्रियों के मतों द्वारा निर्वाचित होकर के आते हैं। इस निर्वाचित परिषद् में उस दल का नेता, जिसके कि सदस्यों की संख्या परिषद् में सब से अधिक होती है, प्रधान मंत्री बनाया जाता है, और फिर वही स्वयं अपना मंत्रिमण्डल नियुक्त करता है जो कि आन्तरिक कार्यों का सब प्रबन्ध करता है और इस प्रबन्ध के लिये परिषद् के

सम्मुख उत्तरदायी है। आन्तरिक कार्यों में पुलिस, जेल, स्थानीय स्वराज्य (Local Self-Government), शिक्षा और ऐसी ही अन्य बातें सम्मिलित हैं जिनका कि सम्बन्ध प्रान्त के लोगों से ही है।

आजकल हमारे देश मे भी प्रान्तों में इसी प्रकार का शासन प्रबन्ध है लेकिन मंत्रिमण्डल (Cabinet) की शक्ति अत्यन्त सीमित है। इसके अतिरिक्त समस्त कनाडा का संयुक्त रूप मे प्रबन्ध करने के लिये निर्वाचित सदस्यों की दो कौंसिलें होती है जिनके संमुख कनाडा के मंत्री अपने कार्यों के लिये उत्तरदायी होते हैं। ये उन बातों की देखभाल करते हैं जो कि प्रान्तों से नहीं, किन्तु समस्त कनाडा से सम्बन्ध रखती है, जैसे सेना, डाक विभाग, रेलवे विभाग इत्यादि जिनका कि सम्बन्ध किसी एक प्रान्त से नहीं किन्तु समस्त कनाडा से है। कनाडा का गवर्नर जनरल और प्रत्येक उपनिवेश का गवर्नर ब्रिटेन के बादशाह के द्वारा नियुक्त किया जाता है।

कनाडा के पास न्यूफाउन्डलैण्ड का द्वीप स्थित है जिस को भी सन १८५५ ई० से स्वाधीनता प्राप्त है, मगर वह कनाडा के संघ शासन से पृथक् है।

(२) आष्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड।

आस्ट्रेलिया के उपनिवेशों का स्थापित होना— आस्ट्रेलिया पहले बिल्कुल एक उजाड़ देश था। कप्तान कुक ने सन १७७० ई० में पहले उसका पता लगाया था और फिर सन् १७८८ ई० से सन १८४० ई० तक वहाँ पर ब्रिटेन के केवल महान अपराधों में

कालेपानी का दण्ड पाये हुए लोगों की आबादी थी, मगर फिर सोने की खानों का पता लगने से देश का महत्त्व बढ़ गया, और सन् १८४० ई० में क़ैदियों का वहाँ भेजना बिल्कुल बन्द कर दिया गया और फिर अन्य अँग्रेज़ों को वहाँ पर आबाद होने की आज्ञा दे दी गई। अब आस्ट्रेलिया में बढ़िया और सुन्दर उपनिवेश स्थापित होने लगे।

अमेरिका के स्वतन्त्र होने के बाद ब्रिटिश सरकार ने यह शासन-नीति स्वीकार की थी कि उपनिवेशों पर सख्ती न करनी चाहिए, किन्तु उनको स्वायत्त शासन प्रदान किया जाना चाहिए। अतएव सन् १८५० ई० तक कोई ऐसा उपनिवेश नहीं रहा जिसके निवासियों को अपने घरेलू मामलों का स्वय प्रबन्ध करने का अधिकार न प्राप्त हो चुका हो। इसके बाद १ जनवरी सन १९०१ ई० को ये सब उप-निवेश परस्पर मिला दिये गये और इस प्रकार वर्तमान संयुक्त आस्ट्रेलिया के संघ (Commonwealth of Australia) का आरम्भ हुआ। कनाडा की तरह आस्ट्रेलिया के उपनिवेशों को भी पृथक् पृथक् रूप से अपने आन्तरिक प्रबन्ध में स्वतन्त्रता प्राप्त है और समस्त आस्ट्रेलिया का संयुक्त शासन भी बिल्कुल कनाडा ही के ढंग पर होता है।

आस्ट्रेलिया से लगभग एक सहस्र मील की दूरी पर पूर्व में न्यूज़ीलैण्ड का द्वीप स्थित है। उसको भी सन् १८५५ ई० से शासन की स्वतन्त्रता मिल गई है और २६ सितम्बर सन १९०७ ई० को न्यूज़ीलैण्ड का डोमिनियन (Dominion of Newzealand)

स्थापित हो गया है लेकिन यह स्मरण रहे कि यह आस्ट्रेलिया के संयुक्त शासन संघ से पृथक् है।

(३) दक्षिणी अफ्रीका

दक्षिणी अफ्रीका के उपनिवेश—सन् १४८६ ई० में बार्थोलोमियोडाइज़ (Bartholomew Diaz) ने उत्तमाशा अन्तरीप (Cape of Good Hope) का पता लगाया। सन १६५१ ई० में डच लोगों ने वहाँ "अन्तरीप उपनिवेश" (Cape Colony) नाम का एक उपनिवेश स्थापित किया और उसमें आवाद होने वाले डच लोग धीरे-धीरे बोअर्स (Boers) कहलाने लगे। सन् १८१५ ई० में वाटरलू के युद्ध के पश्चात् केप कालोनी अंग्रेज़ों के हाथ में आ गई और अंग्रेज़ लोग वहाँ जाकर आबाद होने लगे। अंग्रेजों और वोअर्स के प्रायः झगड़े होने लगे। सन १८३३ ई० में जब कि पार्लियामेण्ट ने दास प्रथा को मिटाने का क़ानून पास कर दिया तो यहाँ पर भी दास रखने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। बोअर लोगों के पास बहुत से दास रहा करते थे। अतएव दास प्रथा को मिटाने की आज्ञा हो जाने के बाद वे लोग सन १८३६ ई० में केप कालोनी छोड़कर नेटाल मे जाकर आबाद हो गये। जब सन् १८४३ ई० में नेटाल पर भी अंग्रेज़ों ने अधिकार कर लिया तो उस समय वोअर लोगों ने वहाँ भी रहना पसन्द नहीं किया और आगे बढ़कर उन्होंने ट्रांसवाल और औरेंज फ्री स्टेट नाम के दो पृथक् उपनिवेश स्थापित कर लिए। फिर सन १८५२ ई० में ट्रांसवाल की और सन १८५४

ई० में औरेंज फ्री स्टेट की स्वतन्त्रता अंग्रेज़ों ने स्वीकार करली। कुछ समय के पश्चात् किम्बरले (Kimberley) में हीरे की खान का पता लगा। इस कारण अन्य अंग्रेज़ और दूसरे लोग भी वहां जाकर आबाद हो गये। बोअर लोगों ने उन नवागत लोगों के साथ बड़ा बुरा बर्ताव किया और चूँकि सरकार बहुत निर्बल हो रही थी, इसलिए सन् १८७७ ई० में अंग्रेज़ों ने ट्रांसवाल पर अधिकार कर लिया। इस पर बोअर लोगों के साथ ब्रिटिश सरकार के युद्ध आरम्भ हो गये जिनका वर्णन आगे दिया जाता है :—

प्रथम बोअर युद्ध (सन् १८७७–१८८१)— वहाँ के असली निवासी जूलू (Zulu) कहलाते थे और उनका बादशाह केटवेयो (Catewayo) था। उनके और अंग्रेजों के मध्य लड़ाई हुई जिसमें अंग्रेज़ों ने जूलू लोगों को पराजित किया और उनके बादशाह को क़ैद कर लिया। जूलू लोगों की शक्ति कम होजाने से बोअर लोगों का साहस बढ़ गया। उन्होंने एक शक्तिशाली विद्रोह आरम्भ कर दिया। उन विद्रोहियों ने अंग्रेज़ों की भेजी हुई सेना को मजूबा की पहाड़ी (Majuba Hill) के निकट बुरी तरह से पराजित किया। ग्लैडस्टन जो उस समय इंगलैंड में प्रधान मंत्री था और शान्ति प्रिय था, उसने सन् १८८१ ई० में ट्रांसवाल की स्वतंत्रता को स्वीकार कर लिया और सन १८८३ ई० में पाल क्रूगर (Paul Kruger) ट्रांसवाल का प्रथम प्रेसीडेंट नियुक्त हुआ। ट्रांसवाल में सोने की खानों का पता लगने के कारण उसका नाम खूब फैलता गया और अन्य देशों के लोग पर्याप्त संख्या में वहाँ जा

करके आवाद होने लगे। वोअर लोग उन नवागत लोगों के साथ निर्दयता का वर्ताव करते थे। अतएव अंग्रेजों को दूसरी वार नवागन लोगों की सहायता के लिए वोअर लोगों के विरुद्ध युद्ध करना पड़ा।

द्वितीय वोअर युद्ध (सन् १८९९–१९०२ ई०)— सन् १८९६ ई० मे जेम्सन (Jameson) का ट्रांसवाल पर आक्रमण विलकुल असफल रहा, लेकिन उसके वाद लार्ड रावर्टस और लार्ड किचनर के सेनापति होने पर अंग्रेजों को विजय प्राप्त हुई और सन् १९०२ ई० मे वोअर लोगों को मजवूर होकर अंग्रेजों की शर्तों को स्वीकार करना पड़ा। इस युद्ध का यह परिणाम हुआ कि वोअरों के दोनों उपनिवेश अर्थात् ट्रांसवाल और ऑरेंज फ्रीस्टेट अंग्रेजों के अधिकार मे हो गये। केप कालोनी और नेटाल पहले ही से अंग्रेजों के अधिकार में थे। सन् १९०६ ई० को चारों उपनिवेशों के परस्पर मिल जाने से वर्तमान "दक्षिण अफ्रीका का संघ" (Union of South Africa) स्थापित हुआ। चारों उपनिवेशों को पृथक् स्वतंत्रता प्राप्त है और इन चारों के संयुक्त शासन का प्रवन्ध भी कनाडा और आस्ट्रेलिया के ढंग पर होता है।

यूरोपीय जातियों का अफ्रीका में उपनिवेश स्थापित करना—अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप की विभिन्न जातियों ने अफ्रीका में अपने-अपने उपनिवेश स्थापित करने चाहे और विभिन्न भागों पर अधिकार करना आरम्भ कर दिया। सन् १८७९ ई० में वेलजियम ने कागो प्रदेश पर अधिकार जमाया। सन्

१८८१ ई० में फ्रांस ने ट्यूनिस (Tunis) पर सन् १८८२ ई० में इंग्लैण्ड ने मिश्र (Egypt) पर। सन् १८८४ ई० में जर्मनी ने दक्षिण पश्चिमी अफ्रीका को अपने राज्य में मिला लिया, और टोगोलैंड (Togoland) और केमीरून (Cameroon) पर रक्षित शासन (Protectorate) स्थापित किया। सन् १८८६ से १८८९ ई० तक में अंग्रेज़ों ने विभिन्न कम्पनियों को आज्ञा दे दी कि वे उन स्थानों पर जिन पर यूरोप की किसी जाति का अभी तक राज्य न हुआ हो, व्यापार करने के नये मार्ग खोज निकालें। सन् १८९० ई० में जर्मनी ने अंग्रेजों की जैंजीबार (Zanzibar) और युगान्डा (Uganda) के अधिकृत शासन को स्वीकार कर लिया। इसके बदले में अंग्रेज़ों ने जर्मनी को हैलीगोलैंड (Heligoland) का इलाक़ा दिया।

सन् १९१० ई० में जर्मनी ने पूर्वीय अफ्रीका (East Africa) के बहुत से भागों पर अधिकार कर लिया, लेकिन यूरोपीय महायुद्ध समाप्त होने के बाद जर्मन ईस्ट अफ्रीका अंग्रेज़ों और बेलजियम के बीच विभाजित कर दिया गया अंग्रेज़ों को जो इलाका मिला उसका नाम टैनगैनीका (Tanganyika) पड़ा। टोगोलैंड (Togo land) इंग्लैण्ड और फ्रांस के बीच विभाजित कर दिया गया। जर्मन दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका (German South West Africa) यूनियन आफ़ साउथ अफ्रीका (Union of South Africa) में सम्मिलित कर दिया गया यूरोपीय महायुद्ध जो हुआ था उसका भी एक कारण अफ्रीका के उपनिवेश थे, और यह जो अब यूरोपीय

महायुद्ध होरहा है, उसका भी एक अनिवार्य कारण यही है कि जर्मनी अफ्रीका के अपने उपनिवेश वापिस लेना चाहता है। अन्तिम सन्धि की शर्तों के अनुसार भी जर्मनी ने इस बात पर जोर दिया था कि उसको उसके अफ्रीका स्थित उपनिवेश वापिस मिल जायें।

ब्रिटिश साम्राज्य मे आजकल ६ स्वाधीन देश है—कनाडा न्यूफाउन्डलैंड, दक्षिणी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया; न्यूजीलैण्ड और आयरलैण्ड। इन स्वाधीन देशों को अधिकार है कि वे जब चाहे तब ब्रिटिश साम्राज्य से अपना सम्बन्ध विच्छेद करले। ये स्वाधीन देश उपनिवेश (Dominions) कहलाते है।

दूसरे प्रकार के अधिकृत अथवा राजकीय उपनिवेश (Crown Colonies) है जिनमे मुख्य ६ है—लंका, युगान्डा, सिंगापुर, हागकांग, फिजी द्वीप, ब्रिटिश गायना आदि। इनका शासन प्रबन्ध ब्रिटिश मंत्रिमंडल के औपनिवेशिक मंत्री (Secretary of States for Colonies) के द्वारा होता है। यहाँ पर भी इंग्लैण्ड से गवर्नर और लैफ्टीनेंट गवर्नर भेजे जाते है जिनको कि औपनिवेशिक मंत्री की इच्छा के अनुसार वहाँ के शासन प्रबन्ध में हस्तक्षेप करने का पूरा अधिकार है। इन उपनिवेशों मे भी विधान निर्मात्री सभायें होती है लेकिन उनके अधिकार सीमित है और स्वाधीन देशों की तरह ये कानून बनाने मे स्वतन्त्र नहीं हैं।

तीसरे प्रकार के शासित देश "आश्रित देश" (Dependencies) है, जिनमें सबसे बड़ा हमारा भारतवर्ष है। इसके अतिरिक्त

माल्टा (Malta) द्वीप है जहाँ पर शासन सैनिक अफसरों के द्वारा किया जाता है।

औपनिवेशिक स्वराज्य (Dominion Status)

आपने प्रायः यह शब्द (Dominion Status) समाचारपत्रों में पढ़ा होगा अथवा व्याख्यानों में सुना होगा। इसका क्या अर्थ है? इससे कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड के स्वाधीन देश और ब्रिटिश पार्लियामेंट की शासन नीति का सम्बन्ध प्रकट होता है। सन १९०७ ई० से पूर्व जो शासन नीति थी उसको अंग्रेज़ी भाषा में (स्वाधीन उपनिवेशों) Self Governing Colonies की नीति कहते हैं लेकिन सन् १९३१ के वेस्टमिंस्टर के क़ानून (Statute of Westminster)ने इस नीति को स्पष्ट शब्दों में वर्णन कर दिया है:—

"They are autonomous Communities within the British Empire, equal in status, in no way subordinate to one another in any aspect of their domestic or external affairs, though united by a Common allegiance to the Crown and freely associated as memhers of the British Commonwealth of Nations"

अर्थात् ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत ये स्वाधीन देश हैं—पद में सब समान हैं, किसी प्रकार से भी न तो आन्तरिक मामलों में और न वैदेशिक कार्यों में वे एक दूसरे के आधीन हैं, यद्यपि एक सर्वगत सम्बन्ध द्वारा जो वे ब्रिटिश सम्राट् के साथ रखते हैं, वे

परस्पर सम्बन्धित हैं और ब्रिटिश राष्ट्र संघ (British Commonwealth of Nations) के स्वतन्त्ररूपेण सदस्य हैं।

सन् १९०७ ई० से ये देश स्वाधीन उपनिवेश (Dominions) कहलाते है, लेकिन उनका समानता का अधिकार सन् १९३१ ई० से ही स्वीकृत हुआ। इससे पहले इन स्वाधीन उपनिवेशों में क़ानून बनाने में बहुत सी रुकावटे थीं—वे सब अब दूर होगई हैं। यह सब कुछ वैस्टमिन्स्टर के क़ानून (Statute of Westminster) के ही अनुसार हुआ है जिसकी कुछ धारायें निम्नलिखित हैं:—

(१) यदि राजसिंहासन के उत्तराधिकार के विषय में अथवा बादशाह की पदवी में कोई परिवर्तन करना हो तो जबतक कि स्वाधीन उपनिवेशों की पार्लियामेट और ब्रिटिश पार्लियामेट इन परिवर्तनों को स्वीकार न करें, तबतक वे परिवर्तन नहीं हो सकेंगे।

(२) ब्रिटिश पार्लियामेट ने यह बात त्याग नहीं दी है कि ब्रिटिश पार्लियामेट को इन देशों के लिये क़ानून बनाने का अधिकार नहीं है, किन्तु धारा ४ के अनुसार यह बात बिल्कुल निश्चित कर दी गई है कि ब्रिटिश पार्लियामेट इन स्वाधीन उपनिवेशों के लिये तभी क़ानून बनायेगी जबकि वे स्वतन्त्र देश स्वयं ही पार्लियामेंट से ऐसे क़ानून बनाने की प्रार्थना करें।

(३) अगर स्वतन्त्र उपनिवेशों की पार्लियामेंट कोई क़ानून बनायेगी तो वह इस आधार पर अनियमित नहीं ठहराया जायगा कि वह ब्रिटिश पार्लियामेट के बनाये हुये क़ानून के विरुद्ध है। इससे स्वतन्त्र उपनिवेशों की पार्लियामेंट पर जो रुकावट अबतक थी, वह दूर होगई है।

इन बातों से यह स्पष्टरूप से प्रगट है कि ब्रिटिश पार्लियामेंट को आन्तरिक मामलों में पूरी-पूरी स्वतन्त्रता है। इस आधार पर समस्त स्वतन्त्र उपनिवेश भी अन्य स्वतन्त्र देशों की तरह राष्ट्र संघ (League of Nations) के सदस्य हैं, और उनको दूसरे देशों से व्यापारिक सन्धि करने और वैदेशिक मामलों के विषय में सन्धि करने का पूरा-पूरा अधिकार है। उनकी अपनी पृथक् पृथक सेनायें हैं और ब्रिटिश सरकार की अगर किसी दूसरे देश से लड़ाई हो तो ब्रिटिश पार्लियामेंट उन स्वतन्त्र देशों को उनकी इच्छा के विरुद्ध लड़ाई में सम्मिलित होने के लिये मजबूर नहीं कर सकती है। वे अपनी इच्छा से ही युद्ध में भाग लेंगे, और अगर स्वतन्त्र उपनिवेश चाहें तो युद्ध में भाग लेने से इन्कार कर सकते हैं। अतएव आयरलैण्ड ने अंग्रेज़ों की ओर से इस वर्तमान युद्ध में भाग लेने से इन्कार कर दिया है।

इन स्वतन्त्रताओं के साथ-साथ इसमें कुछ रुकावटें भी हैं, जैसे—

(१) उन स्वाधीन उपनिवेशों को इँगलैंड के बादशाह की स्वामिभक्ति की शपथ लेनी पड़ती है।

(२) उनके गवर्नर जनरल और प्रान्तीय गवर्नर ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त किये जाते हैं।

(३) उन उपनिवेशों से अन्तिम अपील प्रिवी कौंसिल में ही होती है।

(४) वैदेशिक नीति में यह रुकावट है कि जिस अन्य देश से ब्रिटिश सरकार लड़ रही हो, उस देश को ये उपनिवेश सहायता नहीं

देसकते हैं—यद्यपि वे ब्रिटिश सरकार को सहायता देने से इन्कार कर सकते हैं।

(५) इनके विधान (Constitution) मे ब्रिटिश पार्लियामेंट ही परिवर्तन कर सकती है।

आजकल पूर्ण स्वतन्त्रता कठिन है। जो देश कि पूर्णरूपेण स्वतन्त्र हैं, उनको भी अगर हम ध्यान से देखें, तो यह प्रगट होजायगा कि उनकी पूर्ण स्वतन्त्रता मे बहुत कुछ रुकावटें हैं। इसी प्रकार इन स्वाधीन उपनिवेशों की पूर्ण स्वतन्त्रता मे कुछ रुकावटें हैं अवश्य, लेकिन इन रुकावटों से इन देशों को हानि कम है, और लाभ अधिक हैं। ये देश ब्रिटिश राष्ट्रसंघ (Commonwealth of Nations) मे समानता का दर्जा रखते हैं और उनको अन्य देशों से अपनी रक्षा के लिये सेना पर उतना रुपया नहीं व्यय करना पडता जितना कि उनको पूर्ण स्वतन्त्र होने की दशा मे करना पड़ेगा।

भारतवर्ष मे ब्रिटिश सरकार की शासन नीति का उद्देश्य भारतवर्ष को यही स्वराज्य(Dominion Status)देना है। सन्१६२६ ई० मे लार्ड इर्विन ने यह घोषणा की थी कि सन १६१६ ई० के गवर्नमेंट आफ इण्डिया एक्ट के अनुसार ब्रिटिश सरकार की शासननीति का उद्देश्य भारतवर्ष को यही स्वराज्य (Dominion Status) प्रदान करना है। लार्ड लिनलिथगो वर्तमान वायसराय ने भी १७ अक्टूबर १६३६ ई० को इस बात को स्वीकार कर लिया है। वर्तमान भारत-मंत्री लार्ड जेटलैंड (Lord Zetland) ने १८ अक्टूबर सन१६३६ ई० को लार्डसभा में बातचीत करते हुए इस बात को स्पष्ट शब्दों

में स्वीकार कर लिया है। लेकिन स्वायत्त शासन कब प्रदान किया जायगा, इसके लिए कोई समय नियत नहीं है। अंग्रेज़ों का यह कथन है कि जब तुम्हारे आपस के झगड़े तय हो जायेंगे और तुममें शासन करने की शक्ति और योग्यता आजायगी, तब हम तुमको स्वराज्य प्रदान करेंगे।

भारतवर्ष के नर्मदल (Liberal Party) का उद्देश्य अभी तक यही है कि ब्रिटिश राष्ट्रसंघ में रह कर यहाँ भी स्वाधीन उपनिवेशों का जैसा स्वराज्य स्थापित हो जाय, लेकिन कांग्रेस और मुस्लिम लीग इससे भिन्न हैं—मुस्लिम लीग ने यह घोषणा कर दी है कि उसका उद्देश्य हिन्दुस्तान के लिये पूरी स्वतन्त्रता प्राप्त करना तो है लेकिन इस शर्त पर कि मुसलमानों को पूरे-पूरे अधिकार प्रदान किये जायें और वे इतने मज़बूत कर दिये जायें कि उनपर कोई भी हस्त-क्षेप न कर सके। कांग्रेस का उद्देश्य भी भारतवर्ष की पूर्ण स्वतन्त्रता है और वह बिना किसी शर्त पर है। अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए कांग्रेस की कार्यशैली यह है कि लोगों में जागृति उत्पन्न की जाय क्योंकि स्वतन्त्रता कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो आस्मान से टपकेगी या पार्लियामेंट द्वारा लोगों को प्रदान की जायगी, किन्तु वह तो एक भावना है जो लोगों में स्वयं उत्पन्न होगी और उसके पश्चात् वह किसी अन्य जाति के आधीन रहना पसन्द नहीं करेंगे।

विधान परिषद् (Constituent Assembly)—आप लोगों ने प्रायः यह शब्द राजनैतिक नेताओं के व्याख्यानों में सुना होगा और समाचार पत्रों में भी पढ़ा होगा। उसका क्या अर्थ है?

यह उस सभा का नाम है जो कि किसी देश का शासन विधान के निर्णय करने के लिये संगठित होती है। ऐसी सभा सबसे पहले फ्रांस मे फ्रांस की राज्यक्रांति के समय मे स्थापित हुई थी।

कनाडा, आस्ट्रेलिया और दक्षिणी अफ्रीका के उपनिवेशों मे भी इस प्रकार की सभा पृथक् पृथक् समयों पर संगठित की गई थी। जैसी कठिनाइयाँ आजकल भारतवर्ष मे है, लगभग बहुत कुछ वैसी ही कठिनाइयाँ कनाडा मे भी सन् १७६१ से १८३७ ई० तक रही थीं। वहाँ सन् १८४० ई० की लार्ड डरहम की रिपोर्ट के अनुसार स्वाधीन शासन की नींव पड़ी। सन् १८६४ ई० मे उन कठिनाइयों को दूर करने के लिये एक सभा बुलाई गई और उसके बाद फिर एक उससे बड़ी सभा क्यूबेक (Quebec) मे बुलाई गई जो कि विधान परिषद् (Constituent Assembly) ही थी। उसने ७२ प्रस्ताव बनाये जिनको कि कनाडा के पार्लियामेंट ने पास किया और फिर वे ब्रिटिश पार्लियामेंट के सामने उपस्थित किये गये। उसने इन प्रस्तावों के आधार पर ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका एक्ट (British North America Act of 1867) सन् १८६७ ई० में पास किया।

आस्ट्रेलिया मे भी सन् १९०१ ई० के एक्ट के पास होने से पूर्व विधान परिषद् बुलाई गई थी। उसके भिन्न-भिन्न प्रान्तों मे भी राजनैतिक और आर्थिक दशा से सम्बन्ध रखने वाले झगड़े चल रहे थे। सन् १८९१ ई० में सिडनी (Sydney) के स्थान पर एक राष्ट्रीय आस्ट्रेलियन सभा (National Australian Convention) बुलाई गई जिसका कि उद्देश्य आस्ट्रेलिया के लिये संघशासन के

आधार पर शासन विधान तैयार करना था। सन् १८९५ ई० में मंत्रियों की एक सभा हुई जिसमें यह निश्चय हुआ कि ६ उपनिवेश विधान परिषद् (Constituent convention) के लिये प्रतिनिधि चुनें, और एडीलेड (Adelaide) के स्थान पर इस सभा ने एक बिल बनाया जिसमें यह अंकित किया कि शासन विधान किस प्रकार का होना चाहिये, और फिर उस बिल के विषय में लोगों की सम्मति ली गई। उसके बाद सब उपनिवेशों की फिर एक सभा हुई। अन्त में यह संशोधित बिल ब्रिटिश पार्लियामेंट के सामने उपस्थित किया गया। और ब्रिटिश पार्लियामेंट ने उस बिल के आधार पर सन् १९०० ई० में "ब्रिटिश पार्लियामेंट एक्ट" बनाकर पास किया।

दक्षिणी अफ्रीका में भी अंग्रेज़ और डच लोगों के बीच में बहुत से झगड़े थे। सन् १९०७ ई० में प्रीटोरिया (Pretoria) के स्थान पर एक अन्तः उपनिवेश सभा (Inter colonial Conference) हुई जिसने यह प्रस्ताव किया कि शासन की प्रणाली निश्चित करने के लिये एक दक्षिणी अफ्रीकन सभा (South African Convention) बुलाई जाय। इस सभा में ३३ सदस्य थे जिन्होंने कि उपनिवेशों की पार्लियामेंट में एक बिल पेश किया। उसके संशोधनों पर विचार करने के लिये एक दूसरी राष्ट्रीय सभा (National Convention) ब्लोमफोन्टीन (Bloemfontein) के स्थान पर बुलाई और इस संशोधित बिल को ब्रिटिश पार्लियामेंट के सामने उपस्थित किया गया जिसको कि उसने सन १९०९ ई० में एक क़ानून के रूप में पास किया।

इसी प्रकार सन् १९२१ ई० में आयरलैण्ड की पार्लियामेंट ने भी जो कि विधान परिषद् के रूप में बैठी थी शासन विधान का एक बिल बना कर पास किया।

भारतवर्ष की राजनैतिक संस्था कांग्रेस ने भी अपने प्रोग्राम मे यह रखा है कि भारतवर्ष मे भी शासन विधान का प्रकार एक विधान परिषद् (Constituent Assembly) के ही द्वारा निश्चित किया जाय। उसका यह कहना है कि मुसलमान और दूसरी अल्प-संख्यक जातियाँ अगर चाहें तो स्वयं अपनी-अपनी जातियों के प्रतिनिधि ही निर्वाचित करके उसमे भेजें। उनके धर्म से सम्बन्ध रखने वाले प्रश्नों को उनकी जाति के लोग ही मिलकर स्वयं तय किया करेंगे और अगर उनसे तय नहीं हो सके तो एक पंचायत (Tribunal) को तय करने के लिये सुपुर्द किया जायगा। इस सम्बन्ध में दूसरी राजनैतिक संस्थाओं जैसे हिन्दू महासभा और मुस्लिम लीग आदि की भिन्न-भिन्न सम्मतियाँ है लेकिन कांग्रेस इस विधान परिषद् के लिये बहुत बलपूर्वक प्रयत्न कर रही है।

नाज़ी सरकार का आरम्भ

जनवरी सन् १९३३ को जर्मनी मे नेशनल सोशलिस्ट पार्टी (National Socialist Party) ने ज़ोर पकड़ा, जबकि यूरोप में शान्ति थी। १७ मई सन १९३३ को हिटलर ने जो कि जर्मन लोगों का नेता बन गया है इस बात की घोषणा की कि वह शान्ति-प्रिय है। उसका यह कहना था कि जर्मनी उन समस्त शर्तों को काम में लायेगा

जोकि संधि नामे में अंकित हैं और राजनैतिक और आर्थिक दशा से संबंध रखने वाले प्रश्नों की संधि की शर्तों के अनुसार तय करने का प्रयत्न करेगा और स्पष्ट रूप से उसने इस बात की घोषणा की कि जर्मनी को किसी दूसरे देश पर आक्रमण करने की कदापि इच्छा नहीं है। यूरोप के राष्ट्रों को यह घोषणा सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई लेकिन कुछ समय के बाद ही १४ अक्टूबर सन् १९३३ ई० को यूरोप वाले क्या देखते हैं कि जर्मनी ने राष्ट्र संघ से (League of Nations) से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया है।

जनवरी सन् १९३५ में पिछली संधि के अनुसार सार (Saar) के लोगों से इस बात की सम्मति लीगई कि सार को जर्मनी में फिर मिल जाना चाहिए या नहीं। इसलिए उन सब लोगों के वोट लिए गये इस प्रकार सबके वोट लेने को प्लैबीसाइट (Plebiscite) कहते हैं। अंग्रेज़ी सरकार ने सार के प्रान्त में लोगों के वोट देने के अवसर पर शान्ति रक्खी और जबकि लोगों ने यह सम्मति प्रकट की कि उनका प्रान्त जर्मनी से मिला दिया जाय तो उस बात को स्वीकार कर लिया और सार जर्मनी को देदिया गया। इसके कुछ समय के पश्चात् ही जनरल गोरिंग (General Goering) ने यह घोषणा की कि उसने गुप्त रूप से एक शक्तिशाली हवाई सेना (Air force) जर्मनी में तैयार की है और प्रत्येक मनुष्य के लिए सैनिक शिक्षा फिर से जारी की गई है। जर्मनी की ये सब बातें संधिनामे के विरुद्ध थीं लेकिन तो भी अंग्रेज़ों ने जर्मनी को उनके काम में लाने से नहीं रोका क्योंकि इँग्लैण्ड के लोग शान्ति चाहते थे, न कि युद्ध।

२१ मई सन् १९३५ ई० को जर्मनी ने अपनी जर्मन पार्लियामेंट में इस बात की घोषणा की कि वह लोकार्नो पैक्ट (Locarno Pact) की प्रत्येक शर्त को पूरा करने का प्रयत्न करेगा, लेकिन ७ मार्च सन् १९३६ ई० को जर्मनी ने उस संधिनामे का उल्लंघन किया और जर्मनी की सेनाओं ने राइन प्रदेश (Rhineland) मे प्रवेश करके उसको अपने अधिकार में कर लिया। अंग्रेजों की सन्धि के कारण से फ्रांस ने जर्मनी के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की।

२१ मई सन १९३५ ई० के भाषण में हर हिटलर ने यह भी कहा था कि जर्मनी न तो आस्ट्रिया के मामलों में हस्ताक्षेप करना चाहता है और न आस्ट्रिया को अपने शासन में लाना चाहता है। और मार्च सन १९३६ ई० में हिटलर ने स्पष्ट रूप से इस बात की घोषणा करदी कि जर्मनी को यूरोप के किसी प्रान्त को अपने राज्य मे मिलाने की बिल्कुल इच्छा नहीं है। अंग्रेजों को यह घोषणा सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई, लेकिन मार्च सन् १९३८ ई० मे जर्मन सेनायें आस्ट्रिया में प्रविष्ट होगई और जर्मनी ने आट्रिया को बात की बात में अपने राज्य में मिला लिया। परन्तु अंग्रेजों ने इस पर भी जर्मनी के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की क्योंकि अंग्रेज लोग लड़ना नहीं चाहते थे।

आस्ट्रिया को अपनी राज्य-सत्ता में ले लेने के पश्चात् गोरिंग (Goering) ने यूरोप को इस बात का विश्वास दिलाया कि जैकोस्लोवेकिया के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने की जर्मनी की इच्छा नहीं है, लेकिन सितम्बर सन १९३८ ई० मे जर्मनी ने इस बात की

घोषणा की कि अगर जैकोस्लोवेकिया ने सूडेटनलैंड जर्मनी के सुपुर्द नहीं किया तो जर्मनी को युद्ध की घोषणा करनी पड़ेगी। म्यूनिच की संधि के अनुसार सुडेटनलेंड जर्मनी के सिपुर्द कर दिया गया। इसपर हिटलर ने यह कहा कि यूरोप में यह अन्तिम प्रदेश है जोकि जर्मनी को प्राप्त करना था। अब उसको कोई प्रदेश नहीं लेना है। लेकिन साथ ही यह भी कहा था कि उपनिवेशों का प्रश्न यूरोप के प्रश्नों से पृथक् है। मार्च सन् १९३९ ई० में जर्मन सेनाओं ने बोहेमिया और मोरेविया पर अधिकार कर लिया। उसके बाद मैमल (Memel) का प्रान्त भी जीत लिया। इसी बीच में इटली ने अलबेनिया (Albania) पर अधिकार कर लिया।

एक नवीन विश्व-व्यापी युद्ध।

जर्मनी ने इस विगत काल में जो उन्नति की, उसका वर्णन ऊपर हो चुका है। आस्ट्रिया, सूडेटनलैंड, जैकोस्लोवेकिया और मैमल, सार प्रदेश के पश्चात् जर्मनी में मिलाये और एक शक्तिशाली हवाई सेना तैयार की।

म्यूनिच के निर्णय तक हिटलर की माँगें जर्मनी की पूर्वी सीमा पर बहुत साधारण थीं। नाजियों ने गौरवारूढ़ होते ही अपने पुराने शत्रु रूस के विरुद्ध पोलैंड के साथ सन्धि रखने का समझौता लेखबद्ध कर लिया था, मगर हिटलर की चाल यह थी कि आस्ट्रिया और जैकोस्लोवेकिया की समस्याओं को अपनी इच्छाओं के अनुकूल तय कर लेने तक पोलैंड के साथ मेल और मित्रता का बर्ताव स्थिर रहना

चाहिये ताकि रूस अगर जैकोस्लोवेकिया की सहायता को आवे तो पोलैंड उसके मार्ग में बाधक हो सके। अतएव जैकोस्लोवेकिया पर अधिकार कर लेने तक पोलैंड के सम्बन्ध में हिटलर के सारे मंसूबे वही रहे और जैसे ही उसने जैकोस्लोवेकिया की समस्या अपनी इच्छा के अनुसार हल करली, वैसे ही उसने अपनी नीति को बदल दिया और अब उसने डैंजिग (Danzig) और कोरीडर (Corridor) के जर्मन अल्पसंख्यकों के प्रति पोलिश बहुसंख्यकों का असहानुभूतिपूर्ण बर्ताव का बहाना करके पोलैंड के विरुद्ध अपनी सेनाओं को बढ़ाया।

पोलैण्ड—यूरोप के समस्त देशों में पोलैण्ड का इतिहास एक निरन्तर लड़ाइयों और विपत्तियों का इतिहास है। इस को प्रायः कठिनाइयों का शिकार होना पड़ा है। इस समय पोलैण्ड का वास्तविक क्षेत्रफल सन् १६१८ ई० की अपेक्षा आधा है। उस समय पूर्वी प्रशिया, लैटविया और एस्थोनिया के कुछ भाग पोलैण्ड के अधिकार मे थे, लेकिन बाद में पूर्वी प्रशिया इससे पृथक् होगया और एस्थोनिया का भाग स्वीडन के अधिकार में चला गया। अठारहवीं शताब्दी में पोलैण्ड की भीतरी शक्ति शासन प्रबन्ध के गड़बड़ होने के कारण से ऐसी बिगड़ी कि उसका दो तिहाई भाग रूस, जर्मनी और आस्ट्रिया में विभाजित होगया। इसके बाद एक समय ऐसा भी आया कि पोलैण्ड यूरोप के नक्शे से बिल्कुल मिट कर रूस के अन्तर्गत होगया। जब गत महायुद्ध छिड़ा तो सबसे पहले जर्मनी ने पोलैंड के उस भाग को जो उसके अधिकार में था स्वतंत्र कर दिया।

उधर सन् १९१७ ई० में रूस में विद्रोह हुआ और ज़ार का बध कर देने के बाद वहाँ नई सरकार शक्ति में आई—उसने लैटविया, एस्थोनिया आदि के साथ-साथ पोलैंड को अपने शासन से पृथक् करके उसकी स्वतंत्रता को भी स्वीकार कर लिया, बल्कि यूक्रेन का एक भाग भी पोलैंड को प्रदान कर दिया गया।

नवीन पोलैण्ड के नेता मार्शल जोसेफ़ पिलोटस्की ने अपने देश की तीन करोड़ आबादी को जिसमें २० लाख जर्मन भी शामिल थे, नये सिरे से संगठित किया। देश की भीतरी शक्ति और बाहरी गौरव को स्थिर करने के लिये वे समस्त साधन प्रयुक्त किये जो उसके लिये आवश्यक थे और धीरे-धीरे देश को एक शक्तिशाली राष्ट्र में परिवर्तित कर लिया। इस समय पोलैण्ड की आबादी साढ़े तीन करोड़ है जिस में दस लाख जर्मन, ३८ लाख यहूदी और ३० लाख पोलिश मुसलमान हैं।

कोरीडर (Corridor)—महायुद्ध के पश्चात् पोलैंड को पूर्वी प्रशिया के एक भाग को जिसे कोरीडर कहा जाता है जर्मनी से अलग करके दे दिया गया था ताकि पोलैंड, जो चारों ओर से स्थल से घिरा हुआ था, समुद्र तक के लिये एक मार्ग प्राप्त करले। इससे जहाँ एक यह प्रयोजन था कि जर्मनी के प्रान्तों को एक दूसरे से पृथक् करके जर्मनी के पागलपन को भविष्य के लिये रोकना था, वहां दूसरी ओर पोलैण्ड को समुद्र की ओर खुला हुआ मार्ग देकर अपने पड़ोसियों के मुक़ाबिले में उसे शक्तिशाली बनाना था। कोरीडर बेलजियम के क्षेत्रफल से आधा है। इतिहास के विचार से कोरीडर का प्रदेश जर्मनी

और पोलैंड दोनों के लिये वहुत महत्व रखता है। सन १४६६ ई० तक यह प्रदेश जर्मनी का था, लेकिन सन १७७२ ई० तक यह पोलैंड के अधिकार में रहा। इसके वाद फिर जर्मनी के हाथ में चलागया। सन १९१८ ई० तक जर्मनी के अधिकार में रहने के वाद उसका मेल एक बार फिर पोलैण्ड के साथ होगया।

डैंजिग (Danzig)—जर्मनी से पृथक् किये हुये देशों में डैंज़िग और उसके आसपास का इलाका भी ऐसा था जिसे जर्मनी से पृथक् करना आवश्यक समझा गया। डैंजिग जो उत्तरी यूरोप का वालटिक सागर पर एक प्राचीन वन्दरगाह है, विस्चुला नदी के मुहाने पर स्थित है। विस्चुला नदी पोलड के मध्य मे वहती है और पोलैण्ड के व्यापारी जीवन में वहुत महत्त्व रखती है।

प्रारम्भ में यह वन्दरगाह पोलैण्ड के अधिकार में था, लेकिन चौदहवीं शताव्दी में जर्मनी ने उसपर भी अधिकार कर लिया। अतएव उस वन्दरगाह में जर्मनों की आवादी वढ़ने लगी जो इस समय ८० फी सदी के लगभग है। जव पौलैण्ड जर्मनी के अधिकार से अलग हुआ तो उसने डेनजिग को प्राप्त करने का प्रयत्न न किया तो भी महायुद्ध के पश्चात् डेनजिग को पृथक करने की समस्या उपस्थित हुई और उसे जर्मन वहुसंख्यकों के कारण एक पृथक स्वतन्त्र वन्दर-गाह ठहरा कर स्वाधीन कर दिया गया। यहाँ राष्ट्र-संघ के एक हाई कमिश्नर के अतिरिक्त नाज़ियों की अधिक संख्या की ओर से एक अफ़सर और पौलैण्ड के आर्थिक और व्यापारिक अधिकारों की देखभाल के लिए पोलिश अफसर नियुक्त थे। इन तीनों के संयुक्त

शासन प्रबन्ध से डेनजिग के स्वतन्त्र बन्दरगाह का कार्य चल रहा था। पोलैंड के राजनीतिज्ञ इस बात से अनभिज्ञ नहीं थे कि अगर किसी प्रकार डेनजिग उनके अधिकार से बाहर होगया तो उनके व्यापार के समस्त मार्ग अवरुद्ध हो जायंगे, इसलिए उन्होंने डैंजिग के पास कोरीडर के किनारे पर सन १९२१ ई० में अपना नया बन्दरगाह निर्माण किया जिसका नाम गिडनिया है। गिडनिया के निर्माण ने व्यापारिक दृष्टि से डेनजिंग की शक्ति और महत्त्व बहुत कम कर दिया है और अब पोलैंड को केवल व्यापारिक आवश्यकताओं के लिए डैंजिग पर निर्भर रहने की अधिक आवश्यकता नहीं रहीं।

युद्ध के कारण—यह तो सबको विदित है कि इस समय यूरोप में एक महान युद्ध चल रहा है। अब प्रश्न यह है कि वर्तमान युद्ध के आरम्भ होने का क्या कारण है? इटली ने अबीसीनिया और अलबेनिया पर अधिकार कर लिया। जापान ने चीन पर आक्रमण करके उसके बहुत से भाग को अपने आधीन कर लिया। स्वयं जर्मनी ने आस्ट्रिया, जैकोस्लोवेकिया और अन्य देशों पर अधिकार कर लिया लेकिन उस समय भी युद्ध नहीं हुआ तो क्या कारण है कि पोलैंड, कोरीडर और डेनजिग पर अधिकार करते समय युद्ध आरंभ गया?

सत्य बात यह है कि पोलैन्ड बहुत महत्त्व रखता है क्योंकि वह रूस और जर्मनी की दो युद्ध शक्तियों को जिनकी शत्रुता इस समय थोड़े काल के लिए मेल और मित्रता में बदल गई है एक दूसरे से प्रथक् करता है। इसलिए रूस अपने प्रयोजन के लिए

पोलैन्ड की स्वतन्त्रता में बहुत रुचि रखता था। उधर पोलैन्ड ने जर्मनी के मनसूबों को ठीक २ न समझने के कारण से न केवल रूस के साथ किन्तु ब्रिटेन और फ्रांस के साथ भी ऐसा समझौता कर रक्खा था जिसके अनुसार वे पोलैन्ड की स्वतन्त्रता की जमानत दे चुके थे अतएव ब्रिटेन और फ्रांस को इस समझौते के अनुसार पोलैंड का साथ देना आवश्यक था जबकि जर्मनी ने पोलैन्ड पर आक्रमण किया। दूसरे अब हिटलर की बात का बिलकुल विश्वास नहीं रहा था और इस बात की घोषणा हिटलर और जर्मन समाचार पत्र सब कर चुके थे कि जर्मनी के उपनिवेश उसको वापिस मिलने चाहिएँ इसलिए यह बात स्पष्टरूप से प्रगट हो चुकी थी कि लड़ाई एक न एक दिन अवश्य होगी।

हिटलर ने सबसे पहले रूस के साथ समझौता किया और जब वह रूस के भय से निश्चिन्त हो गया तो उसने पोलैन्ड की सरकार के लिए कुछ अपमान जनक प्रस्ताव तैयार किये और उसका प्रयोजन यह था कि धमकियों के द्वारा ही अपनी उन मांगों पर पोलैंड को तैयार करले। ब्रिटेन और फ्रांस के लिए हिटलर का यह विचार था कि वे किसी ओर से आक्रमण करके पोलैंड को बचा नहीं सकते। इसलिए हिटलर ने पहले तो डेनजिग को नियमानुसार जर्मनी मे सम्मिलित करने की घोषणा की और उसके बाद ३ सितम्बर सन १६३६ ई० को पोलैण्ड पर आक्रमण किया और लगभग एक महीने मे उसपर विजय प्राप्त करली। इस लड़ाई के बीच मे रूस के स्टेलिन (Stalin) ने पोलैण्ड के भाग

लैटविया, एसंथोनिया, लिथोनिया पर अपना प्रभुत्व जमा लिया। वर्तमान सभ्यता का प्रथम पाठ यह है कि जो मनुष्य अवसर से लाभ नहीं उठाता वह मूर्ख है और यूरोप का कोई मनुष्य वर्तमान काल में अपने को मूर्ख नहीं कहता फिर भला स्टेलिन ऐसे अवसर पर क्यों चुप बैठ सकता था ? उसने भी इस अवसर का पूरा २ लाभ उठाया।

हिटलर ने जब पोलैण्ड पर आक्रमण किया उस समय ही अंग्रेज़ों और फ्रांस ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। अंग्रेज़ों का यह कहना है कि न्याय, सभ्यता, प्रजातंत्र और सत्य तथा संसार की स्वतंत्रता को स्थिर रखने के लिए वे हिटलर के विरुद्ध जर्मनी से लड़ रहे हैं और जिस समय तक पोलैण्ड फिर स्वतंत्र न होजायगा वे इस युद्ध को जारी रक्खेंगे। इस युद्ध में कनाडा, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका ने अंग्रेज़ों का साथ दिया है, आयरलैण्ड ने सहायता देने से इन्कार किया है। फ्रांस और ब्रिटेन ने टर्की से व्यापारिक और राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित किये हैं और ब्रिटेन ने बहुत सा धन ऋण के रूप में स्वीकार किया है। हिन्दुस्तान में मुस्लिम लीग ने और हिन्दू नेताओं ने ब्रिटेन का साथ देने को कहा है। लेकिन कांग्रेस ने फ्रांस और ब्रिटेन की यह बात सुनकर कि उन्होंने इस लड़ाई में दुनिया में स्वतंत्रता, न्याय, प्रजातंत्र और सभ्यता को फिर स्थापित करने के लिए भाग लिया है, चट से ब्रिटेन के सन्मुख अपनी स्वतंत्रता की माँग उपस्थित कर दी और कहा है कि:—

पुष्प अरु फल दान है तू दूसरों को देरहा।
कुछ इधर भी हो कृपा उद्यान ! उपकारी महा॥

साथ ही कांग्रेस ने जोकि भारत के आठ प्रान्तों में शासन कर रही थी युद्ध में सहायता देने से इन्कार किया। कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति ने ब्रिटिश पार्लियामेन्ट से यह मालूम किया कि यह लड़ाई किस लिए लड़ी जारही है ? अगर इस लड़ाई का उद्देश्य संसार मे स्वतंत्र शासन को स्थिर रखना है तो उस आधार पर ब्रिटिश सरकार को यह घोषणा करनी चाहिए कि इस लड़ाई के बाद उपनिवेशों और भारतवर्ष में भी स्वतन्त्रता संघ स्थपित हो जायगा ताकि हम लोग भी पूरे उत्साह से सरकार की सहायता करें। ब्रिटिश सरकार के उत्तर से अभी कांग्रेस सन्तुष्ट नहीं हुई है, इसलिए कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने आठों प्रान्तों में अपने मंत्रित्त्व पद से त्याग पत्र देदिया है।

यह लड़ाई अभीतक जारी है और इसी बीच मे रूस ने फिनलैंड पर भी आक्रमण कर दिया है। इस प्रकार रूस और फिनलैण्ड के बीच मे भी लड़ाई चल रही है। इस लड़ाई का क्या प्रभाव होगा और अन्त में यह क्या रूप धारण करेगी, यह अभी से बतलाना अत्यंत कठिन है।

कौन कह सके युद्ध का, क्या होगा परिणाम ?
"सत्य मेव जयते" सदा, "सूर्य" समान प्रमाण ॥

स्टुआर्ट काल में आयरलैण्ड

(सन् १६०३ ई० से १७१४ ई० तक)

जेम्स प्रथम के समय मे अल्स्टर के जमीदारों ने विद्रोह किया। जेम्स ने विद्रोह को दबा दिया और जमीदार लोग देश छोड़ करके भाग गये। अंग्रेज़ी सरकार ने उनकी जमीनों को जब्त कर लिया

और वहाँ पर अंग्रेज़ी ज़मीदारों को लेजाकर आबाद किया। यह अल्स्टर का उपनिवेश कहलाता है और उसने भविष्य के झगड़ों का हमेशा के लिए बीज बो दिया।

चार्ल्स प्रथम के समय में वैन्टवर्थ अर्ल ओफ़ स्ट्रेफोर्ड (Wentworth, Earl of Strafford) के शासन में सन् १६३३ ई० से सन १६४० ई० तक आयरलैण्ड वालों को इंग्लैण्ड का और भी विरोधी बना दिया। गृह युद्ध के समय में आयरलैण्ड वालों ने चार्ल्स प्रथम की सहायता की थी और उसको फाँसी लगने के बाद उसके लड़के को बादशाह स्वीकार कर लिया था, इसपर क्राम्वैल ने आयरलैण्ड पर आक्रमण किया वहाँ के निवासियों का वध किया और उनकी जमीनें ज़ब्त करके अपने सिपाहियों में विभक्त कर दी। चार्ल्स द्वितीय के समय में आयरलैण्ड का स्वतन्त्र व्यापार (Irish free Trade) बन्द कर दिया गया। जेम्स द्वितीय के समय में आयरलैंड में शान्ति रही क्योंकि जेम्स और आयरलैण्ड के अधिकतर निवासी कैथोलिक मत के माननेवाले थे। विलियम तृतीय के समय में आयरलैण्ड वालों ने जेम्स का साथ दिया इसलिए उसकी ओर से उनपर बहुत कड़ा बर्ताव किया गया। विलियम तृतीय ने स्वयं आयरलैण्ड जाकर जेम्स को बोइन (Boyne) के स्थान पर हराया।

हनोवर काल में आयरलैण्ड

(सन् १७१४ ई० से १८२५ ई० तक)

आयरलैण्ड की शिकायतें—आयरलण्ड वालों की निम्नलिखित शिकायतें थीं :—

(१) विलियम ने रोमन कैथोलिक लोगों से आयरलैण्ड की पार्लियामेण्ट मे वोट देने का और मेम्बर निर्वाचित होने के अधिकार को छीन लिया था। केवल प्रोटैस्टेण्ट लोगों को सदस्य निर्वाचित होने और वोट देने का अधिकार प्राप्त था और साथ ही रोमन कैथोलिक लोग विश्वविद्यालय में शिक्षा नहीं प्राप्त कर सकते थे। यह शिकायत धार्मिक थी।

(२) दूसरी राजनैतिक शिकायत यह थी कि आयरलैण्ड वालों के विरुद्ध कड़े क़ानून थे जो कि फौजदारी के कानून (Penal Laws) कहलाते थे। वे कोई पद प्राप्त नहीं कर सकते थे और वे लोग जमीन भी नही खरीद सकते थे।

(३) उनकी तीसरी शिकायत आर्थिक दशा से सम्बन्ध रखती थी। वह यह थी कि जहाजी कानून (Navigation Act) से उनको व्यापार मे वहुत हानि थी और उनका अन्न का व्यापार बिल्कुल चौपट हो गया था।

इन शिकायतों को दूर करने के लिये आयरलैण्ड मे जार्ज तृतीय के समय में एक आन्दोलन आरम्भ हुआ और अमेरिका की स्वतन्त्रता के युद्ध के कारण उन्होंने बहुत-सी रुकावटें जो कि फ़ौजदारी कानून (Penal Law) के नाम से प्रसिद्ध थी उनको हटवा दिया फिर हैनरी ग्रेटम की अध्यक्षता मे दूसरा आन्दोलन आरम्भ हुआ जिसका प्रभाव यह हुआ कि सन् १७८० ई० में आयरलैण्ड के व्यापारिक प्रतिबन्ध दूर कर दिये गये और सन १७८३ ई० मे पोयनिंग कानून (Poyning Law) के रद्द होजाने से आयरलैंड को क़ानून बनाने की स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई।

इसके बाद प्रधान मन्त्री पिट ने आयरलैण्ड वालों की रुकावटें दूर करने की चेष्टा की। उसने कैथोलिक लोगों को धार्मिक स्वतन्त्रता का वचन देकर अपनी ओर कर लिया और सन् १८०१ ई० में एकता का क़ानून (Act of Union) पास करा दिया। आयरलैण्ड और इंग्लेण्ड के बीच स्वतन्त्र व्यापार करा दिया और यह निश्चय किया कि आयरलैण्ड अपनी मालगुज़ारी का ३ भाग इंग्लैण्ड को दिया करेगा। कैथोलिक लोगों की स्वतन्त्रता का बिल जार्ज तृतीय के विरोध के कारण पास नहीं हो सका और आयरलैण्ड में धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने का आन्दोलन जारी रहा।

फिर डेनियल ओकोनल नाम के एक बैरिस्टर ने एक सभा कैथोलिक असोसीएशन नाम से स्थापित की जिसको पार्लियामेण्ट ने एक बिल पास कराके बन्द करा दिया। इसपर एक दूसरी सभा नये नाम से स्थापित हुई और उसका प्रभाव इतना होगया कि आयरलैण्ड के मत दाताओं ने जमीदारों की इच्छा के विरुद्ध डेनियल-ओकोनल को वोट देकर पार्लियामेन्ट का मेम्बर चुन लिया जोकि कैथोलिक होने के कारण से पार्लियामेण्ट में बैठ नहीं सकता था लेकिन इस निर्वाचन से लोगों की आखें खुल गई और सन् १८२८ ई० में पार्लियामेन्ट ने एक बिल पास करके टैस्ट एक्ट तथा कारपोरेशन एक्ट को रद्द कर दिया और सन १८२९ ई० में कैथोलिकों की स्वतंत्रता का क़ानून (Catholic Emancipation Act) पास हुआ। इस क़ानून से कैथोलिक दलवालों को सामाजिक और राजनैतिक सब अधिकार प्राप्त हो गये और उनको सरकारी

नौकरियाँ और पार्लियामेण्ट के मेम्बर होने का अधिकार भी प्राप्त हो गया।

आयरलैण्ड में अशान्ति फिर भी जारी रही। प्रधान मंत्री पील ने सन १८४१ ई० मे पहले तो दमन के उपाय से काम लेना चाहा लेकिन वाद मे उसने उनकी शिकायतों की जाँच के लिए एक कमीशन भेजा जिसमें यह वताया कि आयरलैण्ड के किसानों में दरिद्रता फैली हुई है जिससे अशान्ति है और दूसरा कारण यह था कि उस देश के अधिकतर निवासी कैथोलिक मत के माननेवाले थे जिनका कि यह विचार था कि ब्रिटिश सरकार उनके लाभ के लिये कुछ नहीं करती है। इस शिकायत को दूर करने के लिये लार्ड पील ने कैथोलिक पादरियों की शिक्षा संस्थाओं को सरकारी सहायता देना आरम्भ किया और उनकी शिक्षा के लिए तीन कालेज खोल दिये।

आयरलैण्ड के निवासी इससे भी सन्तुष्ट नहीं हुए और उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन जारी रक्खा। ग्लैडस्टन ने अपने पहले मंत्रित्व मे आयरलैण्ड की सव शिकायतों को दूर करने का यत्न किया। धार्मिक शिकायत को दूर करने के लिए ग्लैडस्टन ने आयर-लैण्ड के इंगलिश चर्च को सन १८६९ ई० मे सरकारी सहायता देना वन्द कर दिया। अल्स्टर के उपनिवेश के अंग्रेजी प्रोटेस्टेण्ट जमीदार आयरलैण्ड के कैथोलिक निवासियों पर जिनको वह जमीन खेती करने के लिए देते थे, उनपर ये वहुत अत्याचार करते थे। उनसे अधिक से अधिक लगान लिया जाता था। जो आसामी अपनी भूमि को अच्छा वना लेता था, उसका लगान तुरन्त वढ़ा दिया जाता था

और अदा न करने पर जमीन उससे लेकर किसी और किसान को दे दी जाती थी जो अधिक लगान देने को तैयार हो जाता था।

ग्लैडस्टन ने सन १७८० ई० में इस शिकायत को दूर करने के लिये पहला भूमि क़ानून (First Irish Land Act) बनाया जिसके अनुसार जबतक किसान लगान देता रहे ज़मीन से बेदख़ल नहीं किया जा सकता था और बेदख़ल करने पर उसे खेतों में उन्नति करने का प्रतिधन (मुआविज़ा) देना पड़ेगा लेकिन इससे भी आयरलैण्ड वाले सन्तुष्ट नहीं हुए क्योंकि लगान बहुत अधिक था और उसको कम करने का कोई उपाय नहीं किया गया था। आयरलैण्ड में उसके विरुद्ध अब भी आन्दोलन जारी रहा। और आयरलैण्ड वालों ने अपनी शिकायतों को सरकार के कानों तक पहुँचाने के लिये सन १८७९ ई० में लैंड लीग (Land League) नाम की एक सभा स्थापित की और एक साल बाद सन १८८० ई० में होमरूल पार्टी चार्ल्स पार्नेल की अध्यक्षता में स्थापित की। ग्लैडस्टन ने सन् १८८१ ई० में अपने दूसरे मंत्रित्व काल में दूसरा भूमि कानून (Land Act) बनाया जिसके अनुसार एक लैण्ड कोर्ट स्थापित हुआ—लेकिन इससे असन्तोष और भी बढ़ गया तब सरकार ने लैण्ड लीग को ग़ैरक़ानूनी ठहराया, पार्नेल और बहुतसे लोगों को गिरफ्तार कर लिया और दमनकारी क़ानूनों से काम लिया। पर ग्लैडस्टन ने अपनी तीसरे और चौथे मंत्रित्व काल में आयरलैण्ड में शान्ति स्थापित करने के लिए होमरूल बिल उपस्थित किया लेकिन विरोध के कारण वह पास न हो कसा।

Summary of the Hanoverian Period

Constitutional Effects of Hanoverian Succession

(1) The party system strengthened.

(2) The position of Prime Minister created

(3) The Septennial Act (1716)

The Two Mid-Century Wars

War of the Austrian Succession (1740-8)

England and Austria *versus* France and Prussia (England fights France for colonies and trade Austria fights Prussia for Silesia)

Battles fought Dettingen (1743), Fontenoy (1745), Culloden (1746), Louisbourg captured (1745). Madrasa lost (1746) Treaty of Aix-la-chapella (1748), Prussi retained Silesia, Louisburg exchanged for Madras

Seven Years' War (1756-63)

Britain and Prussia *versus* France and Austria (England fights France for colonies and trade; Austria fight Prussia for Silesia)

Chief battles fought Minorca lost (1756); Plassey (1757), Fort Duquene (1158), Lagos, Minden, Quebec, Quiberon (1759) Wandurst (1760).

Treaty of Prussia Silesia retained by Prussia, French ousted from India and America

Sea-Power in the Seven Years' War Sea power prevented the invasion of England (Battle of Lagos and Quiberon 1759) and enabled Pitt to strip the country of troops for foreign expedition.

Sea power enabled Wolfe to capture Quebec.

It would have been impossible to take troops to Quebec and maintain them except by the navy. French Canadians were deprived of all support from France by British command of the sea.

Sea-power enabled Clive to win at Plassey (support of Admiral Watson necessary to his plans). When the French managed to send an army under Lally to India, British sea-power cut him off from support made his position hopeless, led to his defeat at Wandewash.

The Declaration of Independence (4th July 1776)

When in the course of human events it becomes necessary for one people to dissolve the political bonds which have connected them with one another, and to assume among the powers of the earth the separate and equal station to which tho laws of nature and of nature's God entitle them, a decent respect to the opinions of mankind requires that they should declare the causes which impel them to the separation.

We hold these truths to be self-evident, that all men are created equal; that they are endowed by their creator with certain unalienable rights: that among these are life, liberty and the pursuit of happiness: that to secure these rights, governments are instituted among men, deriving their just powers from the consent of the governed, that whenever any form of government becomes destructive of these ends, it is the right of the people to alter or abolish it, and to institute a new government, laying its

foundations on such principles and organizing its powers in such form, as to them shall seem most likely to effect their safety and happiness.

Such has been the patient sufferance of these colonies, and such is now the necessity which constrains them to alter their former system of government The history of the present king of Great Britain is a history of repeated injuries and usurpation, all having, in direct object, the establishment of an absolute tyranny over these states To prove this, let facts be submitted to a candid world

Then follows a list of alleged acts of tyranny committed by the Government against the Colonists We, therefore, the representatives of the United States of America, in general Congress assembled, appealing to the Supreme Judge of the world for the rectitude of our intentions, do solemnly publish and declare that these United Colonies are and ought to be Free and Independent States, that they are absolved from all allegiance to the British Crown, and that all political coanection between them and the State of Great Britain is, and ought to be, totally dissolved.

This Declaration is one of the most important documents in world-history, for it was the first definite expression of the view that the will of the people is the source of political power – the foundation of democracy

What were the Effects of the American Independence ?

(1) George III wanted to appoint ministers of his own will, and so wanted to check the progress of

the Cabinet system, but the loss of America made him very unpopular, and so after this, he could not dare to interfere in the Cabinet system.

(2) Ireland took advantage of the difficulties of England and got some concessions.

(3) In France, it led to French Revolution

(4) England learnt a lesson from this war, and after this, their treatment towards the colonies was more lenient and just

Why the Americans won the War of Independence

(1) Geographical reasons, (2) Lack of any commander of genius to fight against Washington, (3) George III tried to conduct war in complete ignorance of local condition (4) There was loss of sea power when France, Spain and Holland declared war Their combined fleet was double the strength of Britain's

Points of View in the American Dispute

George III	*The Americans.*
1. All British people are subject to King and Parliament, no matter if they live in colonies or at home	But British Parliament does not contain representatives from America; so we are not subject to British Parliament but to our own Colonial Parliament
2 In order to be able to defend you from French attack, we had to carry on war against France and	But the principle of Political Science is "No Taxation without Representation" and since

huge amount of money had to be spent, we ask you to pay a portion of it through taxes

your Parliament does not contain our representatives, you cannot tax us

3. If you object to proposed taxation, you devise some method of voluntary contribution

The colonies are not united and do not want to be. Also if we submit to you by fear, it is not voluntary contribution.

4 The duties and trade regulations which we have proposed are intended for the benefit of the Empire as a whole

But, though designed for Empire, they benefit you much more than us and prevent us from establishing our own manufactures

5 The taxation, we have imposed, works out at a few shilling a head per annum, so why do you object?

That is not the point The point is that on principle you have no right to tax us, as British Parliament does not contain our representatives

Why Britain went to War with the French Republic

(1) The Nov Decrees 1792 announcing that France would help all those peoples who would destroy monarchy in their States and would establish Republican Government

(2) The French opened the River Scheldt to all countries and this was a direct blow to London

(3) The instinct of self-preservation led England to war when France conquired Belgium, and wanted to annex Holland

(4) The execution of the King of France enraged the people of England.

(5) The warnings of men like Burke and Gibbon further enraged England against France.

(6) England had also the desire to destroy French trade and to capture her colonies.

First Colation, 1793-1799

French Victorious on land: English on sea, at Aboukir Bay.

Second Colation, 1799-1802.

Peace of Amiens. England agreed to recognize the territories already conquered by France; England agreed to return Malta to Knights of St. John.

Bet, 1802-1805. Napolean wanted to invade England and for this purpose he gathered a huge army at Boulogne, but sea was very carefully guarded day and night by English ships, and he could not cross the sea. Nelson defeated the French fleet at Trafalgar in 1805.

Third Colation, 1805-1807

Except England, Napolean defeated Austria, Prussia and Russia, and became the Dictator of Europe.

To crush England, he introduced the continental system, but it was a failure owing to the superior naval power of England.

Causes of Social Unrest (1815—1820)

(1) Dislocation af trade and industry after war.

(2) Labour market flooded with discharged soldiers.

(3) Shortsighted Economic Policy of Parliament viz., Corn Law and the removal of Income Tax.

The Governments' Methods of Dealing with Social Unrest.

(1) Spies employed to hunt out conspiracies.

(2) Habeas Corpus Act was suspended.

(3) Agitators like Hunt imprisoned.

(4) The Six Acts (1819-20).

Progress of Parliamentary Reform, 1815

1829 Catholic Emancipation —Made Catholic eligible for Parliament.

1831 First Reform Act.

1851 Jews made eligible for Parliament

1858 Property Qualifications abolished

1867 Second Great Reform Act

1872 Ballot Act

1883 Corrupt Practices Act

1884 Third Reform Act

1911 Parliament Act and Payment of Members passed

1918 Reform Act giving votes to all men over twenty-one and all women over thirty

1928 Equal Franchise Act, Swboth men and women.

1931 Statute of Westminster

Nelson's Three Great Victories

(1) The Nile (1st Aug., 1798). Shut Napolean up in Egypt, upsetting his schemes for a conquest of India.

(2) The Baltic (2nd April, 1801). Forced an entrance to the Baltic, destroyed "The armed Neutrality" and led to the Treaty of Amiens.

(3) Trafalgar (21st. Oct, 1805). Gave England complete command of sea, and forced Napoleon to adopt the Continental System.

Career of Sir Robert Peel

(1) To remove Catholic grievances of Ireland, he began to give financial help to Catholics of Mamouth Seminary.

(2) He abolished custom duties, started Income Tax, to improve banking, he started Bank Carter Act and made factory laws, making it illegal for women and children, boys of ten years of age to work in mines, and abolished Corn Law He was peace loving and wanted to avoid war.

Peel's Three "Betrayals" of His Party

(1) In 1828, he and the Duke passed the Catholic Emancipation, which they had taken office to prevent this broke.

(2) In 1832, he accepted the Reform Bill, though he and his party were pledged to oppose it.

(3) In 1846, he repealed the Corn Law, which he had been put into office to maintain

Career of Palmerston

Except a short interval of about two years 1858 to 1859, he was Prime Minister from 1855 to 1865

Noted for foreign policy which was vigrous, and aimed at two things —

(1) He wanted to uphold and extend the influence of Great Britain in foreign affairs

(2) He sympathised with all movements whose aim was to establish constitutional government

He saved Spain and Portugal from absolutism by supporting their constitutional rulers against their despotic rivals, and saved Turkey from the hostility of Mehmet Ali and the dangerous friendship of Russia In 1848 there were revolutions all over Europe Louis Phillips was driven out of France, many of the small German rulers were turned out, and a national rising against the Austrian rule in Italy began under Sardinia, Palmerston showed a decided sympathy with the peoples against the Rulers The second time, when he became the Prime Minister, he brought the Crimean War to a successful end

Gladstone

First Ministry (1868-74). In Ireland, Catholics and Protestants placed on equal footing, passed, in 1870, the Irish Land Act, passed, in 1870, the Elementary Education Act, in 1872, passed the Ballot Act, and carried out the reform of the army In financial measures, he made England a free trade country, reduced taxation, establishes at Post Office Savings Banks in 1861, but his weak foreign policy brought about his downfall

In his second ministry (1830-85), he passed, in 1881, the second Irish Land Act, dissolved the Irish Land League, and passod the Third Reform Bill of 1884.

In his third ministry 1886, he wanted to give Home Rule to Ireland, but this did not pass and he resigned.

In his fouth ministry, (1892-94), he brought his second Home Rule Bill, when he had to resign, as the Bill was rejected by House of Lords

Gladstone is famous as Finance Ministers, and his three main principles were :—(a) Free trade, (b) Economy to keep taxation as low as possible, (c) Rigid accounts-keeping. He devised methods of auditing puplic accounts to see that not a penny was spent otherwise than as authorized by Parliament.

Career of Benjamin Disraeli, Earl of Beaconsfield (1874-80).

As Prime Minister (1874-80), he introduced Licensing Act of 1874, Agricultural Holding Act, Education Act in 1876, and Factory Act. He is noted for Foreign Policy which was vigorous. He looked upon Russia as a dangerous rival, and supported the Turks against the Russians in the Russo-Tukish War. He increased British influence in Egypt by buying Khedive's share in the Suez Canal.

The Development of Free Trade in England

1774 Adam Smith first explained the principle in his wealth of Nations.

1784-8 Pitt made a beginning of carrying it into effect. He made smuggling unprofitable, and

made a commercial treaty with France. But war expenditure afterwards compelled him to impose more duties

1123-5 Robinson and Huskisson simplified duties again

1842-6 Peel adopted the policy of increasing revenue by reducing duties. In the course of four Budgets, he swept away 250 duties and reduced many more and repealed the Corn Law.

1853-65 Gladstone carried Peels policy to its logical conclusion.

NOTES ON THE EPILOGUE (1914-1940)

President Wilson's "Fourteen Points"

Welson's statement of war aims (made in January, 1918) was accepted by both sides as the basis for peace when the armistice was signed in November, 1918 The following is a brief summery:—

1. No more secret diplomacy.
2. Freedom of the seas.
3. The removal of economic barriers
4. All armaments to be reduced to a minimum.
5. The impartial adjustment of colonial claims, the interests of the populations having equal weight with the claims of the Governments whose title is to be determined.
6. Unhampered opportunity of development for Russia, under institutions of her own choosing with cordial assistance from other nations

7. Belgium to be evacuated and restored.

8. Alsace-Larrraine to be restored to France and all French territery evacuated and restored.

9. Italian frontiers to be readjusted.

10 Subject peoples of Austro-Hungary to gain an independent existence.

11. Balkan frontiers to be readjusted on "historical lines."

12. The non-Turkish position of the Ottoman Empire to be offered opportunities of autonomous development

13 An independent Polish State should be erected, which should include the teritories inhabited by polish populations.

14. A general association of nations should be formed under specific covenants for purposes of affording mutual guarantees of political independence.

The Convenant of the League of Nations

This forms the first part of the Treaty of Versailles and of the treaties with each of the other enemy powers. It begins as follows .—

The High Contracting Partiesin order promote international co-operation and to achieve international peace and security by the acceptance of obligations to resort to war and by the prescription of open just and honourable relations between nations agreed to this covenant of the League of Nations.

Then follow the all-important clauses about disputes likely to lead to war

X. The Members of League undertake to respect and preserve the territorial integrity and existing political independence of all Members of the League.

XII. The members of the League agree that if there should arise between them any dispute likely to lead to a rupture, they will submit the matter either to arbitration or to inquiry by the council, agree in no case to resort to war until three months after the award by arbitration the report of the council

By Article XX Mandate system was organized

Article XXII. is the great humanitarian and economic clause Members of the League are to sense fair conditions of labour and to assist in the international control of disease

Also the Court of International Arbitration at the Hague, Draft Treaty of Mutual Guarantee (1923), Geneva Protocol (1924), Treaty of Socarno (1925) The Kellogg Pact (1929) were provided to strengthen machinery for preventing war

Chronology of Principal Events

George I (1714-1727)

1715 Jacobite Rising. (The Fifteen)
1716. Septennial Act.
1720 South Sea Bubble.
1720-1742 Walpole's Administration.

George II (1727-1760)

1739 Methodist and Wesleyan Movement, War of Jenkins's Ear
1742 Fall of Walpole.

1740-1748. War of Austrian Succession.

1743. Battle of Dettingen.

1745 Battle of Fontenoy; Jacobite Revolt (The (Forty-Five).

1746. Battle of Culloden Moor.

1756-1763. Seven Years' War.

1759. Capture of Quebec.

George III (1760-1820)

1775-1783. War of American Independence.

1780 Gordon Riots.

1781 Capitulation of Yorktown.

1788 Impeachment of Warren Hastings.

1789 French Revolution.

1800. Act of Irish Union

1802 Peace of Amiens.

1803-1815. Napoleonic Wars.

1805. Battle of Trafalgar.

1806 Death of Pitt, Berlin Decrees.

1807 Abolition of Slave Trade, Treaty of Tilsit.

1808-1814 Peninsular War.

1812-1814. War with U S.A.

1814. Abdication of Napoleon, his Banishment to Elba.

1815. Battle of Waterloo.

1814-1815. Congress of Vienna.

George IV (1820-1830)

1827. Battle of Navarino.

1828. Repeal of Test and Corporation Acts.

1829. Catholic Emancipation Act.

William IV (1830-1837)

1832 Reform Act.

1833. Abolition of Slavery; Factory Act; First Education.

1834 Poor Law.

1835 Municipal Reform Act.

Victoria (1837-1901)

1838-40 Electric Telegraph

1840 Rowland Hill's Penny Postage.

1846 Repeal of Corn Laws

1848 Failure of Chartist Rebellion

1854-56 Crimean War

1857. Indian Mutiny

1858 Crown Control of India, India Government Act

1861-65 American Civil War

1867. Second Reform Act.

1869 Disestablishment of the Irish Church

1870 Education Act, Irish Land Act

1870-71. Franco-Prussian War

1878 Treaty of San Stefano, Treaty of Berlin.

1881. Majuba Hill

1884. Third Reform Act.

1885 Redistribution of Seats Act.

1899-1902. Boer War.

1900 Australian Commonwealth proclaimed.

Edward VII (1901-1910)

1902. Education Act.

1904. Anglo-French Convention.

1905. Anglo-Japanese Treaty.

1907. Anglo Russian Convention.

1909. Rejection of Budget by Lords.

1910. Constitutional Crisis, South African Union inaugurated.

George V (1910-1936)

1911. Parliament Act; National Insurance Act Railway Strike.

1914. Home Rule Act.

1914-18 The Great War.

1918. Representation of the People Act, Education Act.

1919. Government of India Act.

1922. Irish Free State.

1930 and 1931. Round Table Conference.

QUESTIONS

The Hanoverian Period

1 What was the claim of the House of Hanover to the throne of England? How did this affect the future development of the English constitution?

2 Describe briefly the salient features of the ministry of Walpole with special reference to his foreign policy

3 "Walpole's administration marks a stage in the evolution of Cabinet Government" Elucidate

4 What do you know of the Jacobites? Give a history of the Jacobite movement in the 18th century and account for its failure

5. Discuss the causes of the Seven Years' War, and show how Pitt the Elder led his country to success in the struggle.

6 How do you account for the Whig ascendancy the time of the first two Georges?

7. Trace the methods by which George III established a personal despotism in England

8 Mention the causes and results of the War of American Independence (U. P Board, 1928)

9 What was the attitude of England towards the French Revolution? What was its effect on the British politics?

10. Why did England take part in the Revolutionary War ?

11. Narrate the story of the struggle between Great Britain and Napoleon. (U. P Board, 1934)

12. What were the aims of Napoleon, and how were they frustrated by England? (U.P. Board, 1934)

13. What were the difficulties, social and economic, caused by the Napoleonic War? How did Parliament try to meet them ? (U.P Board, 1930)

14. Give a brief sketch of the ministry of the Younger Pitt What is your estimate of his greatness as a war minister ? How does he compare with his father, the Elder Pitt ?

15. Describe the part played by the British fleet in the Revolutionary and the Napoleonic Wars.

16. What do you know of the "Industrial Revolution"? (U. P. Board, 1928)

17. Sketch the career of Pitt the Elder. Why is he regarded as one of the greatest statesmen that England has produced? (U.P. Board, 1928)

18. Describe briefly the Peninsular War. How do you account for Napoleon's failure in it ?

19. Describe the social and political effects of the Industrial Revolution

20. What was the condition of the industrial workers in England after 1815 ? How was their condition improved ? (U.P.Board, 1933)

21. Why had constitutional reforms become necessary in Great Britain in the 19th century ? (U.P. Board, 1931)

22. Describe some of the important scientific discoveries and mechanical inventions of the 19th century. (U.P Board, 1931)

23 Narrate the circumstances which led to the passing of the First Reforms Act. State its provisions and their effects. How far was it successful in remedying the defects it sought to remedy ?

24. "From being an oligarchy, the Parliament by the three Reform Acts of the 19th century, became virtually an assembly of the people." Discuss

25 Give a short account of the Chartist movement and the causes of its failure (U P.Board, 1928) How far have the demands of the Chartists been met by the subsequent legislations ?

26 Describe briefly the social reforms carried out by Parliament in the 19th century

27 What do you know of the Wesley brothers and the Methodist Church ?

28 Sketch briefly the political career of Robert Peel "He was the most liberal of conservatives and most conservative of the liberals " Do you agree?

29. "Lord Palmerston was a conservative at home and a revolutionist abroad " Discuss

30. What do you understand by the term "Eastern Question"? What interest had England in it?

31. Why did England take part in the Crimean and the Russo-Turkish Wars?

32. Sketch the history of the "Home Rule" movement in Ireland. (U.P. Board, 1991, 1934)

33 Why was England generally hostile to Russia in the 19th century? Why and how did they make up their differences? (U P. Board, 1932)

34 What were the principal differences between the liberal and conservative parties during the latter half of the 19th century? (U P. Board, 1935)

35 Give a brief sketch of the relations of Great Britain and Germany between 1810 and 1914 (U P. Board, 1933)

36 Compare and contrast the domestic and foreign policies of Gladstone and Disraeli. (U.P. Board, 1933)

37. Discuss the importance of Disraeli's "Imperialism: what steps did he take to establish England's empire in the East?

38. Sketch briefly the history of Britain's connection with Egypt.

39. Describe the career and policy of *Gladstone*. (U. P. Board, 1930)

40 Trace the growth of Responsible Government in the British Dominions (U P Board 1931)

41. What are the chief dominions and colonies of the British Empire? Are they all alike? Describe the relations between the mother country and the dominions (U.P. Board, 1929)

42. Trace the main stages in the growth of England as a great sea-power. What causes have contributed to this result? (U.P Board, 1930)

43 Why is Lloyd George regarded as one of the best Prime Ministers of England? (U P. Board, 1933)

44 Give a critical estimate of Gladstone's Irish policy How did it affect the Party System in England ?

45. Discuss the Anglo-French relations in the latter part of the 19th century and the early years of the 20th century

46 Give a brief picture of the international situation in Europe from 1871 to 1914 How far was this period on of "Armed Peace"?

47 What were the causes of the Great War ? Carefully describe the re-shaping of the map of Europe as a result of the Treaty of Versailles

48 With what object was the "League of Nations" formed?

49. Describe the gradual steps by which England became a true democracy

50 **Write short notes on :—**

Catholic Emancipation Heights of Abraham; John Wilkes The Continental System , Corn Law , Congress of Berlin, Fenianism The Great Trek , Jameson's Raid, the Mahdi, the Imperial Conference, The South Sea Bubble, The Aibama Incident, General Gordon, Lord Cromer, President Kruger, Boston Tea party, the Ballot Act, Fashoda Parnell Trafalgar , Triple Entente, Jenkin's Ear War , Washington , The Hundred Days ; Penny Postage.